ओबरा बाध
के
अकाल राहत कार्यो
की गतिशीलता के
समस्त भागीदारो को
समर्पित हे
यह
उनकी
श्रम-गाथा

आस्था के बन्ध

यथार्थ पर आधारित उपन्यास

आस्था के बन्ध

भवदत्त महता

भूमिका

कृति की राह से गुजरना और लाल पेसिल लेकर कृतिकार के सृजन की शव परीक्षण प्रक्रिया मे जुटा समीक्षक क्या कभी कुछ क्षण सृजन की राह से गुजरन का साहस कर पाता हे—इस प्रश्न पर कई बार जूझने और अपने मित्रो से इस सबध मे बहस करने पर भी जब अपन आसपास निरतर प्रश्नवाचक चिह्नो की विद्रूप आकृतियो पर दृष्टि जमाने का प्रयास किया है, मुझे बार-बार लगा है कि अभिमन्यु के लिए चक्रव्यूह स बाहर आ सकना भले ही सभव नहीं था पर उसे चक्रव्यूह मे प्रवेश प्रक्रिया का अभिज्ञान था पर अपने पास नही है कुछ भा, फिर क्या और कैसी समीक्षा ?

वर्षों पहल कला लोक सस्था थी उदयपुर मे लगभग साढे तीन दशक पूर्व। उसकी एक कथा गोष्ठी म थे कथाकार भवदत्त महता और पढ़ी थी कहानी—कथ्य की बुनावट विशेष नही सपाट लेखन पर उसकी समर्थक कथ्यपरकता और सहजाभिव्यक्ति की सराहना म भी कुछ कहने का अवसर था। पता नही उस अवधि के मित्रा को यह स्मरण भी हो या न हो पर आज स एक वर्ष पूर्व जब भवदत्त महता का कथा संग्रेह 'अजुरी भर उजाला' प्रकाशित हुई और उसके लोकार्पण के समय मुझे भा कुछ कहने के लिए आदेश मिला मेरी समझ से बाहर था कि मुझे कहना भी होगा। सोचा था चाय और चिटचेट हँ, अच्छा है कई मित्रा से इसी बहाने मिलना होगा पर जब सबसे पहले सयोजक ने अपना घोड़ा पछाड़ दाव मारा तो मुझ पर ही।

वास्तव म कई फिल्मा म छोटी-मोटी भूमिकाआ विदेशी फिल्मो मे भूमिका निभाने नाटक और रेडियो नाटको म सिद्धहस्त कलाकार परिधान जेसे मध्यम आय के व्यावसायिक सस्थान क प्रबधक-नियामक और विविध साहित्यिक एव सास्कृतिक कार्यक्रमा म सदैव अपने आपका व्यस्त बनाए रखने वाले इस भवदत्त *को लेखन का समय मिल पाता है क्या—सबसे बड़ा और विकराल आकृति का* प्रश्न सामने था और वह भी शूर्पनखी मुद्रा म कह रहा था मुझ कि—बाल अब क्या कहना ह ? मैंने उस समय भा सावजनिक रूप म मच से पूछा था कि भई भवदत्त बताए कि आपका वह लेखक क्हा है आर कहा मिल सकता है जिससे मैं भी सपर्क कर सकू। विविध विषया और प्रसगा पर अपने कथानक रचते हुए युगबोध ओर यथार्थ के फतवे न देकर उनसे साक्षात्कार करात समय वह आपक पास होता है या एकात मे आपके दृष्टि निर्देश की अपेक्षा भर करता है।

भवदत्त मौन थ आर मोन था उनका कथाकार क्याकि विजय कुलश्रेष्ठ जैसा दुष्ट और दुश्मनी आख से देखने वाल को महत्त्व देते ही और सिर चढ़ जाने की सभावना सामने ही दिखाई दे रही थी। भवदत्त महता को और उन्हाने अपने तरीके से उसक मुह म तीन-चार अगूर भर दिए थ। पर शैतान का आख स कब तक बचा जा सकता है ?

आस्था के बन्ध उपन्यास लिख डाला भवदत्त महता के उस लखक ने यानी खुलेआम चुनाती कि बोल, अब क्या कहना है ? सच ता यह है कि हक्का-बक्का आदमी सडक पर हुए विस्फाट से अपने अग सुरक्षित पाकर चकित न होगा तो क्या करगा ? व्यक्तिगत जीवन के यथार्थ को उपन्याम का रग देकर भवदत्त महता कैस बनाता ह समीक्षक का— यह दिखा हा दिया। उदयपुर के इतिहास म तलवारा की तीखी मार भाला की भारी दहशत चतक की स्वामिभक्ति, भामाशाह की उदारता ओर युवा रक्त के भूमि तर्पण, नारियो क जाहर की गध का पयावरित चितन, समर्थ वारत्व आज निहित स्वार्थान्धता आर सत्ता मद की लाकतांत्रिकता म सामतशाही का प्रदर्शन कराता ग्रामीण पचायतीराज ओर स्थानीय नेतृत्व क्या नहा द सकता— यह दखने का साहस आर समय-सामर्थ्य हर किसी क पास होता तो राजस्थान का उपन्यास लेखन तथाकथित एतिहासिकता और युगबोधपरकता के फेर म न पड़ता।

उपन्यास राजस्थान म कम नहीं लिखे गए सामतशाही क दूषण स परिपूर्ण भी हैं तो अत्याचार-अनाचार की जीवत कथावृत्ति लिए हैं तो रागेय राघव की दृष्टि स गुजरते हुए ग्रामीण परिवेश का यथार्थ अपने परिपक्व रूपाकार म अपनी सर्जनात्मक क्षमता घाषित करता ही है लेकिन फिर भी हमारे मित्र समीक्षक अपनी पीडा का आकलन यही करते हैं कि राजस्थान के उपन्यास साहित्य को आलोचको ने अधिक महत्त्व नही दिया तभी कद्रीय सृजनधारा से यहा का उपन्यास अपना सबध नही बना पाया। उनका कथन अन्यथा नही है क्याकि उन्होने ही अपने कृतिकार का महत्ता नही दी तो दूसरा से अपेक्षा भी क्या कर सकते हैं ?

भवदत्त महता किसी फतवे के कायल नही हैं न व यह दावा करते हैं कि म कहानीकार या उपन्यासकार हू। लेकिन उनका लेखक अवश्य एसा हे जो जब वे सोते हैं जब वे परिधान म बैठकर व्यावसायिकता की पीठ पर अपने व्यस्त क्षण भागते ह तब वह अपन अनुभव ससार का डायरा खालकर काला स्याही स बिना स्पश छोड़े सत्तर पृष्ठो मे उस जीवन यथार्थ का सदर्भ प्रस्तुत करता हे जो ओबरा बाध की परियोजना का पूर्व और पश्च यथार्थ समाहित किए हुए है।

अपने क्षुद्र स्वार्थों क सूर्यातप से समस्त ग्रमीणा को प्यास स तडफने म ही अपनी पर पीड़क मुद्रा से सतुष्टि पाता सामतशाही अवशय (सरपच) नही चाहता कि अकाल राहत कार्य मे काई भी स्थायी काम हा और वह भी त्रिना उसका नतृत्व सम्मिलित किए हुए क्योकि अब तक उसने न अपने आदिवासी भाइयो के

लिए कोई कल्याणकारी कार्य किया है और न ग्रामाण क्षेत्रा क लिए राज्यतंत्र की विकास योजनाआ के क्रियान्वयन म रुचि है। उसकी रुचि अपन कमीशन म है। उसकी रुचि अपने सामन घुटने टेकते आदिवासी पुरुष और वधुआ मजदूरी करती उसकी पत्नी या युवा वटी की आर रशम-सी फिसलती है। तभी न जाने कितनी वार अकाल राहत कार्यों क झूठ मस्टरराल इजीनियर ठकेदार सरपच क हथक्डा म निर्माण क स्थान पर ध्वस को आमत्रित करती पतली पर्त की उस माटी तक ही सतर्क रहती है जव तक भुगतान पूरे हा आर पहली वर्षा न आ पाए क्याकि पहली वषा आत ही अकाल राहत के कार्य काल-कवलित हा जाते हैं फिर रह जात हं भरे हुए मस्टरराल आर उनके आकड़ नहा रह जाते हं अकाल राहत म वने एनाकट बाध तालाब और सड़क।

मगर गजब ता यह है कि एसे माहौल म भी भवदत्त महता खाज लात हैं सुधाकर शर्मा का जा अकबर इलाहाबादी क शब्दा म नाम लेता है खुदा का इस जमाने म। वह सवेदनशील भावुक सहृदय और कर्म आस्था क गहन ताना-वाना स वुनता है बाध और प्रति करता है अकाल की मार से पाड़ित आक्रात आदिवासिया की श्रम सामर्थ्य का रचनात्मक बनाने म आर चुनाती दता है स्थानाय नेतृत्व सरकारी अपगता और ठकदारा की क्रूर निष्कर्मी नीयत को तभी गाव के युवक-युवतिया के वीच निष्कर्मयागी की भांति घूमता ह छाया-प्रतिछाया के रूप म और वह इस आधुनिक राजनातिक दुर्गंध से परिपूर्ण वातावरण म जलाता श्रम-अगरु और दता है अध्य पुरुपार्थ के परावर्तन को— फिर लाख वार कुडली म बठ उलटे ग्रह भी वदलत हैं राह आर एक दिन पूरा हाता है आवरा वाध। सभावना नही थी विगत दस वर्षों स पर सुधाकर के नतृत्व म करवट वदले गाव के तेवर और आदिवासी कर देते हं असभव का भी सभव। तभी सिंचाई विभाग के अभियता तहसीलदार अकाल राहत कलेक्टर भारत सरकार के सचिव रह जाते हैं दग— कर्मठता और उद्देश्य की तल्लीनता म ग्रामीण सहयाग की सकारात्मक चतना पाकर।

सुधाकर उपन्यास का व्यक्ति नही व्यक्ति की समूह चेतना का अग है और वह अनपढ़ आदिवासी पुरपा-स्त्रिया का श्रद्धा भाजन है पूजनीय है उनका उद्धारकर्ता है उनकी आस्था है उनका ईमान है और अल्प वेतनभोगी वह नही रह गया है वह वन गया उनक ही तबके का स्फुलिंग जो उन्ह साहूकारी चगुल से मुक्ति दिलाता है, अधर से प्रकाश की आर लाता है रूढ़िया क दारुण आधारो के खण्ड-खण्ड करते हुए नव आस्थाओ नव उद्यमिता जीवन की नव्यता सार्थक ओर सतत् रचनात्मकता को परिणत करता है परमार्थ की प्रतीति म। तभी बदलते हैं सामती और सरपची अहकार म सराबोर ठाकुर रामसिंह और सराहते हैं उसके हर कदम को क्याकि सुधाकर ही खोल चुका है उनकी आखा क आवरण जा पुरातन रूढ़िया सकीर्ण और स्वार्थमयी राजनीतिक परितुष्टि के सतरण क थे।

उपन्यास म केवल ओबरा बाध और उसकी समस्या ही कथ्य कद्र नही है

कथ्य कद्र म है ग्राम का सर्वांगीण विकास जिसके लिए भवदत्त महता न कोई फतबा रचते हैं ओर न मसीहाई तेवर दिखाते हैं और न योजनाओ की सरकारी कार्यान्विति क असत्-सत् रूप की समीक्षा लेकर आग्रहशील हैं, ध्वस दूर-दूर तक भवदत्त महता के चिंतन म नही है, अगर है तो नि स्वार्थ सेविकाई तुलसी की भाति और श्रम है उनका आराध्य, जनता है उनकी प्रक्रियात्मक चेतना का सरोकार और बाध है उनके अपने ग्रामीणा और श्रम सपूतो की सघन क्षमता का वह उन्नत प्रकाश स्तभ जिसे रात की भारी वर्षा म आफफाट का दावार काट कर सुरक्षित रखने की व्यवस्था ही भारा पड़ता है अन्यथा एक बूद का सीवेज नही होता है जबकि उस रात की वर्षा मे बह जाते है आसपास के बाध, एनीकट और तालाब।

निश्चित ही भवदत्त महता ने कम लिखा है बहुत कम-- इसम कोई सशय नही है पर प्रथम कहानी-सग्रह के प्रकाशन के एक वर्ष पश्चात् ही 'आस्था के बध' का प्रणयन जहा उनकी सर्जनात्मक प्रतिभा चरित्र-स्थापन क प्रति मानवीय सवेदनशीलता, कर्मनिष्ठ भाव सपन्नता के साथ काल सदर्भ और पारिवेक्षिक यथार्थ चित्रण की सहजता से युक्त है, वही किसा कलात्मकता का कायल नही रह गया है। भवदत्त महता भावाभिव्यक्ति के लिए न किसी आलकारिकता की आर उन्मुख हैं और न भाषाई दक्षता और प्रौढ़ शब्द-सयोजना का आदर्श को अपनाने के लिए तत्पर क्योकि सहज मे जो कहा जा सकता है उसको भाषाई और शाब्दिक अलकरण से कृत्रिम बनाना उनकी अभिरुचि नही है। यदि इस उपन्यास मे भावाभिव्यक्ति के धरातल पर है कुछ तो मेवाड़ के अचल के आदिवासियो के व्यवहार, सास्कृतिक सस्पर्श और हृदयगत अनुभावो की अभिव्यजना को साकार करती आचलिक सजीवनी वाणी और उसका सत्य।

'आस्था के बन्ध' से गुजरना वास्तव मे किसी उपन्यास से गुजरना नहीं है। यह गुजरना है उपन्यासकार की सर्जना के ससार से जिसम डूबा है आकण्ठ सुधाकर, राजू, चम्पा रोडा बा केशा बा, तभी इन सबस परे कहा अपने को न स्थापित करता है सुधाकर और न काट पाता है उनके अतिशय सम्मोहक श्रद्धा के कच्च धागा का क्याकि वह कह दता है अपने अभियता सरपरस्त को---''जिस दिन इनके खेत म गती चलगा वह उनके खेत पर नही, उनके मन आत्मा ओर दिल पर चलगी। उस खून क जो फब्बारे चलेंगे जो छींटे मेरे मन और आत्मा पर पाऊगा सारा उम्र किसी भी साबुन से नही धो पाऊगा।''

भवदत्त का चिंतन बहु आयामी रहा है उसका परिचय इस उपन्यास म कई स्थला पर मिल जाता है। नारी व्यथा का उल्लेख करते हैं वे---''हम ओरतो का जनम ता प्यार का आग म तपते रहकर दम तोड़ देने के लिए होता है। मन की बात समझने वाल कहा मिलते है री ? मन पर चुबक मारकर अनुशासन करने वाल ही तो नसीब हाते हं। नारी भी उनक लिए एक देश राज्य सत्ता महल की तरह होती है जिसे जीत कर भागना चाहते हं।'

इस उल्लेखनीय उपन्यास और उसकी सर्जना क लिए भवदत्त महता हार्दिक साधुवाद के अधिकारी हैं और अधिकारी हैं अपनी सहज प्रवाहमयी भाषा और अभिव्यजना शैली के लिए जिसमे कृत्रिमता का अश भी नहीं है। उनके इस पक्ष पर गर्व तो नहीं है पर अपेक्षा है कि शैली के परिमार्जन को तभी वे कुछ और अधिक कह सकने मे और प्रौढ़ता ढालने मे सफल होगे। कहीं-कहीं ऐसा लगता है कि अभी कुछ और भी कहना था, पर रुक गये हैं वे।

उपन्यास भले ही पहला है, पर यह भवदत्त की समर्थ अभिव्यक्ति है और निश्चित ही पाठको मे यह चर्चित होगा। ऐसा विश्वास है कि बिना दावा किए जिस आचलिक परिवेश और पृष्ठभूमि म भवदत्त उपन्यास शुरू करते हैं वैसे ही अपने आगामी उपन्यास मे कुछ और दिखाएगे।

राजस्थान साहित्य अकादमी ने इसका प्रकाशन का दायित्व उठाने से पूर्व प्रतियोगिता के चयन के स्तर पर इसके स्तर तथा कथ्य केंद्रीयता को महत्त्व दिया है उसके लिए अकादमी एव मूल्याकन कर्त्ता दोनो ही साधुवाद योग्य हैं।

यह उपन्यास राजस्थान के हिंदी उपन्यास लेखन में अपना स्थान बनाएगा— इसी विश्वास के साथ।

—डॉ विजय कुलश्रेष्ठ

पूर्व अध्यक्ष (हिंदी विभाग)
सुखाडिया विश्वविद्यालय,
उदयपुर-313001

अरावली की पहाड़िया म बसे एक गाव से शुरू होती है यह कहानी। महाराणा प्रताप क घोड़ा की टापा से कभी गूजा करता था यह भू-भाग। इस धरती पर प्रताप की सेनाए युद्धाभ्यास किया करती थी। प्रताप के राजतिलक का सौभाग्य मिला इसी धरती को। चारा आर छाट-छोटे पहाड़ा की अनेक कतार। गोगुन्दा के पठार पर बसा है यह गाव। इसी गाव से प्रारम्भ होती है इसकी कायापलट कहानी। आवरा बाध की कहानी। पहाड़ों से बहकर बेकार चले जाने वाले पानी को बाधने की कहानी। मनुष्य सदियो से पानी को बाधने का उपक्रम करता आ रहा है। जीवन को सुखी बनाने के लिए मनुष्य प्रयत्न करता ही रहता है— अपने कल्याण के लिए, जन-कल्याण क लिए। पानी भी क्या है ? मनुष्य के प्राणा को जीवित रखने वाला। अधिक बरसे तो दु ख। नहीं बरसे तो और अधिक दु ख। नास्तिक आदमी भी यही आकर प्रकृति को मानता है। नही बरसना और अधिक बरसना मनुष्य के हाथ म नही है। जो बरसा जितना बरसा ऊपर वाले के हाथ।

आदमी तो बस प्रत्यन करता है, खेत जोतता है बोता है और आसमान की तरफ हाथ जोड़कर करुण दृष्टि से ताकता है। उसक खेतो के ऊपर से गुजरने वाले राहगीर बादला को ताकता भर रह जाता है। बादल एक्सप्रेस ट्रेन की तरह यह स्टशन छोड़कर अगले पड़ाव की तरफ बढ़ जाते हैं और किसान बेबस मुसाफिर की तरह देखता भर रह जाता है। यही से प्रारम्भ होती है मानव की आदिम आकाक्षा की घड़िया ओर आशा ही आशा म व्यतीत हो जाते हैं आपाढ़ श्रावण और भादवा। खेत म बाया बीज अन्दर-ही-अन्दर सड़ जाता है या घुटकर मर जाता है और आदिवासी किसान का उधार लाया बीज बिना वश-वृद्धि के ही मर जाता है। जीवित अगर कुछ रहता है ता केवल साहूकार का कर्ज, जो निरन्तर वृद्धि ही वृद्धि करता रहता है। कर्ज की यह वश-वृद्धि किसान को अपन नागपाश म जकड़ लती है। मरते दम तक भी उस नागपाश स मुक्तिपाना उसके वश म नहीं है। उसक अनाथ बच्चा को वसीयत म मिलती है इसी कर्ज की वश-वृद्धि। फिर प्रारम्भ हो जाती है बनिए की बहियो म अगूठा की वश-वृद्धि— दादा-परदादा म लेकर बेटे-पोते तक। यह सनातन कर्ज पीढी-दर-पीढ़ी साहूकार के [illegible] म किसान क [illegible] रक्षक तक चलता ही रहता है निरन्तर अबाध [illegible] म।

इसी क प्रतिफल से उपजती है एक नई [illegible]। बंधुआ मजदूर सरकार ने बनिए के नागपाश को काटन [illegible] कानून और -

मगर न तो मिटा बनिया और न मिटा उसका बनियापन और न मिटा इस आदिवासी मानव का कर्जदार बनना। पता नही, कब कौन स युग म सभव होगा यह ऋणमुक्ति का पावन कर्म ?

सरकार की ओर से किसान की ऋणमुक्ति क आन्दालन का एक अग है छोट-छोटे बाध और एनीकट बनाना। आदमी भगवान से ता लड़ नहीं सकता। परतु सिचाई के लिए कुछ प्रयत्न तो कर ही सकता है और श्रम के सामने सभी को झुकना ही पड़ता है। भगवान भी श्रम म साझीदार बन जाता है।

ओर यही से प्रारम्भ होती है यह श्रम-गाथा। ऋण मुक्ति के सग्राम की गाथा। आदिवासी मानव के कल्याण की गाथा। बरस कर बेकार बह जाने वाले पानी की गाथा। प्रारम्भ होती है मिट्टी स बाधकर उस पानी को सचय करने की गाथा। ओबरा बाध की गाथा।

पता नही कब किसी घड़ी मे शुरू हुई इसक निर्माण की कठिन यात्रा। बस इतना पता चला कि सन् उन्नीस सौ सत्तर क किसी एक माह म प्रारम्भ हुई इसके निर्माण की घडी। कहते ह कि पडित जी के सामने मुहूर्त के समय दही के बजाय दूध आ गया। शकुन बिगड़ गए। पडितजी ने भविष्यवाणी की—"बाध पूरा ता होगा मगर रुक-रुक कर।" वही भविष्यवाणी सही होती आ रही है। काम जब भी प्रारम्भ हाता है, अकाल राहत कार्य म। तेरह वर्षों के अन्तराल म भी काम पूरा नही हो पाया। हर क्षण हर पल सघर्ष ही सघर्ष। इन सघर्षों और विपदाआ से लगता है कि शायद यह बाध पूरा ही नही हागा। खैर विपदाआ की बात तो आगे करेगे ही। अभी करते ह ओबरा गाव की बात।

कहने वाला को भी पूरा याद नही। वे भी बस सुनते आए हैं। बहुत-बहुत पहले कही दूर-दराज से एक ब्राह्मण आया इस गाव म साथ आया एक आदिवासी गमेती। दानो ने अपने-अपने श्रम से झोपडिया बाधी। प्रारम्भ हुई उनकी गृहस्थी। श्रम ही इस भू-भाग के भाग्य से जुड़ा है। पहाड़ा-चट्टाना और पत्थरा के अलावा उसे कुछ भी नही मिला। परतु उसने साहस और श्रम को नही छोडा। जहा पहाडा से पानी बहकर आया वहा उसे बाधा। पानी के साथ बहकर आई मिट्टी से बने उसके खेत। फिर जुताई और बुआई शुरू हुई। जहा पानी ज्यादा भरा रहता वहा बोया उसने पहाडी लाल चावल। मक्की आर चावल से उसकी फसले लहलहाने लगी। मक्की आर चावल की पैदावार के साथ-साथ बढ़ी आदमी की पैदावार। फिर गाव मे ब्राह्मण-गमती के साथ बढ़े मेघवाल और राजपूत। और भी कई-कई वर्ण के लोग अपनी जरूरतो के अनुसार।

ओबरा का अर्थ तो अभी पता नही लगा। फिर कभी लगा तो बताऊगा भी। गाव के साथ बढी मनुष्य की आस्था आर आस्था के साथ बना गाव मे कालिका का मदिर। ब्राह्मण बिना अन्न के रह सकता है परतु बिना मदिर के नही रह सकता। मदिर से जुडा भेट का अन्न और ब्राह्मण बना निष्क्रिय उस परान्न से। भगवान के

नाम जो भी मिला, उसी से गुजारा किया। स्वय के उपार्जन म दक्ष न होने से ब्राह्मण पिछड़ता ही रहा। युग बदला। बदली आस्थाए। घटा अन्न और मन। ब्राह्मण को भी भगवान का भरोसा छोड़कर अन्य कर्मों म लगना पड़ा। खैर, ओबरा के ब्राह्मणा की बात करगे बाद म।

यह सच ह कि पुराकाल का भागीरथ भी सिंचाई विभाग का अभियता ही था। हिमालय को काटकर गगा लाया था। पतित-पावन गगा पहाड़ा से उतरकर मानव जीवन को धन्य करने, भूखा को अन्न देन और आस्थावाना का मन रखने ही जमीन पर उतर आई। यह तो बेचारा भागीरथ ही जानता होगा कि कितनी कठिनाइया से पूरा किया होगा यह अनोखा प्रोजेक्ट। कहा से मिली हागी आर्थिक सहायता और किस राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय एजसी से ? फिर ऐसी कोई एजसी थी या नही। राष्ट्र की कल्पना और राष्ट्रीय अथवा राष्ट्रीयता की कल्पना ता आज के लोकतत्र की चीज है। इसलिए फिजूल है यह सब सोचना। मगर वर्तमान म पुराकाल आ जाए तब क्या कर ? सोच के सामने स्पीड ब्रेकर आ ही जात हैं न।

हा, इतना अवश्य था कि उसके ऊपर कोई अधिशासी अभियता और अधीक्षण अभियता नहा थे आर न किसी सहायक या कनिष्ठ अभियता का नाम ही इतिहास म सुना। जो कुछ था वही था। जो कुछ करना था उसे करना था। इसी कारण वह सफल हुआ। सदियो से उसकी सफलता का फल हमारे वशज भोगते रहगे। यह सत्य है। ध्रुव सत्य है। लाखो-करोड़ा लागा का जीवन गगा के पानी पर ही निर्भर है। खैर यह ता हुई बहुत बड़ भागीरथ के बहुत बड़े प्रोजेक्ट और प्रयत्न की सफलता की बहुत बड़ी बात। हम तो करगे छोटे-छोटे अभियताआ के छोटे-छोटे प्रयत्ना की बात। करते हैं ओबरा बाध की बात।

मनुष्य ने जब जगल को अपना व्यवसाय बनाया तब से प्रकृति नाराज होने लगी और कर भी क्या सकती थी ? नाराजी क अलावा प्रकृति इन्सान होती तो मुकदमा ठोक देती चित्रगुप्त के न्यायालय म। पर वह विवश थी। सरकार ने कुछ लाख रुपया क लालच म जगला को ठेके पर उठा दिया। जगल कटने से पहाड़ सूखे, वीरान और श्रीहीन हो गए। कुछ पड़ बचे भी तो आदिवासिया ने अपने पेट भरने का साधन बना लिया। परिणाम हुआ बरसात घटती गई घटती गई और घटती गई उर्वरा शक्ति।

जब राज्य पूरा ही अकालग्रस्त हो, उसका क्या कहना ? भगवान ही मालिक है। जहा कुछ लाख के लालच म पेड़ कट गए वहा सूखे से निपटने के लिए करोड़ो की योजनाए बनानी पड़ीं— अकाल राहत के लिए। प्रतिवर्ष वही समस्या। सरकार को जगह-जगह प्रारम्भ करने पड़ते हैं अकाल राहत कार्य। कहीं वास्तविक मे तो कहा केवल मात्र वोटा की राजनीति के लिए। कही कोई सरपच प्रभावशाली ह, तो कहीं प्रधान जी। कही एम एल ए तो कही सासद। अपन-अपने प्रभाव से अपने-अपने वोटा क क्षेत्र म प्रारम्भ होते हैं अकाल राहत कार्य। अगर वन विभाग

जगल कटवाने के साथ-साथ पेड़ लगाने के ठके भी देता रहता तो जगल भी बढता रहता। आदमी ने अपनी पैदावार तो बढ़ा ली मगर उस अनुपात म न बढ़ाए पेड न बढा जगल। फलस्वरूप वर्षा घटती गई, अकाल बढ़ते गए और अकाल राहत कार्य खुलते गए।

राज्य ओर नेताओ द्वारा अपने-अपने क्षेत्र म शुरू हुआ जनता पर अहसान का खेल। अहसान से जुड़ा राजनीति का खेल। वाटो का खेल। वाटो की गणित। वोटो का जोड बाकी, गुणा, भाग वाटो क इक्वेशन। जो नेता जितना प्रभावशाली, भागा राजधानी तक ओर स्वीकृत कराए अपने-अपन क्षेत्र के बड़े-बड़ काम और पक्की सील लगवाई अगले चुनाव मे कुर्सी के लिए। हम क्या लेना-देना इन मतो की राजनीति स। हम न तो पच बनना है न प्रधान न मत्री हो। ये बात उन्हा क लिए छोड़ दे।

अकाल राहत कार्य तो होते ही अ-काल म है। समय की सीमा सरकार तत्र म हो। पर अकाल राहत क स्थायित्व म न राजनेता को आस्था हाता है और न गाव क पच-सरपच की और न जनता की। अगर स्थायित्व की बात हो जाती तो आज तक पूरे हो गए होते कई तालाव कई बाध और कई सड़क हो गई होती पक्की पर क्या ? किस पडी ह यह चिता ? अकाल राहत तो अनबरसे की वर्षा हे जितना जिमके पल्ले पडे। पल्ले ही पडता है अपने-अपने क्षेत्र म प्रभाव रखे जाने क हिसाब स रुपये-आने-पसा के हिसाब स। पर हम क्या ? हम पूरा करना हे आबरा बाध।

गोगुन्दा तहसील की राजनीति अजब गोरखधन्धा है। हर पार्टी दूसरे की टाग खिंचाई मे व्यस्त। मजाल है जो कोई भी ऊपर उठकर विकास का काम करे। यहा की राजनीति। भारतीय केकडा वाला किस्सा ह। बिना ढक्कन की टोकरी मे से एक भी बाहर नही जा सकता। जैस ही एक निकलने लगेगा दूसरा नीचे से उसकी टाग खीच लेगा। इन केकडो से ही इस तहसील क जन-सेवको ने राजनीति सीखी है। भारत स्वतत्र हाने से आज तक यह तहसील जस की तस है। हर पार्टी दूसरे की खीची रेखा को मिटाकर छोटी कर देना चाहती है। छोटी के सामन कोई बडी रेखा नही खीचना चाहती। लगता हे हर पार्टी का एक डर कि बडी रेखा खीचने म मशक्कत ज्यादा होगी। जहा महाराणा प्रताप का राजतिलक हुआ हो उस धरती की यह दुर्दशा! भगवान ही मालिक है।

एक दिन इसी तहसील क एक कनिष्ठ अभियता साहब को जन्मभूमि प्रेम उमड़ा। सोचा बीस बरस बाहर रहकर आया हू क्या नहा कुछ बरस यहा रहकर अपनी तहसील क लिए काम करू ? बाध बाधू— नहर बनाकर अपनी तहसील को भी सरस करू। यहा की आदिवासी जनता सदियो तक इन नहरा का पानी काम म लेगी। खेती जोतेगी। परती जमीन के सीने को फाडेगी। उसमे उपजी फसले इस आदिम मानव की आदिम भूख को शान्त करेगी। इसी की पूर्ति के लिए सोते

शेर को छेड़ दिया या साप की बावी म हाथ डाल दिया। या यू कह कि मधुमक्खी के छत्त को छेड दिया। यह सब तो आग पता चलेगा ही।

यू कि जन्म भूमि क मोह म याजना तैयार की आवरा बाध का। पता नही किस खोट मुहूर्त म बनी याजना। यहा से गए राजधानी और वहा स लौटे वरग लिफाफे की तरह। कर्मवीर अभियता बार-बार रिवाइज्ड आकड़े तैयार करते और भेजते सिचाई मत्रालय। राजधानी वाले भी बार-बार लौटात-लौटात हार गए। आखिर उन्हाने साचा क्या नही, बावल अभियन्ताआ का उबलती कढ़ाही म हाथ डालने ही दिया जाय। भाग इसका फल। चख इसका कडवा स्वाद। एक दिन आखिर योजना स्वाकृत हाकर आ ही गई। मगर डिपार्टमेन्ट की रेग्यूलर स्कीम मे नहा आई। आई केवल अकाल राहत कार्य म ही पूरा करने की गारण्टी क साथ। चलैंज था अभियता के लिए पर उसका जन्मभूमि प्रम भी कम न था। बाधाआ पर बाधाए और परीक्षाए। मगर धन्य है अभियता हार नहीं मानी। इस तरह शुरू हुआ आवरा बाध, अकाल राहत कार्य मे।

गाव म जब लोगा को पता चला तो खुशिया का पार नही था। अब उनक मवेशी मई-जून की चिलचिलाता धूप म प्यास क मार हाफग नही। बाध म पानी भरा रहगा ता गाव के कुआ का जलस्तर बढ़ा रहगा गाव की आरता का दूर-दूर से पानी नहीं लाना पड़ेगा। घर-आगन म तुलसी का पौधा कुड़मुड़ाकर सूखगा नही। भेड़ा के रेवड़ प्यास क मार मिमियाएंगे नही। टिटहरी को अड देने के लिए भटकना नहीं पड़गा। बाध के किनार उसके नवजात बच्च फुदकते रहगे।

दास्ती के लिहाज मे और कुछ कर गुजरने की चाह म सुधाकर ने अपने मित्र कनिष्ठ अभियता की बात मान ली, ओवरा बाध पर दखरख करन क लिए। उसक साथ कुछ लालच और भी जुड़े थे। उसका अपना ननिहाल भी गोगुन्दा ही था। इसी बहान इस धरती का कुछ कर्ज वह भी चुका देगा। उसके साथ आदिवासी सस्कृति को निकट से दखने-समझन की बरसा पुरानी साध भी पूरी हो रही थी। उसने सोचा इसी बहान कुछ माह इन लागा के साथ रह पाएगा। उस दिन दाना मित्रा के वाद-विवाद म कुछ बात ही ऐसी उठ गई।

दिनश न कहा—"हा हा जानता हू, हम लाग देश आर समाज-सेवा के नाम पर भाषण तो बहुत अच्छे द सकते हैं, मगर जब वास्तव मे कुछ करने का मौका आता है तो हम मुह छिपाते फिरते हैं।"

सुधाकर न तमतमाकर कहा—"तुम कहना क्या चाहत हो ? मेरी बात कोई बकवास हैं ? प्रेक्टीकली सभव नहा हैं ?

दिनेश ने कहा—"हो सकता है सभव हा मगर क्या तुम खुद काम करने को तैयार हो ? मैं देता हू तुम्ह एक प्रोजेक्ट। आज और अभी। जाआग ?"

सुधाकर ने पूछा—"कहा जाना होगा ? करना क्या ह ?"

दिनेश ने स्पष्ट किया—"तुम्हारे अपने ननिहाल मे। गोगुन्दा तहसील के गाव

ओवरा म एक बाध पिछले कई वरसा स अधूरा पड़ा है। अकाल राहत म उस फरवरी स जून तक हर हालत म पूरा करना है। प्रस्टीज पॉइंट है मरा। साथ दोगे मरा ? तुम्हारी समाज सेवा का शाक भी पूरा हो जाएगा। अपनी-अपनी व्यस्तताओ म रहते हुए भी हम कैस समाजोपयोगी हो सकते हैं ? तुम्हारी इस अवधारणा की सच्चाई का भी पता चल जाएगा।"

अब सुधाकर के पास हा कहने क अलावा कोई रास्ता नहीं बचा था। ना का मतलब था अपने ही सिद्धान्तो स मुकरना और वह कभी नहीं चाहगा कि अपनी कही बात स मुकर जाए।

उसने आव देखा न ताव उठाया दरी म लिपटा तकिया-चादर और टीन की पतली-सी अटैची म डाले तीन जोड़ी कपड़, एक टिकिया नहान का साबुन, एक टिकिया कपड़ा धोने का और थक-माँदे और सुबह क पहले चेहरे को देखन की खातिर एक तीन गुना पाच इची दर्पण एक कघा और दो नपकिन एक तौलिया बस चल दिया सुधाकर अपने मोर्चे पर। चुनौती तो चुनौती है ? फिर उसकी समाज-सेवा को चुनौती— यह कैसे हो सकता है कि वह खामोशी से हार स्वीकार कर ले क्योंकि—

"गिरते हैं सहसवार ही मैदाने जग म
वे फितन क्या गिरगे जो कभी चढ़े नही"

× × ×

गोगुन्दा से तीन किलोमीटर खाकड़ा और वहा से तीन किलोमीटर अन्दर कच्चे रास्ते पर ओवरा डेम। आज आए पाचवा दिन था। इन पाच दिनो म वह खूब घूमा। गाव क लोगो स मिला। बोर एरिया देखा, जहा से मिट्टी खुदकर बाध पर आ रही थी। आसपास के उन कुओ को देखा जहा से पाइप लाइन के जरिए बोर एरिया को गीला करने क लिए पानी आना था। लेबर की वर्किंग और सायकॉलोजी को समझने की चेष्टा की। उसे लगा कि अब तक की सारी वर्किंग को आमूल-चूल परिवर्तन करना होगा तब ही वह आउटपुट निकाल पाएगा। वरना तो ढाक के वही तीन पात। देखते-देखते महीने गुजर जाएगे और बाध फिर अधूरा ही अधूरा। अगर ऐसा ही होना है तो फिर घर-बार छोड़कर एक चेलैंज के साथ यहा आने का अर्थ ही क्या रह जाएगा ? इन्हा विचारो म खोया हुआ था सुधाकर कि दूर से धूल का गुबार उडाती जीप इधर आती नजर आई। सोचा सिचाई विभाग की होगी। जैसे ही जीप रुकी उसमे से दो अनजान व्यक्ति उतरे। हाथो म सरकारी फाइले।

सुधाकर ने आगे बढ़कर अभिवादन किया—"नमस्ते सर।"

सावले से अधेड व्यक्ति ने उत्तर दिया—"नमस्ते! आपकी तारीफ ?"

सुधाकर ने कहा—"जी मै सुधाकर शर्मा हू। इस प्रोजेक्ट का सुपरवाइजर।"

उसी व्यक्ति ने फिर पूछा—"मगर, अकाल राहत कार्य मे तो सुपरवाइजर की कोई पोस्ट ही नहीं ह। आपको तनख्वाह कौन देगा ?"

"जी, आज दिन तक जीवन मे कभी तनख्वाह ली ही नही है। अब भी कोई देगा या नही, मालूम नही है।" सुधाकर ने कहा—"मैं कनिष्ठ अभियता दिनेश का मित्र हू। उन्ही के कहने से इस कार्य को सम्पूर्ण करने चला आया।"

"सम्पूर्ण करवा सकोगे इसे ?" उसी अफसर ने कहा।

"इसी सकल्प और आस्था से यहा आया हू। फल देना ऊपर वाले के हाथ।"

"बहुत अच्छे। मैं गोगुन्दा तहसील का तहसीलदार हू। और आप हैं रिलीफ कलेक्टर।"

"नमस्ते सर। बैठिए न खडे क्यू हैं ?" सुधाकर ने पेड की छाया मे मुड्ढे सरका दिए।

तहसीलदार ने मुड्ढे पर बैठते हुए कहा—"मि सुधाकर! मस्टररोल दीजिए।"

"सर मस्टररोल अभी तैयार नही हैं।"

शायद बम फटता तो भी तहसीलदार साहब इतना नही चौकते, जितना यह सुनकर चौके।

"जानते हो तुम क्या कह रहे हो ? कितना बड़ा ऑफेंस है यह ?"

"ऑफेंस ? व्हाट डू यू मीन ?"

"मिस्टर शर्मा, डोट आर्ग्यू। राहत कार्य है यह।"

"जानता हू सर पर "

"इसकी तुम्हे क्या सजा मिल सकती है पता है ? आपने किस नीयत ऐसा किया है ?"

"मेरी नीयत साफ है सर।"

इतने सारे वार्तालाप के बाद भी रिलीफ कलेक्टर शान्त-गम्भीर मुद्रा मे सुधाकर के चेहरे की गतिविधिया पढ़ते रहे।

सुधाकर ने शाति से उत्तर दिया—"सर अब तक जो ढर्रा राहत कार्यों के नाम पर चल रहा है उसे बदलना चाहता हू। एक लाइन से ऊटपटाग बे-तरतीब नाम भरकर मस्टररोल मे पहले ही दिन बना सकता था। उस बेतरबीत भीड से मैं न तो उनके काम का आकलन ही कर पाऊगा और न यह पता ही लगा पाऊगा कि सुबह हाजरी भरवाकर मेट की मिलीभगत से कितने लोग अपने खेतो मे काम करने चल गए और शाम की हाजिरी के समय लौट आए।"

"क्या उपाय सोचा है आपने ?" तहसीलदार साहब ने पूछा।

"एक मस्टररोल होता है बीस व्यक्तियो का। मैं बीस-बीस व्यक्तियो के समूह को हर जगह बाट देना चाहता हू। जितने ट्रेक्टर हैं, हर एक पर बीस लेवर—बीस-बीस लेवर बोर एरिया मे खुदाई पर। बीस-बीस बाध एरिया मे खाली कराई और ड्रेसिंग पर—बीस कुआ खोदने पर—बीस लेवर विभिन्न कामो पर। इस तरह हर बीस लेवर के काम का शाम को मिलान हो जाएगा। हर ट्रैक्टर की लेवर को बीस ट्रिप के बाद छुट्टी हो जाएगी।"

"उससे क्या हागा ? इट इज मीयरली एन एनर्जी वेस्ट।"
"मे बी टू यू सर। वट आई फाइण्ड इट वेरी कैलकूलेटिव "
सुधाकर ने अपना कहना जारी रखा।
"मैं किसी भी क्षेत्र म खड़-खड़े हा बीस लेवर गिन सकूगा। कम होने पर तुरत पता चल जाएगा कि कितने अन्तर्ध्यान हैं और किसी ग्रुप म दो गायब भी हो जाएगे तो उन्हा के लाग तुरत शिकायत करग क्याकि उनके काम का भार दूसरो पर पड़ेगा।
"ठीक है। प्लान अच्छा है।" तहसीलदार कह उठे—"मगर अब तक की हाजिरी का क्या हुआ ?"
"जी यह रही अब तक की हाजिरी।" सुधाकर ने एक मुड्ढे के नीच से निकालकर रजिस्टर खोलते हुए कहा।
"अच्छी बात है। सपल चकिग करवा दीजिए।" तहसीलदार ने पेन खोलते हुए कहा।
सुधाकर ने आवाज दी—"केशा बा घटी बजाइए।"
चौकीदार ने घटी बजाई।
इतनी देर म सभी तरफ काना-कान खबर पहुच गई थी। सरकारी अफसर आए हैं। बाबूजी से जोरदार पूछताछ हो रही है। सभी मेट अपने-अपने एरिये की लवर से चुस्ती से काम करवाने लग गए थे। जोर-जोर से लगातार घटा बजने के कारण सभी अपना-अपना कान छाड़कर बाध क आफिस पर इकट्ठा होन लग गए थे। जब सभी लेवर इकट्ठी हो गई तो सुधाकर ने आवाज दी—"लकमा मट, आज सुबह की हाजिरी बोलना शुरू करो।"
लकमा ने लेवर से कहा—"मैं जिस-जिस का हाजिरा बोलू, वह अपना नाम बोलने के बाद काम पर पहुचकर अपना काम शुरू कर दे। काम म ढील नही हो, समझे।"
"तुलसी नन्दा।"
"हाजिर सा"
"नवकी/भोपा"
"हाजिर हाकम।"
"कन्ना/भेरा"
"हाजिर।"
' हाजिर होकम कूण बोलेगा। म्हारा काकाजी ?" लकमा मेट न डाटते हुए कहा।
"गलती वेईगी होकम। आगे नी वेगा। ' कन्ना ने माफी मागते हुए कहा और फिर लकमा मेट की फ्रटियर मेल चलने लगी। ऊदकी मोहनी भावनी नानकी चुनकी पनकी। माना खमाणा नन्दा भेरू हकरा दवा । तहसीलदार साहब की

निगाहे रजिस्टर पर जमीं हुई थी। जो सुबह हाजिर था, अभी भी हाजिर था। जब दो सौ लवर की हाजिरी हो गई तो तहसीलदार साहब ने आश्वस्त होते कहा—

"बस अब रहने दीजिए।"

भला सुधाकर कब मानने वाला था। उसने कहा—"सर, जब दिमाग मे शक का कीड़ा घुस जाय तो उसे निकालना ही सही उपाय है। बाकी भी चैक होने ही दीजिए।"

और फिर बिना किसी एक भी कम-ज्यादा नाम के हाजिरी प्रकरण समाप्त हुआ।

तहसीलदार साहब ने राहत की सास ली। उन्हे लगा कि वे एक बहुत बड़ी दुर्घटना से बच गए। रिलीफ कलैक्टर की निगाह मे इज्जत बच गई। वर्ना आज तो मारे ही गए थे। फिर भी अपने रिमार्क मे इतना तो कह ही दिया—

"सुधाकर शर्मा। तुम्हारा काम अच्छा चल रहा है। मगर थोड़ी-सी गलती से "

"सर अगर इसे गलती मानते है तो अभी रजिस्टर की नकल मस्टररोल मे करवा देता हू।" किंचित रुककर सुधाकर ने विनम्रता भरे शब्दो मे कहा—"देखते जाइए सर, विद इन नो टाइम। पाच-पाच मेट है मेरे पास।"

बड़ी देर बाद अकाल राहत के जिलाधीश जी ने मुह खोला—

"सुधाकर जी। आपका प्लान मुझे बहुत ही उपयुक्त लगा। आप कल तक उसी के अनुसार मस्टररोल तैयार कर लीजिए। परसो आपके जे ई एन को मेरे पास भिजवा दीजिए। मैं इस रजिस्टर पर वेरीफिकेशन के साइन कर रहा हू। डोंट डिस्ट्रॉय इट।" और साहब ने सत्यता की पुष्टि मे हस्ताक्षर कर दिए।

चाय आ गई। नमकीन और बिस्कुट आ गए।

"लीजिए सर " सुधाकर ने कहा—"जो कुछ भी इस अरण्य मे बन पड़ा।"

तहसीलदार साहब ने कहा—"अरे! भई यह क्या कम है ?"

दोनो सरकारी अफसरो ने बाध एरिया से काम करते सैकडो मजदूरो को देखा। इतने बडे पैमाने पर काम होते देख उन्हे अच्छा लगा। जाते-जाते कह गए—"देखिए आपको काम से-सम्बन्धित कोई प्रॉब्लम हो नि सकोच चले आइए। आप रोड साइड से एक बालिश्त अन्दर है। कभी कोई भी चकिंग पर इसी तरह आ सकता है।"

"आप निश्चिन्त रहिए सर। साच को आच नही।" सुधाकर ने ट्रप लगाया—"काम इसी तरह चलेगा। जब भी आप जिसे भी चाहे, लाइए। आपको भी लगेगा कि अकाल राहत मे ऐसा पक्का और मजबूत काम भी हो सकता है। ओबरा बाध एक प्रकाश स्तम्भ का काम करेगा।"

सुधाकर मे गहरा आत्मविश्वास जाग उठा था।

और जीप जिस तरह धूल उड़ाती आई थी उसी तरह चली भी गई।

चारा ओर मजदूरो म खुशी थी। नय बाबूजी एकदम ईमानदार हैं। एक भी हाजिरी गड़बड़ नहीं। जिन्ह भ्रम था कि पाच दस हाजिरिया की हराफेरी ता करते ही हागे उनका नजला भी साफ हो गया। साहब लोग जात-जाते काम की पूरी छूट दे गए हैं। अगले पखवाड़ भर्ती और चढ़ जाएगी। मजदूरा क लिए यह खबर किसी वरदान से कम नहीं थी।

शाम हाते-होते कनिष्ठ अभियता दिनश आ पहुचा। चारा आर पिछल दिना हुए काम का जायजा लिया।

मुड्ढे पर बैठते हुए कहा—"कोई प्रॉब्लम तो नहीं है ? कोई नई बात सुधाकर ?"

"आज चकिग पर तहसीलदार और अकाल राहत कलक्टर आए थे ?" सुधाकर न कहा।

"फिर ?" दिनेश ने उत्सुकता से पूछा।

"मस्टररोल मागे। मैंन कहा, अभी तैयार नही हैं ?"

"हे भगवान! मारे गए। क्या यह सब आज और यही होना था ?" दिनेश चिन्ताग्रस्त हो गया।

"चिन्ता मत कर यार! मैंने आज सब सभाल लिया। अब आग सभालना तेरा काम।" सुधाकर न कहा।

इसके बाद सुधाकर ने सारी कहानी अथ से इति तक सुना डाली। इसी बीच परभू चाय ले आया। दाना मित्र भावी योजनाआ मे व्यस्त हा गए। ट्रैक्टर वाइज लेबर एलॉटमट के अनुसार मस्टररोल बनाकर लकमा ले आया। दिनेश ने उन्ह चैक किया और कहा—

"चल गागुन्दा तहसीलदार को दिखा जाते हैं। अगर कही मेरी उलटी-सीधी रिपोर्ट हो गई तो नौकरी मे धब्बा लग जाएगा।"

"मगर तू यह बता कि पिछले तीन दिनो से आया क्यू नही।" सुधाकर ने कहा—"मुझे मना नही करता तो मैं पहल ही मस्टररोल तैयार करवा देता।"

"क्या करता ? ऑफिस म ही फसा रहा। आबरा के लिए चून सुर्खी और मिट्टी के टडर थे।" दिनेश न कहा—" अभी फाइनल नही करूगा ता सप्लाई कब होगी। तुम्हारी कट ऑफ वाल की चुनाई कैसे शुरू करोगे ?"

बाते करत-करत दोना तहसीलदार साहब के यहा पहुच गए। साहब ने स्वागत किया। दिनेश ने सुधाकर का परिचय करवाया—"सुधाकर मेरा खास मित्र है। लेखक और समाजसेवक है। किसी भी तरह इस प्रोजेक्ट को पूरा करने के सकल्प के साथ इसे लाया हू। पेमट की कोई विशेष बात नही है। मिस्त्री के रट पच्चीस रुपया रोज म ही फिक्स कर दगे। राशन व अन्य व्यवस्था मै करूगा ही। बहुत ही काबिल आदमी है।'

'हा इनकी काबिलियत का म भी कायल हो गया।" तहसीलदार ने कहना

शुरू किया—''दिनेश जी 'मस्टरोल तैयार नही है।' के नाम पर एक बार मेरे भी होश उड़ गए थे। मगर जो स्पष्टीकरण इन्होंने दिया प्लान सुनकर रिलीफ कलेक्टर आश्वस्त हो गए। प्रसन्न भी बहुत थे।''

''अच्छा सर! वे कुछ कह रहे थे। क्या ?''

हा।''

''क्या सर ?'' दिनेश की उत्सुकता बढ़ी। अन्दर कुछ चिंता भी अकुरित होती दिखी।

''आते समय रास्ते म कह रहे थे—ये आदमी कुछ कर गुजरगा। एक दिन आवरा वाध इस तहसील का नाम ऊचा करगा।'' तहसीलदार न कहा।

दिनश ने मस्टरराल दिखाए। तहसीलदार ने पलट कर दखे।

सुधाकर ने पूछा—''आपन वैसे ही बनाए हैं न जैसा आपने आपका वर्किंग पैटर्न बताया था।''

''यस सर। ठीक वैसे ही। इस से ही मैं प्राग्रेस दिखा पाऊगा।'' सुधाकर ने कहा।

''ठीक ह। दिनेश जी आप कल ही सुबह की हाजिरी के बाद कलेक्टर साहब को दिखा दना।'' तहसीलदार ने मुड़कर सुधाकर से कहा—''और सुधाकर जी म आपसे बहुत प्रभावित हू। वास्तव म आज आपके जैसे निष्ठावान पुरुषा की हर जगह माग है। अगर एक-एक प्रोजेक्ट पर आपके जैसे प्रतिभावान व्यक्ति जुड़ जाय ता हम लाग ग्रामीण विकास के लक्ष्य आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। विकास के मद म समाज के अन्तिम व्यक्ति तक उसका हिस्सा पूरा पहुचेगा। भई अनजाने म आपक साथ अपनाए मरे सख्त व्यवहार के लिए क्षमा करना।''

''नही सर। ऐसी कोई बात नही ह। आप अपनी जगह एकदम सही थे।'' सुधाकर के स्वर म वही विनम्रता थी—' आप भी क्या कर ? राहत के नाम पर लोग मजूदरा की हाजिरिया खाकर अपनी जेबे भरने लगे हैं। सही और गलत को पहचानने का आपके पास कौन-सा बरोमीटर है ?''

''आपने सच कहा।'' तहसीलदार बोल पड़े।

''काम देखगे लोगा की रिपोर्ट सुनेगे तब ही तो जान पाएगे कि गलत और सही क्या ह।'' सुधाकर ने उत्तर दिया।

' अच्छा सर आज्ञा दीजिए।'' दिनेश ने कहा—''मुझे उदयपुर जाना है और इन्ह ओवरा। रात और अधेरा काफी हो गया है।''

और दोना आश्वस्त हो चल दिए।

दिनश तो प्राग्रेस से पहले ही प्रभावित है।

× × ×

सुबह के चार बजे हैं। ओवरा बाध जाग गया है। ट्रैक्टरा के शोर से सुधाकर की नींद उड़ गई है। गणावल से आए श्रमपूत अपनी ट्रॉली के ड्राइवर के साथ रवाना

हा गए हैं। दूर खदान म गेंती-फावड़ो की आवाज के साथ मजदूरो की आवाज आ रही हैं। दखते-ही-दखते ट्रॉली बाध क पट म आ जाएगी आर बारह हाथ उसे खाली करने म लग जाएग। देखत-ही-दखत ट्रॉली खाली हो जाएगी और फिर ट्रैक्टर घरघराता हुआ कुलाच भरता बार एरिया म पहुच जाएगा। फिर दूसरा, तीसरा और चौथा तथा अन्त म ग्यारहवा ट्रैक्टर आ पहुचगा और य मिट्टी की परत बिछात रहग ओवरा बाध के सान पर।

इस तरह शुरू हाता है आवरा बाध का गुड मार्निंग, यानी कि सुप्रभात। अभी साने के लिए जाता मद्धिम चन्द्रमा फीकी चादनी क साथ धार-धीर अस्ताचल की ओर बढ़ रहा है। आम क पड़ो के झुरमुट म छिपा कायला क कूकन क स्वर वातावरण को मधुर बना रहे हैं। बीच-बाच म भौंरा का गुजन भी सुनाई पड़ रहा है। हवा म हल्की-हल्की ठडक है। मगर जैस ही सूर्यदेव गुडमार्निंग करने आएंगे तो इस ठडक का अपहरण होते देर नहा लगगी। गणावत के श्रमपूत फिर ट्रॉली भरकर ले आए हैं। फावड़ स डाला खालने की आवाज आ रही हैं। डाला खुलत ही मिट्टी का धड़धड़ कर गिरना शुरू हा जाएगा। बची हुई मिट्टी को दा लेवर आजू-बाजू खाली करना शुरू कर देंगे और फिर बोर एरिया म दौड़ लगाएंगे। बीस मजदूरा का सुबह नौ बजते-बजत बीस ट्रिप पूरे करने हैं। नौ बजे फिर दूसरी लेवर आ जाएगी। अकाल राहत के इतिहास मे यह पहला कदम था जहा रात चार बजे से सुबह नौ बजे तक पहली पारी आर नौ बजे से शाम पाच बजे तक दूसरी पारी म काम हो रहा था। इस तरह ग्यारह ट्रैक्टरा स बाईस ट्रैक्टरा का काम हो रहा था। इस तरह दो सौ पचास लेवर सुबह नौ बजे तक काम समाप्त करक चली जाती थी। यह अभिनव प्रयाग सुधाकर क दिमाग की उपज थी। काम की प्रोग्रस दिन-दूनी रात-चौगुनी हो रही थी। इजीनियर दल कनिष्ठ अभियता से लेकर वरिष्ठ अभियता तक खुश थे। उन्ह आशा बध गई थी कि इस वर्ष ओवरा बाध अवश्य पूरा होगा। मगर यहा सौ प्रशसक हात हैं ता दो विराधी भी हाते हैं और फिर जब भी जिन लोगो की स्वार्थपूर्ति नही हा पाती व ही पहल दुश्मन 'नम्बर वन' हो जाते हैं। फिर पडित जी भी तो आवरा बाध की कुडली मे गतिराध ही गतिरोध लिखा गए थे।

एक दिन पचायत समिति क प्रधान साहब आ पहुचे। आते ही बोल—"अकाल राहत के कामो की मस्टररोल चैक करवाइए।"

मस्टररोल चैकिंग मे जब उस लेवर की हाजिरी का नम्बर आया जो सुबह काम करके जा चुके थे। प्रधान ने कहा—"कहा है लेवर ?"

"ये लेवर तो जा चुकी है। अपना काम निपटाकर।" सुधाकर ने कहा।

"जा चुका स मतलब ? काम तो नौ बजे शुरू हुआ है और अभी बजे हैं बारह।"

सुधाकर ने उत्तर दिया—'सर ये लेवर रात को चार बज आती है नौ बज

तक अपने ट्रिप पूरे कर चली जाती है।"

प्रधान जी को गणित समझ नहीं आई।

फिर पूछा—"अकाल राहत म रात को काम करवाने का कौन-सा नियम है ?"

"मुझे सही शिकायत मिली है। लवर कम हाजिरी अधिक है।"

सुधाकर को गुस्सा तो बहुत आया। मगर अपने को सयत कर शान्ति से उत्तर दिया—"सर, आप ठीक कह रह हैं कि अकाल राहत म रात को काम कराने का कोई नियम नहीं है।"

"फिर आप क्या कर रहे हैं ?"

"लेकिन हम इन्द्र भगवान को तो किसी नियम मे नहीं बाध सकते।"

"क्या कहना चाहते है आप ?"

"सुधाकर शर्मा।"

"हा, सुधाकर शर्मा।" प्रधान जी लपके—"इसका मतलब क्या है ?"

"अकाल राहत कार्य तीस जून तक जैसे हैं उस स्थिति म बन्द हो जाएगे। अगर बाध तब तक नाले के लेवल तक नहीं बधेगा, तो क्या होगा जानते हैं ?"

"मुझे समझा रहे हैं ?" प्रधान बिफर सुधाकर फिर भी शात था।

"नियम-कानून आप नहीं बदल सकते, सुधाकर जी।"

"सही कह रह हैं आप।" सुधाकर ने अब उनकी अह भरी रग पर उगली धर दी—"मालिक। आप चाहे तो काम बद करा देते हैं ?"

"हू।" प्रधान ने उस परीक्षा की आखो स देखा और तौला कि कैसे वार किया जाए ?

"मैं बताता हू। बाध मे पानी पूरा भरते ही ऊपर मिट्टी को काटते हुए वह बाध को फाड़ देगा। और बाध फूटते ही पूरा पानी ओबरा गाव को डुबा देगा।"

"आप किसे समझा रहे हैं।" प्रधान अपने आपको बचाते हुए वार कर बैठा।

"समझाने का जुरत मैं नहा करूगा, मालिक।" सुधाकर ने उसी नम्रता से कहा—"जान-माल और पशु-धन का कितना नुकसान होगा, इसके आकड़े तो आपको पचायत समिति मे होग ही। और फिर बाध हम किसके लिए बाध रह हैं ? सारे कायदे-कानूनो क बावजूद जो लाग समर्पित भाव से जुड़कर, अपनी रात के अन्तिम प्रहर की मीठी नींद का मोह छोडकर यहा इसलिए आ रह है कि इस बाध का पानी उनक लिए गगाजल की तरह पवित्र होगा। यह पानी उनक खेतो को नया जीवनदान देगा।"

प्रधान की पर्त भी धीर-धीरे बिखरने लगी। वह भी सोच रहा था कि अजब सुपरवाइजर है। हाथ ही नही धरने देता और हाथ धर भी दिया तो धीरे से मस्तक स लगा लेता है—ये स्साला अपनी चाल मे नही फसेगा। लगभग निर्णय दे दिया उनकी बुद्धि ने।

"आपकी बात ठीक है।" प्रधान जी ने कहा—"मगर रात को काम पूरा हो। इसकी निगरानी आप पूरी रखेंगे।"

"यह मेरी ड्यूटी है मालिक।"

"एक बात और ?"

"क्या मालिक ?"

"मैंने सुना है कि मिट्टी के साथ रेत भी आ रही है ?"

"सर सुनी-सुनाई बात कितने प्रतिशत सही होता है उसका अनुभव आपको अधिक होगा ही।" सुधाकर ने बात जारी रखा। "मेरा तो यहां निवेदन है कि एक दिन अचानक रात को पांच-छ के बीच आइए मिट्टी भी चैक कर लीजिए और मस्टररोल भी। बस आपका भेजा हुआ मेट रामसिंह ही रातपाली में आता है। उससे ही सच का पता लगा लीजिए।"

मेट रामसिंह सामने ही खड़ा सब सुन रहा था। सुधाकर ने पलटकर उससे कहा—"बोल रामसिंह ?"

"हां सर, काम ठीक और सही चल रहा है।" रामसिंह ने कहा—"बांध पर मिट्टी के साथ कहीं भी रेत हो तो आप खुद ही मुलाहिजा फरमा लें। रहा मस्टररोल की बात तो ये सब मेरी ही भरी हुई है।"

प्रधान जी ने अपने अनुयाइयों के साथ काम का निरीक्षण किया। मजदूरों से कुशलक्षेम पूछी। कुछ को उनके पेंडिंग कामों के लिए ऑफिस बुलवाया। जाते-जाते उन्होंने एक ओर एकान्त में ले जाकर खुश होकर कह गए—"सुधाकर जी। इसी होशियारी से काम करते रहिए। मजदूर आपकी बड़ी तारीफ करते हैं।"

'मगर, आपने जो सुना था "

"आपको गरीब परवर मानते हैं। आपमें भगवान का रूप देखते हैं। उसे बनाए रखिएगा। रही वह शिकायत की बात वो तो आपके काम की तारीफ बहुत सुनी थी। सो देखना चाहता था चला आया। शिकायतकर्ता को अब मुहतोड़ जवाब तो दे सकूंगा। आपकी मेहनत पर ही सारा प्रोजेक्ट निर्भर है।"

"जी आया हां इसीलिए हूं।" सुधाकर ने कहा—"इसे हर हालत में सफल करना ही है। आपको साफ कहूं, प्रधान जी मगर कभी-कभी ऐसी झूठी शिकायतों से मन मर जाता है।"

"हर अच्छे काम करने वाले के आलोचक तो बन ही जाते हैं।" प्रधानजी ने कहा—"परंतु काम करने वाले कभी आलोचना की परवाह नहीं किया करते। अच्छा चलता हूं। सरपंचों का एक मीटिंग है। सरकार से आने वाली नई योजनाओं की जानकारी देनी है। समय मिले तो कभी घर आइएगा।"

"जी कोशिश करूंगा।" सुधाकर ने उत्तर दिया।

प्रधान जी अपने लवाजमे के साथ लौट गए।

उस दिन की घटना सुधाकर को आज याद आ रही है। अगर प्रधान जी नाराज

हो जाते तो शायद ये रात पाली बन्द ही करनी पड़ती और रात पाली बन्द हो जाती तो दो सौ पचास मजदूरों को कहां खपाता ? बड़ा मुश्किल से तो दिनेश ने मजदूरों का जुगाड़ किया।

इन गणावल के मजदूरों को लाने में भी कितने पापड़ ठस बलने पड़े। गणावल यहां से पचास किलोमीटर दूर है। अरावली की सबसे ऊंची चोटी है जरगा पहाड़। जरगा के ढलान पर बसा है गणावल। चारों ओर पहाड़ ही पहाड़। ऐसा नहीं है कि गणावल में राहत कार्य नहीं चल रहा है। घर के बाहर ही चल रहा है। मगर दिनेश ने एक चेलैंज के रूप में ओबरा प्रोजेक्ट को लिया है। अपनी तहसील के उद्धार में दिनेश ने यह प्रोजेक्ट लेकर सिर पर विपदाओं का पहाड़ लाद दिया है। एक दिन वह एक बोझ कम करता है तो दूसरे दिन उसके कन्धों पर दूसरा बोझ बढ़ जाता है। उसी तरह जिस तरह यहां का किसान बेटी के ब्याह के कर्ज से मुक्त नहीं हो पाता है कि खर्चा आ जाता है गौने का। इस कर्ज से मुक्त होने लगता है कि खर्चा आ जाता है प्रथम प्रसव का। ऐसा ही कुछ भाग्य जुड़ा है ओबरा बांध का। एक समस्या के समाधान से पहले दूसरी समस्या का जन्म हो जाता है।

यहां की सबसे बड़ी लेबर प्रॉब्लम है। श्रमपूतों का अभाव। क्या वास्तव में ऐसा है ? अगर ऐसा ही होता तो राहत कार्य खोलने की आवश्यकता ही कहां थी ? ओबरा बांध का जन्म ही क्या होता ? जो बांध शुरू हुआ है वह समाप्त तो होगा ही। परंतु अकाल राहत में तो समय सीमा का निर्धारण है। बरसात जल्दी आई तो तीस जून तक। लेट हुई तो आखिरी तारीख पन्द्रह अगस्त तिरयासी। बन्द हो जाएंगे अकाल राहत कार्य और बंद हो जाएगा ओबरा बांध—एज इट ईज। जो जहां है वहीं बंद। बाद में विशेष परमीशन आए, वो बात अलग है। सरकार का ये चलान हैं अकाल से निपटने के लिए। कोई भी श्रमिक आदिवासी किसान भूख से नहीं मरे। बस इतनी ही तो बात है। सरकार पर भूख से मरने वालों का कलंक न लग जाय। बस इसी भागदौड़ में खुलते हैं अकाल राहत कार्य और शुरू होते हैं ऐसे ओबरा बांध।

मगर सब जगह बांध तो नहीं बंधते। सड़कों के आजू-बाजू डाली जाती है धूल। पहली बरसात के बहाव में लाखों करोड़ों की धूल बहकर चली जाती है। बरसात की कृपा हुई तो ठीक नहीं तो फिर शुरू हो जाएंगे अकाल राहत कार्य। बनाए जाएंगे अकाल राहत मंत्री। अखबारों में भाषण देते हुए फोटो छपेगी—"राज्य में किसी को भी भूख से मरने नहीं दिया जाएगा। हम सूखे से निपटने की व्यापक तैयारी कर रहे हैं। केन्द्र से कई हजार करोड़ रुपये राज्य ने मांगे हैं।"

फिर शुरू हो जाएंगे केन्द्रीय सर्वेक्षण के दौरे। कहां-कहां कितने-कितने काम खोलने आवश्यक हैं ? कारों और जीपों में गांव-गांव सदस्य अकाल की विभीषिका का आकलन करेंगे। राज्य के सचिव आंकड़ों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करेंगे और केन्द्रीय दल करेगा आंकड़ों में कतर-ब्यौंत। सारे आयोजन में लगाया जाएगा अपना-

"आपका बात ठीक है।" प्रधान जी ने कहा—"मगर रात को काम पूरा हो। इसकी निगरानी आप पूरी रखगे।"

"यह मेरी ड्यूटी है, मालिक।"

"एक बात और ?"

"क्या मालिक ?"

"मैने सुना है कि मिट्टी के साथ रत भा आ रही है ?"

"सर सुना-सुनाई बात कितने प्रतिशत सही हाती है, उसका अनुभव आपका अधिक होगा ही।" सुधाकर ने बात जारी रखी। "मेरा तो यही निवदन है कि एक दिन अचानक रात को पाच-छ क बीच आइए, मिट्टा भी चैक कर लाजिए और मस्टररोल भी। बस आपका भेजा हुआ मेट रामसिंह ही रातपाला म आता है। उससे ही सच का पता लगा लीजिए।"

मेट रामसिंह सामने ही खड़ा सब सुन रहा था। सुधाकर ने पलटकर उससे कहा—"बाल रामसिंह ?"

"हा सर काम ठीक और सही चल रहा है।" रामसिंह ने कहा—"बाध पर मिट्टी के साथ कही भी रेत हो तो आप खुद ही मुलाहिजा फरमा ल। रही मस्टरराल की बात, तो ये सब मेरी ही भरी हुई है।"

प्रधान जी न अपन अनुयाइयो के साथ काम का निरीक्षण किया। मजदूरा से कुशलक्षेम पूछी। कुछ को उनके पडिग कामा के लिए ऑफिस बुलवाया। जाते-जाते उन्हान एक ओर एकान्त म ले जाकर खुश हाकर कह गए—"सुधाकर जी। इसा हाशियारी से काम करते रहिए। मजदूर आपकी बड़ी तारीफ करते हैं।"

"मगर आपने जो सुना था "

'आपको गराब परवर मानते हैं। आपम भगवान का रूप देखते हैं। उसे बनाए रखिएगा। रही वह शिकायत की बात वा ता आपक काम की तारीफ बहुत सुनी था। सो देखना चाहता था चला आया। शिकायतकर्ता को अब मुहतोड़ जवाब तो द सकूगा। आपकी मेहनत पर ही सारा प्राजेक्ट निर्भर है।"

"जी आया ही इसीलिए हू।" सुधाकर ने कहा—"इसे हर हालत म सफल करना ही है। आपको साफ कहू, प्रधान जी मगर कभी-कभी ऐसी झूठी शिकायता से मन मर जाता है।"

"हर अच्छे काम करने वाले क आलोचक ता बन ही जाते हैं।' प्रधानजा ने कहा—"परतु काम करन वाले कभी आलोचना की परवाह नही किया करते। अच्छा चलता हू। सरपचो की एक मीटिंग है। सरकार से आने वाली नई योजनाओ की जानकारी देनी है। समय मिले तो कभी घर आइएगा।"

"जी कोशिश करूगा।" सुधाकर ने उत्तर दिया।

प्रधान जा अपने लवाजमे के साथ लौट गए।

उस दिन का घटना सुधाकर को आज याद आ रहा है। अगर प्रधान जी नाराज

हा जाते तो शायद ये रात पाली बन्द ही करनी पडती और रात पाली बन्द हा जाती ता दो सौ पचास मजदूरो का कहा खपाता ? बड़ी मुश्किल से तो दिनेश ने मजदूरो का जुगाड़ किया।

इन गणावल के मजदूरो को लाने म भी कितने पापड उसे बेलने पडे। गणावल यहा से पचास किलोमीटर दूर है। अरावली की सबसे ऊची चोटी है जरगा पहाड। जरगा के ढलान पर बसा है गणावल। चारो ओर पहाड़ ही पहाड़। ऐसा नही है कि गणावल म राहत कार्य नही चल रहा है। घर के बाहर ही चल रहा है। मगर दिनेश ने एक चलैंज के रूप मे ओबरा प्रोजेक्ट को लिया है। अपनी तहसील के उद्धार म दिनेश ने यह प्रोजेक्ट लेकर सिर पर विपदाआ का पहाड़ लाद दिया है। एक दिन वह एक बोझ कम करता है तो दूसरे दिन उसके कन्धा पर दूसरा बोझ बढ़ जाता है। उसी तरह जिस तरह यहा का किसान बेटी क ब्याह के कर्ज से मुक्त नहीं हो पाता है कि खर्चा आ जाता है गौने का। इस कर्ज से मुक्त होने लगता है कि खर्चा आ जाता है प्रथम प्रसव का। ऐसा ही कुछ भाग्य जुड़ा है ओबरा बाध का। एक समस्या के समाधान से पहले दूसरी समस्या का जन्म हो जाता है।

यहा का सबसे बडी लवर प्रॉब्लम है। श्रमपूता का अभाव। क्या वास्तव मे ऐसा है ? अगर ऐसा ही होता तो राहत कार्य खोलने की आवश्यकता ही कहा थी ? ओबरा बाध का जन्म ही क्यो होता ? जो बाध शुरू हुआ है वह समाप्त ता होगा ही। परतु अकाल राहत म तो समय सीमा का निर्धारण है। बरसात जल्दी आई तो तीस जून तक। लेट हुई तो आखिरी तारीख पन्द्रह अगस्त तिरयासी। बन्द हो जाएगे अकाल राहत कार्य और बद हो जाएगा ओबरा बाध— एज इट ईज। जो जहा है वहा वद। बाद म विशेश परमीशन आए वो बात अलग है। सरकार को ये चलाने हैं अकाल से निपटने के लिए। कोई भी श्रमिक आदिवासी किसान भूख से नहीं मरे। बस इतनी ही ता बात है। सरकार पर भूख से मरने वालो का कलक न लग जाय। बस इसी भागदौड़ म खुलते हैं अकाल राहत कार्य और शुरू होते हैं ऐसे ओबरा बाध।

मगर सब जगह बाध तो नही बधते। सडको के आजू-बाजू डाली जाती हे धूल। पहली बरसात के बहाव मे लाखो कराड़ो की धूल बहकर चली जाती है। बरसात की कृपा हुई तो ठीक नही तो फिर शुरू हो जाएगे अकाल राहत कार्य। बनाए जाएगे अकाल राहत मत्री। अखबारा म भाषण देते हुए फोटो छपगी— "राज्य म किसी को भी भूख से मरने नही दिया जाएगा। हम सूखे से निपटने की व्यापक तैयारी कर रहे हैं। केन्द्र से कई हजार करोड रुपय राज्य ने मागे हैं।"

फिर शुरू हो जाएगे केन्द्रीय सर्वेक्षण के दौरे। कहा-कहा कितने-कितने काम खोलने आवश्यक हैं ? कारा और जीपा म गाव-गाव सदस्य अकाल की विभीषिका का आकलन करगे। राज्य के सचिव आकड़ो को बढा-चढाकर पश करग और कन्द्रीय दल करेगा आकड़ो मे कतर-ब्यौंत। सारे आयोजन म लगाया जाएगा अपना-

अपना हिसाब किसको कितना पर्सेंटेज। अकाल राहत का एक गणित होता है— कहा किसक क्षत्र म, कैसा राहत कार्य हा सड़क हो या बावड़ी तालाब हो या बाध सब देखना होता है। राजनीति चप्पा-चप्पा घूमती है अकाल राहत के कम्पास लिए दूसरा होता हे अकाल राहत का अर्थशास्त्र। ऊपर से लेकर नीचे तक जन-नेता की जेब के साइज के हिसाब वाला अर्थशास्त्र और तरसती रह जाती हैं कभी-कभी मस्टरराल म भूखी-प्यासी आख रहे रह जाए पर इस बार राहत कार्य ता चले। मच मे अर्थशास्त्र सम्मत अकाल-भाषण चबाए-पचाए जाने हैं— गाव म किसी को भूखा नहा मरने दिया है इस उपलब्धि पर कमीशन खाने वालो की तालिया बजती हैं ओर उनक द्वारा ताली बजाई जाती दख सभा म बैठी हुई भोली जनता स्त्री-पुरुष-बच्च अपनी ताली दुहराते-दुहरात हाथो म पड़ी गठान भी सहलाते जाते हैं।

काम पूरे होने पर उद्घाटन क बडे-बड़े फोटो छपगे। मत्रियो के साथ नकली मुस्कराहटा म उस गाव के पच-सरपच व प्रधान खड़े होगे। दिनश जैस कनिष्ठ अभियता या बाध के मजदूरो के फोटा कभी नही छपेंगे। चिलचिलाती धूप म जिनका खून-पसीना बनकर बहता है। न कभी उन इजीनियर के छपेगे जिनके ज्ञान और विज्ञान से बनते हं ये बाध। ये बेचारे न घर म सुखी रहत हैं न दफ्तर मे, न साइट पर। घर की जिम्मेदारियो पर य कभी ध्यान नही दे पाते। हमेशा ही विरोध झेलते हैं गृहणियो का और साचते हं बाधा को बात। इनके सुख-दु ख की बात। इसक विपदाआ की बात। इसको पूरा करने की बात।

× × ×

इन बेचारो के पास एक ही ता नही है ओबरा बाध। इनके पास है बाधा की पूरी शृखला। कई-कई बाध। रावमादडा बाध केलथरा बाध, गुदाली बाध, दादिया एनीकट बूझ का नाका और भा न जान कइ-कइ बाध। भागते हं दिन-रात इसकी चिंता उसकी चिता। पराई चिता मे कर लेते हं अपना ब्लड प्रशर हाई। समय पर न खाना न चाय न सोना। पाल लने हैं कई-कई बीमारिया एक साथ। रात को सोते-सोते भी प्लान बनात रहगे। कही भेजना हे सीमट तो कहीं भेजनी है सुर्खी। कहा डीजल तो कही चूना। कही भेजनी ह लवर के खाने क लिए मक्की।

"सुनो जा गेहू खतम होने वाले हैं। बच्चे क स्कूल भी जाना है।" ऐसे मे बीवी कहती है—' आजकल मेरी तबायत भी ठीक नहा रहता है। और हा मेरे भाई की शादी को बीस दिन ही बचे है।"

"हू। ' आर दिनेश न लम्बी चुप्पी तान ली।

मन-ही-मन सोच का क्रम जारी है। रावमादडा हर हालत म चूना पहुचाना जरूरा है। नाले म पाना कभी भी आ सकता हं। एक्स ई एन साहब भी विजिट के लिए कह रहे थ। कभी भी जा सकत हैं। हर हालात म एक-दो दिन म चुनाई शुरू हो जानी चाहिए। बकार मे साहब की डाट खानी पड़ जाएगी। डाट नही भी पड़े तो क्या वसे भी काम ता करना ही है।

पत्नी ने ध्यान भग करते हुए कहा—"सुनो जी मैने आपसे कुछ कहा था।"

"हा, हा, सुना लिया। सामन्ट कल पहुच जाएगा।" दिनेश सोच की री म कह बैठा।

"सीमन्ट से कोठिया बनती हैं राटिया नहा।" पत्नी ने कहा—"मैंने हुजूर गहू क लिए कहा था।"

"रेखा रानी! मरी बात जरा ध्यान से सुनो।" दिनेश ने उत्तर दिया—"देवीसिंह को भेजकर गेहू मगवा लेना। मुन्ने के स्कूल तुम हो आना।"

"मेरी तबीयत तो "

"डॉ गुप्ता का फोन कर दूगा। तुम्ह चेक करके दवा दे देगा। भाइ की शादी म बीस दिन पड़े हैं। अभी से सोचकर क्या दुबली हा रही हो ?"

"ये सब काम मुझे ही करन हैं ता आपसे कहती ही क्या।" रेखा न कहा—"वैसे भी आपको मेरी परवाह ही कहा है ?"

"अरे भई, तुम ता नाराज हो गईं। पढ़ी-लिखी बीवी का यही तो लाभ है। अपने काम खुद कर ले और पति की प्रॉब्लम को सोल्व कर।" दिनेश न खुश करने के लिए कहा—"अगर कहीं साहब नाराज हो गए तो जानती हो मरा पूरा करियर मेरी सी आर मेरी प्रमाशन सब धरे ही रह जाएगे।"

"आपका मेरी तो कोई चिंता नही है ? फिर क्यो लाए ब्याह के ?"

"तुम नाराज हो गईं तो तुम्हे मनाना आसान है। तीन महीने की ही ता बात है। फिर सब शिमला चलगे और श्रीमती रेखारानी शर्मा के लिए एक शानदार बनारसी साडी लाई जाएगी। क्यो ? अब तो खुश ?"

"बहलाना तो कोई आपस सीखे हुजूर!" रेखा न उलाहना देते हुए कहा—"जरा बताएग। इस साल-भर म कितना साड़िया लाकर दा ?"

"क्या कहा ? इस पूरे साल म एक भी साड़ी नही आई ?" दिनश ने कहा— 'गुलाबी ओरगडी वाली साड़ी कहा से आई बताने का कष्ट करेगी ?"

"ओरगडी नही।" रेखा ने स्पष्ट किया—"शैफून की है।"

"अरे भई शैफून की होगी। इससे क्या फर्क पड़ता है ?"

"वाह फर्क क्या नही पडता! एक चीज आउट ऑफ फैशन हो तो किस काम की ?"

"मान लिया कि फर्क पड़ता है, मगर साडी ता आई है इस साल।"

"आप कब लाए ? वह तो मैं खुद लाई हू।'

"तुम और मैं क्या अलग-अलग हं ? तुम ले आईं ता क्या फर्क पड़ा ?"

"हो सकता है आपके लिए फर्क नही पड़ता हो मगर मेरे लिए तो पड़ता ही है। बता सकते हैं परसो क्या होना है ? '

"याद क्या नहीं है ? मुझे क्या तुम इतना भुलक्कड मानती हा ?" दिनेश ने तपाक से उत्तर दिया।

"परसो गुरुवार पाच मई है। एक्स ई एन साहब का दौरा है। हो सकता है ए सी साहब भी आ जाए। अब तक वे एक भी बार साइट पर नहा आए हैं।"

"और कुछ ?" रेखा ने याद दिलाने के स्वर मे पूछा।

दिनेश—"और और तो ओबरा पर तगारिया और गतिया भेजनी हैं।"

"जानते हैं आपकी ए गतिया दिन-रात मेरा सर खादती रहता हैं। भूल थी पापा की। बड़ी साध थी मन म बेटी को इजीनियर से ब्याहगे। बेटी खूब घूमेगी-फिरेगी ऐश करेगी।" रेखा ने माथे पर हाथ रखकर कहा—"अच्छा होता, बेचारे किसी लेक्चरर-प्रोफेसर से ब्याही होती। वह शाम 5 बजे तक तो घर आ ही जाता। वह चाय नाश्ता तैयार रखती। चाय पर सूर-तुलसी-कालिदास पर चर्चा करती। लोगफेलो कीट्स की कविताए सुनती।"

"देखो होनी को तो कोई टाल सकता नहा। मनुष्य क भाग्य मे जो लिखा होता है वही बध जाता है।" सान्त्वनावश दिनेश ने हार के स्वर मे कहा—"आपकी विवाह रेखा मे तो दिनेश ही लिखा था न। खैर अब पहेलिया मत बुझाओ और साफ-साफ बनाओ कि परसो क्या है ?"

"इतनी जल्दी नही। एक क्लू और देती हू। वह हमारे जीवन की महान घटना है।"

"महान घटना ?" वह चौंका।

"हा मेरे लिए तो महान ही है। उस दिन आपसे पहली मुलाकात थी।"

"ओह! हमारे विवाह की वर्षगाठ हे। इतना घुमा-फिरा कर कहने की क्या आवश्यकता थी। साफ-साफ पहले ही बता देती।" दिनेश ने रेखा की हथेली पर अपनी हथेली का दबाव देत हुए कहा—"आपकी साडी परसो ही पक्की। अब तो खुश।"

इतने मे जीप के ड्राइवर ने हॉर्न बजाया। कनिष्ठ अभियता साहब यह जा, वह जा— श्रीमती जी को गृहस्थी की तमाम उलझनो म उलझाकर।

हमे क्या लेना-देना इन अभियन्ताआ की घरेलू जिन्दगी से। कनिष्ठ से सहायक व मुख्य अभियन्ताआ तक सबकी गृहस्थी के तनाव इसी तरह के हैं।

हम तो करे अपने ओबरा बाध की बात।

दूर-दूर स आए हैं ए श्रमपूत बाध को पूरा करने। कुछ लेवर प्रतिदिन दस-दस किलोमीटर दूर स पैदल चलकर आते हैं। सुवह सात बजे घर से निकलगे नौ बजे काम पर। फिर पाच बजे छूटगे तो पहुचगे सात बजे रात तक अपने घर। क्या करे पापी पेट को भाड़ा तो देना होगा ? इस भट्ठी की आग को ता सुबह-शाम जलाए ही रखना होगा वरना हाथ-पाव कभी भी हड़ताल कर दगे।

हा आबरा म होने लगी है भोर सुधाकर के आगे-पीछे।

अब दिन उगने लगा हैं। आसमान म लाली फैलने लगी है। गणावल के मजदूर गति स काम कर रह ह। तीसरा ट्रिप आ गया है। ऑफिस की चौकी से दिख रहा

है ओबरा गाव। सो रहा है ओबरा और सो रही ह यहा की जनता। सो रहे हैं यहा के वार्ड पच और सो रहे हैं यहा के सरपच। सभी सो रहे हैं। किसी का चिंता नहीं है आबरा बाध की।

जानते हैं सभी— यह सरकार का काम है। आज नहीं तो कल पूरा हो जाएगा। इस साल नहीं तो अगले साल सही। अगले साल नहीं हुआ तो उससे अगले साल हो जाएगा। जल्दी भी क्या है ? क्या फर्क पड़ता है ? जहा चौदह वर्ष निकल गए वहा दो-चार साल और निकल जाएंगे। कौन-सा दुबला हो जाएगा ओबरा बाध और कौन-सा दुबला हो जाएगा ओबरा गाव। कौन-से दुबले हो जाएंगे पच और सरपच। कौन-से दुबले हो जाएंगे, पनजीवा, जेतिंगबा मानाबा गुलाबा और देवा, केशा।

ऐसी बात नहीं है। ये ही लोग तो बाध की चिन्ता म दिन-रात दुबला रहे हैं। इन्होंने अपना श्रम देने म कभी कोताही नहीं की। इन्हीं लोगो के श्रम से कुए से पानी की निर्मल धार बही है। इन्हीं के श्रम से कुए के इजन दिन-रात धकधकाते रहते हैं। पानी की टकी लबालब भरी रहती है। बोर एरिया की तराई और बाध की कुटाई म यही पानी मददगार है।

गाव मे अब भी ऐसे कई लोग हैं, जिन्होंने बाध की प्रोग्रेस अब तक नहीं देखी है। यहा चाहे जितनी मजदूरो की समस्या क्या नहीं हो, इसका उनके स्वास्थ्य पर काई असर नहीं पड़ने वाला। बरसात मे डाली हुई मिट्टी चाहे बहकर क्यो नही चली जाए ? पाच-दस रुपया के महुए बीनेंगे और फिर मस्ती। क्या लेना-देना इन्हे ओबरा बाध से ? चिंता करे सुपरवाइजर सुधाकर शर्मा। सोचत रहे जगदीश जी। खोदते रहें डेंसिटी के गड्ढे और नापते रहे इसकी घुटाई और निकालते रह इसका गीलापन। चिंता करें ट्रैक्टर वाले खूमसिंह। निकालते रहे मिट्टी के ट्रिपो की प्रोग्रेस। कुटाई करते रहें रतन और मनोहर के रोलर।

ये सब अपनी-अपनी गृहस्थिया छोड़कर आ जुटे हैं ओबरा बाध पर। सकल्प और आस्था के साथ। ओबरा बाध चाहे सहयोग दे या न दे हम तो इसे बाधेगे। कई बार पैसे देने पर भी गाव वाले दूध नहीं देगे। कोई गिला-शिकवा नहीं। काली चाय ही पीएंगे और ओबरा बाधेगे। मुह अधेरे से ही मुनव्वर और रतन के भारी भरकम विदेशी ट्रैक्टरा से बधे रोलर मिट्टी के ढेरो को दाबकर पैदा करेगे घनत्व। जगदीश शर्मा के नापने के लिए। जगदीश शर्मा दिन-भर पूरे बाध की विभिन्न जगहो, कभी अप स्ट्रीम कभी कट ऑफ वाल के पास। अबोध श्रमिक देखते रहगे चुपचाप।

खड्डे मे से मिट्टी निकालकर रेत क्यो भरते हैं ? उन्हे क्या पता— रिलेटिव डेसिटी यानी आपेक्षिक घनत्व का बाध की मजबूती से क्या लेना-देना जो उनके बाबूजी सुधाकर जी रात को पानी का पाइप लिए मिट्टी की तराई खुद अपने हाथो से क्यो करते हैं ? कहीं अगर मिट्टी पूरी गीली नहीं हुई और तले मे पोचा और

सूखापन रह गया आर बाध से पानी रिसने लगेगा ता ? वे ता बस इतना-भर जानना चाहते हैं कि इस पखवाड़े का मस्टरराल कितनी रेट का चढ़ा है ? जो काम करेगा रेट तो मागेगा ही। हक है उसका काम और दाम का तो सदिया का रिश्ता है जा सदियो तक चलता रहेगा।

× × ×

सुधाकर की नाद तो चार तीस पर उड़ गई। मगर दस मिनट उदू-उदू की साच म ही बीत गए। सुवह-ही-सुवह रजाई की गरमी को छोड़ पाना अच्छा-अच्छा के बस की बात नही है। जो छोडकर उठ जाते हैं सच्चे कर्मवीर वही हैं। जो जागत हे सा पावत है। हम लक्ष्य कब पाएगे यह ता बाद म पता चलेगा परतु इस युग म यह भी सच है कि जो सोवत है वो पावत है। शायद आपको मरी बात का यकीन नही हागा। मैं बताता हू, अभी सो रहा है ओबरा गाव। सा रहे हैं इसके लोग। सा रहे हं इसके भाग्य-विधाता। एक दिन इसी तरह सोते-साते पता चलेगा कि बाध पूरा हो गया। बाध देखने लोग भागे चले आएगे। सबको उस दिन फुर्सत मिल जाएगी और लगेगे सब दौड़ाने अपनी-अपनी कल्पना के घोड़े।

एक बार दिन म जरूर आएग बाध पर। पता लगाएगे इसकी नहरे कब तक चालू हो जाएगी ? मेरा कितना बीघे खेत पिएगा ? आधे म बोऊगा अदरक और आधे मे बोऊगा टमाटर। करीब सात हजार का होगा अदरक और तीन हजार के टमाटर! हो गए पूरे हजार दस!! दस हजार मेरे और तीस हजार सरकार देगी लोन। चालीस हजार की खरीदूगा भैंस। खालूगा डेरी फार्म। दूध जाएगा उदयपुर और दूध की कमाई से खरीदूगा बस। बस चलेगी ओबरा से रावलिया-सेमटाल-गोगुन्दा और सुखेर का नाका। शाम तब हजार का गल्ला तो आ ही जाएगा। नाम रखूगा खखड़ चदाणा बस सर्विस। नही-नही यह नाम तो लम्बा हो जाएगा। चदाणा बस सर्विस ही काफी है या फिर खरवड बस सर्विस। अरे! भूल ही गया। सबसे बढ़िया रहगा माताजी के नाम पर— आशापुरा बस सर्विस। और सोच-ही-सोच म धीरे-से सुधाकर को पूछगा—'बाबूजी ओबरा बाध की नहरे कब तक चल जाएगी ?'

सुधाकर उसको जबाब दगा—'अभी तो बाध पूरा हुआ है। पता नही पानी कब बरसेगा ? जब बरसेगा तब चलगी नहर। अभी कैसे चलेगी नहरे ? किससे चलगी नहर ?'

और वह आदमी कब भीड़ मे गायब हो जाएगा पता भी नही चलेगा।

इसी तरह हर आदमी दोडाएगा, अपनी-अपनी सोच के घोडे। कुलाच भरेंगे बेलगाम घोड़े और बिना कलक्यूलेटर के ही लगाएंगे लाखा के हिसाब। करेगे हजार को गुणा कई हजार से। गुणनफल से खरीदेगे बसे। बनाएगे खपरैल क मकान को तीन मजिला। करग बिना ब्याही बेटिया का ब्याह। न्यौतेगे सारे गाव का। लाग कहगे कि— देखा कल तक खाने को दाणे नही थे आर आज क्या निराले ठाट हैं ? बाप मरा था तब काठ-खापण क पैसे भी मैंने दिए थे और

आज देखो। भाग्य बदलते कब देर लगती है ? सब प्रभु की लीला है।'

मगर कोई नहीं कहेगा कि यह आबरा बाध की लीला है। काई नही कहेगा कि यह ओबरा बाध की नहरो की लीला है। काई कहेगा कि यह सुधाकर के श्रम और सूझ की लीला है। कोई नही कहेगा कि यह गुलाब के तप्त लोहे को कूट-कूट कर गेतियो को तीखी बनाने की लीला है। कोई नही कहेगा कि यह दीपा, अम्बूड़ा और पूरा की तराई की लीला है। यह सच है कि सब परभू की लीला हे। अगर परभू सुबह चार बजे उठकर इजन नही चलाए। पानी की टकी नही भरे, सुबह चार बज तराई करने वाले नही आए तो कैसे बनेगा ओबरा बाध ? सूखे धूल से तो नहीं बनता ओवरा बाध। ओबरा बाध बनता है आदमी क श्रम से। आदमी की लगन से। बधता है ता खमाणा लुहार के बनाए गती-फावड़ा और कुदाला स। बधता है वीरा और लाला की घण की चोटो से। लाल तपते लोहे पर पड़ती तड़ातड़ चाटो से।

बेकार की झूठी शिकायता स तो नही बधेगा बाध। झूठी शिकायतो से मन मर जाता है। आस्था घट जाती है उससे। आदमी के अन्दर जो काम करने की एक लौ होती है बुझ जाता है—बेकार की बाता से। सुधाकर कई बार सोचता है कि इन सब बाता को दिमाग से झटक दे। जिन नेताआ को बाध बधने का श्रेय नही मिलगा वे तो दिन-रात झूठ प्रपच और षड्यत्रा का सूत्रपात करगे ही। झूठ लाछन लगाएगे ही। किमी भी तरह बाध पूरा ही न हो।

काई भी कुछ कह हम क्या लेना-देना ? सच तो सच ही रहेगा। काम तो खुद मुह से बालेगा। हम तो कर अपना काम। पूरा कर अपना ओबरा बाध। हा, अभी तो अपना ही है, जब तक पूरा न हो और जिस दिन पूरा हा जाएगा सौप जाएग ओबरा गाव का। सौप दग आबरा क सरपच जी और पचो का। व सभालेंग इसे सिंचाई विभाग के सहयोग से। काई पिलाए अपने टमाटर काई बाए अदरक और कोइ निपजाए अन्न। अमरसिंह पिलाएगा गन्नो का और खाले अमर शुगर मिल। कोई करे अपनी लालकी और ऊदकी का ब्याह। हम क्या लेना-देना इन ब्याहो से ? भूल जाएगे सब। बिछुड जाएगा यह कारवा। टूट जाएगा यह बिना रिश्तो का घर। जगदीश चला जाएगा कही किसी अनजान शहर मे मिल म नाकरी करने। परभू अपने गाव बडूदिया खती करने चला जाएगा या फिर कोई दूसरा नया ओवरा बाध बाधने चला जाएगा दूर ओर सुधाकर अपना लक्ष्य पूरा कर फिर अपन कार्य म लीन हो जाएगा।

इस गोगुन्दा तहसील की विचित्र महिमा है। जिधर नजर डालो आम ओर महुए के सैकडो पेड़ फलते-फूलत नजर आएगे। पता नही कब किसने किसके लिए बोए ? पेड़ बोना किसी बडे पुण्य कर्म से कम नही है। स्वार्थरहित परमार्थ की भावना कितनी पवित्र और महान है। कहते हैं कि जो आम बोता है वह चख नही पाता है। पर बोएगा वह जनकल्याण के लिए। खाएगा तो आदमी ही या अबोले

पक्षी। कोई भी हो, खाएगा जीव ही और इसी मानवीय मूल्यो पर जीवित
धरती। जिन्दा ह ओवरा क वणा और कुशाल, जिन्दा ह खमा और आशा
पनजी और दोला। कई-कई और लाग भी। य लाग कहा जाए ? ये ता या
ह यही जीवन की गाड़ी सघर्षो म खीचन रहग। बाकी ऑफिस की चौकी
लाग बिछुड़ जाएगे। सुधाकर कैस भुला पाएगा जगदीश का प्यार से खाना
प्रतीक्षा करना। परभू का खाना बनाकर घटा इन्तजार म खुद भूखे रहना।

"बाबूजी रोटी तैयार है लगा दू ?" परभू बार-बार कहेगा।

सुधाकर कहेगा—"ठैर र परभू। थोड़ा डीजल एकाउन्ट दख लू।"

और फिर बाबूजी डीजल के आकड़ा की टकी म गात लगाते रहगे
जाएगे कि खाना भी खाना है।

फिर नंदेशमा क कनावा आवाज दग—"साब हाकम, भाजन अरागल
वेई जाएगा।"

सुधाकर कहता है—"बस थोडा-सा काम और। आज की डेली की
का फर्क निकाल लू।"

और मस्टररोल के आकड़ा की दुनिया म बाबूजी मट बेलदार और
क घराव म फस जाएगे। कभी चार कुली बढ़ जाएगी तो चार बेलदार घट
यह घटा-बढ़ी का खेल काफी देर तक चलता रहेगा।

"क्यो लखा कितनी टोटल आई है तेरी ?"

"साब होकम, मेरी टोटल दा सौ साठ। और आपकी ?"

"मेरी दो सौ छप्पन। चार मजदूर औरते कहा गई रे ?"

"गईं तो कही नही साब हाकम साइट पर हा हागी मेरी मटगिरी मे आ
तक काई गायब नही हुआ होकम।"

लखमा मेट सजीदगी से जबाव देता है। और सुधाकर उसके भोलपन पर
हस पड़ेगा। कहेगा—

"अरे! मैं भी जानता हू, गए कही नही हैं। साइट पर ही कर रह हैं
मगर मस्टररोल के आकड़ा मे तो मिलने चाहिए न ? ला मुझे दे मस्टररोल।
छ + छ + तरह टाटल है चालीस। ले ये मिली तेरी एक कुली। इसकी
होती हे उनचालीस समझा ? अब बची तेरी तीन कुली। अभी ढूढता हू।"

सुधाकर फिर जोडे चक करेगा। तब तक कानजी बा के धीरज का ब
जाएगा आर फिर कहेगे—"साब आप रोटी तो जीम लो। मैं ढूढ दूगा बाक
पीछे कर लेना यह काम।"

लखमा उठेगा सब मस्टररोल समेट लेगा और बोर एरिया मे चैकिंग पर
जाएगा।

फिर सुधाकर उठेगा—"माई डीयर परभू। रोडा खाना तैयार है ?"

परभू—"साब तीन दाण गरम कीधो पाछो गरम कर दू ?"

"तूने खाया ?"
"साब होकम, आप जीम लो पैला ?"
"जगदीश, तुमने खाया ?"
"नही सर।"
न जाने कौन-से रिश्ता से जुड़े है ये लोग। सुधाकर की प्रतीक्षा म भूखे बैठे रहेग। भला साब, भूखे ही काम मे लगे ह तो वे केसे खा सकते हैं ?
"जगदीश! समय पर खाना तो खा लिया करा। क्या करत हा मेरा इन्तजार ? फिर आपको वार-बार डेसिटी भी ता लनी पडती है। आज कितनी बार ली है ?" सुधाकर ने पूछा।
जगदीश ने उत्तर दिया—"तीन बार।"
"तीन से कुछ नही होगा। और लो भई और लो। पाच-छ बार तो होनी चाहिए।" सुधाकर ने पूछा—"डेन्सिटी आ ता रही हे न बराबर ?"
जगदीश ने कहा—"आज नही आई है। मुन्नबर गया है पाया कम्पलाट करने।"
"खाना खाया मुन्नबर ने ?" सबकी चिन्ता है सुधाकर को।
"हा होकम, खाना जिमा दिया।" परभू ने कहा।
"अरे दवा बा, पाणी लाओ। हाथ धोने है।"
"लाया होकम!" दवा बा आ खड़ा हुआ पानी लेकर—"हजूर हाथ धोवे।"
देवा सुधाकर क हाथ धुलवाता है। "देवा बा मैं आज नहाया कि नही ? याद ही नही आ रहा।" सुधाकर ने पूछा।
"हुजूर नहाया हा। महादेव जी री पूजा कीधी हाकम।" देवा तर्क देता है।
"अरे! कल नहाया होऊगा।"
"आज हाकम, आज। सच्ची-सच्ची!"
तव तक परभू खाना लगा देता है। सुधाकर शुरू करता है। इसी बीच बोर एरिया से एक आदमी शिकायत लेकर आता है।
"साब हाकम नई पानी वाली भेजिए।"
"वहा किसकी ड्यूटी है ?"
"वाकू। केशा।"
"नही साब वह ता बाध पर कट ऑफ वाल पर पिला रही हे।"
"हू। टीपू। वेणा कहा है ?"
"वह तो पिला ही रही है। मगर एक पानी वाली दो सौ लेवर को कब तक पिलाएगी ?"
"कनीराम जी और उनकी बेटी लेरी कहा है ?"
"पता नही साब, हाकम। बार एरिया मे तो नही है।"
"कना बा यह व्यवस्था रोज आप देख लिया करो। अभी इन दाना को जहा भी हा पकड़ कर बोर एरिया मे भेजिए। फिर मुझ रिपोर्ट कीजिए।"

तब तक काला-कलूटा सरपच लम्बे-लम्बे बाला का झुरमुट उलझाए, तल स सने चीकट कपड़े वाला जिसका आधा पजा कभी एक्सीडेन्ट मे कट गया था, आ खडा हुआ।

"साब होकम। वाटर पम्प की फ्लाच नही खुल रही है। खूब जार लगाया तो भी नही खुली।"

"कैसे काम चलगा रामा ? वोर एरिया हर हालत म आज गाला करना ही है। मजदूर शिकायत कर रहे थे। मिट्टी खादने म उनक हाथ मे छाले पड गए। अगर आज मिट्टी गीली नही हुई ता कल से मजदूर नही आएग। यहा नही खुलती है तो गागुन्दा जाओ। अभी खुलवाओ। आज हर हालत म पम्प चलना चाहिए।"

परभू ने कहा—"साब होकम खाना ?"

"सबने खा लिया ?" एक वार फिर सुधाकर ने पूछा।

"नही हाकम, आप खाए फिर।" परभू ने उत्तर दिया।

"हम सब काम वाल लोग ह। कल से लच टाइम म खाना खाकर अपनी-अपनी ड्यूटी पर पहुचना। कोई मेरा इन्तजार नही करगा।"

मगर कहन भर से क्या होता है ? राज का वही क्रम। एक बजे खाना बनना प्रारभ होता है। निपटते-निपटत तीन बज ही जात हैं। रोज वही भाग-दौड। सबके बाद मे ही आता है खाने का नम्बर। कनाबा राज साचत हैं कि साब क साथ खान बंठू। घर की लाई सब्जी परोसू। पर इतजार की भी एक सीमा होती है। थक-हार कर रसोड म बैठ अपना टिफिन खोल खाना शुरू कर देते हैं। आज दिन तक साथ खाने का योग ही नहा बठा। शायद बाध पूरा हा फिर बन यह योग। परतु फिर यहा कोई क्यू रहेगा भला ? याग कस बनगा ? हर व्यक्ति अपना-अपनी सुविधा से चला जाएगा। कोई खाकडी से बस पकडेगा। काई ट्रक्टर वाला के साथ निकल जाएगा। कोई विभाग की जीप आई ता उसम चला जाएगा।

नही जाएगे तो दवा आर केशा। साक्षी रहेंगे इस बाध की कहानी के और फिर जब कोई पूछेगा—"कशा बा वह बाध कब शुरू हुआ था ? खतम कब हुआ ? कौन थे इसके कनिष्ठ उप व मुख्य अभियता। कान थ इसक मिस्त्री ? कौन थे इसके सुपरवाइजर ?"

कशा बा अपन यादा की पिटारी खालग आर एक-एक पछी उस यादा के पिंजड़े स उड़ाना शुरू करगे— 'साब हाकम या बात है सन् चम्मोतर या पिच्चातर की और कहानी शुरू हो जाएगी ओबरा बाध की।"

× × ×

अभी आवरा बाध शाति से सो रहा है। परतु ओवरा बाध भला कसे सा सकता है। इसक सभा सजग प्रहरी जाग चुक हैं। परभू राम-राम करक इजन चलाने चला गया है। ना बज पहल पानी कुए स निकल जाना चाहिए वरना कुए की खुदाई वाल खुदाई कैसे करग ? जगदाश काली चाय का गारा-गारा गिलास रख गए हैं।

सुधाकर रोज सुबह चाय के साथ ओबरा बाध की कहानी की अगली-पिछली कडिया लिखने बैठ जाता हे। जीवन क ये शाश्वत अनुभव कहा मिलेगे। ये जीवत चरित्र कहा से लाएगा।

कल्पना के बनाए पात्र कब तक सजीव रह पाएगे ? उनका खाखला व्यक्तित्व साबुन के झाग के बुलबुले-मा बाहर से रगीन तो लग सकता है, मगर कितना क्षण-भगुर है। नही, वह इन निकट-से जाने-पहचाने परखे पात्रो को छोड नकली दुनिया म क्यू जाएगा ?

इतने मे कुछ देर बाद ट्रैक्टर वाले खूमजी गोरी चाय का गिलास भिजवा देते हैं। जब तक गिलास मे चाय चलेगी तब तक सुधाकर लिखता रहगा। इसी बीच विभाग की ट्रक पन्द्रह सौ लीटर डीजल लेकर आ गई। उदयपुर मे बैठे इसक निर्माण नियत्रक वही से चिंता करते है ओबरा बाध की। समय पर डाजल नही पहुच तो पानी के पम्प शात रहेग। ट्रैक्टर गतिहान हो जाएगे। सार कार्यकलाप का लकवा मार जाएगा।

परसो शाम ढलते-ढलते आए थे अधिशापा अभियता साहब।

आप पूछगे नाम ? ता नाम म क्या रखा है, कुछ भी रख लाजिए। महत्त्वपूर्ण है व्यक्ति का काम।

जीप सीधी नीचे बाध के पेटे मे ही ले गए। हम लोग भी नीचे पहुचे।

इस तरह आना कहलाती ही सडन चेकिग।

''पाया कैसा चल रहा हे ?''

''मिट्टी की कुटाई कैसे चल रही हे ?''

''कैसे चल रहा है काम ?''

''आने की न कोई पूर्व सूचना न भनक न सही समय।''

''पाच बजे के बाद दफ्तर से निकले और दिन ढलते-ढलते आ गए ओबरा बाध।''

''जब हमारा काम चुस्त-दुरुस्त हा ता डरन का कहा जरूरत ? हम किस-किस से चिता करे ? हम तो बाधे अपना आवरा बाध।''

वैसे जिस दिन नियत कार्यक्रम के अनुसार विजिट हाती है तब बात ही कुछ और होती है। उस दिन कनिष्ठ अभियता को चैन कहा ? सुबह ही-सुबह भागे चले आएगे। साहब कब तक पहुचग ? चाय-नाश्ता कहा लग ? लच कहा करग ? अगर एक ही बाध की विजिट है ता सारी तैयारिया एक हा जगह पर कद्रित हा जाएगी और यदि तीन-तीन बाधा का निरीक्षण है तो तैयारिया भी फैल जाएगी। उस दिन किसा को चैन नहा होगा। सबक मुह पर एक ही शब्द हागा—''आज एक्स-ई एन साहब का विजिट है। ध्यान रखना भाई।''

उस दिन केशा बा अपनी औजारो की कोठारी छोड़कर कहा नही जाएग। क्या पता अधिशासी अभियता साहब क्या माग बैठ ? केशा बा की कोठरी पर

दिखे ताला और पुकार मचे केशा बा की। "क्या केशा बा को देखा है ?"

"क्या काम है ?"

"बड़े साहब लाइनिंग के लिए रस्सी माग रहे हैं।"

तब तक दूसरा आएगा—"रस्सी जल्दी चाहिए साहब मगवा रहे हैं।"

केशा बा की जोर-शोर से खोज होगी।

अन्त म पता चला—केशा बा तो कोठरी के पीछे ही बैठे थे।

तब तक एक आएगा—"खमाणा कहा है ?"

"क्यो ? क्या चाहिए ?"

"साब खूँटिया मगवा रह हैं।"

"खमाणा तो बोर एरिया म गर्दन लटकाए फावड़ा म फाड़िया फिट करने गया है।"

तब तक कनिष्ठ और सहायक भाग आएँगे—"क्या बात है इतने से काम मे इती देर क्यो लगा देत हो ?"

"साहब खमाणा लोहार तो यहा नहीं है।"

"कहा मर जाते हैं ये लोग ? काम के समय ? पता नही एक्स ई एन साहब आए हैं ?"

"वह तो बोर एरिया म फावड़ो को दुरस्त करन गया है। अभी आता ही होगा।"

"ठीक है जल्दी लेकर आना।"

फिर फीता मगवाया जाएगा।

सामने रखा हुआ फीता भी नजर नही आएगा।

"अरे! तुम्हे फीता लाने म बरस लग गए! बडे साब नाराज हो रहे हैं।"

कनिष्ठ अभियता गुस्से मे झिड़कगे—"देवला! मैं तुझे टायर के नीचे दे दूगा।"

"जसी रावली मर्जी, होकम।"

"तू आजकल बड़ा सुस्त हो गया है। इतनी देर मे फीता नही ढूढ़ सका ? क्या करते रहते हो तुम लोग ? ये ऑफिस है। बनिए की दुकान समझ रखा है इस ?"

फिर भी फीता मिल जाएगा। खमाणा भी मिल जाएगा। केशा बा भी वही होगे। काम रोज की तरह वैसे ही चल रहा होगा। मगर एक अफसरी हव्व के कारण सब गड़बडा जाएगा।

सुबह से ही धूम मचेगी—"देखो काम ठीक से करना। आज एक्स ई एन साहब आ रहे हैं।"

सवाल यह है कि काम आज ही क्या ठीक चलना चाहिए ? काम तो रोज ही ठीक चलना चाहिए। काम ठीक नही चलेगा तो बाध फूट जाएगा।

रोज की चिता म सुधाकर दुबलाता जा रहा है। काम की चिंता म कनिष्ठ व सहायक अभियता भी भागते रहेगे दिन-रात।

एक्स ई एन साहव पूरे डिवीजन के दौरे करेग। हर जगह की भिन-भिन्न समस्याए। सुबह उठते ही साइट के लिए भागने की तैयारी।

नाश्ता किया तो ठीक, नही तो आगे कहीं देखा जाएगा।

रात घर पहुचे तो ठीक नही तो नाइट हॉल्ट साइट पर ही होगा।

कनिष्ठ और सहायक अभियता की भाग-दौड़ देखते बनती है।

इसका इण्डट कटवाना है उसका इण्डट कटवाना है।

यहा रेत भेजनी है। वहा चूना भेजना है।

एक दिन सहायक अभियता आखिर कह बैठे—"ओवरसीयर साहब। हमने बेकार म बैठे-बैठाए हेडॅक मोल ले लिया। आज तक रिलीफ म इतना बड़ा अर्दन डेम न बना है और न कोई बनाने का रोग पालेगा। सच कहता हू, अगर आपकी जन्म-भूमि की तहसील नहीं होती तो हम भी इतना इटरेस्ट नही ले पाते।

कनिष्ठ अभियन्ता—"सर, मुझे यह सब पता था। एसा हाना ही है। हम भी कितन बरसा तक इस अधूरे बाध की कछुआचाल के साथ कदमताल करते रहेगे और वैसे मरा मित्र सुधाकर यहा जमकर बैठने की हा नहीं करता तो मैं भी रिस्क नही उठाता।"

सहायक अभियन्ता—"रियली सुधाकर इज ए गुड एसेट फोर अस। इसके मैनेजमट स ता लगता ही नहीं है कि यह उसका पहला अनुभव है। लगता है जैसे कई-कई प्रोजेक्ट्स से काम पड़ा हा। रिलीफ मे और रातपाली मे काम ? जिसे कहता हू कि आबरा पर रात चार बज से लेवर आ जाती है कोई मानने को ही तैयार नहीं होता। पता नही कौन-सी सम्मोहिनी शक्ति स मजदूरा के दिलो मे उतर गया है। बस मुझे तो दिन-रात एक ही चिंता है एचीवमट ऑफ इट्स गोल। बाध हर हालत मे पूरा होना।"

"हो जाएगा सर। पूरा कर लेगे इसे।" कनिष्ठ अभियता ने आश्वस्त किया।

सहायक अभियता ने पूछा—"कैसे कर लगे ? लेवर तो बढ़ ही नही रही है। ठकेदार ए सी स मिला था। ट्रैक्टर बन्द करने की धमकी दे रहा था। कुछ करो शर्मा। कुछ करा।"

"सर, गुन्दाली से लेवर ने आने को कहा है। गणावल की आ ही गई है। चालीस-पचास नादेशमा से आ जाएगी। दादिए के परथा मेट ने कहा है कि कल चूनिए के साथ पचास लेवर पहुच जाएगी।" इधर उस कनिष्ठ अभियता ने अपनी प्रोग्रेस बताई।

इसी बीच लकमा भागा-भागा आया—"साब होकम ने ओबरा की ड्राइग मागी है।"

शर्माजी अपना लाल बस्ता खोलते हैं। ओबरा की फाइल ढूढ़ते हैं।

फाइल होते हुए भी नही मिलेगी। फाइल मिलेगी तो ड्राइंग नहीं मिलेगी। घबराहट भय। फिर फाइल भी मिल जाएगी, ड्राइंग भी मिल जाएगी, सब ठीक हो जाएगा।

एक्स ई एन साहब आकर कहगे—"शर्मा, युवर वर्क इज वेरी स्लो। वी हेव नो टाइम। अगर आपकी यही स्पीड रहा तो कहता हू, बधा फूट जाएगा। आज तक का प्रोग्रेस स आगे हम बीस हजार घन फीट मिट्टी और चाहिए। इसके लिए हम कम-से-कम दो महीने तो चाहिए ही। जम जाओ शर्मा, जम जाओ ओवरा पर। बाकी छोटे-मोटे कामो की चिंता छोड़ो। दिस इज आवर प्रेस्टीजीयश प्रोजेक्ट। दिल्ली तक की निगाह म हे ये अभूतपूर्व प्रोजक्ट। कल स डेरे यही डाल दो।"

"यस सर। वैसे मं प्रतिदिन एक विजिट तो करता ही हू सर।" कनिष्ठ अभियता ने उत्तर दिया—"वैसे सुधाकर ने सारे काम को ठीक ढग से मेनैज कर दिया है।"

"ठीक है हम लोग सुधाकर के ऋणि हैं कि वह अपना महत्वपूर्ण समय बिना किसी स्वार्थ के हमे दे रहा है। उसे उसकी कार्यक्षमता के अनुरूप आर्थिक मदद भी तो नहीं कर सकते। हमारे हाथ बधे हैं।" एक्स ई एन ने कहा—"सुधाकर मेनेजमेंट पोइंट ऑफ व्यू से परफेक्ट हैं। परतु टैक्नीकल वे आफीशियल डिसीजन्स तो आपको ही लेने होगे। आप खुद ही सोच लीजिए। बाध पूरा नहा हुआ तो आपकी सी आर ?"

अन्दर-ही-अन्दर सहम गए अभियता द्वय। सी आर रूपी धमकी का तुरुप का इक्का हर बड अफसर के पास छोटे अफसरो क लिए रहता है। पता नही कौन कब किसकी सी आर बिगाड दे। अफसरो का तुरुप का इक्का रहता है मत्रियो के पास। मत्रियो को सड़क पर लाने का इक्का होता है जनता क पास। पता नही जनता अगले चुनाव मे किस चिह्न पर ठप्पा मार दे। जो आज सत्ता की कुर्सियो पर बैठे हैं व कल सडक पर नजर आएगे और जो आज गुमनामी म है कल अखबारो की सुर्खियो म होगे। इसलिए मिनिस्टर भी जनता से सहमे-सहमे रहते है। हाथ जोडकर नकली मुस्कराहट म अग्रिम दन्त पक्तियो दिखाते हुए मिमियाते रहेगे। वे भी अफसरो से यही कहते हैं—"ठीक से काम करो भइ ठीक स।"

ठीक से काम हो तभी तो खुलते है अकाल राहत कार्य। बनते हैं ओवरा बाध।

एक्स ई एन साहब जाते-जाते फिर पूछते है—"मि सुधाकर शर्मा आपको कोई प्रॉब्लम तो नही है ?"

'विशेष तो कुछ नही है।" सुधाकर ने विनम्रता से कहा—मेन प्रॉब्लम दूर-दूर से आने वाली लेबर को लाने और छोडने का है। अगर लाने-ले जाने की व्यवस्था नही करते हैं तो इतनी दूर से पैदल आने पर इनकी कार्य क्षमता थकान की वजह से घट जाती है। वाहन म यहा तक आने पर ये फ्रैश रहेगे। काम फास्ट करेंगे।'

"यू आर वरी करेक्ट। इतन महत्त्वपूर्ण बिन्दु पर हमारा ध्यान ही नही गया।" अधिशासी अभियता सुधाकर के तर्क से प्रभावित हुए।

"ले जान और लान की व्यवस्था स जो लेवर इतनी दूर पैदल आने के डर से नही आ रही है वह भी बढ़ जाएगी। हम हमारी कम लेवर होने की समस्या से भी छुटकारा पा जाएगे।" सुधाकर ने अपना विचार व्यक्त किया।

"गुड! यू आर एबसोल्यूटली राइट। मैं आपकी बात से पूर्णतया सहमत हू।"

सुधाकर ने अपनी समस्या समझाई—"बीस को छोड़ना पड़ता है रावमादड़ा चालीस को झुझारपुरा गरासियो का छोड़ना पड़ता है सूरण व एटो का खेत और रावलिया क किशन मेट क पचास।"

एक्स ई एन ने कहा—"ठीक है मैं कल ही डिपार्टमट का ट्रक भिजवा देता हू। आप तो कस कर काम कीजिए। आपकी अब तक की प्रोग्रेस से उम्मीद बधी है कि बाध पूरा हो जाएगा।"

"बस मं कोशिश कर रहा हू, साहब।"

"हम आपकी लगन और निष्ठा का ही भरोसा है।"

"यह भरोसा टूटेगा नही सर।" सुधाकर न कहा—"मैं आपको विश्वास दिलाता हू।"

फिर साहब ऑफिस म ऊपर आए। ड्राइग पर सजेशन देने लगे। तब तक चौकी का रसोईदार कम पम्प ड्राइवर परभू कहता हं कान मे—"शक्कर नही है साहब को चाय पिलानी है।"

जगदीश जी हड़बड़ाहट मे गाव म भागने की तैयारी करते हैं।

सुधाकर धीरे स कहता है—"ट्रैक्टर वाले खूमजी से उधार ले आओ। कुछ नही हो तो पापड़ ही सेक लाना।"

और सडन चेकिंग की विजिट म अधिशासी अभियता साहब गरम चाय के साथ पापड़ का स्वाद लते हैं।

बड़े सीधे मिलनसार व्यवहार कुशल और काम के प्रति सजग। अभिमान तो छू ही नही गया। काई अफसरी रूआब व फैल-फितूर देखे ही नहीं। मजदूरो से भी अपनत्व स बात करगे। मजदूर एक बार बात करते ही निहाल हो जाएगा। यही तो मानवीय मूल्यो का सबसे बड़ा गुण है। भला कितने लोगा के भाग्य म लिखा हे यह।

जिस दिन निर्धारित विजिट पर आएगे उस दिन खातिरदारी दूसरे ही रूप म होगी। उस दिन बेचारे सूखे पापडो की क्या बिसात जो प्लेट म नजर ही आ जाए ? उस दिन कनिष्ठ अभियता जी टोकरिया भरकर सामान लाएग। अगूर चीकू एप्पल, नारगी। बिस्किट्स की पूरी शृखला होगी। खारे मीठे नमकीन क्रीमयुक्त। नमकीन के विभिन्न प्रकार होगे। कम मिर्च वाली तीखी बीकानेरी लहसुन वाली, मीठी आदि। मगर आज दूर-दूर तक इनका नामो-निशान कहा ? सडन चेकिंग

याना कि आवस्मिक निरीक्षण। सरपराइज्ड विजिट। बाध क कम्प ऑफिस म कौन-कान ह। ? कौन इस अरण्य म सजग पहरा दे रा ह ? कौन ह इसके साधक ? इसकी साधना स ही ता बनेगा आवरा बाध।

× × ×

बड साहब न लकमा मट से पूछा—"आज का डली कितनी है मट साव ?"

' दा सौ छियालीस, हाकम।" लकमा न तपाक से उत्तर दिया।

"लकमा, अगर तुम लयर तीन सौ कर दा ता बाध बरसात आने स पहले बन जाएगा।" अधिशासी अभियता साहब ने कहा—"लकमा तू चाह ता तर नाम का पत्थर लगवा दू।"

"घणी रूपाली बात ह हाकम। तान सौ ता मैं कल हा कर दूगा।"

लकमा क स्वर म आत्मविश्वास था।

सुधाकर ने कहा—"हम लोग कल लेवर क लिए कई जगह गए थ सर।"

"आप कहा मत जाइए बाध छाड़कर। आपक ही भरास ता है आवरा बाध। गैती-फावड़-तगारिया की कमी हो ता बाल दीजिए कल हा भिजवा दूगा।"

"जरूरत हुई ता कहलवा दूगा, सर।" सुधाकर ने कहा।

"हा याद आया डेंसिटी के लिए नया यत्र आया ह।" साहब न कहा—"उसम मिट्टी खादने की झझट नही है। एक साथ पूरा कार हा बाहर निकल आता ह। कल ही भिजवा दूगा।"

सुधाकर न कहा—"ठीक है सर। खाना बनवा रहा हू। आज यही खाकर जाइएगा।"

साहब ने मना करते हुए कहा—"आज नही। फिर किसी दिन सही। घर पर भी फान करके नही आया। ऑफिस से सीधा मन हुआ तो यहा चला आया। सच पूछो तो यहा का अच्छा काम दखकर बार-बार यहा आने का मन करता है।"

"यह तो आपकी नज़्रे इनायत है, साहब।" सुधाकर ने विनम्रता स कहा।

अधिशासी अभियता ने उत्तर को नजरन्दाज करते हुए सुधाकर के कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा—"लगे रहा। आपका महनत पर भगवान का भी दया आएगी ही। अच्छा भई चलते हैं। देवाजी केशाजी सुधाकर साहब तुम्हारे भरोसे हैं। रात मे इन्हे कभी अकेल छोड़कर चले मत जाना।"

"ऐसी गलती कभी नही होगी, साब। सुधाकर साज तो हमारे लिए देवता हैं।" देवा ने कहा।

"सर आज खातिरदारी कुछ नही हो पाई। सूखे पापड़ ही ।"

"अरे सुधाकर जी। महत्त्व खाने का नही है काम का है। अगर आप यहा मेरी नमकीन और मिठाइयो से भरपूर खातिरदारी करते और काम का यहा कबाडा होता ता मिठाइया भी सच मानिए मिट्टी की लगती। काम की प्रोग्रेस देखकर पापड़ भी किसी पकवान से कम नहीं है।"

"लेकिन साहब यह अच्छा नहीं लगता है।"

"और फिर गोगुन्दा से छ किलोमीटर दूर इस जंगल में आप कर भी क्या सकते हैं ? सच मानिए जिस दिन मुझे पता लगा कि यह प्रोजेक्ट आप संभाल रहे हैं। मुझे लगा कि वास्तव में आबरावासियों का भाग्य पलटने वाला है। उनके अच्छे दिन अब आने में देर नहीं है।"

"प्रयत्न करना हमारा काम है। फल देना प्रभु के हाथ।" सुधाकर ने कहा— "मैं तो गीता के इसी कर्मवाद में आस्था रखता हूं।"

"गीता के कर्मवाद के सामने विश्व के सभी वाद फैले हैं।" साहब ने पूछा— "मैंने सुना है कि आप आबरा बांध के क्रियाकलापों को लेकर उपन्यास की रचना भी कर रहे हैं।"

"हां, सर! यहां आकर मुझे इन आदिवासियों को निकट से जानने-समझने का मौका मिला है। कई भ्रान्तियां दूर हुई हैं। कई नई बातों को सीखने का अवसर मिला है। सर भूख, गरीबी और अकाल से लड़नेवाली इनकी जिजीविषा देखकर दंग रह जाता हूं। इतने घोर शोषण और संघर्ष के बाद भी ये लोग किस तरह जीवित हैं, कमाल की बात है। भूख की लड़ाई बनिए का शोषण पंचायत की शतरंजी चालें, झूठे मुकदमों की भरमार अशिक्षा की मार क्या-क्या नहीं झेल रहा है यह आदि-मानव। शाम को घर लौटते समय गाते गाते हुए इनका स्वर लहरी सुनेंगे तो आपको लगेगा ही नहीं कि यह हाड़-मास का कमजोर पुतला कितने-कितने मोर्चों पर लड़ रहा है ?"

"बहुत निकट से देखा है आपने इन लोगों की जिंदगी को। सच कह रहा हूं, ये गांव वाले "

"सर, न इसका कोई भविष्य है और न उसकी इसे कोई चिंता। बस आज काम मिलना चाहिए। आज की रोटी पक्की। कल की चिंता कल। सही मायने में अपरिग्रह का पाठ इसने पढ़ा है। संत लोग जिन्हें अपरिग्रह का पाठ पढ़ाते हैं, सबसे ज्यादा परिग्रह उन्हीं लोगों में है। निराश होना तो इस मानव ने सीखा ही नहीं। इसे अपनी मेहनत और दो हाथों का भरोसा है।"

सुधाकर ने एकदम बोलना रोककर कहा— "निकलिए सर, आपको काफी देर हो जाएगी। इन बातों और इस ज्ञान का तो कोई अन्त नहीं है।"

"आप कुछ कह रहे थे न इन ग्रामवासियों के विषय में ?

"यहीं आकर सही मायने में मैंने भूख के दर्शन किए हैं और भूख के दर्शनशास्त्र को समझा है। सुधाकर ने कहा— "वातानुकूलित कमरों में बैठकर राष्ट्र की नीतिनिर्धारण करने वाले इस गणित को कैसे समझ सकते हैं ? उनसे ज्यादा तो आप जानते हैं। आप फील्ड के आदमी हैं निकटता से इन्हें देखा है।"

"वास्तव में आपने बहुत कुछ जाना है। लिखिए जब उपन्यास पूरा हो जाए तो बताइएगा।" फिर हंसते हुए कहा— "भाई सुधाकर। अब तो आपसे भी डरकर

रहना होगा। कभी किसी घटना मे मेरे लिए ऐसा-वैसा लिख दिया ता ।"

"ऐसी बात नही है, सर! आप जैसे गुणीजन की कौन कद्र नही करगा ? आपके चक सपोर्ट स हा ता हम लोग सफल होगे। इस सारी सफलता का सेहरा आपके ही तो सर होगा।"

"ठीक हे, मगर जब तक नीव सुदृढ नही हा ता मंजिल कैसे मजबूत बनेगी ? आप लोग नीव के पत्थर हं। मुझे सब पता है। आप फरवरी से लेकर आज मई तक की धूप म दिन-रात तप रहे हैं। आपके पसीने की बूदो से यह बाध निर्मित हो रहा है।"

एक्स ई एन का कथन जारी था।

"धूप ने आपके गारे रग को चाट, काली श्याही पोत दी। आपकी कमर का घेरा छोटा हो गया है। वजन घटा है। आप भी तो अपने घर आराम से सो सकते थे। कौन-सा लालच यहा खीच लाया ? केवल मात्र पच्चीस रुपये रोज ? क्या होते हं पच्चीस रुपये। दिन-भर के चाय-पान का खर्चा ? वा भी न जाने एडवान्स के नाम पर कितन-कितने भूख से विवश मजदूरो म बाट दिए हैं ? क्या कभी एक से भी वापस काटे हैं ? आपके रसोड़े क भडारे म राज कितन-कितने जीम जाते हैं मुझे सब पता है। आपने अब तक क्या किसी एक से भी रोटिया के पैसे मागे हैं ?

"मरी क्या बिसात जो किसी को खिला सकू।" सुधाकर ने अत्यन्त विनम्रता से कहा—"अपना-अपना भाग्य है। दाने-दाने पर लिखा हे। खाने वाले का नाम। ऊपर वाल का करना है सबका इन्तजाम।"

"गुड नाइट। ओ के चलता हू।"

"गुडनाइट सर। ध्यान से जाइएगा। रात का सफर है।"

उस दिन सुधाकर की आस्था बढ गई जिस दिन ठिगने कद की काली साड़ी पहने लाठी का टेका देते-देते राडी नन्दराम बाध पर पहुची। वह सुधाकर को ढूढते-ढूढत वहा आ पहुची—"बाबूजी राम राम।"

'राम-राम, मा सा। कई हुकूम है ?" सुधाकर ने पूछा।

"बाबूजी मारो भी नामा लखो।"

सुधाकर ऊपर स नीचे तक बुढ़िया मा को देखता है। साठ-सत्तर की होगी ही। झुर्रीदार चेहरा। आखा म बरसा के अनुभव की छाप।

सुधाकर पूछता ह—"इस उम्र मे कैसे काम करोगी मा ? क्या काम करोगी मा ?"

"बाबूजी आपरो घणो नाम हुय्यो। भगवान आपरी उमर लम्बी कर। आपरी दया छावे।' रुकते-रुकत रोडी मा बोलती है—"आप जो कैवदेगा वो ही करूगी।"

सुधाकर— 'आपरे घर म काई ता जवान वेगा ? अणी ऊमर मे आपने क्यू आवणो पड्यो ?'

"म्हारी, होकरे बटो है। राद्या नी दे खावान। जात री बामण ता हू, पण मागवा मे शरम आवे।" आख से झलकता पानी राकते बूढ़ी बोली—"गाव रा लोगा आपरी घणी तारीफ की दी। दयावान हा। नाम लिख देगा तो गुजारा रा पया मलगा।"

सुधाकर को लगा कि व्यथा क आसुआ की बाढ़ अब टूटने वाली है। सुधाकर से आगे पूछन की हिम्मत ही नही हुई बस कहा—"नीच जाकर मिट्टी म से घास व पत्थर बीनना।"

"घणी-घणी मरबानी होकम। दन भर पाव मनखा मे म्हारा दन खूट जाएगा।"

राड़ी-नन्दराम सकड़ा आशाप दती हुई वहा स चली गइ।

सरकार न यह ता नियम बना दिया कि साठ साल से ऊपर वालो को काम मत दा। मगर क्या कभी साचा कि जिसका कोई सरपरस्त न हो वो बसहारा जाए ता कहा जाए। किसस मागे रोटी ? कौन देगा उन्ह राटी ? सारा विश्व राटी का सवाल हल करन म लगा है, मगर आज तक उत्तर काई नहीं खाज पाया। इन्हीं प्रश्ना मे उलझता-सुलझता रहता है। सुधाकर ओवरा बाध के किनार बनी झापड़ी क आग बैठा।

तब स निरतर राड़ी मा काम पर आ रही है। हर-पल निष्ठा स काम करती नजर आ जाएगी। कभी इस ट्रैक्टर के आग कभी उस ट्रैक्टर के पीछे। कभी दा-दो ट्रैक्टरा क बीच। पकड़ेगी पत्थर को खाचगी घास को। वह जानती है ये बाध म रह जाएग ता बाध कमजार हो जाएगा। घास सडकर रास्ता बना देगा। पानी उस रास्ते बाहर निकल जाएगा—"यही डर है रोड़ी मा को।"

रोड़ी मा के इसी डर इसी आस्था, इसी श्रम स बधगा यह बाध। और भी कई लाग जुड़े हैं इस बाध की कहानी से।

सुधाकर का अब तक ऐसा एक भा व्यक्ति नही मिला जो इस वजह से आ रहा हा कि इस बाध की नहर उसके खेत म जाएगी इसलिए इसक निर्माण स जुड़ा हू। इससे क्या फर्क पड़ता है। बाध तो फिर भी पूरा होगा ही। ओबरा के ब्राह्मण और राजपूत बहुत कम आते है काम पर। उन्ह मजदूरी करना हान काम लगता है। चाहे आर्थिक दृष्टि से कमजार क्या नही हो मजदूरी करने नही आएग।

× × ×

सुधाकर की नींद ट्रैक्टर के शोर स उड गई घड़ी देखी, अरे! अभी तो दा ही बजे हं। कहा जा रहा है ? क्यो जा रहा है यह ट्रैक्टर। किसका है ? कई सारे सवाल एक साथ उग आए। फिर बाहर निकला तो पता चला की खूम जी का ट्रैक्टर है। गणावल के लाग दो बजे से सुबह सात बजे तक काम खतम कर देना चाहत हैं। सात से नौ ट्रैक्टर को भी रेस्ट मिल जाएगा और ड्राइवर को भी दा घटा आराम मिल जाएगा। उस तो फिर नौ से पाच ट्रैक्टर चलाना ही है। जब एक ट्रैक्टर दो का काम करेगा तो ग्यारह करेंगे बाईस का। इसी गणित से होगा काम। इसी गणित

स बनेगा आवरा बाध।

आवरा बाध की जन्म कुडली म ग्रह-नक्षत्र बहुत ही आड़े-टेढ़े ही पड़े हैं। शनि-राहू-मगल की वक्र दृष्टि है। पूरा नही होन दगे बाध। आप लाख कोशिश कर ल कि काम निरन्तर अबाध गति से करत चल। तब भी पूरा कभी नहीं होगा। हर दिन एक नई मुसीबत खड़ी होना मामूली बात है।

जब लवर बढ नही रही थी या बढने नही दी जा रही थी तो सहायक अभियता साहब ने सरपच को बुलवाया। पता नही सरपच के कितने और क्या पूर्वाग्रह थ कि बाध की प्रोग्रेस स उनका कोई सराकार नही था। सुधाकर को आए चार माह हो गए आज पहली बार सहायक अभियता साहब से बात करते देखा था। काफी देर तक दोनो उलझे रहे। सहायक अभियता का कहना था—"बीस आदमी-बास ट्रिप मिलेगे छ रुपये।"

सरपच का कहना था—"बीस आदमी—बीस ट्रीप मिलने चाहिए सात रुपये।"

"छ भी हम बड़ी मुश्किल से दे पाएगे। सरपच साहब आप बी एस आर दख लीजिए। बी एस आर सरकारी रेट की बाइबिल, कुरान और गीता है। जो रेट तय हो गई वह हो गई। चाह बाजार म वस्तुआ का दाम दुगुना ही क्या न हो ?"

सहायक अभियता बार-बार छ रुपयो पर अड़ा हुआ था। उसम भी उनका कहना था—"सरपच साहब। सारे काम की फैलावट करके देख ली है हमने। काम के हिसाब से छ बैठेगे नही बिठाने पड़ेगे।"

सरपच साहब का कहना था—"बीस ट्रिप पर ही सात कर दीजिए।"

सहायक अभियता ने सशोधन किया—"अच्छा पच्चीस ट्रिप करवा दीजिए सात मे।"

सरपच का तर्क था—"क्यू म्हाणा मनखा न मारो हो, साब। भूखा ने मारवा मे कई। आगा बीस पर ही सात राखो।"

सहायक अभियता ने अन्तिम तीर चलाया—"आखिर मुझे भी तो ऊपर पूछने वाले हैं ? उन्हे क्या जबाव दूगा। अच्छा आपकी भी नही मेरी भी नही, बाईस टिप पर सात रुपये दे देना। ये भी वसे बिठाने पडग। दूसरे काम इसके साथ जोडने पड़ग। सफाई करना पत्थर बानना, घास निकालना कैसे भी मैं सेट करूगा।"

सरपच ने विजयी मुस्कान से आश्वासन दिया— 'ठीक ह, एक तारीख से डेढ़ सौ लेवर बढ़ जाएगी।"

वे अपन सहयोगी जी-हुजूरिया के साथ कड़क राजपूती चाल से चल दिए। सत्ता का प्रभाव उनके व्यक्तित्व म झलक रहा था।

ओबरा की कुडली म लेवर प्रॉब्लम इतनी आसानी से कैसे हल हो जाती ? एक तारीख शाम को सहायक व कनिष्ठ अभियता इस उम्मीद म आए कि लेवर बैठ गई होगी। मगर हुआ एकदम उल्टा। बढने के बजाय घट गई। आकर देखा

चार ट्रैक्टर लेवर के अभाव म बन्द खड़े थे।

"क्या हुआ! सुधाकर जी ?" हैरान हा अभियता साहब ने पूछा—"ट्रैक्टर क्या खड़े हैं ?"

"नो लेवर।"

"मगर लवर तो आज बढनी चाहिए थी ? सरपच वायदा करक गए थे। बढ़ी नही तो घटनी भी तो "अभियन्ता ने हैरान होकर फिर कहा—"ऐसे हम कस बाध पूरा कर पाएग ? सुधाकर जी, आप ही बताइए—हुआ क्या है ?"

"सच सुनना चाहेग ?" सुधाकर ने पूछा।

आज सुधाकर की आवाज म थोड़ा ताप था।

दोना अभियताओ को समझते देर नही लगी।

"क्यो नहीं ? जो भी है, साफ-साफ कहिए।"

"शायद आपका विभाग भी नहीं चाहता है कि यह बाध पूरा हा।"

"आज आपको क्या हो गया है ?"

"पूरा नहीं करना होता तो आप जैसे व्यक्ति को यहा नही बैठाते!"

"केवल बैठान से क्या हाता है ? मैं सब सहन कर सकता हू मगर इन अकाल की मार झेलते लागा का शोषण नही देख सकता।"

"मैं आपका मतलब नही समझा।"

"मैं समझता हू। कल लेवर पेमेंट हुआ था।"

"यह तो मजदूरा की लिए खुशी की बात थी।"

"जानते हैं पेमेंट की रेट कितनी आई ? चार रुपया।"

"तो इस पेमट को कल न करवाते। बाद म करवाते।"

"यही दोगलापन सुधाकर से नहीं हो सकता।"

सुधाकर भभक पड़ा। "आपकी हेल्प का अर्थ यह तो नही कि इन निराह असहाय लोगों का गला कटने दू। क्या हाता ह चार रुपयो म। दिन-भर हाड़-तोड़ मेहनत करने के बाद चार रुपया मे घर की बीवी का ल जाकर क्या देगा ? आटा-नमक-मिर्च-तेल-प्याज-लहसुन ? चार रुपयो को कितना लम्बा करेगा ? परिवार के चार-चार प्राणिया की भूख की गणित म एक-एक रुपया ही तो पल्ल पड़ेगा। क्या एक रुपय मे एक आदमी का भूख का सवाल हल होगा ? इससे तो वो वन विभाग के या पी डब्ल्यू डी के काम पर क्यो नही जाएगा ? जहा काम कम, रेट दस रुपया।"

"आपका आक्राश अपनी जगह स्वाभाविक है सुधाकर।" सह अभियता ने स्पष्टीकरण किया—"यह मस्टररोल सालह से इकत्तीस मार्च का था। होली क दिन थे। ट्रैक्टर वाले भी छुट्टी पर गाव गए थे। लेवर भी कम थे। हाजरी भी किसी की छ -सात दिन से ज्यादा नहीं है। काम ही नहा बैठा ता क्या करते ? थोड़ी-सी हाजिरी ही तो है।"

"हाजिरी स फर्क नही पड़ता है सर।" सुधाकर का कहना था—"फर्क ड़ता है रेट से। लेवर को तो बस इस बात से मतलव है कि यह मस्टररोल किस ट का भरा। चार की रेट के चुकारे के बाद आपको उम्मीद है कि लेवर बढेगी ? ससे ज्यादा तो उसे बिल्डिंग वर्क मे मिल जाएगे। दस पद्रह रुपये एक टाइम की टी दिन म दो चाय। वो बनिए के मकान पर क्यो नही जाएगा ? ठीक है आस्था और विश्वास भी तव तक स्थिर रहते हैं जब तक पेट म रोटी हो। खाली पेट का कोई ईमान नहा होता। वह सौदा करेगा ही।"

सहायक अभियता ने सुधाकर को आश्वस्त किया—"मै आपकी बात समझ हा हू। देखिए मै कल ही उससे अगला मस्टरराल पाच की रेट का पमट करवा दूगा। उससे अगला छ की रेट का। और आज जो चालू हुआ है सात की रट का। फिर तो लेवर विश्वास करेगी।"

"विश्वास के बल पर ही ता ये टिके हुए हैं।" सुधाकर ने दु खमय स्वर मे कहा—"जिस दिन से मैं इस अनजान परिवार से जुडा हू, मेरा ही तो विश्वास है इन्हे। मेरी जुबान पर ही तो भरोसा है। आपके सामने की बात है उस दिन इन्होने क्या कहा था ? अगर सुधाकर जी कह दगे तो हम भरोसा कर लेगे। हम तो इनका ही विश्वास हे।"

"अच्छा भाई आपका ही विश्वास सही। हम ता हर हालत म बाध पूरा करना है। हम अभी चल रहे हें चौंतीस के लेवल पर।" अभियता साहब का कहना था—"और हमे पहुचना हे इकतालीस के लेवल पर। डंजर पॉइंट के बाहर।"

सारी दुनिया की आज यही समस्या है। डजरपॉइण्ट से बाहर सभी निकलना चाहत है। खतरे के बिन्दु से परे। आदमी हर पल खतरो म जी रहा है। क्या पता समय पर चुकारा न हो ? क्या पता जो रेट बता रहे हें नहा मिले ? इन्हे एकमात्र विश्वास है बाबूजी पर। बाबूजी ने कहा है ता बात ठीक है। कितना बडा विश्वास है इन पर।

लाग अपनी बीवी का भी विश्वास नही करगे छिपाएगे मन के भद। गाव क आदमी का भी विश्वास नही करेगे। नही करग सगे भाई पर परतु मानव मन का यह कितना अद्‌भुत खेल ह विश्वास कर लेगे बिना रिश्ते के अनजान बाबूजी पर। तीन महीना म ही कितनी अगाध श्रद्धा ओर विश्वास कर लिया हे सुधाकर पर। कसे हा गया है विश्वास ? क्या हो गया है विश्वास ? किस आस्था पर टिका हे इनका विश्वास ? कही-न-कही कुछ हे जो दिखता नही है। अनुभव किया जाता ह। मन और आत्मा एकाकार हा जाते हैं तब हम अनजाने पर विश्वास हो जाता हें। यही कुछ तो नही है आज आदमी क पास। इसी कमी से तो आज आदमी का मन दरिद्र आर क्षुद्र हा गया ह। इसी कुछ को पाने की लालसा म ही तो मानव तरस रहा है।

यह कुछ जो अनजान रिश्ता की डोरी म बाधता है उसी की तलाश म सत

महात्मा कन्दराओ म बैठकर तलाशते हैं। वह क्या है ? वह सब आदमिया मे क्या नही होता ? कही-न-कही कमी होगी। उसी को ढूढना हागा। आदमी को सही मायने म आदमी बनना होगा। प्रपच छल छद्म से परे। तब ही एक नये घर, नया परिवार, नई सृष्टि कर पाएगे हम। जिसका आधार होगा, प्रेम, सहानुभूति सहिष्णुता, हमदर्दी, विश्वास। जब ये हो जाएगा उस दिन जुड़ जाएगा आदमी। जुड़ जाएगे लाग। जुड जाएगा आवरा बाध।

× × ×

पेमेट ड क दिन बाहर स जुडे लाग एक-एक कर आएगे सुधाकर क पास। परभू आएगा—"साब होकम, म्हारा पया आपरे पास राखो। घरे जाऊगा जदी लूगा।"

जगदीश जी—"सर ये अपने पास रख लीजिए। शहर जाऊगा तब जरूरत पडेगी।"

दवीसिंह—"उदयपुर जाए तो मर घर पहुचा देना, होकम।"

देखते-ही-देखते सुधाकर के पास ढेरा रुपये इकट्ठ हो जाते हैं। दुनिया के सारे खेल इसी रुपये क खातिर हा रह है। दुनिया की धुरा है ये रुपया। गोल है इसलिए है कि लोग इसके चारो आर निरन्तर घूमत रह। कही इसका छार ही नहा नजर आए। रुपया खुद भी नाचता है आर इसके चाहने वाला का भी नचाता है। इसी के खातिर ता ये सब लाग वनवास भुगत रहे हैं।

कभी य रुपया रक्तस्नान करके आता है। कभी टबल के नीचे से आता है। कभी पिछली जब म छिपता है। कभी टबल की दराज म कद होता है। कभी पसीने म नहाकर आता है। जो पसीने मे नहाकर आता ह उसम ही पसान की गध गुलाब क इत्र से भी ज्यादा खुशबू देती है। वही रुपया मजदूर स बनिय के पास वहा स आगे फिर आगे स्वच्छन्द हाकर घूमता रहता है। वह रुपया आजाद है। उस कैद करने की किसी म हिम्मत नहा है। वह रुपया नबर एक है। दो नम्बर वाला जा बाबू अफसरा की दराज मे जन्म लेता है जो पीछे की जब और टेबल के नीचे स आता है वह चारो की तरह छिपता रहता है तो कभी उसे बनिए की तिजोरा या बंक लॉकर म कैद हा जाना पडता है। उसकी क्या मजाल जो स्वच्छन्द घूम सके ?

हम क्या लना-दना इन दा नम्बरी धन से। हमे तो पसीने की गध वाला रुपया ही प्यारा लगता हे आर ये अनजान लाग एक अनजान बाबूजी का महीने-भर क पसीन क माल को सौप देत है—एक विश्वास के साथ एक आस्था क साथ। शायद सदिया पहल इन बाबूजी से कही जुडे हुए थे जा आज इनकी आत्मा और मन बिना किसी शक-शुबह के विश्वास कर लते ह।

सुधाकर सहायक अभियता साहब स बात करते-करते कुछ ज्यादा ही उत्तेजित हो गया था। वह भी क्या करे ? सरकारी कानून तो कई कायदा से बधे हैं। राहत कार्यों के नियम हर जगह अलग-अलग तो नही हो सकते। पूरे राज्य म एक ही

नियम लागू होगा।

सुधाकर शाम होते ही आवरा गाव गया। जो काम पर आते थे उन्होंने और जो नहीं आते थे उन्होंने सम्मान आदर और स्नेह दिया। सुधाकर गाव की देवी मा आशापुरा के मदिर मे गया। फूल चढ़ाए। निर्विघ्न आवरा बाध पूरा होने की पाती मागी। मा ने पाती दे दी। वह खुशी-खुशी मदिर से बाहर आया। सुधाकर ने आकर गाव के चार पाच बड़े बुजुर्गों के पाव छुए। सभी चमत्कृत थे—"अरे! बाबूजी ने पाव छुए।"

देखते-देखते भीड़ जुटती गई। औरत घूघट की ओट मे बाध के बाबूजी को देख रही थी। जो काम पर आती थी वे दूसरी को उनके गुणों का बखान कर रही थी। उन्हें भी ऐसे बाबूजी के पास काम करने की प्रेरित कर रही थी।

अच्छी भीड़ जुट जाने पर सुधाकर को अपनी बात कहने का उपयुक्त समय लगा। उसने कहना शुरू किया—"आशापुरा मा की बड़ी तारीफ सुनी थी कि चमत्कारी हैं। जो मागते हैं देती हैं। मैं भी आज कुछ मागने चला आया। मा मेरी इच्छा पूरी करेगी या नहीं, ये तो मैं नहीं जानता। पर जो मागा है आपसे कुछ छिपाऊगा नही। मैंने मागा है बरसात होने के पहले यह बाध पूरा हो जाए। अगर नही हुआ और टूट गया तो जानते हैं क्या होगा ? बाध का पानी अभी जहा हम सब लोग बैठे हैं वही गाव डूब जाएगा। घरो मे पानी घुसकर तबाही मचा देगा। हम तो फिर भी दिन हुआ तो पहाड़िया पर चढ़कर अपनी जान बचा लेगे। लेकिन कभी सोचा है जो गाय-भैंस, बकरी-भेड, और जो आपकी रोजी-रोटी के साधन हैं उनका क्या होगा ? सब पानी के बहाव मे बेमौत मारे जाएगे। अगर यही पानी रात मे आया तो आप मे से कौन बचेगा ऊपर वाला ही तय करेगा।"

गाव वाले नि शब्द उसे सुन जा रहे थे। सुधाकर को भी लगा कि गाव वाले प्रभावित हैं तो आगे बोला—"अभी सबसे कम लेबर आपके गाव की आ रही है। जबकि सबसे ज्यादा यहा की होनी चाहिए। क्योंकि इस बाध का पानी सबसे ज्यादा आपके खेतो को मिलेगा। जो जमीन अभी बजर है उसमे आपकी फसल लहलहाएगी। मैं नही कहता कि आप गरीब हैं इसलिए काम पर आए। मैं नहीं कहता कि रुपयो के लालच मे आए। इसलिए आए कि यह आपके गाव की काया-पलट करेगा। इसके निपजे सब्जिया और अन्न मेरे या सरकारी अफसरो के घर नही जाएगी। हम लोग दिन-रात आपके लिए पूरा करने मे लगे हैं।"

इस बार बुजुर्गों पर दृष्टि डालते हुए सुधाकर बोला—"गाव मे शतचडी यज्ञ हो तो कितने दूर-दूर से लोग इकट्ठे होकर आहुति देते है कि नही। यह भी यज्ञ है जो आपके गाव मे हो रहा है। कहा-कहा से मजदूर जब यहा आ सकते हैं तो आपको किस बात की झिझक है ? रावलिया-दादिया सूरण, एटो का खेत और भी न जाने कहा-कहा से आ रहे हैं। ऐसे मे क्या आपका धर्म नहीं बनता कि इस यज्ञ मे जुड़े। अगर नही जुडे बाध अधूरा रह गया तो हानि केवल आपके गाव की

ही होगी। आज पहली और अंतिम बार गाव आकर आपको कहे जा रहा हू— फिर कभी कोई यह नहा कहे कि बाबूजी ने सावधान नही किया। मुझसे कोई गलती हुई हो, मेरा व्यवहार ठीक नहीं हो तो भी बता दीजिए ? आज, अभी यही स ही उदयपुर चला जाऊगा। आया इसी लालच ये था कि मेरी मा ने गोगुन्दा म जन्म लिया था। ये गाव मेरा ननिहाल है। इस नाते इसका कुछ कर्ज चुका सकू तो मन म शांति मिलगी। तो फिर क्या राय ह आप सब पचो की ? छोड़कर चला जाऊ ? जो करने आया था समझूगा सपना था ?"

"नही नही, नही। आप नहा जाएग। आपने हम सोते से जगा दिया है। कई वृद्धा क स्वर अलग-अलग रूप म झकृत होन लग—"हम अब तक अधेर म भटक रहे थे। आपन हमारी आख खोल दी। आंवरा बाध हमारा है। कल स आपकी लेवर बढ़ जाएगी।"

आवरा बाध की कुडली के नक्षत्रो ने पलटा खाया। वास्तव म दो तारीख को लेवर बढ़ गई। देखते-देखते ग्यारह क ग्यारह ट्रैक्टर भागने लग। लेवर सैटिंग की गणित भी बड़ी टेढ़ी ह। कौन-कौन-सी लेवर किन-किन ट्रैक्टरों पर जाएगी किन-किन लोगो को कहा-कहा भजना है।

नये आए मजदूरो को कब कहा किस ट्रॉली पर फिट करना है ? फिर पुकार मचेगी लकमा मेट की। सब ढूढ़ेंगे लक्मा मेट को। ट्रैक्टर वाले भी पूछेंगे—"लकमा कहा गया है ? म्हार लेवर कम पड़ रही है ग्यारह सौ बरियासी माते।"

"अभी भेजते हैं लकमा को। अभी आते हैं बाकी दस। अठारह लेवर स एक बार काम तो शुरू करो।"

× × ×

लकमा मेट का सरदर्द सूरज चढ़ने के साथ-साथ शुरू होता है। कहा औजारो की कमी ह तो उसे पूरा करना है। कहा बोर एरिया म मिट्टी ठीक नही है तो नई जगह उसे ही तलाशनी है। ट्रॉली वालो क लिए पानी की व्यवस्था करनी है। हाजिरी भरनी है। सभी मेटो क मस्टररोल क आकड़ो म मजदूर व कुली की रिपोर्ट सुधाकर को सौंपनी है। आलसी और कामजोर मजदूरो को डाट कर काम करवाना है। उन्ह प्यार स पुचकारना ह। नहा तो आज की डाट से कल काम से गोल हो जाएंगे। इन सभी कामो स निपटकर डेली की रिपोर्ट लेकर चौकी म आएगा तब तक ग्यारह बज जाएंगे। तब जाकर लकमा का सरदर्द कम होगा। दो घड़ी मारने की फुर्सत मिलेगी।

लेवर सैटिंग का उस्ताद है लकमा। लेवर बढ गई है तो कौन-कौन से मोर्चों पर फिट करनी है ? खूब जानता है लकमा। मेघवालो की लेवर मृत्युभोज म मालपुए खाने चली गई ह, तो उस ट्रॉली पर कहा की कौन-सी लेवर बिठानी है लकमा के बाए हाथ का खेल ह। दस मिनट म लेवर आ जुटेगा और बन्द ट्रैक्टर म जान आ जाएगी। भागना शुरू कर देगा बोर एरिया से बाध तक। आसपास के दस-बीस

किलामीटर की परिधि म कौन-कान से गाव म कितना-कितनो लेवर है सब लकमा की कम्प्यूटर फ्लोपा म फाड है। कब किस लेवर को कहा बुलाना है सब इन्द्राज हे लकमा क दिमागी खात मे। पचायत और वन विभाग के रिलीफ वर्क कहा-कहा चल रहे ह कोन-कान स काम हैं लकमा की दिमागी बही म सब नोट हैं।

सुधाकर पूछता है—"लकमा तेरी नदिशमा की लवर क्यू नही आ रही ह र ?"

पी डब्ल्यू डी रा काम पर दा सा लवर हैं, हाकम। मेरो मेट ह। पाछला चुकारो पाच रुपया रो व्या हा।"

एक साथ इतनी जानकारिया द दगा लकमा। कई नहर बनवा दी। कई नई सडक आर तालाब बनवा दिए। वन-विभाग क ढरा काम करवा दिए— बाउण्ड्री वाल स लकर वृक्षारोपण के गड्ढे खुदवाने तक।

अपना गैंग का हमदर्द है लकमा। बॉस है अपनी टाली का। काला आबनूसी धूप से जला रग। छाटा कद। हमेशा साफ कपडे। उसक काल चेहरे मे माती स चमकने वाले सफेद दात। हर दात के बीच थाडी-थोड़ी जगह छूटी हुई। सफेद धाती पर रगान छापदार बुशर्ट। कभी नगा मर और कभी मर पर फंटा बाधे, हाथ म बेग लटकाए तेज-तज कदमा से आता हुआ नजर आएगा लकमा। सुधाकर पूछता ह—"कहा से आ रहा है, लकमा ?"

लकमा याद दिलाता है—"साब होकम पाछला पमट म छ मजदूर अनपेड हा। गोगुन्दे तहसील सू चुकारा करान आया हू।"

सुधाकर—"ठीक है याद आया। तू कहकर गया था। सुन अभी दस आदमी ड्रेसिंग पर पाच घुरमट पर, चार रास्ता ठीक करने पर आर छ पायो पर कारीगर माग रहे है ?"

"आप चौकी पर पधारो। सब इन्तजाम कर दूगा।" लकमा आश्वस्त करता है।

"लकमा आज तो लेवर खूब हो गई रे। अब ता बधा बनगा ही।"

"घणी रूपाली बात है होकम।"

तकिया कलाम जो है लकमा का।

अगर उसे कह दे कि—"लकमा तुझ नाकरी से निकाल दू ?"

शायद उसक मुह से फिर भी यही निकलेगा—"घणी रूपाली बात है, हाकम।"

परतु कौन निकालना चाहेगा लकमा मट को। काम का पक्का बात का धनी झुठी बात पर भभक पड़ने वाले लकमा का कौन नहा चाहेगा ? हर ट्रैक्टर वाला चाहगा कि उसके ट्रक्टर पर लकमा की गग हा। सब उस सापकर निश्चित हा जाना चाहत ह।

सुबह-ही-सुबह चौकी पर सबसे पहल आएगा लक्मा। सबस राम-राम करेगा। चौकी स्टॉफ चाय पा रहा होगा तो एक कप लकमा का भी देगा। अक्सर वह

इसी समय आता हे ओर एक चाय उसके नाम की बनगी ही। सुधाकर लकमा को आज की जरूरते समझाएगा। रुटीन वर्क क अलावा नये-नय कान मे काम है वह समझाता है।

"लकमा कुए की सफाई पर चाहिए बीस दस चाहिए नया रास्ता बनाने पर तराई पर छ पानी वाली चार की जगह दो और बढा दे कल मजदूर बहुत परेशान हुए थे। बचे हुए को बाट देना टैक्टरो पर। समझ गया अच्छी तरह ?" सुधाकर पूछता है।

"घणी रूपाली बात है होकम।"

आर लकमा मेट की मजदूरा की सैटिग की शतरजी चाले शुरू हा जाएगी—"आज दोला आया कि नही ? रोडा कहा है ? तुम रोडा का लकर रास्ता बनाओ। तुम सब दोला को लकर कुए पर मैं जब तक नही कहू कोई हिलेगी नही वहा से।"

कौन किस मार्चे के लिए फिट है, उसी हिसाब से लगाएगा लकमा। दस बजते-बजते सबको अपने-अपने ठिकाना पर काम मे लगा देना।

लकमा गमेता गाव तिरोल तहसील गोगुन्दा का हे। खानदानी घर बाजता है लकमा का। मा-बाप, काका-काकी भाई-बहिन लम्बा-चाडा परिवार हे लकमा का। भाइया म सबसे बडा ओर प्रखर बुद्धि का है लकमा। परिवार मे भी यही सैटिंग का खेल-खेलना पडता है लकमा को। घर मे खती कौन सभालेगा। मजदूरी करने कान जाएगा ? नौकरी कौन करेगा ? यही गणित लगाता रहेगा लकमा।

लकमा धीर से सुधाकर को कहेगा—"साब हाकम घर सू समाचार आयो है। आप हुकम करो तो खाज खबर कर आऊ।"

सुधाकर—"लकमा तेरे जाते हा लवर ता अनाथ हाता ही हं उसके पहले मं हो जाता हू। तेरे बिना ये तोड-फोड़ मुझसे ता होने से रही। तू जा भले ही मगर वापस आएगा कब ये बता ?"

"म्हारा वता थका आप फिकर मत करो। छुट्टी रा बाद जाऊगा ओर सुबह मे काम पै त्यार।" लकमा पक्के विश्वास से कहता है—"आपरा काम मे भूल नी पडवा दू।"

घर पर चाहे कितना हा जरूरी काम क्यो न हो बात का धनी सुबह हर हालत मे पहुच जाएगा लकमा। साठ आदमिया पर एक मेट होता हे। लकमा क अलावा ओर भी कई मेट थे। सिफारिशी थोप हुए और अनुभव-हीन। रामसिंह भवरसिंह साहनसिंह न ता लेवर पर इनकी पकड न काम कराने की गणित ही याद। गमेतियो की काम की गणित की होड मे कोई नही।

एक दिन सहायक अभियता साहब ने ट्रैक्टरा मे मिट्टी के ढकले देखे। बस फिर क्या था ? सब मेटा को लाइन हाजिर किया। साफ-साफ कहा—"कल से जो मेट अपनी खुद की साठ-साठ लेवर लाएगा वही मेट गिरी करगा समझे ?"

न तो उनके पास अपनी लेवर थी न वा लौटकर ही आए। फर्जी मेट लकमा के सामने कब टिक पाते ? मेट और भी थे जिनकी अपनी लेवर थी। देवा, पूरा अमरसिंह कालूसिंह, किशनजी रावलिया वाले मगर इनमे वो बात कहा जो लकमा मेट म है।

"साब हाकम म्हारा अणी मनख जमारा म सैकड़ा काम कराया पण ओबरा जसा काम कठई नी दख्या। अठे साचा कई, व कई। भगवान ही धणी है इण धला रा।"

× × ×

ओबरा बाध का काम निर्विघ्न हो जाय यह भगवान को कहा मजूर ? अगर बिना किसी कष्टो के ही होना होता तो शायद इस उपन्यास की रचना भी नहा हो पाती। उपन्यास के लिए भी तो पूरा मसाला चाहिए न! कष्ट परेशानिया, घटनाक्रमो का उतार-चढ़ाव, इस आदिवासी क्षेत्र के मानव के घार कष्टो की पीड़ा का यथार्थ और फिर नाव के शिलापूजन के समय पडित द्वारा की गई भविष्यवाणी—"बाध पूरा तो होगा मगर रुक-रुक कर, परेशानियो के साथ।"

सुधाकर जैसे दृढ सकल्पी पुरुष चाहे कितना ही प्रण क्यो नहीं कर ले ग्रहो को तो अपना खेल खेलना ही है और भुगतना मनुष्य को ही है। गाव वालो से अपील के बाद लेवर प्रॉब्लम तो हल हो गई, परतु दूसरी समस्याए अपनी बारी का प्रतीक्षा म खडी थीं। देखते हैं हारता कौन है ? ग्रह नक्षत्र या मनुष्य का मनोबल ?

ठेकेदार ने जब सुना कि ओबरा पर लेवर प्रॉब्लम है तो उसे सुनहरा मौका नजर आया ट्रैक्टरो को दूसरे काम पर भेजने का। तीरथदास आए इसी आशा में कि मजदूरो की कमी के नाम पर सुधाकर जी पर हावी होने का मौका मिलेगा परतु यहा आकर देखा कि मजदूर तो जरूरत से भी अधिक हैं। ठेकेदार जी आए इस उद्देश्य से थे कि यहा से कुछ ट्रैक्टर सागवाडा की पाल पर भेज दू। सिंचाई विभाग मे बड़ा बिल अटका पड़ा है। वहा भी बाध का लेवल पाच मीटर ऊचा करना है वरना बाध फूटने का पूरा खतरा है।

तीरथदास जी को जब लेवर प्रॉब्लम के अभाव मे ट्रैक्टर ले जाने का बहाना नही मिला तो मन मसोस कर रह गए। लेकिन ट्रैक्टर हर हालत म ले ही जाने थे। जाते-जाते ठेकेदार कैम्प म एक नये षड्यत्र का सूत्रपात कर गए।

दूसरे दिन पता चला कि एक ट्रैक्टर रात को ही सागवाडा की पाल चला गया। लकमा का सर दर्द बढ़ा। एक ट्रैक्टर की बची हुई लेवर को उसने बाकी ट्रैक्टरो पर बाट दिया। आज तो सिर्फ षड्यत्र का प्रारम्भ था। दूसरे दिन पता चला कि तीन ट्रैक्टर और पलायन कर गए हैं। अब बचे सात। उस दिन ऐसा लगा, मानो मजदूर अनाथ हो गए हो। सुबह सात बजे से ही खदान पर प्रतीक्षा म बैठे हैं। जिनके ट्रैक्टर आ गए वे काम पर लग गए। जो धोखा देकर चले गए वो आते भी वहा स ? आज फिर गणित गड़बड़ाया लकमा मेट का। आखिर इतने मजदूरो

को कहा सेट करे ? मुख्य काम ता खदानो से बाध पर मिट्टी ढुलाई का ही है। जब मिट्टी ढुलाई ही बन्द हो जाय कि बाकी काम कहा से होगे ?

चारा ओर मजदूरा की पुकार मची हे— "लकुभाई। हम किस ट्रोली पर जाय ?

"लकुभाई हम कहा जाना है ?"

"लकुभाई हम क्या करे ?"

लकुभाई भाग रहा हे। इधर से उधर। उधर से इधर। दस-दस बढा दू सात ट्रेक्टरा पर। बाकी भेजू ठकले कुदाई और मिट्टी सिचाई पर। उसकी तेज चाल के साथ-साथ दिमाग की गणित भी उसी तेजी से चल रही है। लीजिए जब मजदूर बढ जाए और काम की जगह घट जाए तो क्या परिणाम हागा ? लकमा की यही खूबी है कि एसे इक्वेशन मिनिटा मे सॉल्व कर देगा।

सुधाकर भी हैरान है ओबरा की उठा-पटक से। न जाने किस खोट मुहूर्त मे दिनेश को 'हा' कर बैठा ? कौन-सी भावुकता मे आकर ननिहाल का कर्ज चुकाने का भूत सवार हुआ ? पता नही क्यो आदिवासिया के जीवन को निकट-से देखने-समझने की चाह पैदा हुई ? वह अकेला क्या कर लेगा उनके उद्धार के लिए। उनके घरा की भूख और चूल्हे का दर्द दखकर क्या मिल गया उसे ?

शाति का खाज म चला सिद्धार्थ इतना अशात हा जाएगा यह ता कभा नहीं सोचा था उसन। दिन-रात चक्रवृद्धि ब्याज की चक्की मे पिसते लोग। कब कैसे बनिए क मकड़जाल से छूटेगे ये लोग ? कौन उद्धारक आकर तारेगा इनको ? किसी के चेहर पर उल्लास प्रसन्नता खिलखिलाहट दिखाई नही देती। दे भी कहा से ?

जब भरा हो पेट, भरा हो घर म अन्न तो प्रफुल्लित होता है मन। वह सब आए तो आए कहा से ? यह सब आए ता आए कहा से ? जब-जब भी कोई सुधाकर के पास पैसो का रोना रोता हे जितना उससे बनता है, दे देता है। कभी उसे भगवान पर गुस्सा आता ह। उसे कुबेर क्यो नही बना दिया ? कितने-कितने लोग भूख से बिलबिला रहे हैं ? क्या भगवान को जरा भी दया नही आता ? ठाक है कुबेर का खजाना मत भेज, इन्द्र से पूरा पानी ही भिजवा दे। हाड-तोड़ मेहनत कर माटी मे कुछ तो निपजा लेगा आदमी।

दूर से वह देखता है जिन घरो से धुआ नही उठ रहा है। माए बच्चो को कैसे बहला रही होगी ? क्या खाया होगा उन्होंने ? कैस खाया होगा उन्होंने ? कहा से खाया होगा उन्होने ? सोचते-सोचते उसकी आख भर आती हैं ?

बुद्ध ने तो मृत्यु और बुढापा देखकर ही वीतरागी होकर राज्य छोड दिया था। वन म शान्ति खोजन निकल पडे थ। मगर यह कलयुगी सिद्धार्थ भी वन मे आया था। शान्ति के लिए और हो गया पराए दु खा से कातर। इन सब असहायो का कैसे छोड़कर ऐसे ही चला जाय ? इनके लिए कुछ तो करना होगा। वह गौतम बुद्ध की तरह वीतरागी तो नही बन सकता।

सुधाकर के घर से बार-बार बुलावा आ रहा है। बीवी उलाहना दे रही है—"वहा जाकर बीवी-बच्चो को ही भूल गए क्या ? यहा हम भी तो आपकी उतनी ही जरूरत है जितनी उन्हे।

मगर यह गौतम कैसे समझाए उन्ह ? उनकी सभी समस्याए जो भूख के अलावा हं। उनकी तो कैसे भी सुलझ जाएगी। मगर यहा की नब्बे प्रतिशत समस्या हे भूख के भूगोल की। दिन-रात टूट रहा हे आदिवासी। कही महुए खाकर दिन निकाल रहे हं। कही पत्ते खाकर।

लच टाइम मे सुधाकर मजदूरा के पास से गुजरता ह, जो उनकी रोटी की तरफ देखने की हिम्मत नही जुटा पाता है। कपडे म बधी मोटी-मोटी दो राटिया बस। किसी क पास एक प्यास का टुकडा ता किसी के पास नमक-मिर्च का मसाला बस यही सब रूखा-सूखा पानी के साथ निगलकर पट को भाडा दगा। सुधाकर साचता हे, बेलेस डाइट का सुझाव देने वालो न कभी यहा रिसर्च की है कि इनकी डाइट म चर्बी प्राटीन विटामिन कितने और किस-किस से मिल रहे हें ? केवल मात्र कार्बोहाइड्रेड। पेट का ईंधन। इसी ईंधन से नौ से पाच बजे तक उसे खटना होता है।

ठेकेदार क कारिन्दे चिल्लाते हं।

"जोर से हाथ क्या नही चलाता ?"

"हाथा मे दम नही है क्या ?"

"क्या खाना खाकर नही आया ?"

"मरे मुरदे-सा हाथ मत चला।"

हा ये लाग जिन्दा जरूर दिखते ह पर ह सब मुरद। न जाने कैसे जीवित हैं ? चल-फिर किस तरह से रह है ? क्या करोडा अरबा रुपया की योजनाए इसी अन्तिम आदमी क लिए वन रही हं ? कहा जा रहा है वह पसा ? कान-सी गली स कहा से गुम हा रहा हे ? यह तो आज भी वैसा ही है जैस सदिया पहले था।

एक समय इस जगल के आदमी क पास अपना जगल ता था। आज पर्यावरण क नाम पर वह भी उससे छूट गया। बस अब तो समाज क अन्तिम आदमी का अन्तिम सस्कार ही बाकी है। बधे पर चल रहा है काम। लकमा मेट के कारण आर यहा चल रहा है सोच आर सोच सुधाकर क लेखक मन म—"कैसा खेल ह सुधाकर ? यह कैसा ह रे साक्षात्कार ?"

सुधाकर क साथ दिनश आर सहायक अभियता महेश भी चिन्तित हैं ओवरा बाध की प्राग्रस से। उनकी चिंताआ की साच सुधाकर की सोच स अलग है।

कौन भूखा ह कान प्यासा है—यह उनकी चिता का दायरा नही ह। चार रुपए राज म कैस उनका दिन गुजरेगा—यह उनकी चिता नहा ह। उनकी चिता है किमी भी तरह अकाल राहत कार्य म मिट्टी का इतना बड़ा बाध पूरा कराना।

राहत कार्यो का प्रकाश स्तम्भ ह ओवरा। इजानियरा का प्रस्टिज पॉइंट है

ओवरा। वे भी सोचते हैं कि बैठे-बिठाए क्या बला माल ल ली अपने सिर ? क्या गरज है उन्ह ? अपना ब्लड-प्रेशर इसकी चिता म क्या बढ़ाए ? बढ़ान पर कौन-सा 'पद्मभूषण' मिलने वाला है ? हर दिन एक नई मुसीबत। इसे जल्द-से-जल्द पूरा भी करना चाहते हैं, मगर करे कैसे ? ट्रैक्टर थे ता लवर नही थी।

लवर आई तो ट्रैक्टर गायब।

सर पड़ी बला को उतारना ता है ही।

जहा तक सभव है— दिनश दिन म एक चक्कर लगाएगा ही। चूक गया तो दूसरे दिन तो आ धमकगा ही। रोज की प्रगति का लखा-जोखा देखेगा। फीते से नाप-नाप कर प्राग्रस निकालेगा। जगह-जगह लवल से माटर का हिसाब लगाएगा। जमान म लम्ब-लम्बे सुए गाड़-गाड़ कर डसिटी नापगा। कुटाई सही हो रही है या नहीं। मस्टरराल की चेकिंग करेगा। ट्रैक्टरो स कितने आदमी कितने ट्रिप करते हं— वह हिसाब निकालगा। चून की तराई पूरी ठीक हा रही है या नही ? बोर एरिया अच्छा गाला हाना चाहिए। मिट्टी की क्वालिटी ठीक हानी जरूरी है। सैल्यूस आर कट ऑफ क पास कुटाइ मजबूत होनी चाहिए। बाध क ममस्थल ये दोनो ही हं। कमी रहने पर यहीं स पानी गुप्त रास्ता से बाहर निकल जाता है।

× × ×

दिनेश क आत ही वातावरण मे भय-सा छा जाता है। हर मेट नजर चुराकर भागता फिरगा। खैर मनाएगा अपनी। कही कुछ पूछ ना ले। कही डाट न खानी पड़े। दिनेश को एक-एक बात याद रहेगी।

पूछगा— "क्या रे देवला, तीन दिन पहले कह गया था कि इन तारो को बाध कर चाकी पर पहुचाना क्या मं पहुचाऊ ?"

"हजूर, अभी पहुचाता हू।" देवला हाथ जोड़ कहगा।

"तुझ पीछ की तरफ खूटिया लगाने को कहा था। दावाल टेढा जा रही है।"

"अभी लगाता हू, होकम।" और देवला खूटिया लाने दौड़गा।

"जगदीश, तुम यहा ऑफिस म क्या कर रहे हो ?" मैं तुम्ह फील्ड मे डसिटी लते हुए ही देखना चाहता हू।"

"सर दिन-भर फीरड म ही था।" जगदीश ने कहा— "लच टाइम हो गया, चला आया।"

"अर! लच टाइम हो गया क्या ? अभी रावमादडा पहुचना था। परभू खाना खिलाना हा ता ले आ जल्दी स।" दिनेश का आदेश था।

उधर आवाज— "अर सुधाकर आ बैठ।"

"एनी प्रॉब्लम ?"

"सुनन की फुर्सत हा ता अज करू।"

"ले आ साथ ही खाना खा लेते हं आर बात भी हो जाएगी।" दिनेश ने न्याता दिया— "बाल क्या ह ?"

सुधाकर ने लिस्ट थमई—"गतिया फावड़ा तगारिया, पम्प की ग्लान डारा वसे डोजल ग्राज चूना और सुर्खी।

"ठीक है य सब कल पहुच जाएगा।"

"सुधाकर तेरी रिपार्ट है कि तू बहुत लिबरल है। थाड़ा कड़क रहा कर यार।"

"राव रखा कर। डाण्ट वी एक्स्ट्रा आर्डीनरा इमाशनल।"

"राइटर हा वहा तक इमोशन ठाक है। बाइग ए सुपरवाइजर थोड़ा ऊपर स सख्त।"

"ठीक है चलता हू।"

"घर कुछ कहना हा ता बाल।" — आर चलत-चलत दिनश न पूछा।

"बाल दना, सड का पहुच जाऊगा।" सुधाकर ने कहा—"कुछ प्रॉब्लम है।"

"मुझ बता। मैं कुछ करू ?" दिनेश न पूछा।

"नही मुझ ही देखना है। थैंक्यू।" सुधाकर का उत्तर था।

सुधाकर इतन समय म लेवर वर्किंग का समझ गया है, उसी क अनुसार एक नई थ्यौरी निकाला है। कवल रुआब से ही तो काम नहीं चलता! इनका चाहिए स्नह और प्यार। फिर देखा ये अपना श्रष्ठ सहयाग अपनी पहल स दग। रुआब म तो इनका सीधा-सा उत्तर हागा।" बाबूजी! जितना शरीर चलेगा, उतना हा ता काम होगा। पमट कौन-सा रोज का राज मिलन वाला है ?

"बैठे तो नही हैं ? काम ही तो कर रहे हं।"

इसके विपरीत कधा थपथपाकर कह भर दीजिए—"अमरा जी थाड़ी दर आराम भी कर लो, थक जाआग।"

"गगा थोडी दर सुस्ता ले। फिर कर लना। काना आ, थोडी देर पेड़ की छाया ले ले।"

बस देखते-ही-देखते अमरा गगा काना के हाथो म पख लग जाएंगे। दूनी गति से काम हागा।

जा आदमी कुछ नही कर रहा है खाली ही खड़ा है, आप बस उसे ही देखते रहिए। उसे जैसे ही अहसास होगा कि वह नजरा म आ गया है अचानक उसके हाथ तेजी स चलने लगेगे।

कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्हे किसी से काई लेना-देना नही। काम की धुन में ही लग रहग। आप-पास से गुजर जाइए सर उठाकर देखगे भी नही। ऐसे लाग जुडत हैं मन और आस्था से। पूरी लगन और निष्ठा स। ऐसे लोगा को यह नही लगता कि यह सरकारी या पचायती काम है। उन्हे अपना काम लगता है। उन्ही का ता बाध ह। कही कच्चा नही रह जाय। कच्चा रहने पर फूट जाएगा बाध बह जाएगी ओबरा की जनता। नहीं हम ऐसा नही हाने देगे। कुटाई करेगे ठीक बाधेंगे

मजबूत। जब तक यह सोच मजदूरा म जाग्रत रहेगी, बाध उसी आस्था से बधेगा।

दिनेश और सुधाकर की सोच म यही बेसिक अन्तर है। दिनेश की तरह वह उस पाच-छ रुपय रोज का मजदूर नही मानना चाहता। वह उसे इस बाध का एक अग मानता है। उसने हर मजदूर को यही अहसास करवाया है कि ये केवल मिट्टी स बनने वाला सरकारी बाध नहीं है। य उनक गाव का उनके लिए बनाया जाने वाला उनक खून और पसीने से बनने वाला बाध है। उनकी आस्था और विश्वास का बाध है।

और आज यह सोच बच्च स लकर बूढ़ तक म पनप गई है। सुधाकर का उद्देश्य सफल है। उसने एक नये सामाजिक साच को जन्म दिया है।

चले गए ट्रैक्टरा का विकल्प तो खोजना था। बढ़ी हुई लेवर को घटाना भी कठिन था। तलाश शुरू हुई। एक प्रस्ताव आया कि गधे वाला को बुलाया जाय। खदान मे मजदूर खोदत रहग और गधे ढुलाई करत रहग। सवाल य पैदा हुआ कि इन गधे वाले बजारो को ढूढ़ा कहा जाय। किसी ने कहा— ढोल गाव म देखा था। किसी ने कहा— ईसवाल के पास देखा था। किसा ने कहा— जसवन्तगढ मे। तय ये हुआ कि जो जहा देखे उन्ह यहा भिजवा दे। बजारा का कौन-सा एक ठाव ? कौन-सा एक गाव ? अगर एक हा गाव में जम जाय तो भूखा मरे। जहा काम हुआ, पूरी घर-गृहस्थी का पड़ाव वहीं खुले खेत या सड़क किनारे। बीवी बच्चे, घट्टी चूल्ह मुर्गे-मुर्गिया बकरे-बकरिया पड़ाव-दर-पड़ाव उनके साथ चलगे।

ये दिन तल्ख थे। सुबह सुधाकर ने देखा, सड़क पर धूल-ही-धूल उड़ती नजर आ रही है। थाड़ी देर बाद पता चला कि बजारो का दल आ रहा है। उनके गधो के पावा से धूल उड़ रही है। ऑफिस के पीछ सुबह-ही-सुबह गधा का जमावड़ा होने लगा। एक बुजुर्ग और उसका जवान बेटा सामन आया।

बेटे ने कहा— "साब होकम। राम-राम।"

"राम-राम, कहा से आ रहे हो ?"

"क्या, नाम है तुम्हारा ?" सुधाकर ने पूछा।

"लेहरू-लेहरू, साब होकम।"

"किसी ने भेजा तो होगा, लेहरू!" सुधाकर ने पूछ लिया।

"ए ई एन साहब चिट्ठी दी है।"

ए इ एन का पत्र पढ़ा और पलटकर देखा— सुधाकर के नाम ही था। सुधाकर ने कहा— "ठीक है। ऑफिस के पीछे बड़े महुए वाले पेड़ के नीचे डेरा डाल दो। कितने गधे हैं ?"

"साब होकम सो हैं। शाम तक और कल तक मर भाई-बधो के भी आएगे। चार सौ तक की पूर्ति कर दूगा।" युवक ने कहा।

"ठीक है अभी खदान पर लकमा मेट से गिनवा लो। छ गधो पर एक हाजिरी मिलेगी, समझे ? काम शुरू कर दो।"

"जी हाकम! आपर शरण आया हा।" युवक ने कहा—"गरीबा रा ध्यान राख जो।"

"ध्यान तो ऊपर वाला सबका रखता है। हम तो यहा काम से मतलब। काम सही और ढग से चलना चाहिए।"

"बड़ा हाकम अन्नदाता। भूल नी पड़गा।" बुजुर्ग ने हामी भरी।

इस उपन्यास म अगर लहरू बजार का प्रकरण नहा लिखूगा तो बहुत कुछ अधूरापन हा रहगा। बजारा जाति बड़ी-ही अलमस्त होती है। नाचना और गाना बजाना इनके जीवन क अग हैं। औरत हरदम सजी-सवरी रहेगी। लेहरू का बीवी लेरकी। तीख नयन-नक्श। बड़ी-बड़ी कजरारी कटार-सी आख। आखा म गहरा-गहरा काजल पुता हुआ। बहुत अधिक सुन्दर नहा, लेकिन कम भी नहीं। बाकी औरता का हाल भी इनस थाड़ा-कम-ज्यादा मिलता हुआ। रग-बिरगी चोटिया लटकाता हुई। गाल दर्पण जरूर पटाकाट क नाड़ के साथ लटकता हुआ झूमता रहेगा।

रात म चाका क पीछे खूब गाने-बजाने की आवाज आ रही थी।

सुधाकर ने आवाज दी नाइट चौकीदार देवा का—"देवला ये आवाज कैसी ह रे ?"

"साब होकम! बाबला रमी रया है।" देवा ने अर्ज किया—"कुछ लोग बजारा को बाबा या बाबला भी कहत हैं।"

"ठाक ह। जा कुछ गड़बड़ हा, तो बताना।"

सुधाकर उपन्यास लिखने म लीन हो गया।

करीब दा घटा बाद जोर-जोर स रान, चीखन-चिल्लान की आवाज आनी शुरू हुई। काफी दर तो सुधाकर सहन करता रहा। मगर सहन का भी एक सीमा होती है।

सुधाकर ने पुकारा—"देवला । य क्या हो रहा है ? ये तो इनका नाचना-गाना नही हे ?"

"साब होकम आप आराम फरमाए।" देवा ने कहा—"म दख लूगा।"

देवा चला गया। कर्णभेदा स्वर। गालियो की भाषा मे सवाल-जवाब। कभी औरता के चीखने क स्वर। दवा भी लौटकर नही आया।

सुधाकर के लिए सहना क्षण-क्षण भारी हा रहा था।

बाहर घना अधकार। कौन किसे मार रहा था पता ही नही चला। सुधाकर ने टॉर्च और लाठा उठाइ बाहर जाने लगा।

जगदीश और परभू भी जाग रहे थे। अपने बाबूजी को अकेला जाते देख व भी साथ हो लिए। चीखा म मिल-जुल पुरुष-महिला स्वर उभर रहे थे।

अधेरे म सुधाकर ने टॉर्च का प्रकाश चारा आर फैलाया। रोशनी पड़ते ही कुछ दर के लिए युद्ध विराम हो गया। सभी बाबूजी को देख सकपका गए।

सुधाकर ने पूछा—'क्या हगामा हा रहा ह ?'

"साब होकम आप चल जाए।" लहरू न कहा—"य हमारा आपसी मामला है।"

"फिर ये आपस मे छीना-झपटी, गाली-गलाच कैसा ?" सुधाकर ने कहा।

"साब माफी। अब नही होगा। आप पधारे।" लेहरू के बाप ने हाथ जोड़ अनुनय की।

"ठीक है, अब किसी का चू की भी आवाज आइ ता भगा दूगा सबको।"

सुधाकर दवला, जगदीश परभू सभी लौट आए।

आन पर देवा ने बताया कि ये तो इनका रोज का नियम हे। देसी महुए की कच्ची शराब पाएग। खाना खाकर कुछ दर चाग बजाकर नाचेग-गाएगे। अचानक किसी बात को लेकर झगड़ना शुरू कर दगे।

यह युद्ध कभी बाप-वेटे मे पैसा का लकर, कभी पति-पत्नी म, कभी एक ग्रुप का दूसरे ग्रुप के साथ होता ही रहता है। आप जिस गालिया समझ रहे हैं, वह ता इनकी बोल-चाल की भाषा हे। झगडते-झगड़ते नशे म बसुध हो पड जाएगे। सुबह उठग ता जैस कुछ हुआ ही नहा हो।

दूसरे दिन सुबह-ही-सुबह लेहरू और उसकी बीवी ऑफिस मे आए। सुधाकर चाय पी रहा था। दोनो न सुधाकर के पाव पकड़ लिए।

"साब माफ करो हुकुम। आप माई-बाप हो। आप बडा आदमी हो। अबै गलती नी करागा, साब ?" बार-बार गिडगिडा कर पति-पत्नी माफी मागे जा रहे थे।

सुधाकर ने कहा—"दख लेहरू ये सरकारी ऑफिस हे। यहा ढेरा सामान पडा है। कही कुछ गडबड हो गई तो तुम लोग सोच लो।"

"अबै नई साब्ब। कोई मुजब गलती नई साब्ब।"

"तू तो कई सरकारी काम करवा चुका है। वे सब अनपढ है। तू ता समझता है कि इन झगडो का अन्त क्या होता है ? अधेरे म मारपीट मे किसी का सर फट गया तो ? लेने के देने पड जाएगे। पुलिस-थाना कोर्ट कचहरी होगी सो अलग।"

वे दाना सिर झुकाए खड थे।

"आगे स तुम्हार ग्रुप क अलावा कोई यहा नही आएगा।"

"ठीक है सरकार। ध्यान रखूगा।" लहरू न कहत हुए शाल की ओट से दो पेकेट निकाले और परभू का थमा दिए।

सुधाकर ने पूछा—"क्या हे रे लेहरू ?"

लेहरू न कहा—"साब होकम चाय-शक्कर। गोगुन्दे गयो हो। लेतो आयो।"

सुधाकर समझा चौकी क रसोडे खतम हो गई हागी सो परभू ने मगवा ली होगी।

सुधाकर ने पूछा—"कितने पैसे हुए लेहरू ?"

"होकम या तो म्हारी तरफ सू। पैसा री जरूरत नी है।"

"मैं तेरी बात नही समझा रे।"

"साहब होकम म्हा भी चौकी पर आवा तो चाय पीवा हा।"

"अच्छा तो मुझे तुम्हारे पैसा की चाय-शक्कर से चाय पीनी पड़ेगी ?"

"अरे। होकम नाराज मती हो। कईं फरक पड़गा ?"

"लेहरू तुम्हे फर्क नहीं पड़ेगा।" सुधाकर तैश खा गया। "फर्क तो मुझे पडेगा रे। तुमने क्या समझा मुझे ? तू जानता भी है मुझे ? आगे से इस चौकी पर एसी-वैसी हरकत की तो घुसने नही दूगा, समझा। उठा, अपनी चाय-शक्कर और चलता बन।"

लेहरू सुधाकर को भी ऐसा-वैसा समझने की भूल कर बैठा। सुधाकर को लगा, कही कुछ गड़बड़ है, वरना य आदमी ऐसी हिमाकत नहा करता।

सुधाकर तुरत नीचे उतरा। सभी मेटो को बुलाया और गधा का गिनने का काम शुरू।

भला गधा को गिनना कोई आसान काम है। कभी बढ़े कभी घट जाए। सुधाकर ने एक उपाय सोचा। टोकन बनाकर मेटो को दिए। हर छ गधा पर एक टोकन दो। फिर सब टोकन को गिन लो। शाम तक पता चला कि डेली के हिसाब से गधे कम हैं। सुधाकर ने गिनती के हिसाब से हाजिरी भर दी। सुबह की चाय-शक्कर की एवजी मे पचास गधे कम निकले।

लेहरू बजारे ने सुधाकर साहब को पटाने म कई दाव लगाए, पर दाव गलत ही पडा।

पेमट डे के समय तहसीलदार के पटवारी ने कहा—"गधे गिनवाइए। सही होने पर ही पेमट करूगा।"

अब शुरू हुई गधा-पच्चीसी। गिनते-गिनते पाच इधर तो पाच उधर। गिने हुए गध पहाडी के उस पार से चक्कर लगाकर वापस अपने भाइयो के झुड मे शामिल। न गिनती निकले न पेमेट शुरू हो।

उपाय निकाला सुधाकर ने। एक डब्बे मे उसने रग घोला। खजूर की डडी से कूची बनाई। एक-एक गधे पर नम्बर डलवाए तब जाकर कही काम बना।

उसम सख्या भी कम हाने पर उसका तर्क था कि—"माब बचारे गधे आपकी गिनती के चक्कर मे घबराकर पहाड़ो के पार उतर गए। मेरे तो पूरे चार सौ हैं साहब।"

जब पेमेट शुरू हुआ गधा के मस्टररोल का तो फिर गड़बड़ शुरू हुई। छोटे बच्चो के नाम पर तहसीलदार अड़ गए—"इस छोट बच्चे के नाम कैसे दे दू।"

साहब को बड़ी मुश्किल से समझाना पड़ा—"साहब काम तो छ गधो ने किया है।"

"लड़का उनको हाक कर ले गया। अगर बड़े आदमी के नाम लिखते हैं तो आप एक आदमी के नाम पर कितने गधे मानेगे ?"

"छ बारह अठारह ? छ से ज्यादा होते ही आप हाजिरी देगे ?"

"नही नहीं। एक आदमी को दूनी हाजरी कहा से देंगे ?" तहसीलदार ने कहा।

"ठीक है सर। इसलिए हमने जो फार्मूला इन लागा के लिए रखा था— एक आदमी बराबर छ गधे।" सुधाकर को समझाना पड़ा— "इसलिए यहा पेमट उठाने के लिए एक अगूठा ही तो चाहिए। इसलिए बच्चो के नाम बराबर गधो के काम।"

× × ×

पेमेट डे यानी कि भुगतान दिवस। अकाल राहत कार्य का महत्वपूर्ण दिन। उस दिन लोग विशेष सजधज कर आएगे। जिस दिन दा मस्टररोल का पेमेट होना है तो कहना ही क्या ? उस दिन लकमा मेट की जिम्मदारी बढ़ जाती है। जिनका पेमट होना है और वह अभी काम पर नही आ रहा है या औरत नही आ रही है तो एक-एक के घर जाएगा पेमट को न्यौता देकर आएगा।

"अगर मस्टररोल म जा पेमेट 'अनपेड' चला जाय उसका भगवान ही मालिक है।" लकमा जानता है— "पेमट वापस आएगा नही आएगा, कब आएगा। यह सब कोई नही जानता।"

कभी पमेट गागुन्दा तहसील म रुका रहा तो ठीक, वरना उदयपुर चला गया तो खुदा खैर करे।

इसलिए सब लकमा की कद्र करते हैं। उसको चिंता है, किसके घर कौन मर गया है। उसे रुपया की सख्त जरूरत है। किसको इजन क लोन की किश्त चुकानी है। किसे बनिए का ब्याज चुकाना है। पेमेट डे के दिन हवा लगते ही बनिया साइकिल से ओबरा बाध पहुच जाएगा। क्या पता, घर जाने के बाद गमेती के पास पैसे बचे न बचे। सुधाकर की नजर पड़ी और पूछ लिया।

"सेठ जी, आज यहा कैसे ?"

"साव होकम बधा देखने आया था।"

"अरे भाई, अभी क्या देखना ? मिट्टी का ढेर ? बाध पूरा हो। पानी से लबालब भर जाए फिर मजा आएगा देखने का। इस तपती धूप म कैसा मजा।" सुधाकर ने कह ही दिया— "आप तो ये बताओ किस-किस स कितने-कितन पैसे लेने ह ?"

"जी जी । वो तो।" बनिया मिमियाएगा।

पेमेट कराते-कराते जब महिलाओ का नम्बर आएगा तो बडी हील-हुज्जत होगी। उस दिन लकमा मेट की सरदर्दी की हद हो जाती है।

नाम शुरू होगे— "राधा नवला मोहनी-मोहन, सोहनी-रामा, लेरकी-माजा लेरकी-माना लेरकी-अम्बावा।"

बस, पेमट वाले अड़ जाएग। उनके बेवजह शक की सुइया दौडने लगेगी। एक-एक लेरकी से कन्फर्म।" लेरकी बाल तेरे धणी का नाम क्या है ?"

जिस लेरकी के आग वाप का नाम है वो तो बोल देगी परतु सात-फर खाई लेरकी अपने पति का नाम किस मुह से ले ? नाम लेकर अपने पति की उम्र नहीं घटाना चाहती। नाम लेकर लखणा वायरी, लक्षणहीन नहीं कहलाना चाहती।

तहसीलदार है कि कानून की भाषा और कानूनी दाव-पेच समझने वाला, कैस सत्यापित हुए बगैर पेमट कर दे।

लेरकी हे कि अड़ी हुई मर जाएगी लेकिन पति का नाम हर्गिज नहा लगी। चाहे चुकारा अनपेड चला जाय।

चाहे बनिए की पैसो के लिए धौंस-धप्पटी सहनी पड़े। चाहे उसका बीमार बच्चा दवा के अभाव मे दु खी होता रह वह जीते-जी अपनी जबान पर अपन पति का नाम नहा लेगी।

तहसीलदार कहगा—"यह सब झूठ है। यह वेपढ़े-लिखो का अधविश्वास है।"

"पति का नाम लने से उम्र का कोई सबध नही।" तहसीलदार उन्हं समझाने से अधिक सत्यापन चाहता हे—"मै अपनी पत्नी का नाम तुम्हारे सामने दस बार लेता हू, उसे कुछ नही होगा। सुमित्रा सुमित्रा सुमित्रा।"

वात बढ़ती देख सुधाकर को हस्तक्षेप करना ही पडा।

"सर आपका कहना सही है। एकदम सही परतु हजार बरसो से भारताय सस्कृति म पत्नी द्वारा पति का नाम उच्चारण करना पाप हे। इन अनपढ और अशिक्षा क मारा की इस धारणा का एक ही दिन म धो-पोछ सकते है क्या ? क्या मिटाना इतना आसान है ?"

"लेकिन सुधाकर।"

"आप खुद घर जाकर अपना मा और दादा से सवाल करना कि मा तुम्हारे पति का नाम क्या है ? आर वह अस्सी, नब्बे सौ साल की मा जो उत्तर दे मुझे बताइएगा।"

तहसीलदार का चहरा तमतमा गया।

सुधाकर को कानूनी दाव-पेच का उत्तर देना चाहते थे। लेकिन कुछ सोचकर चुप्पी लगा गए। वे सुधाकर के बार म काफी कुछ सुन चुके थे कि यह ग्रेजुएट अच्छे खाते-पीते घर का साहित्यिक व सास्कृतिक क्षेत्र म वर्चस्व रखता ह। केवल मित्रता क नाम पर इस प्रोजेक्ट को सभाले हुए हैं।

तब तक चाय आ गई।

तहसीलदार और सुधाकर सहज हो गए।

चाय पाते हुए सुधाकर न कहा—'सर आपको जहा भी शक लगे उस वतन क भुगतान क अगूठे पर मट क हस्ताक्षर ले ले।'

'इससे क्या हागा ?"

"सही या गलत भुगतान का साक्षी है मेट।"

"आप क्या करत ?"

"इस बार म मैं भी दा सौ महिलाओं की तस्दीक नहा कर सकता कि कौन-सा लेरकी भजा या अम्बावा की है। पहले ही वह आधे घूघट मे रहगी। फिर चाध क बाबूजी से इज्जत के साथ नारी सुलभ लज्जा भी ता है।"

चाय क बाद फिर भुगतान शुरू होगा।

कभी मस्टररोल साढ पाच साढ़े छ के गुणक म आया तो छुट्टा की समस्या पदा हाती है। छुट्ट न पमट करन वाला क पास न लन वाला क पास। फिर वायो-मीडिया निकालना पडता हे। लिस्ट बनाकर बाद मे छुट्टे कराकर चुका दना।

पमट वाले साचते हैं कि छुट्टे बिना ही चुकारा हो जाय तो आने-जान का कुछ तो बच।

मगर लकमा मट चाचड़ी की तरह चिपक जाएगा। एक-एक अठन्नी का मोल मालूम है उसे।

एक बार सुधाकर न तहसालदार से पूछा—"सर अन्य सभी स्थाना पर चुकारा कई दिन पहले हो जाता है और हमारा सबसे बाद म क्या होता है ?"

"क्या कहना चाहते हैं आप ?" तहसीलदार प्रश्न करता है।

"सर आप सबस पहल यहा इन्स्पक्शन करते हैं। बाद म दूसरे स्थाना पर ? इसका कारण काफी साचन क बाद भी समझ नहां पाया।"

तहसीलदार साहब रहस्यमय हसी हस। फिर कहा—"सुधाकर जी जा कुछ मरा मानना है वह यह है कि सब जानते हैं कि यहा काम आर नाम सब एकदम सही है। पाच दस नाम भी फर्जीवाड़ क नहीं मिल सकते। पमेंट करन वाले ढूढ़ते हैं फर्जीवाडा। निकालग वाल की खाल। एक-एक लेरकी का सत्यापन करेंगे। झूठे मेट उनक सामन टिक नही पाएगे। घुटने टेक दगे और उन्ह हर हालत मे स्वीकार करना पड़ेगा कि दस बास नाम या पूरा मस्टरराल ही फर्जी है और चार जब पकड़ा जाय ता क्या हाता है ?

"सजा।"

"आप बड़े सीधे आर भाले हैं सुधाकर जी।" तहसीलदार ने कधे पर हाथ रखकर कहना शुरू किया—"आज क आकठ भ्रष्टाचार म डूबी सामाजिक व्यवस्था म कहग— समझौता। चार-चोर मौसेरे भाई। फर्जीवाड़ा फिफ्टी-फिफ्टी। और जहा कुछ प्राप्त होगा वहीं तो पहले जाएग न। आपके यहा अन्त म आना भी उनकी विवशता है। उनका बस चले तो यहा आए ही नही।"

"क्या ?"

"आप नहीं समझे।"

"आप बताइए।"

"क्या केवल एक सूखी चाय की प्याली के लिए ?"

"क्या कह रह हैं आप ?"

"जी हा सच कह रहा हू। सच्चे आदमी के साथ हो तो सच कहना अच्छा लगता है। हा, आपसे एक रिक्वेस्ट है। यह सब ऑफ द रिकार्ड रहे।"

"आप निश्चिन्त रहे।"

"जहा पर लोगो को देसी घी का हलवा और देसी घी के तर पराठे मिले आदमी पहले वहा पेमट करेगा या इस एक प्याली चाय की जगह।"

"मगर आप इन सबसे उलट कैसे हैं ? आपका पहला पेमेंट ओवरा पर होते ही सबको मालूम पड जाएगा कि अब पेमेंट शुरू हो गया।"

"सत्य को कही-न-कही कभी-न-कभी तो पूजा जाना चाहिए। वरना जो कुछ थोड़े बहुत लोग आदर्श और सिद्धान्तो पर चलने वाले बचे है, उनकी आस्था और विश्वास भी खतम हो जाएगा।"

तहसीलदार द्वारा की गई प्रशसा से सुधाकर के अन्दर रस घुलता जा रहा था।

"मुझे अच्छी तरह से मालूम है कि ओवरा का अर्थ है खरा। खालिस सोना। चौबीस कैरेट। आपका ये लकमा मेट। एक आदमी पर एक अठन्नी भी छोडने को तैयार नही हो वही तो खरा होगा। जहा फर्जीवाडा है वहा एक सौ पाच या एक सौ दस के पेमेंट में ऊपर के पाच-दस उड़ा दो तो भी उनके मुह से उफ भी नहीं निकलेगा।"

"सर मजा आ गया। ऐसा और इतना भी होता है मैं तो सोच भी नही सकता।" सुधाकर हैरान था।

"सुधाकर जी। आपकी जगह दूसरा होता तो दो हजार लीटर डीजल में से सौ दो सौ लीटर डीजल की हेरा-फेरी कर दे तो क्या पता चलेगा ?" तहसीलदार ने अपनी टीप लगाई—"चार सौ गधो मे सौ की हाजिरी फर्जी भरो तो कौन से बेरोमीटर से हम नाप सकते हैं ? साढे तीन सौ के पेमेंट में दो मस्टररोल फर्जी चलाए तो क्या पता चलेगा ?"

"ऐसा होता है ?"

"लोग करते हैं।"

"मेट पकड़े जाते होगे ?"

"भाग जाते हैं।"

"कई-कई लफडे होते है। अकाल राहत का नाम आते ही आम जनता के दिमाग मे पहला हो प्रश्न यही आता है कि राहत किसकी ? इजीनियरो की मंत्रियों की पचो-सरपचो की या मेटो की ?"

"जिसे असली राहत की जरूरत है उस तक वास्तव में पहुचेगी भी या नही ?"

"पहुचती है तो कितनी ?"

सुधाकर ने कहा—"इस सच्चाई को हमारे प्रधानमत्री ने भी स्वीकार करते हुए कहा था—"मैं आप लोगो के लिए सौ रुपये भेजता हू, आपके पास आते-

ात पन्द्रह रह जाते है।"

× × ×

मट की रात को वजारा बस्ती मे खूब धूम थी।

चग वजान वाला मस्ती म थापे द रहा था। लाक धुना पर बजारिन नृत्य कर ही थीं। मुगा या बकरा भा पका था।

हम सब लोग करीव ग्यारह बजे सो गए।

रात दो बज क कराब जार-जार से चोखने-चीखने की आवाज आने लगीं।

कुछ देर तो हम समझने मे लगी कि माजरा क्या ह ?

फिर सारी स्थिति समझते देर नहीं लगी।

सुधाकर ने सुरक्षा की दृष्टि से गैस जलवा लिया। सब लोग देवा-कशा-जगदीश-परभू और भी दो तीन लोग बजारा बस्ती पहुचे।

बडा ही वीभत्स दृश्य नजर आया। छीना झपटी-मारपीट सब लहूलुहान। पूछा कि—"माजरा क्या है ?"

"सब चुप हो जाओ। वरना अभी पुलिस का बुलवाता हू।"

" "

किमी ने चू नहा किया, पर एक-दूसरे को मार डालने वाली दृष्टि से देख रहे थे।

सुधाकर ने डाटत हुए कहा—"क्या शोरगुल है बोलते क्या नही ?"

एक आगे बढा—"साब होकम। आप ही न्याव करे। या अम्बूडी म्हारी लुगाई है मैं ले जाऊगा।"

दूसरा आगे बढकर अम्बूडी का हाथ पकडकर अपनी ओर खीचते हुए बोला—"साब होकम, या म्हारी लुगाई है। म्हू राखूगा।"

सुधाकर को ताज्जुब हुआ। गुस्सा भी आ रहा था उसे कि कहा इन दारुड़िया के फेर मे आ फसा।

"अर! भइ लुगाई एक आदमी दा। दाना का कैसे हा सकता है ?"

पहला आगे बढ़ा—"साब होकम मैं इण रे साथ सात-सात फेरा खाया। अम्बूडी मरी हुई कि नही ?"

सुधाकर—"हा तब तो तेरी ही है।"

दूसरा—"साब होकम अम्बूडी म्हारे नात आई। कब्जा-सच्चा। झगडा झूठा। अम्बूडी मेरी लुगाई ह कि नही ? आप ही फेसला करा माई-बाप।"

पहला—"साब होकम मेरा झगडे का चुकारा नही हुआ तब तक अम्बूडी मेरी है।"

"साहब जब तक पच फैसला करके नही निपटाएगे तब तक इनका झगडा ऐसे हा रहगा।" दवा न कहा—"पाच-दस दिन एस हा चलगा।"

अब सुधाकर का समझ आया कि झगडा क्या ह ? उस दिन भी यही झगडा

था। उसने कहा—"देखो, रोज-रोज क ये नाटक यहा नही चलेंगे। सुबह तुम्हारी पचायत बिठाकर फैसला करवा लेना।"

सुधाकर ने सात फेरे की दुहाई देने वाले बजारे स कहा—देख, यह सरकारी कामकाज की जगह है, ज्यादा फैल करगा यहा तो जेल जाना पड़ जाएगा।"

पलट कर उसकी आर सकेत करते हुए सुधाकर बोला—"और सुन, सात फेरो क मालिक। जब तरे स औरत सभाली नही जाती तो शादी ही क्या की ?"

"साब होकम अम्बूड़ी मनै धाखा दे गई, धाखा द गई।" और उसन रोना शुरू कर दिया। "म्हाने छोड़, नाथ्या रे परी गई।"

सुधाकर ने जिन्दगी म कई फैसल करवा दिए परतु ऐसे फैसल से साबका नही पड़ा।

आज उसे लगा कि हजारो साल बाद भी कोई युग नहीं बदला। आज भी आदमी उसी आदिम अवस्था म है जहा पाच हजार साल पहले था। वहा औरत की लडाई। जो बलशाली है वही उपभोग करगा। और नारी है कि सदा छली जाती रहगी। आज उससे, कल दूसरे से।

सुधाकर ने पूछा—"अम्बूड़ी। तू बता मामला क्या है ?"

सुधाकर के पूछने पर पहले उसने सिर झुका लिया।

सुधाकर ने दुबारा पूछा—"तेरा असला पति कौन-सा है ?"

अम्बूड़ी ने सिसकते और झिझकते हुए पहले पुरुष की आर दखकर कहा—"साब होकम, शादी रो धणी यो हे।" दूसरे की तरफ देखते हुए उसने कहा—"नाते रो धणी यो हे।"

सुधाकर ने कहा—"धणी दो। तू अकेली। तुझे पहले वाले से क्या तकलीफ है ?"

"दारू पीकर मारता है।" अम्बूड़ी ने कहा।

"पर अभी तो दारू दाना ने पी रखी है।"

"मारता ता दूसरा भी है।" अम्बूड़ी ने इतराते स्वर मे कहा—"लेकिन प्यार भी बहुत ज्यादा करता है। आज ही ये नई साडी काजल टीकी सिन्दूर पायल लाया है।"

सुधाकर उसी आदिम सोच मे बह गया—"कौन किसे समझाएगा ? क्या समझाएगा ?"

"औरत का चाहिए प्यार खाना कपड़ा ओर सुरक्षा। ये जहा भी मिलगी चली जाएगी। प्यार की खातिर राज्य भी छोड़ देगी। चाहे पढ़ी-लिखी हो चाहे अनपढ़। औरत सिर्फ औरत होती है। आर उसका औरतपन है जो मर्द को मर्दानगी देता है तो मर्द को ठुकराकर उसकी असलियत भा बता दता है।"

"सुना सात फेरा वाल ?" सुधाकर ने पहल मर्द का कहा—"कवल सात फेरा से कुछ नहीं होता। उसे चाहिए प्यार जो तुम नहा दे सके। एक कुत्ते बिल्ली

गाय, घोडे को भी आदमी प्यार देता है तो वह जिदगी-भर साथ नही छोडता। जब जानवर प्यार के बस हाकर निभा सकते हं ता य ता आरत है।"

"पर होकम। यह औरत ?"

"तुम्हे पैदा करन वाली भी ओरत है और तुम्ह प्यार देकर तुम्हारा वश चलाने वाली भी ओरत है। उसकी इज्जत करना साखो। आदर करना सीखा।"

"साब होकम, इस भी समझाआ न।"

"कल दूसरी लाएगा ता वो भी इसी तरह छाड जाएगी।"

कुछ देर चुप लगाकर पहला मद इसरार करने लगा—"साब होकम हमारा झगडा दिला दो। हम चल जाएगे। फिर कभी नही आएंगे।"

विपक्षी क बाप न हा म हा मिलाइ। "माणा क्या गण दो।"

"झगडे के नाम पर तुम सबको अन्दर करवा सकता हू। रात को सरकारी बाउड़ी म आकर झगडा-फसाद करने की सजा जानते हो ?"

"नहा होकम।"

"तो औरत बेच सकते हो तुम।"

"क्या केवे होकम ? उमने कान पर उगलिया रख ली।"

"झगडे का झगडा किया ता पुलिस को देना ही पडेगा समझे बाप-बेटा, दाना को हो।"

आर फिर दोनो तरफ के बुजुर्ग इकट्ठे हुए। सुधाकर स विनती करन लगे—"आप पधारो साब। अब हम निपट लगे।"

"शर्म नहा आती तुम्ह। औरत के पस मागते हुए ? क्या यह खरीदने और बेचने का सामान हे ? प्यार स मिलन वाला अनमोल ताहफा है।" सुधाकर न कहा—"इम तुझे सौंप भी दू तो क्या जबर्दस्ती रख पाएगा ? कितन दिन रख लेगा ? औरत टिकती हं प्यार और विश्वास मे। औरत के सौदे की रोटी तेरे गले क नीचे उतरेगी कैसे ? क्या इसी मर्दानगी पर तुम लोग आधी रात को औरत छीनने आए थे ? ये गाय या भैंस नही कि तुम्हारी लाठी से डर जाएगी और तुम डोरी पकड़ कर ल जाओगे ? बाला कितन रुपये चाहिए ? म देता हू ?"

बजारो न कई बाबूजी और साहब देखे थे। मगर सुधाकर जैसा साहब कहीं कभी नही दखा।

उनके मुखिया ने आगे बढकर कहा—"हुजूर हमे कुछ नही चाहिए। आपने आखे खाल दी। आगे स हम किसी का झगडे का रुपया नही लेगे। आज समझ गए कि आरत बिकाऊ माल नही होती है साब। ईश्वर जी लम्बी उमर दे आपको साब।"

"आज स अम्बूडी हमारी बहन-बटी है। हमे साफ कर सरकार। सब चलो रे।"

'नही मुखिया अभी रात म कोई नही जाएगा। सुबह गोठ खाकर जाना।"

दूसर मुखिया ने कहा।

सुधाकर क इधर आन क पहल नाइट चाकादार केशावा न समझाया था—"साहब हाकम पराया झगड़ा म फसवा म फायदा नीव। ई वाबा झगडा म आपर ठाक देगा तो लेणा रा देणा रा देणा पडा जाएगा। लाठिया सू हमजवा वाला वाता सू ना मान। घणी खाटी काम है। दारू पी ने लड़नो रोज रो काम है।"

सुधाकर जब फैसला करवा कर लाटा तो केशावा हैरान थे। बात-बात म मरने-मारने पर उतारू बजारा काम मान कस गई ?

फिर बिना झगडे के पस लिए फसला हुआ कसे ?

उसकी खापडी म यह बात घुसने को हा तयार नही परतु इस चमत्कार कहा या प्रभाव। असर ता हुआ ही था आर उसका प्रमाण दूसरे दिन मिल गया।

दापहर का समय। दोना दलो के लोग आए। एक पत्तल पर प्रसादा का भाग। सभी ने सुधाकर स अभिवादन किया।

"वाबूजा राम-राम। बाबू, राम-राम। राम-राम। राम-राम।"

"सबको राम-राम।"

लहरू के पिता ने कहा—"साहब आप रात को हमारे लिए भगवान बनकर आए। पता नही झगडे म क्या होता ? इनके सर फूटते या हमार। ये थान म बन्द होते या हम। अपने एक बडी दुर्घटना से बचा लिया, हाकम।"

"हम अधा की आख खाल दी हाकम। हम खुद ही नहा जानते कि आरत को बचकर झगड की रोटी कैसे खा रहे थे। हम ? कभी नही सोचा हमने।" दूसरे ने कहा—"इत्ते बरस इत्तीसी बात हमार मगज म आई क्या नही ? आज तक हम हमारी मा-बहन बेटी-बीवी का नात दे-देकर अपनी राटिया सक रहे थे।"

तीसरे ने कहा—' अनजाने म हम मूरख कित्ता बडा पाप कर रहे थे हुजूर।"

"हम यहा नहा आत ता आप जैसा गुणी हम कहा मिलता ?"

चौथा बोला—' जरूर हमने इतने पापो के बीच कोई ता अच्छा पुण्य किया है जा आप जेसा सही मारग दरसाने वाला पा गए हं।"

पाचवा—' हम ता पवित्र हो गए रे। घर बैठे गगा आई। नहाकर पाप से छूट गए।"

"अब बस भी करो। म कोई भगवान या ।" सुधाकर ने कहा—"तुम्हारे जसा ही आदमी तरह करने आया हू।"

"जा कुछ यहा सीखा हू।"

सुधाकर न समझाया—"

बेकार। भगवान न मनख

सुख-दु ख म । वरना

वह माटी का "

"हम सबका प्रण है कि आज से हमारे कबीले मे कभी झगडा वसूलने का झगड़ा नही होगा।"

देवा, केशाबा, जगदीश, परभू कभी बाबूजी को देख रहे थे तो कभी बजारा को। सोच रहे थे—"ये आदमी है या जादूगर ? इन पत्थरो को भी पिघला दिया है बाबू साहब ने।"

बाध की दीवारे काफी ऊपर उठ गई थी। कट ऑफ मिट्टी के अन्दर दबना शुरू हो गई थी। एक दिन केशाबा ने सुबह-ही-सुबह राम-राम के बाद चाय देते समय एक बात कही—"साहब! ये जो बार-बार काम मे विघ्न आ रहे हैं कभी आपने कारणो पर ध्यान दिया है ?"

"म आपकी बात समझा नही केशा बा ?"

"साहब होकम सोचना। फिर कभी बताऊगा।"

"आप तो जानते हो केशाबा यहा सोचने के लिए कितनी-कितनी बात हैं। एक से फुर्सत मिले तो दूसरे के लिए सोचू ? आप ही बता दगे तो हम समस्या जल्दी सुलझा लगे।"

"साहब, बाध के पेटे मे जो देवता हैं पूजा माग रहे हैं।"

"इसमे ऐसी कोन-सी परेशानी वाली बात हे ? करवा दगे पूजा। वैस आप लोगो मे से भी तो कोई पूजता होगा उन्ह।"

"वो तो हे ही । फिर भी ।"

"फिर भी क्या ? जगदीश जी को कहूगा। कल से वे भी शुरू कर दगे। ब्राह्मण आदमी हैं। वैसे ब्राह्मण तो मैं भी हू ही परतु काम की अधिकता से म रोज नियमित नहीं कर पाऊगा।"

उस दिन बात आई-गई हो गई। एक तरह से सुधाकर भूल ही गया।

उडती-उडती बात एक-दूसरे आदमी ने भी सुधाकर से कही—

"साहब होकम, बाध रा भोम्या जी नाराज हैं ?"

"क्यो भाई! हमने आपके भोम्या जी का क्या बिगडा ? उन्ह कहना एक दिन आकर मिल ले।"

"होकम वो कैसे आ सकते हैं ?"

"ठीक हं हम उनका घर बताना हम उनके घर चल जाएग। जो भी नाराजगी होगी दूर कर आएंगे। जब भी जाना हो बता देना। उन्हे कहना घर ही रह।"

दवा ने स्पष्ट किया—"हुजूर भोम्या जी कोई आदमी नही हैं। बाध देवता की बात कर रहा हू।"

"माफ करना मै समझा कोई आदमा होगा। क्या हुआ बाध दवता को ?"

"हाकम, जस ही पहला पानी भरगा, दवता अन्दर डूब म आ जाएग। उन्हे नई जगह थापना होगा।

"ओह अब समझा! भूमिपति लोकदेवता की पुनर्स्थापना करनी है ?"

"हा हाकम। अब आप ठीक से समझ गए।"

"तो फिर मुहूर्त निकलवाओ। नई जगह स्थापना की तलाश करो। आयोजन में क्या-क्या करना चाहते हो, पाच आदमी तय कर मुझे बताओ। मैं करूगा ।"

"मगर साहब आप नी कर सका।"

"मगर क्यू ?"

"आप ब्राह्मण हो।"

"ये तो और भी अच्छा है।"

"मगर आप ?"

"अरे! भाई झिझक क्या कर रहे हो ? साफ-साफ क्या नहीं कहते ?"

इस बार देवा को भी हस्तक्षेप करना पड़ा।

"साहब हाकम देवता रे लोई छाव। आप किस तरह करोगे ?"

अब इतनी देर के बाद समझा सुधाकर कि—ये खेल तो कोई पर्दे की आड़ मे बैठकर खेल रहा है। लोक देवता के नाम पर बलि चाहिए इन्हे ? मुझे विघ्नो का डर बताने का कारण अब समझ मे आया।

उसने बहुत सयमित रहते हुए उत्तर दिया—"ठीक है तुम बाकी सब व्यवस्था करने की सोचो। अगला पेमट जब भी आए उसके बाद हम पुनर्स्थापना महोत्सव धूमधाम से मनाएगे। ये बात अब तक कही होती तो काम पिछले महीने ही कर देते। खैर अब भी कोई बात नही।"

सब के सब खुश हो चले गए। उनको विश्वास ही नही था कि साब इतनी जल्दी और इतनी आसानी से मान जाएगे। सुधाकर को कोई रास्ता ढूढ़ने का समय चाहिए था वह मिल गया।

× × ×

रोडा बा कहानी के बिना यह ओबरा बाध और आबरा का उपन्यास अधूरा रह जाएगा। शुरू करते है रोडा बा का इतिहास। कद-काठी के मजबूत। ऊची-ऊची धोती बाधे सिर पर सफेद बुदकीदार फैंटा बाधे घनी खिचड़ी मूछ दबग आवाज के धनी हैं रोडा बा। आसमानी धुला हुआ कमीज और कानो मे सोलह रुपये तोले के भाव की खालिस सोने की मुर्किया पहने हुए सिर पर पुराने आधे कनस्तर को पटी सफेद डोरी से बाधे अपनी चलती फिरती दुकान को लेकर दूर से नजर आ जाएगे रोडा बा। गाव से चलकर बाध एरिया मे पहला पड़ाव होगा उनकी दुकान का। भीड़ जुट जाएगी। बडे अन्दाज से सफेद डोरी की गाठे ढीली करेगे। बडी सावधानी से खोलेगे ऊपर का ढक्कन। एतिहात से एक-एक चीज कराने से ढक्कन पर जमाएगे फिर चालू हो जाएगी उनकी दुकान। एक-एक से पूछेगे—'बोल छोरी थारे कई छावे।"

बाध एरिया मे निपटाकर पहुचेगे बोर एरिया मे। किसी आम के पेड़ के नीचे या महुए की घनी छाया मे खुल जाएगी रोड़ा बा की दुकान। रोडा बा के बैठते ही

नके ग्राहक जुटने शुरू हो जाएगे।

"रोड़ा बा पचास पया रा भूगड़ा दा।"

"रोड़ा बा, आठ आना री गोलिया दो।"

"चार आना रा बिस्किट दो।"

"म्हारे, मूगफलिया छावे।"

"बा अणी कलीप रा कतरा पया ?"

"बा मारे फुदा छाव।"

"म्हारे चाटी"

"म्हारे रिबन"

"रोड़ा बा म्हू पैला आई। पैला म्हाने दो।"

"रोडा वा म्हारा ट्रैक्टर आवा वाला है। पैला मने निपटाओ।"

"राड़ा वा मैं दो रुपया दीदी, बाकी रा पया पाछा छावे।"

श्रमिक महिला और कन्याओ से घिर जाएगे रोड़ा बा। जिसका ट्रैक्टर पहले ाने वाला हो उसे सामान पहले मिलेगा। यही मुख्य नियम है चलती-फिरती दुकान ा।

बाध क काम म मजदूरो का हरजा हो, यह रोड़ा बा को सहन नही। बहुत ष्ट झल हं इसके निमाण के लिए। श्रमिक महिलाआ के साथ आए बच्चा को क-एक गोली मुफ्त म पकडा दगे रोडा बा।

जिसको जो चाहिए रोड़ा बा उस जादुई सदूक से सब निकाल-निकारा कार ते रहग। जब महिलाआ की ग्राहकी स निपटगे तो पुरुषा की भीड़ से घिर जाएगे।

"रोड़ा बा एक बडल चक्कर रो दीजा।"

"राड़ा बा तमाखू दो।"

"रोड़ा बा हाऊ दीजो। थाडी तेजी ठीक वे। पैला वारी म तेजी नी ही।"

"राडा बा या बारी म्हू खुद तरपाल सू साइकिरा पर बांधने रााया। भरासा नी तो ऑफिस जाई ने बाबूजी ने पूछ लीजो। बाबूजी उदयपुर गाया नै यरा स्टण्ड पर ड़ा हा।"

राडा बा तमाखू की तजी क लिए बाबूजी गा साक्षी मे खड़ा कर दग। फिर ाहका का सामान थमाते जाएग।

"या थारा बाड़ी रो बडल।"

"या थारी तमाखू। निकाल पया ?"

"पया तो अबार नी है। पछे दूगा।"

"बा पछ दीज। चुकारा पे।"

"उधार कर लगे। वो भी गांव म। [illegible]

कहा जाएगे पैस।

रोड़ा बा की ग्राहकी या [illegible] चबूतर।

[illegible]

चौकी पर राड़ा बा आकर थमग।

कई बार राड़ा बा क पैस डूब भी जाते हैं।

वे मागते ही नहा हैं। उगाही भी नहा करत।

अच्छा खाता-पीता घर है। जमीन जायदाद खती बाड़ी है राड़ा बा की। गाव मे सबसे ऊची हवेली है रोड़ा बा की।

रोड़ा बा की दूकान तो कई महीना स चल रही थी परतु ऑफिस क चबूतरे पर सुधाकर के आने क बाद आज पहली बार आए।

राड़ा बा ने कहा—"बाबूजी राम-राम!"

सुधाकर ने कहा—"राम-राम रोड़ा बा। आज इधर कस भूल पड़ ?"

"बाबूजी इच्छा तो घणा दना सू आपरा दरसण री ही, पण ?"

"पण कई व्यो रोड़ा बा ?" सुधाकर ने पूछा।

"आपन अणी दवले एक दाण मने धुतकारी दादा (मना करना) ऑफिस म ना आवणा। वणी दना सू हा मैं आवणा बन्द कर दीदो।"

सुधाकर ने कहा—"पर मरे दरबार म आने के लिए तो रास्ते बन्द नहीं हैं। किसकी मजाल है जो यहा से आने से राक ?"

"अणी वास्ते ही आज आवारी घणी इच्छा ही। मन नी मान्या।"

"सब मनख आपरी घणी तारीफ कर। माणा साहब घणा हाऊ। माणा बाबूजी घणा लाखीणा। म होच्यो कि आज मू भी दरसण कर आऊ।"

सुधाकर न बड़ी विनम्रता स कहा—"पर राडा बा एसी क्या गाठ पड़ गई कि आपणा इतने दिनो मुझ आकर सभालना भी नही चाहा। मैं तो यहा आया ही आप जैस बड़े-बूढ़ा के भरोसे।"

रोड़ा बा ने कहना शुरू किया—"आप नी जाणो या वात। घणा पुरानी बात है या। मैं ही इस चौका रा पहला चौकादार हा। या चौकी मै ही बणवाई। या सामने लीली हरी-भरी नीमडी म्हारा हाथ री है।" ओर शुरू हो गए रोड़ा बा आवरा बाध के प्रारभिक इतिहास की कहानी सुनाने।

ऑफिस क निर्माण म भरपूर सहयोग दिया राडा बा ने। राडा बा एक प्लेट में भूगडा आर एक प्लट म बिस्किट भर लाए। सुधाकर के सामने रख दिए। सुधाकर न एक मुट्ठी चने हाथ म लिए और बाकी जगदीश की तरफ बढ़ा दिए। जगदीश न पास खड़ स्टाफ परभू, देवा हूडी लाल आदि म बाट दिए। बिस्किट भी एक-एक सबका द दिए।

रोडा या की कहानी का क्रम जारी था। जब यह चोकी बनी तब यहा मिस्त्री थे शिवरतन जी। चौकी के याद शिवमदिर का चबूतरा। मिस्त्री शिवरतन जी थे बड़े शिवभक्त। उनकी इच्छा थी कि बाध पर शिवमदिर तो होना ही चाहिए। इसी बहाने लोग बाध पर आएगे। बाध मे नहा-धोकर शिव-अर्चना करगे। इसा इच्छा से शिवरतन जी ने बनवा दिया बाध के दक्षिणी किनारे वाली पहाड़ी पर शिवमन्दिर

का चबूतरा। बाध पर भगवान हागे तो भगवान भरासे तो बनेगा यह बाध।

कई दिन तक सोचते रहे रोड़ा बा, केशा बा और शिवरतन जी कि मूर्ति कहा से आए ? एक दिन रोड़ा बा को सपना आया। खुद साक्षात शिव उन्हे पुकार रह ह'। दूसरे दिन, दिन उगने से पहले मुह-अधेरे केशा बा का साथ ले चले शिव को खाजने। कई पहाड आर जगल लाघे। नदी किनारे एक वीरान खडहर-सा मदिर नजर आया। राड़ा बा चाके यह ता वही स्थान है जा सपने मे देखा था। यही शिव पुकार रह थ। फिर क्या था ? दोना ने नदी म डुबकी लगाई। हाथ म महादेव। शिव की पूजा की। अच्छा दुगड़िया दखा और महादेव जी का गाठ म बाधकर चल। फिर वही घाटिया आर पहाड़िया लाघी। थक जात ता कभी इस पड क नीचे तो कभा उस पड़ क नाचे। कभी गाठ कशा बा क माथ ता कभा गाठ राडा बा के माथे। इस तरह गाठ मे बन्द कर लाए भगवान। बेचारे भगवान तो सदिया से भगत क बस म रह। इस बार रात मे आते कैसा चमत्कार हुआ कि अचानक उन्ह एक शोटकट छोटा रास्ता मिल गया कि फटाफट आबरा बाध पर पहुच गए। पता नही, कितने कैलाश लाघ कर आ गए भगवान। लोग लाख सिर पटक-पटक कर रह गए। मगर किसी ने नही बताया भगवान आए कहा से ? कोई हल नही खोज पाया। शिव ता आदि-अनादि ह'। आते नही प्रकट होत हे। सा इस बार प्रकट हो गए ओबरा बाध पर।

ओबरा बाध का जन्मकुडली क लिख अनुसार कोई भी काम बिना अडचन सभव ही नही है। भगवान तो प्रकट हो गए मगर स्थापना कम हो ? जितने मुह उतने विचार। हर आदमी अपने-अपने दाव-पच और अटकल लगाने लगा। हर एक के स्थान अलग-अलग।

राडा बा केशा बा और शिवरतन जी का विचार था कि चौकी के नीच नीमडी क पास चबूतर पर स्थापना हो। गाव क कुछ लाग और एक वार्ड पच सम्पूणानन्द जी चाहते थे कि गाव के किनारे वाले सिरे पर उत्तरी कोन पर स्थापित हा प्रभु। दोना दला म उत्तर-दक्षिण का अन्तर। एक ने सुझाया— खेड़ा देवी स पाती मागी जाय। जो पाती मिले वही सर्वमान्य निर्णय। तयशुदा समयानुसार नहा-धोकर, स्वच्छ वस्त्र पहन खेडा देवी के मदिर पहुचे। आज मदिर को भी धा-पाछ साफ-सुथरा चमकाया गया था। आम और आशावाला क पत्ता से सजाया गया था। धूप आर गूगल का धुआ मदिर को महका रहे थे। अगरबत्तिया की अपनी महक अलग ही लग रही थी। जो राज मदिर नही आते वे भी मजा देखने पहुच गए थे। देखते हैं पाती किसे मिलती है ? मन्दिर उत्तरी छोर बनता है या दक्षिणी पहाड़ा पर। जो जिधर चाहते थे अनजाने ही अलग-अलग दला म बट गए थे।

भोपाजी ने पूजा-अर्जना की। झालर-डका ढोल-नगाडो की आवाज म आज विशेष जोश था। आरती के बाद प्रसाद वितरित हुआ। उसके बाद दोना दल खेडा देवी के प्रागण मे दाए-बाए बैठ गए। दोना दल जय-जयकार कर रहे थे— "खेड़ा

देवी का जय! खड़ा देवी की जय!"

ऐसा माना जाता है कि यह मंदिर महाराणा प्रताप कालीन है। गागुन्दा म महाराणा प्रताप का जब राजतिलक हुआ ता उसक पश्चात् जब तक व यहा रह तब तक इन आवरा की पहाड़िया म शिकार खेलन या युद्धाभ्यास क लिए जात समय खड़ा देवी के दर्शन कर शगुन अवश्य लत। आज भी यहा क राजपूत अपन का उनक साथ जुड़ा मानत हैं और भील-गमतिया लाग भी अपने आपको प्रताप के सहयागी भीलू राणा क वश का मानते हैं। हार मानना न राजपूत जानते हं न गमती। दाना ही अपनी आन और बान क लिए मर मिटग। आज भी कुछ एसा ही माहौल बन रहा था।

दाना दला न माताजी क आजू-बाजू अपनी अपनी कटारिया रख दा। एक तरफ ढाल क ढमाक गूजने लग ता दूसरी आर नगाड़ा का तुमुलनाद बजन लगा। बजाने वाला म पता नहा कहा स आज दूना जोश भर गया था। बाच-बीच म 'खेडा दवी की जय' 'खड़ा दवा की जय' का लयात्मक घाष हा रहा था। एक-एक क्षण भारी लग रहा था। घी-तेल क दिया के प्रकाश मे आज खेड़ा देवा का रूप भी निखर आया था।

मा आज निर्णायक थी। चहरा अद्भुत काति से दमक रहा था। आखा म एक विशष आकर्षण था। दस-पन्द्रह बीस मिनट-दर-मिनट घटा की तरह बीत रह थे। पल-पल युगा-सा बीत रहा था। अचानक पाती गिरी। रोड़ा बा, केशा बा की कटारी म। उछल पड़े लाग। हर्षोल्लास छा गया। साथ ही सम्पूर्णानन्द जी के दल म मायूसी छा गई। दो म स एक को हारना ही था।

लोग जिस समस्या का हल जितना आसान समझ रह थे उतना आसान था कहा ? दक्षिणी दल ने स्थापना समारोह की तैयारिया शुरू कर दी। कहा-कहा से ब्राह्मण आएगे प्राण प्रतिष्ठा के लिए ? किन-किन लोगो को निमत्रण जाएगा ? कौन साधु महात्मा आशीर्वाद के लिए आएगे ? भजन मडली कहा स आनी है ? माइक और टट का काम कान देखेगा ? प्रसाद कितने मण का बनगा ? आसपास के कितने गावा मे न्यौता जाएगा ? भगवान तो सबके हैं। कोई वचित नही रहेगा। जितनी दूर-दूर तक गाव नूतरा खबर करेगा, उतना ही बड़ा आर भव्य समारोह होगा। हर आदमी जी-जान से जुट गया। पैफलेट और चन्दे की डायरिया वितरित हा गई।

जब चन्द वाले घर-घर पहुचे तो कुछ लोग टालमटाल आर हील-हुज्जत करन लगे। अन्दर-ही-अन्दर की सुगबुगाहट से पता चला कि अब भी दूसरा ग्रुप अड़ा हुआ है कि मदिर बनेगा ता गाव क छार पर। यहा जिद है उनकी। कार्यकर्त्ताओ का जाश ठडा पड़ गया। शिवरतन जी को लगा कि हम जीती बाजी हार रहे हैं। कही ये न हो कि प्राण-प्रतिष्ठा ही नही हो। बेचारे भगवान गाठ म कब तक बन्द रहगे ?

उन्होंने एक नया हल खोज निकाला। सर्वमान्य हल। गाव के सब लोगा को आमत्रित किया।

शिवरतन ने कहा—"भाइयो! हम धार्मिक मसला हल करने जा रह हैं। मरी इच्छा थी कि मंदिर चौकी पर बने। मंदिर हमेशा पहाडी पर और ऊचाइयो पर ही अच्छे लगते हैं। जो भी वाहर से बाध देखने आएगा वह इस किनारे पर ही आएगा। दर्शन करेगा। बाध के ऊपर मन्दिर मे बैठा-बैठा बाध की सुन्दरता को भी दखेगा। ये मेरे अपने विचार थे। लेकिन मैं अपने विचार तुम लोगा पर थोपना नहीं चाहता। मे ठहरा नौकरीपशा सरकारा आदमी। आज यहा हू, पता नहा विभाग कल कहा भेज दे ? बाध और मन्दिर तुम्हारे रहगे। इसलिए आपस म मन-मुटाव से कोई फायदा नही। मै एक तरीका बताता हू। आप सब लोग उससे सहमत हो तो मान लेना।"

"बताइए ? बताइए ?" कई स्वर उभरे।

"देखिए जो लोग चाहते हैं कि मदिर गाव के छोर पर बने वे उधर खडे हो जाए। जो लोग चाहते हैं कि चौकी पर बने वे चौकी के पास पहुच जाए। सबको स्वीकार है ? बाद म किसी मे मतभेद नही रहेगा ?"

"जी हा स्वीकार है।" समवत स्वर उभरा।

"ठीक है, मैं एक-दो-तीन कहूगा।" शिवरतन ने सभी को कहा—"जो जिधर जाना चाहे, चले जाए।"

"एक दो तीन।"

लोग दोनो तरफ बटने लगे। पडित शिवरतन वही खड़े रहे। एक के बाद दूसरी तरफ गिनती का। गाव की तरफ पचास। चोकी की तरफ सौ। फसला खड़ा देवी वाला ही सही रहा।

फिर शुभ मुहूर्त निकलवाया गया। पडितो और साधुआ को बुलवाया गया। हवन और पूजा हुई। रात्रिजागरण भजन कीर्तन हुए। धूमधाम स स्थापना हुई शकर भगवान की। नाम रखा गया— श्री ओबरेश्वर महादेव। अस्सी किलो की नुगती का प्रसाद बना। सारे गाव मे घर-घर प्रसाद वितरित हुआ। इस स्थापना समारोह म भागदौड़ के अलावा खर्चा भी खूब हुआ रोड़ा बा का। पर रोडा बा ने खर्चे पर कभी ध्यान नही दिया। कब कितने कहा किस मद म खर्च हुए इस पर ध्यान ही नही दिया रोड़ा बा ने। ऑफिस के खर्चों का भी कभी लेखा-जोखा नही रखा राड़ा बा ने। बस यही सोचा कि यह बाध जितना जल्दी पूरा हो, उसी मे गाव को भलाइ है।

× × ×

गाव वाल पानी के बिना दु खा है। बधा पूरा हागा तो गाव के सभी कुआ मे सजा रहेगा। गाव के कुए भरे रहग तो मवेशी प्यासा नही मरेगा। गाव के बजर खेतो म भी कभी फसलें लहलहाने लगगी। इसी साध से जुड़े रोड़ा बा। इसी साध से अपनी

गिरह व खर्च की भी परवाह नहीं की रोड़ा बा ने। कई बार अपनी पूरी तनख्वाह भी यहीं खर्च कर दी रोड़ा बा ने।

यह नीमड़ा रोड़ा बा नहीं लाते तो आज लोग इसकी छाया का उपयोग कहां से करते ? कहां बैठते खमाणा, लोहार और उसके सहायक बीरा और आरा ? रोड़ा बा थककर चूर होकर इसकी छाया में सुस्ताते थे तो कितनी ठंडक महसूस होती है। शरीर के साथ-साथ आत्मा को भी, अपने जाए और अपने पाले का यही तो सुख है।

जो आदमी इस निष्ठा से जुड़ा था, भला कैसे दूर रह सकता है ओबरा बांध से। देवला की बात खटक गई रोड़ा बा के मन में—"कैसे कहा देवला ने अंदर मत आना ? उस ऑफिस में आने से मना किया जिसे अपने हाथों से बनाया। उस ऑफिस में आने से मना किया— जिस ऑफिस के एक-एक हिस्से ने रोड़ा बा के हाथों का स्पर्श पाया। बात खटक गई है उस दिन से। रोड़ा बा ने चाहा भी था कि फिर से काम पर आऊं। रिलीफ वर्क में मेरा भी सहयोग ओबरा बांध को हो परंतु देवला की बात खटक गई सो खटक गई। भला देवला की हैसियत और औकात ही क्या है मना करने की ? यह चाकी मैंने ही तो सौंपी थी उसे। वो ही आज मुझे मना करता है आने के लिए ? नहीं आना मुझे। कभी नहीं आऊंगा।"

मगर ओबरा बांध तो उनका है। कौन रोक सकता है यहां आने से ? और रोड़ा बा ने बड़ा नायाब तरीका ढूंढ निकाला रोज-रोज ओबरा बांध आने का। हर पल बांध से जुड़े रहने का अहसास। रोज की प्रोग्रेस का लेखा-जोखा रखते रोड़ा बा। अभी कितनी मिट्टी और चाहिए ? कौन-सा लेवल चल रहा है ? इस रफ्तार से कितने दिनों में बांध पूरा होगा ? पूरा हिसाब है रोड़ा बा के पास।

सुधाकर ने पूछा—"हां तो रोड़ा बा बिस्किट व चने के कितने पैसे हुए ?"

"हुजूर आपने खरीदे कहां थे ? वे तो मैंने इच्छा से दिए थे।"

"रोड़ा बा मां-बाप ने कभी मुफ्त का खाना नहीं सिखाया। ये लो पांच रुपये।"

"पर हाकम आपने तो चार दाने भी तो नहीं खाए। सब बांट दिए।"

"रोड़ा बा बांटे तो मैंने हैं। आपकी दुकान में से तो माल निकला है न ? तो फिर पैसे मिलने चाहिए न। और आज मुफ्त खाने की आदत डाल दी तो मेरा कल क्या होगा ? फिर पता नहीं आपका कर्ज चुकाने आना पड़े तो मुश्किल हो जाएगी।"

"जरा-सी बात को आपने कहां से कहां घुमा दिया। आप इतना सोचते तो हैं। जो लोग हाथी को निगल जाते हैं और फिर डकार भी नहीं लेते उनका क्या होगा ?"

'उनकी वो जानें रोड़ा बा। एक दिन सबको ऊपर जाकर जवाब देना है। जितने भी काटने हों काट लो रोड़ा बा।"

रोड़ा बा बमन से पैसे काट लेते हैं। तब से एक क्रम-सा बना लेते हैं रोड़ा

बा। चौकी पर आए बिना सुधाकर बाबूजा से मिल बिना उन्ह कुछ अच्छा नही लगता। जिस दिन सुधाकर से मिल नही पाते हैं ता बड़ा अनमनापन-सा लगता है ाड़ा बा को।

रोड़ा बा अपनी हाफ बॉडी पुराने कनस्तर की दुकान को समेटत हैं। नकुचे मे मे छोटा-सा ताला लगाते हैं। सुरक्षात्मक उपाय क साथ उसके चारा आर माटे सूत की डोरी बाध मजबूत गाठ लगाते हैं। पेटी को सिर पर रखे फिर एक बार पाच का नोट लौटात हुए कहत हैं—"ला होकम रख ला। इकट्ठ ही ल लूगा।"

"राडा बा मै जब भी उधार कर लता हू, ता नींद नही आती।" सुधाकर ने कहा—"और फिर इकट्ठे दन जितन मर पास पैसे नहीं हुए ? या देने म मरी नायत बदल गई या अचानक मुझे छोड़कर चला जाना पड़ा ता ? आप तो मेरा नाम पता ठिकाना भी नहीं जानते।"

"होकम आप सू बात म कोई नी जीत सक।" रोड़ा बा ने कहा—"जैसी आपरी मरजी। राम-राम। "

रोड़ा बा अपनी मूविंग शॉप सर पर लादे चल देते हैं। पीछ-पीछे छाटे-छोटे बच्च दौड़त जाते हैं—"रोड़ा बा दस पया री गोली दीजो।"

रोड़ा बा कहते हैं—"चाल। आग चाल पछे दूगा।"

तब से रोड़ा बा आग-आगे ही चल रहे हैं।

पता नही ओबरा बाध के इतिहास और भविष्य से कौन-कौन लाग जुड़े हैं आर कैस-कैसे जुड़ते रहगे ? अप्रैल के पहल सप्ताह म एक दिन दस बजत-बजत अवतरित हुआ कद्रीय सयुक्त सचिव साहब का सर्वेक्षण दल। दल को लेकर आए तहसीलदार। सुधाकर से परिचय करवाया। चार-पाच व्यक्तिया का दल। मस्टररोल चैकिंग समारोह प्रारम्भ हुआ।

मस्टररोल ही तो भ्रष्टाचार-तत्र का एक बारीक पुर्जा है। जो घड़ी की सैटिंग की तरह पुर्जा-दर-पुर्जा जुड़ा रहता है। जिसके आधार पर ही बाध की गति की घटा-मिनट और सैकड की सुइया घूमती रहती हैं। मस्टररोल का पहला पुर्जा है—मजदूर, दूसरा मेट तीसरा सुपरवाइजर। फिर कनिष्ठ अभियता, सहायक अभियता मुख्य अभियता, तहसीलदार-कलक्टर से होता हुआ अकाल राहत मत्री से मुख्यमत्री तक जुड़ा रहता है।

भ्रष्टाचार हमेशा पानी की तरह ऊपर से नीचे बहता है। बहते हुए पानी से हर व्यक्ति अपने बर्तन भरता है। जब रास्ते मे ही पानी खतम हो जाय तो अतिम व्यक्ति अपना खाली कटोरा लिये एक-एक बूद इकट्ठा करता है। जो उसके नसीब म होता है, मिल जाता है। न भी मिले तो क्या ऊपर वाले ने भेजा तो है।

मस्टरराल चैकिंग के क्षण उसी तरह होते हैं जैसे पहले दिन की परीक्षा। परीक्षा भवन म जाता है या कोई व्यक्ति इटरव्यू देने के लिए साक्षात्कार कर्त्ता के सामने जाता है या सुहागरात म पति के आने के समय नववधू की धडकन बढती

हैं या कसाई के सामन बकरा अपनी बारी की प्रतीक्षा म हो। ठीक उसी तरह तहसीलदार ओर अभियता गणा की धडकन बढ़ रही थी। उन्ह सुधाकर पर पूरा भरोसा ता था परतु मटा ने ही कही गडबड कर दी हो ता ? मजदूरा की मटो स अक्सर मिली-भगत चलती है।

चौकीदार देवा न घटी बजाई। देखते-देखते चौकी पर भीड इकट्ठी होना शुरू हुई। दोना आर लबी-लबी कतार लग गईं। एक तरफ मजदूर आदमी। एक तरफ मजदूरनिया। लकमा मेट की फ्रटियर मेल चलन लगी— लरकी उदकी हीरकी जमनी गगली रती पेगी फिर पुरुषा की शुरू हुई— रामा, पमा नवला, सवा डालू, कालू, लालू, माटन साहन । सयुक्त सचिव साहब की नजर एकाग्र भाव से सुवह के 'ए' ओर 'पी' पर कद्रित थी। जा पा बने हुए थे वे अभी भी उपस्थित थे। जो 'ए' चढे हुए थे अभी भा अनुपस्थित थे।

साहब ने कहा—"गुड वेरी गुड!"

तहसीलदार और अभियता गणा क चहरे कमल की तरह खिल गए। अकाल रात मे उन्होने राहत की सास ली।

सुधाकर निर्विकार भाव से उनक चेहर क भावा का पढ रहा था। उसे किसका डर ? साच को आच नही का सिद्धात मानता था।

आग-आगे अभियतागण और पीछे कदीय सर्वेक्षण दल, सबसे पीछे सुधाकर चल रहा था। वे उन्हे काम की प्राग्रेस टक्नीकल डेटा बाध से निकलने वाली नहरो की सिचाई क्षमता आदि समझाते जा रहे थ। दल के लोग अपनी नोटिंग करते जा रह थ।

तहसीलदार की धडकन बदस्तूर अब भी जारी थी। कही साहब लोग गलत रिपोर्ट नही दे दे ? तहसील की बदनामी हागी। अकाल राहत सहायता बद हो गई तो ? ढेरा बुरे-बुरे खयाल उन्ह शकाग्रस्त किए हुए थे। साहब लोगा ने बड़ी बारीकी से एक-एक हिस्से का अध्ययन किया।

साहब ने अत म कहा—"फाइन। वेरी फाइन। गुड प्राग्रेस। हू इज लुकिंग आफ्टर दिस वर्क ?"

"वी। वी बोथ सर। हम दोना इजीनियर्स।" दोना ने उत्तर दिया।

साहब ने फिर पूछा—"यस आई नो। बट हू इज लिविंग हीयर फार ट्वटी फार ऑवर्स ? '

"मैं जानता हू आपको। मगर मजदूरो के साथ चौबीस घंटे काम को अजाम कौन देता है ? हा एक आर नाइट मे आर अर्ली इन द मार्निंग बहुत-सवेरे काम करवाने का कसैप्ट किसका है ?"

' वो वा सर मि सुधाकर शर्मा का ?"

साहब ने अपने दाए-बाए नजर घुमाई—' सुधाकर!"

और सुधाकर था भीड़ की सबसे पिछली इकाई।

कशा या ने आदमी दौड़ाया—"साव होकम आपको 'दिल्ली साहब' याद फरमाते हैं।"

सुधाकर सिटपिटाया—"क्या हुआ ?"

"पता नहीं, होकम ?"

पर उसे चिंता किसकी कैसी ?

"सुधाकर जी हम आप पर गर्व है।" दिल्ली क सचिव ने हाथ बढ़ा दिया—"देश को आप जैसे व्यक्तिया के सोच की जरूरत है। देश ऐस ही विचारा से तरक्की कर सकता है।"

"धन्यवाद सर। हमारे दश की भौगोलिक स्थितिया और चालीस से चवालीस डिग्री टपरेचर मे मजदूर की कार्यक्षमता खतम हो जाती है। साथ ही कही-न-कही हम उनक साथ अन्याय ही करग। क्वाइट अनजस्टिस सर। ये भी मनुष्य ही हैं।"

"आप एकदम सहा कह रहे हैं मिस्टर सुधाकर।"

"आप खुद ही साविए सर पाच-छ रुपया राज म ये मजदूर अपन पूरे परिवार को क्या खिला जाएगा। क्या खुद खाएगा। कहा से मिलेगा उसे पौष्टिक आहार ?"

"क्या कह रहे हैं मि० सुधाकर पाच-छ रुपया पूर परिवार के लिए ? यानी कि वन रुपी फौर वन परसन इन ए ड फार हिज ब्रड एड बटर ? सभव नहीं है सुधाकर, एकदम असभव। वास्तव मे दयनीय स्थिति है, आदमा की।"

"तहसालदार साहब क्या कह रहे हैं सुधाकर ?" कद्रीय सचिव न पूछा—"आप इनसे सहमत हैं ?"

तहसालदार क्या जवाब दे ? मन-ही-मन कोस रहे थे सुधाकर को तहसीलदार—"दिनश न किसे रख दिया ? क्या यही समय मिला इस सुधाकर को, यह सब कहन क लिए।"

वे साच रहे थे—"वे तो यहा दल को लाए ही इसलिए थे कि सुधाकर के यहा ओवरा बाध का काम चुस्त-दुरुस्त है। रिपोर्ट अच्छी जाएगी और कद्रीय सहायता बढ़ जाएगी। मगर अब तो साहब लोग जरूर नाराज होग।"

ऐसा ही कुछ अभियतागण भी सोच रह थे—"सुधाकर ने ऐसा कहकर अच्छा नही किया।"

साहब ने अगला प्रश्न करके सबको और अधिक चिंता म डाल दिया। उन्हान आगे कहा—"हम इन मजदूरा के घरा म जाकर असली स्थिति और जीवन-शैली देखना चाहते हैं ?"

"यस सर। यस सर।" तहसीलदार और अभियताओ ने कहा।

सामने ही केशा गमेती खड़ा था।

साहब ने उससे कहा—"चलो तुम्हारा घर दिखाओ।"

केशा ने कहा—"चालो होकम।"

केशा की बडी आग से कुछ ठीक पीछे असख्य छेद थे।

सारा दल पैदल ही चल पडा। वाहन जाने का उधर रास्ता ही नही था। रास्ते म जाते-जाते साहब ने सुधाकर को पूछा—"आप क्या करत हं, सुधाकर ?"

"जी फालतू आदमी हू।" सुधाकर को अव तक तहसीलदार, इजीनियरा के स्याह चहरे नजर आ चुके थे, अत उसने जोड़ा—"फालतू क काम करता है।"

दिनश ने देखा, बात और कही बढ न जाय। हस्तक्षेप किया बातचीत म। सचिव क बराबर आकर दिनेश ने कहा—"सर मेरा अच्छा दोस्त है। समाज-सेवा का भी शोक है सो म मना लाया।"

"गुड। वेरी गुड। समाज-सेवा का शाक होना एक बात है।" बहुत कुछ आगे तक देख गए साहब—"असली बात है वास्तव म इस भयकर धूप मे कधे-स-कधा मिलाकर काम करना और काम करवाना।"

सुधाकर—"सर! ग्रज्युएशन म मने सोसियोलाजी पढ़ी थी। साथ मे दूसरा विषय था अर्थशास्त्र। तब स ही इन आदिवासिया के सामाजिक जीवन मे आर्थिक पक्ष का स्टडी कर रहा हू।"

"बहुत बढिया! अच्छा विषय हे।" साहब ने पूछा—"व्हाट आर योर आब्जर्वेशस ?"

"पर सर, आज दिन तक हल नहा खोज पाया हू। इनकी भूख क भूगोल मे हा उल्झकर रह गया हू। जिनके पास अर्थ ही नही है, उनका अर्थशास्त्र क्या होगा ?"

× × ×

तब तक केशा बा गमती का घर आ गया।

घर क्या टूटी-फूटी खपरैल की टापरी।

एक चबूतरा। बाहर पशु बाधने का ठाण। अदर आजू-बाजू मिट्टी की बड़ी-बड़ी कोठिया। जिनम कभी अनाज भरा रहता था। मगर आज तो विधवा की माग की तरह अनाज के अभाव म सूनी थीं। एक छाटी कोठी पर घट्टी पड़ी थी। एक तरफ बास की अलगनी पर फटे-पुराने बिस्तर लटक रह थे।

दूसरी तरफ चूल्हा। दुनिया म सारा खेल ही ता चूल्हे का है। यह निरतर जलता रह, यही चिंता रही है आदिमानव को। यही चिता है विश्व के हर मानव को। वर्तमान म चिता है चीन जापान और अमरिका को। चूल्हा निरतर जलता रहे पट सदा भरते रहे। इसी की खाज म विश्व बाजार की तलाश मे यूरापवासी और पश्चिम क लाग भारत तक चले आते हं। इसी तलाश म वास्काडीगामा आया था। ईस्ट इडिया कपनी आई थी। इसी तलाश म तैमूरलग महमूद गजनवी और बाबर आए थे। किसी न हम लूटकर अपना चूल्हा जलाया था। किसी ने व्यापार क नाम पर। किसी ने सहायता क नाम पर कर्जा दकर। सबका मतलब एक हा है उनका अपना चूल्हा जलता रह। जलान क तार-तरीके सबके भिन्न-भिन्न हो सकत हं।

"केशा यह घर है, तुम्हारा ?"

"बड़ो होकम।"

साहब की एक्स-रे आखे घर का नजारा तौलने लगी। आतरिक स्थितियो का ेदन करने लगी।

कोठियो की तरफ इशारा करके पूछा—"क्या ह ये ? किस काम आती ?"

"कोठिया हैं होकम। अनाज भरने के काम आती हैं।"

"कितना अनाज भरा है अभी ?"

"अभी तो खाली हैं होकम।" कहकर कोठी के नीच का ढक्कन खोल देया।"

"खाली क्या हैं ?"

सोच मे पड़ गया केशा गमेती।

खाली क्या हैं, क्या जवाब द कशा।

फिर उसने धीरे से कहा—"हुजूर भरगी कहा से ? तीन साल से बरसात ाही हुई। नाले मे पड़े बबूल के फूल भी बहकर नही गए तो अनाज कहा से नेपजता ? कोठिया कहा से भरती ?"

"ये क्या है ?" साहब ने मटका की उतरेड पर नजर डाली।

"इनमे साहब, जब खेत म उडद मूग, चवला निपजता हे, तो भरते हैं।"

"अभी क्या भरा है ?"

"खाली हैं होकम।" एक के बाद एक मटको को उल्टा कर गया केशा बा।

साहब ने भी एक-एक करके मटका देखा—खाली-खाली-खाली। सब रीते थ।

एक कोने म टोपली म राशन के लाए हुए पाच किलो गहू के अलावा कुछ न था। साहब को अकाल के दर्शन हुए। अकाल की ऐसी विभीषिका से साहब का कभी सामना नहीं हुआ। दिल मे कुछ महसूस हुआ—"अकाल क्या है ? क्यो खुलते हैं अकाल राहत कार्य ? क्यो बनते हैं ओबरा बाध ?"

सारी गणित एक ही घर को देखकर समझ म आ गई कद्रीय सयुक्त सचिव साहब को।

"घर ऐसे भी होते ह ?"

"केसे जिंदा है आदमी ?"

"भूख से कैसे लड रहा है आदमी ?"

"कैसे इज्जत बचा रहा है आदमी ?"

"कैसे जिंदा हैं उसके बच्चे ?"

"कैसे जिंदा हैं उसक पशु ?"

"ये बैल क्यो रखे हुए हो ?"

"खेत जातन के लिए, हुजूर।"

"जब अभी खेती नही हो रही है तो बैल बेच क्यो नही देते ? अभी कहा से खिलाओगे इन्हे ?"

खरीदेगा कौन, हुजूर। चारा-पानी किसके पास है ?"

"आधे पैसा मे बेच दो।"

"होकम हुजूर! कभी तो बरसात होगी और जब बरसात होगी, तब खेत कहा से जोतूगा ? बैल कहा से आएगे हुजूर ?"

"तब बैल किसी से उधर ले आना।"

"हर किसान अपना खेत सबसे पहले बाना चाहेगा। उसके खत की जुताई के बाद ही तो अपने बैल देगा। तब तक में बुवाई म पिछड़ जाऊगा। खेत कड़े पड जाएग। दूसरी बात ट्रैक्टर की तरह कोई अपने बेल सीधे से नही देगा। किसान पशु को प्यार करता है। बेकार मे उस पर दोहरी मार पड़ने नही देगा।"

"अच्छा! ऐसा है ?"

तब तक अपने हाथो के बल घिसटता हुआ आया केशा गमेती का विकलाग पुत्र।

साहब ने उसकी विवशता का देखा। पूछा—"कितन लड़के हं ?"

"तीन। एक इससे बडा दीपा। राहत कार्य म काम कर रहा है। इसस छोटा हुडीलाल आठवी म पढ़ रहा है। यह तीसरा अपग है सरकार।"

"तहसीलदार साहब कुछ कीजिए, इस विकलाग के लिए। सयुक्त सचिव न तहसीलदार को देखा ठीक हो सके तो इलाज करवाइए। जो भी फैसेलिटी मिलता हो दिलवाइए।"

"यस सर।"

साहब ने पूछा—"केशा और कोई तकलीफ ?"

केशा ने रोते-रोते कहा—"हुजूर मेरी जमान बाध के पट म आ गई है। उसकी मिट्टी खोद डाली है। मेरे आम और महुए के पड डूब जाएगे। मेरा कुआ और रहट भी डूब जाएगा। मरे दूसरे फलदार पेड़ भी खतम हो जाएगे। जब तक मुझे मुआवजा या जमीन के बदले जमीन नही मिलेगी जीते जी मेरा परिवार डूब जाएगा होकम। कुछ कीजिए हुजूर, कुछ कीजिए अन्नदाता! माई बाप!!"

"रोआ मत केशा। मत रोओ। हम तुम्हारे दर्द को पहचानते हं।"

इस बार साहब ने बढ़कर उसके कधे पर हाथ धर दिए। स्टडी दल क सदस्य चौंक पड़े। साहब को क्या हो गया ? कैसे छू लिया इस आदमी को ? हम तो पसीने की बू यहा तक आ रही है और साहब हैं कि अभी तक उसका कधा थपथपा रहे हैं।

सुधाकर बोल पड़ा—"सर इस बेबस के पास राने के अलावा रास्ता ही क्या है ? हम इसकी भूख का साधन आज छीन रहे हैं और देगे क्या ? कोई नहीं

जानता। इसके लिए कौन कानूनी दाव-पच लडेगा ? कहा से लाएगा वकील के पैसे ? जब तक मिलेगी तब तक इस विकलाग बच्चे को खिलाएगा कहा से ? दो चार महीना म अकाल राहत तो बद हो जाएगा। फिर ? फिर कौन देगा राहत ? किससे मागेगा भीख य ?"

"आप बहुत जल्द भावुक हो जाते हैं मिस्टर सुधाकर ?"

"जिसके सीने मे दिल हो, वही तो इमोशनल होना जानता हे, सर।"

"हम इसके लिए कोशिश करेगे।"

"आप सरकार है। सरकार क आकार मे न सीना हाता है और न सीन म दिल। वहा सिर्फ कानून होता है। और कहते हैं कि कानून और ऊट कब किस करवट बैठे, कोई नही जानता ?"

"तहसालदार साहब क्या इन्ह लैंड एक्वायर का नाटिस नहीं दिया ?"

"दिया था सर! वी आर लीगली साउड।"

"सरकार तो हमेशा ही लीगली साउड हाती है।। कमजोर तो ये आदिवासी मानव हैं, सर!" सुधाकर से रहा न गया—"क्या एक मात्र अधिग्रहण के कानूनी कागज से इसकी भूख का सवाल हल हो जाएगा ? क्या आप लिखित मे वायदा करने को तैयार है कि रिलीफ बद होने से पहले केशा गमेती को नई जमीन का मालिक बना देगे ?"

"यह मैं कैसे लिखकर दे सकता हू। एक केशा ही तो नही है और भी तो हैं। सबको कहा से दे दूगा जमीन।"

"आपने बिल्कुल ठीक कहा सर, आप द नही सकते।" सुधाकर पीछे नही रहा—"छीन जरूर सकते हैं।"

तहसीलदार साहब का मूड बिगाड़ दिया सुधाकर न।

क्या सोचकर आए थे, क्या हो गया ?

"ठीक है, काम के मामले मे रिपोर्ट अच्छी हे। मगर, ये आडे-टेढ़े और आके-बाके सवाल साहब के सामने करने की क्या जरूरत थी।" उनकी आखो मे एक पल शत्रुओ जैसी कौंध जाग गई।

देख लूगा पीछे तुम्हे भी।

साहब ने ध्यान भग किया—"अच्छा केशा हम चलते हैं। अभी और भी देखने हैं। हमने सब नोट कर लिया है। दिल्ली जाकर कुछ करेगे।"

दल आग बढा।

"सर और घर देखकर टाइम वेस्ट करना है। सब ऐसे ही हैं। इससे बदतर हैं। हमने यहा से आपका अगला कार्यक्रम रणकपुर रखा है।"

अभियताओ तथा तहसीलदार ने प्रार्थना की। पर साहब का मूड भी एक का स्वाद चखने म ही कसैला हो गया था अब उसम और कडवाहट घोलने की जरा भी इच्छा नही रही। फिर भी जाना तो था।

केशा सपना देख रहा है। अपढ़ केशा प्रतीक्षा कर रहा है अपनी नई जमीन एलॉट होने की। प्रतीक्षा कर रहा है आम-महुए-कुए के ढेर सारा रुपया का चेक लिए तहसीलदार साहब खडे हैं। अपग लड़के का इलाज हो गया है और हूडी लाल के साथ वह भी स्कूल जा रहा है।

आज भी केशा बा जिदा है, कभी पूरी नही होने वाली उम्मीद पर। केशा बा जिदा है सयुक्त सचिव कद्रीय सरकार दिल्ली के आश्वासन पर उसको भरोसा है।

भारत सरकार के इतने बडे अधिकारी उनके घर खुद चलकर आए हैं। भला अब केसे झूठ हो सकता हे ? एक दिन वह भी अपनी नई जमीन मे हल जोतेगा। अनाज काटेगा। उनकी खाली कोठिया फिर अनाज से भर जाएगी।

न जाने यह सपना कब सच होगा ? मगर वह जिंदा है कद्रीय सयुक्त सचिव अकाल राहत मत्रालय के एक दिए गए वायदे पर। एक विश्वास पर। जिंदा है एक सुनहरे सपने पर।

मगर क्या होगा उस दिन जब यह वादा टूट जाएगा विश्वास छला जाएगा और सपना बिखर कर चूर-चूर हो जाएगा।

सुधाकर तो जानता हे सब। उसका आक्रोश इसीलिए है। ये लोग सपना के सौदागर हे। सपने दिखाते हैं। चले जाते हे। इनकी झोली मे ढरा झुनझुने होते ह। एक-एक को पकडाते जाते हैं। इनक पास ढरो लोलोपॉप हाते है। पकड़ो और चूसते रहो। दूसरे बजट मे लाखो-करोड़ा रुपये हागे। केवल मजदूर क लिए मजदूरी के बजट म ही कमी होगी।

× × ×

सरकार हर फैक्ट्री कारखाने म मजदूर को मिनिमम वेजेज नियम लागू करेगी। मगर यह नियम यहा लागू नही होता। यहा उस मजदूर को इस काबिल भी नहीं मानती कि निम्न वेतन दर तो दे। फिर कौन-सी राहत ? कहा की राहत ? वह किसे कहे ? कौन सुनेगा ? किसी के पास सुनने का वक्त ही कहा है ? नो टाइम।

सारे बाध क पूर होने पर सबसे अधिक नुकसान किसी का हागा तो वह होगा केशा बा का। केशा बा की जमीन मुख्य बाध के पटे म आएगी। बाध के सिल लेवल पर। वह लेवल जिसके ऊपर ता नहर चल सकती है, परन्तु उस लेवल क नाचे नहर मे पानी नही होता। बाध के पेटे म ही जल भरा रहेगा। जहा पशुओ को पीने का पानी कभी खतम नही हो। आसपास क कुआ मे लेवल बना रह।

और लोगा की जमीन तो बाध सूखने पर निकल जाएगी। उनम तो गेहू की खेती हा सकेगी। लेकिन केशा बा की जमीन म ता एक बार घुसा हुआ पानी हमेशा के लिए कब्जा करके बैठ जाएगा। बरस-दर-बरस लगातार अकाल पड़े तो बात दूसरी है। एसा अवसर सभवतया आता ही नही है। सो कशा को इस जीवन म दुबारा इस जमीन का जोतने का अवसर नहीं आएगा।

एक दिन सहायक अभियता साहब व दिनश न सुधाकर को विवश कर दिया। उनका कहना था—"हम बरसात शुरू हान स पहल बाध क अदर जिन-जिन लागा की खती है उन-उन लागा क खता की मिट्टी को पहल खुदवाकर बाध पर डलवाना है। क्योंकि वह अदर की मिट्टी ता पानी भरते ही वस भी वेस्ट हाना है। जो मिट्टी खराब हो होनी ह उसे अदर छाड़न स फायदा क्या ? दूसरी बात, जितनी हम अदर या मिट्टी अधिक खादेंगे हम बाध की गहराई अधिक मिलगी। तीसरी बात बरसात शुरू हान क बाद हम अदर की मिट्टी निकाल हा नहा पाएगे। ट्रैक्टरा का चलना असभव हागा। इसलिए बाहर का मिट्टी या हम हर हालत म रिजर्व करके रखना होगा। बाहर का मिट्टी ता ज्या-ज्या आवश्यकता पड़गा हम डलवा सकत हैं। आपका अदर की मिट्टी खुदवान म प्रॉब्लम क्या है ?"

"सर मुझ काइ प्रॉब्लम नहा ह। कशा दवा कन्ना माना मरे सगे या रिश्तेदार नहीं हैं। लकिन जिस दिन इनक खत म गैंती चलगा वह उनके खत पर नही उनक मन, आत्मा और दिल पर चलगा। उस खून क जो फव्वारे चलग उनम ये अकले ही नहा म भी उस खून से सराबार हो जाऊगा। जो छींटे मर मन और आत्मा पर पड़ग सारा उम्र किसा भी साबुन स नहा धा पाऊगा। उस खून का अपराधी कही न कहीं म भी रहूगा।"

"मुझे कोई प्रॉब्लम नहीं ह। मैं पच्चीस रुपये रोज की नौकरी म इतना बड़ा खून कभी नहीं करवाऊगा। पच्चीस क बजाय पच्चास हजार भी द तो भी नहीं कर पाऊगा।" वह रुक न सका। बिना विराम लिए उसन आग कहना जारी रखा। *"लकिन क्या आप अकाल राहत कार्य अधूरा छाड़ जाएग ? मैं यहा इन्ह राहत* दिलान आया हू, गला काटने नहीं। इनका भूख मिटान आया हू, इन्ह कगाल बनाने नहीं।"

"दखिए सुधाकर आप बेकार म नर्वस हो रह हैं। हम इन्ह जमीन के बदले जमीन देंगे। मुआवजा भी देंगे।"

"क्या आप यह सब इनकी जमीन खुदने के दिन दे सकते हैं ?"

"दखो सुधाकर इनको कई महीना पहले नोटिस दिया जा चुका है।"

"आपके नोटिस का कागज न इनक ओढ़ने के काम आएगा न बिछाने के।" सुधाकर ने कहा—"फिर भूख तो उसस मिटने से रही।"

सुधाकर ने आत्मीय भाव से कहा—"श्रामान्।"

"आपका इतना लगाव इन लागो स कैस हा सकता है ?" अभियता ने पूछा।

"दिल को दिल से राहत होती है। मैंने इनम भगवान के दर्शन किए हैं और शायद इन्होंने मुझमे। सरकार कोई मूर्ति नही है, जिसम आदमी को आस्था और विश्वास हा। आप लागा का क्या है आज इस बाध पर कल दूसरे पर परसा तीसरे पर। म इनक अदर तक पैठ गया हू और मर दिमाग के हिस्से-हिस्से म रम गए ह य। मेर दिल क कोन-कोन म समा गए हैं ये।"

"आपका यह पहला काम है।" अभियता ने कहा—"लगता है कि इसमें ही इतने दुःखी हो गए तो दूसरे काम कैसे करेंगे ?"

नजर उठाकर अभियता को देखते हुए सुधाकर ने कहा—"आपको यह शक कैसे हो गया कि मैं जिंदगी-भर कसाई का ही काम करता रहूंगा ? यह मेरा पहला और आखिरी काम होगा। मैं जीवन-भर इस भूख से मरे हुए आदमी को बार-बार नहीं मार सकता।"

"ठीक है आप छुट्टी लेकर उदयपुर चले जाइए।" अभियता ने कहा—"हम ट्रैक्टर वालों को कल से अंदर की मिट्टी लाने के निर्देश दे देंगे।"

उस दिन सुधाकर ने साहब लोगों को न चाय पूछी न पानी। वे सुधाकर पर भुनभुनाते हुए चले गए।

उस रात सुधाकर बिल्कुल नहीं सो पाया। जब भी नींद उड़ती, बाहर आकर केशा की जमीन पर निगाह डालता। कल ये चमन उजड़ जाएगा। इन पर बसने वाले पंछियों को भी नया बसेरा ढूंढ़ना पड़ेगा। उसे लगा जैसे अभियता साहब केशा की जमीन का नहीं उसके खुद के फांसी के हुक्मनामे पर दस्तखत कर गए हों।

रात-भर बेचैनी के कारण सुधाकर ठीक से सो नहीं पाया। सुबह उठा तो सर और चेहरा दोनों भारी थे। कल की सारी घटना बार-बार उसके दिमाग में घूम रही थी।

साहब के शब्द बार-बार उसे मथ रहे थे—"ये आपके कौन से सगे और रिश्तेदार लगते हैं जो आप इनके लिए इतने परेशान हो रहे हैं।"

वैसे तो सुधाकर के पास इसका कोई उत्तर नहीं है। रात-भर सोचते रहकर सुधाकर को उत्तर मिल गया था कि सगा क्या केवल खून के रिश्ते से बनता है ? अगर ऐसा ही होता तो ये लोग क्या अपनी जान-जोखिम में डालते ? क्यों एक पराये बाबूजी की दिन-रात सेवा में लगे रहते हैं ? उसे तब याद आया—एक रात उसकी तबीयत खराब हो गई थी। तो इनमें से कोई उसके पास से हिला नहीं। सारी रात इन्होंने आंखों में निकाल दी। सुबह जब सुधाकर का बुखार उतरा तब ये लोग घर गए। रात-भर वैद्य ओझा—घरेलू दवाएं ला-लाकर ढेर कर दिया। देवरे में भाव करवाया और भोपाजी आकर खुद झाड़ा डाल गए। कैसे समझाए सुधाकर कि ये उसके कितने सगे हैं ?

खून के रिश्ते से भी बढ़कर रिश्ते इनसे हैं। सुधाकर ने प्यार बांटकर प्यार पाया है। सरकारी नौकरी वाला कंगाल अधिकारी क्या बांटेगा ? उसके पास बांटने को है ही क्या ? देगा भी सही तो कष्ट परेशानियां समस्याएं आज दिन तक ये आदिवासी इस मकड़जाल से छूट नहीं पाए।

सुधाकर चाय पीते-पीते यही सोच रहा था कि वह क्या करे ? उदयपुर चला जाय। किसी भी स्थिति में ट्रैक्टर वालों को केशा देवा कन्ना की जमीन में से मिट्टी लाने को नहीं कह पाएगा। अंत में उसने निर्णय कर लिया—"यही ठीक है।

चलना ही उचित है।"

लाग उस हार मानने वाला कह तो कहन दो। चाय पीकर चला जाएगा वह उदयपुर।

ठीक उसी समय लकमा मेट के साथ केशा बा और देवा आए। सुधाकर को सबोधित कर कहा—"साहब होकम, हमने कल की सारी बात सुन ली है। सरकार क हाथ लंबे हैं और हमारी दौड़ छोटी। ठाक ह जा नसीब म लिखा है, भुगतग। सरकार कुछ द न द, कब दे कोई नहीं जानता ? बाध के निर्माण म यह हमारा त्याग ही सही।"

सुधाकर ने बीच म टाका—"दखो भाई जमीन की चिंता पहली है, बाध की चिंता दूसरी बार कर लेना।"

"साब होकम, हमारी भी ता सुनो।" केशा बा न हाथ जाड़े।

"केशा बा। मैं खुद चला जाता हू, उदयपुर ? साहब लाग फरमा भी गए हैं।"

"वेई नी सक हाकम।" लकमा मेट ने हाथ जोड़े।

"साब, होकम "

"हम आपकी इज्जत पर आच नहा आने दग।"

"हम ये कभी नहा सह पाएग कि आपके लिए कोई कुछ कहे।"

"सुधाकर बाबूजी डर कर भाग गए—ये हम नहीं सुन पाएगे, होकम।"

"आप कोई चिंता नहीं कर। आज से ट्रैक्टर हमारी जमीना पर दौड़गे।"

"लकमा का कह दिया है लेवर आते ही वही भेज देना।"

सुधाकर अवाक् था।

इन अनपढ़ आदिवासिया का इतना बड़ा हौसला!

अपने बाबूजी की इज्जत की इतनी बड़ी कीमत चुकाने का तैयार।

कहा तो यह सुना था कि जब भी उनके खत मे ट्रैक्टर चलगे पूर परिवार सहित सभी ट्रैक्टरा के सामने लेट जाएगे।

सुधाकर अदर-हा-अदर उस सामूहिक आत्महत्या की बात सुनकर काप गया था उस बार।

आज इन छाट लागा का कद उसक सामने कितना बड़ा हो गया था। उनके इस अभूतपूर्व अविश्वसनीय निर्णय स उनके सामने अपने को कितना बौना महसूस कर रहा था।

बहुत दु खी था उस दिन कशा गमेती। उसका बेटा दीपा आर हुडीलाल।

दु खी था दवा गमेती। उस दिन घर-भर म मातम छा गया था।

जब कशा के खेत म ट्रक्टर चलने लग— उस सुनहरी माटी म, जिसे उसके दादा-परदादा ने खून-पसीन से सींचा था।

उस माटी म जिसम उसका बचपन जवानी और ढलती उम्र गुजरी थी।

ट्रक्टर चले— उस माटी मे जिसमे उसने अपनी जवानी की हड्डिया का सारा

जोर आजमाया था। आज उसी का अपनी आखो के सामने लुटता देख रहा था।

लच टाइम हो गया मगर आज केशा बा परिवार के एक भी प्राणी से खाना नही खाया गया। जिसने भी समझाया, यही कहा—"मुझे तग मत करो आज मुझसे खाया नही जाएगा।"

"आज मेरी धरती मा का मरण दिन है। उसका सुहाग छिन रहा है। उसका शृगार लुट रहा है और मैं खाना खाऊ! आज जब यह जमाने मुझ खुद को खाना देने वाली ही नहा रही तो मैं खाना कहा से खाऊगा ?"

इतना सब होते हुए भी केशा और देवा का पूरा परिवार बाध पर काम कर रहा है, रोज की तरह।

चेहरे पर एक तनावयुक्त मानसिकता मगर हाथ काम मे मशगूल। कोई घर जाकर नही सोया। सबकी आखो म आसू तो थे, मगर वे उस अदर-ही-अदर पी रहे थे। शायद आज का यही भोजन भाग्य मे बदा था। गगाजल की तरह पात रहे वे सब आसुओ की एक-एक बूद।

केद्रीय सयुक्त सचिव साहब पूछ रहे हैं—"केशा बा क्या तकलीफ है तुम्हे ?"

केशा समाधिस्थ है।

"क्या कष्ट है उसे ?"

"कही कुछ भी तो नही।"

"कष्ट तो जब तक अपने पास है उसे बचाने और उसकी सुरक्षा तक है।"

"जब सब लुट गया हो तो कौन-सा कष्ट ?"

और उस दिन एक नही कई केशा के घर देखे साहब ने। हर घर म भूख देखी साहब ने। हर घर मे भूख से लड़ता आदमी देखा साहब ने।

"कही, कुछ भी तो नही है। सब कुछ तो खाली है रीता है। कैसे जी रहा है आदमी ?"

× × ×

उस दिन भूख के आकड़े उतारे साहब ने। भूख की गणित देखी सचिव ने। भूख की ज्योमेट्री देखी साहब ने। भूख के कई इक्वेशन देखे साहब ने।

कितना यात्रिक था सयुक्त सचिव। प्रभुता-ज्वर के सस्थान म प्रशिक्षित शातिर सचिव। इसान की देह धरे इसानियत से रहित सचिवता ही तो रह गई थी। प्रशासनिक बाते और निष्कर्ष। सारे गणित और इक्वेशन तथा ज्यामेट्री दिल्ली जाकर ठडे बस्ते म। फिर न उन्हे केशा बा नजर आएगा न देवा बा और न खाली अनाज की कोठिया और न डूब मे छीने गए खेत। न आगन म मौत का पल्ला बिछाए। भूख नजर आएगी और न ओबरा बाध याद आएगा।

साहब की एअरकडीशड गाडी घर और दफ्तर के बीच व्यस्तता ढोती हुई। अकडकर लिफ्ट चढ़ते हुए साहब को राजस्थान के धुर दक्षिण का आदिवासी क्षेत्र और ओबरा बाध और डूब म समाधि लेता हुआ केशा बा का परिवार कहा याद

रहग ? फिर बीवी का खुशनुमा चहरा बच्चा की चमकती आख और कनाट प्लेस क ए सी रस्टारट म 'हॉट डॉग की प्लेट ही सामने हागा बस।

उस दिन फिर जीप म चला गया वह काफिला। एम्बसडर कारा म धसा हुआ रणक्पुर सड़क पर सरपट दौड़ने लगा वह काफिला।

पता नहा कुछ हल निकलगा भी या नहीं ? पता नही, इस भूख क सवाल को काई हल करगा भी या नही ? लगता है, सब कुछ अनुत्तरित ही छोड़ देगा। पता नही इस याजना क हल के आकड़ याजना आयाग के गोदाम म टना कागजा के नाच पड़े रह जाएगे और कद्रीय राजधानी म सैकड़ा किलोमीटर दूर गोगुदा तहसील स छ किलामाटर दूर आवरा कला म कई कशा या सपना सच हान का उम्मीद म दम ताड़ देंगे।

"राजधानी स सयुक्त सचिव मूर्ति साहब उनक लिए मदद भेजगे इस प्रतीक्षा म जावन गुजार दग। अकाल इस गरीब का पीछा नही छाड़गा। बार-बार बिन न्यौत पाहुन की तरह निर्लज्ज हाकर लौट आएगा यह अकाल। फिर कई कशा या लड़गे अकाल स। लड़ग भूख से। लड़गे अपने भाग्य से।" सुधाकर सवेदनाआ से भर उठता है। "यही सब नसीब मे लिखवाकर लाया है यह आदिवासी। फिर मत्रिया क दार शुरू हाग। फिर अखबारा क सवाददाता उनक साथ-साथ घूमते दिखगे। भाषण छाप जाएगे। भारी भीड़ के बीच नेताजी का चिताग्रस्त चेहरा। नाटक यही हाता रहा है, हाता रहेगा।"

"हमन पूरी तैयारी कर ली है। अकाल स किसी को मरने नही दिया जाएगा। हर तहसील मे दस-दस चोरी अनाज की व्यवस्था कर दी है।"

"जहा जरूरत है, वहा अकाल राहत कार्य खाल जा रहे हैं।"

फिर एक दिन सर्वेक्षण दल दौरा करने आएगा। फिर सैकड़ा हजारा केशा वाआ म वही सवाल दोहराए जाएगे।

"केशा य क्या है ?"

"हुजूर य कोठिया हैं।"

'क्या काम आती हैं ?"

"हुजूर अनाज भरते हैं।"

"अभी कितना अनाज भरा है ?"

केशा ढक्कन खाल देता है—"देख ल होक्म। अभी तो ये खाली हैं हुजूर।'

'वरी डजरस। हालात वाकई बहुत खराब हैं। कुछ करना पड़ेगा।" फिर वे आश्वस्त करग—"कशा सरकार तुम्हारी मदद जरूर करेगी। चिंता मत करना। कशा आर कोई प्रॉब्लम ? और कोई तकलीफ ?"

केशा—"हुजूर! मेरी जमीन बाध म डूब गई। धरती पुत्र हू। उसके बिना कैसे जीऊगा ?"

"हम सब पता है। तुम्हारी पुरानी फाइल म सब नाट है। कुछ करगे इस बार।"

और फिर दल-बल सहित काफिला रणकपुर पहुच जाएगा। साहब का लच यही है।

साहब रणकपुर की मूर्तिकला से अभिभूत हो उठगे—"वाह! क्या खुदाई है। लगता नही कि ये इसान के तराश हुए हैं। लगता है रातो-रात दवदूतो ने बनाकर खडा कर दिया हो।"

जब आदमी क पेट म स्वादिष्ट मिष्ठान्न भरे हा तो कला-मीमासा अच्छी कर लता है। भूखे पेट मे वही कला भाटे जैसी लगती है। वास्तव मे साहब ने इतना अच्छा आर्ट पहले कभी देखा नही।

रणकपुर की विश्व-प्रसिद्ध कला को देख साहब सब-कुछ भूल जाएगे। दिल्ली जाकर भूल जाएगे कि ओबरा कला के केशा बा को एक सपना दिखाया है और बेचारा केशा उस सपने के सच होने की आस मे बरस-दर-बरस गुजार दगा। दिल्ली के बड़े साहब ने कहा है—झूठ कैसे हो सकता है ?

"दिल्ली पहुचते ही पति से लिपटती हुई श्रीमती जी पूछेगी—"कैसी रहा राजस्थान यात्रा ?"

"वडरफुल। रणकपुर तो बहुत ही सुदर है। गजब की जगह है। कला का अद्‌भुत सगम। वेरी नाइस। तुम साथ होती तो और भी अच्छा लगता।" साहब जवाब देगे।

और साहब भूल जाएगे कि राजस्थान अकाल से जूझ रहा है।

पशु-पक्षा प्यास से मर रहे हैं।

चापाया को चारा नसीब नही है।

आदमी भूखा है।

राजस्थान के लाखो केशा बा अपनी भूख की गणित के सवाला का हल खोज रहे हैं और उत्तर हैं कि गुम हो गए हैं। मिल ही नही रहे है।

उत्तर मिले न मिले हल निकले न निकले। भूख का सवाल तो उसी तरह खड़ा है। सुबह होते ही केशा बा का बच्चा मागेगा—"मा भूख लगी है रोटी दे।"

शाम होते ही बच्चा मागेगा—"मा भूख लगी है रोटी दे।"

फिर-फिर वही सवाल करगा और कशा बा की उम्र बीत जाएगा भूख का सवाल हल करने म।

कराब पाच बजे का समय रहा होगा। एक मजद[illegible] [illegible] का बुलाने आया—"साहब होकम, मिस्त्री जी तातेड़ साहब रे क[illegible]"

'तुम चलो मैं आ रहा हू।" [illegible] काम [illegible] पहुचा। मिस्त्री इजन खाल बैठा था। हाथ-[illegible] से

"क्या बात है रामा ? क्या

साहब कुए म पानी बहुत पैद

बोर एरिय तक पानी पहुच नहा पा रहा है। बताइए क्या करू ?"

"इस इजन से पानी जहा तक पहुचे वहा एक खड्डा खुदवाओ।" सुधाकर ने कहा।

वहा पर एक इजन और लगवाओ जो उस खड्डे से बोर एरिये तक पानी लिफ्ट करेगा। तो फिर हो जाएगा ?"

"हा, हाकम! आज ही नवला गमती के कुए पर जो फालतू इजन पड़ा है ले आता हू।"

"ठीक है कना या को साथ लेते जाओ। मान जाएगा।"

इसी बीच कना पिता उदा आया। कहने लगा—"साहब होकम राम राम। आपसे एक अरज करनी है।"

"हा, हा, बोलो। क्या कहना चाहते हो ?"

कना ने सर पर बधे फटे को खोला। एक बड़े-से पत्थर का हाथ से साफ किया। धुला हुआ फटा उस पर बिछाया।

"साहब होकम, इस पर बिराजो।" हाथ जोड़कर कना ने कहा।

मगर सुधाकर फटे पर बैठा नहीं। कना ने जेब से कागज निकाला। सुधाकर कागज ले पढ़ने लगा। पत्र टूटी-फूटी भाषा में आड़े तिरछे शब्दो में लिखा था—

"साहब होकम— राम-राम! आप मेरा खेत खण (खाद) रहे हो। मैं गरीब गमेती हू। मेरे पास इस खेत के अलावा दूसरा खेत कही नही है। म्हारा बाल-बच्चा ने जिंदा राखवा ने या ही जमीन है। अगर आप म्हारा खेत खादणो बद नी करेगा तो म्हे पेला (पहले) म्हारा बाल-बच्चा ने मारूगा पछे म्हू और म्हारी लुगाई भी मर जावागा। आप इण गरीब ने बचावा चाहो तो खेत खोदणो बद कर दो।"

सुधाकर चिट्ठी को एक बार, दो बार और बार-बार पढ़ता गया— इस सामूहिक डेथ डिक्लरेशन पत्र को। सामूहिक आत्महत्या के जबरी एलान को।

सुधाकर कन्ना के चेहरे के भावो को पढ़ता रहा। उत्तर दे, तो क्या दे ?

सुधाकर को कभी भी साबका नहीं पड़ा इस तरह के सामूहिक आत्महत्या के पत्र से। कभी हल नही किए ऐसे प्रश्न-पत्र ? कभी आख चार नही हुईं ऐसे प्रश्नकर्त्ता से। कभी घराव नहा हुआ इस तरह।

शाम धीरे-धीरे घिरती जा रही थी। सुधाकर रहट पर बैठ गया। उसे लगा रहट का खटुकड़ा (ब्रेक) कना ने उठा दिया है और बड़ी तेजी से रहट उलटा घूम रहा है।

सुधाकर को चारो ओर धरती घूमती लग रही है। कभी लगता, वह अथाह गहरे कुए मे डूब रहा है। निकलने को छटपटा रहा है। कोई रास्ता नही दिखाई दे रहा है।

कभी लगता है कि यह धरती बहुत छोटी है। यह धरती वास्तव मे बावन

अगुल की ह जिस वामन अवतार ने ढाई पाव मे नाप लिया है। तभी तो तहसीलदार परेशानी म हे।

केशा, देवा और कना का जमीन दे तो कहा स द ? वह तो ढाई पाव ही है। आधा ओर होती तो भगवान विष्णु का आधा पाव बलि राजा क सर पर रख पाताल नही नापना पड़ता।

हर बार पमट ड क दिन जब भी तहसीलदार या प्रधान साहब आते हैं, य लोग अपना प्रार्थना-पत्र देते हैं।

साहब लोग पत्र ले आश्वासन देकर चले जाते हैं।

देवा, केशा कना को डर है कि जिस दिन अकाल राहत कार्य बद हो जाएगे उस दिन के बाद तो ये लोग नही आएग उस दिन क्या हागा ?

केवल सरपच आएगे। उनका ता अपना घर ही आबरा है। जब तक उनका कोरम पूरा नही होगा व कर भी क्या सकते हं ? अकेले उनक बस मे है ही क्या ?

कितने विवश हें बेचारे सरपच बिना कोरम करे तो क्या करे ? कैसे कर ?

फिर इन बेदखल लोगो को जमीन दना तो बहुत बडा मसला है। इस सवाल को सुलझाना उनक बूते की बात कहा ? फिर भी आश्वासन दे ही रखा है। उसी पर जिंदा है य लाग।

× × ×

बार एरिया से कई दिनो स लाग शिकायत कर रहे थे। इधर डम साइट में हा इतने झमेले रहते कि सुधाकर जा ही नही पाता। आज जाकर उसने मिट्टी के लिए नई जगह दिखाई। मिट्टी म वहा दर भी खूब था और ककड-पत्थर भी नहीं थे। सब मजदूर कुलियो का खुशी के मारे हाल ही बेहाल था। खुशी थी आज बाबूजी आए है उन्ह सभालने।

विवाहित व अधेड़ महिलाए अक्सर घूघट की ओट कर लेती। किसी बात का उत्तर देने के लिए विवश हाना भी पडता तो युवा कन्याओ के माध्यम से दे देती।

सुधाकर ने खड़े-खडे ही कुलिया का गिना। उन्नास थी। हानी तो बीस चाहिए। एक कम हो सकती है। एक सुबह मे ही अनुपस्थित हो।

वह ऑफिस आया। कहते हैं कि शक का अकुर जब फूटे उसे तब ही मसल दो। उसे बडा होकर पेड़ बनने पर मिटाना आसान नही। उसने मस्टररोल खोला। देखा पूरी बास थी। एक कहा गई ? कैसे गई ? क्यो गई ? कई सारे प्रश्न-दर-प्रश्न प्याज क छिलका की तरह खुलते गए। लकमा मेट की पुकार मची।

लकमा कहा है ? खबर बेतार के तार की तरह एक से दूसरे फिर तीसरे तब पहुचती गई।

'लकमा जल्दी आ आज बाबूजी नाराज हं।'

"लकमा, जल्दी भाग साब गुस्से में हैं।"

साच म डूबता-उतराता लकमा ऑफिस मे भागा आया। साहब और गुस्सा यह हो ही नही सकता। आज दिन तक बाबूजी का गुस्स मे देखा ही नही। आज कैसे तूफान आ गया। आते-आते अत मे उसने सोचा—"जरूर। जरूर ही काई गडबड है।"

लकमे ने हाफते हुए कहा—"साहब होकम याद किया ?"

सुधाकर ने मस्टररोल सामने रखा—"कितनी है—कुलिया की सख्या ?"

"बीस होकम।" लकमा न कहा।

"साइट पर उन्नीस ही हैं। एक कौन कब से कहा गायब हे ?" पूछा सुधाकर ने कड़कर।

"मुझ सब पता है, हाकम। मैं वही गया था, हाकम। शाम को मैं आपको खबर करने वाला ही था।" लकमा न राज खाला।

"ठीक है बोलो ?" सुधाकर जानना चाहता था।

लकमा ने चारा ओर नजर घुमाई। राज की बात अवाछित तत्त्वा के सामने नहीं करना चाहता था। सुधाकर भी समझ गया।

"होकम जो काम छाड़कर आया अभी अधूरा है।" लकमा न बात टाली।

"ठीक है अभी जाओ। काम ठीक से पूरा करके आना।"

सुधाकर सब समझ गया।

"घणी रुपाली बात है हाकम। काम म भूल नी पड़गा।" लकमा ने अपने सदाबहार तकिया कलाम सुनाते हुए कहा।

पास खड़े लोग किसी बहुत बडे रहस्य के उद्घाटन की खबर म कान लगाए खड़े थे। उन्हे निराश लोटना पड़ा।

पता नही क्या बात हे ? कुछ न कुछ तो है जरूर।

सुधाकर और लकमा छुपा गए हैं। कोई बात नही ? जणने (पैदा करने वाल) वाली कब तक छिपाएगी ? एक दिन ता सामने आएगा ही।

सबके चले जान के बाद लकमा आया। सुधाकर समझ गया।

दाना बात करते-करते एकात मे दूर बाध के किनारे निकल गए। आसपास हवा म खबर सूघने वाला काई नही था। लकमा ने धीरे-धीरे पर्दा उठाना शुरू किया।

"साहब बहुत दिना से मेरी नजर है इन पर। इस गाव की चम्पा और उस गाव का राजू। ट्रैक्टर पर जाएँगे तो साथ। बाध पर काम करेगे तो साथ। दाना मे खिचड़ा पक रही है। प्यार का खेल चल रहा है।" लकमा ने कहा।

"हू" सुधाकर गभार हो गया।

"मेरी नजर हमेशा दोना पर है, होकम। ट्रैक्टर मे गाना गाते हुए आते है तो चम्पा गाएगी उसका जवाब राजू देगा और जो राजू गाएगा उसका जवाब चम्पा

देगी।'' लकमा ने उदाहरण दिया।

''अच्छा!'' सुधाकर चिंताग्रस्त होन लगा।

''बात यहा तक होती तो ठीक था होकम ।'' लकमा न भेद जारी रखा।

''ऐसा क्या हो गया ?'' सुधाकर खुलासा चाह रहा था।

''कल भी लच टाइम मे पहाड़ी के इस पार से चल चम्पा और उस पार स निकला राजू। हाकम दाना पहुच महुए क पाछे। मं हैरान। मैं दीवाल को आट से खखारा। मरी खासी की आवाज सुनकर एक इधर दूसरा उधर। जो जिधर से आया था वो उधर ही लोट गया।'' लकमा ने कहा।

''और आज ?'' सुधाकर न पूछा।

''आज भी वही हुआ। दोना गायब। वही महुए का पेड़। दाना के अपने-अपन लच बॉक्स खुले हुए थे और राजू चम्पा को चम्पा राजू को खिला रही था।''

''चम्पा किसकी लडकी है।'' सुधाकर ने पूछा।

''स्वर्गीय ।'' लकमा ने फुसफुसाकर कहा।

''हू, और राजू ?'' सुधाकर ने फिर पूछा।

''खुर्द के ।'' लकमा भेद भरे स्वरा म बोला।

''दोना के मिलन म रुकावट क्या है ?'' सुधाकर न जिज्ञासा की।

''कला म हा दाना खानदान एक साथ रहत थ। उनकी जमीने भी साथ-साथ था। एक दिन बड़ी हवेली वाले के दिल म पाप समा गया। रात को खेत म सोए हुए मोहन का गला घोट दिया। कोर्ट-कचहरी हुई।'' लकमा ने भेद खोला—''राजू के पिता गाव छोड़ गए। अब दोनो घरा मे खानदानी दुश्मनी है सरकार।''

''इस बात का क्या चम्पा आर राजू को पता नही है ?'' सुधाकर ने पूछा।

'सब पता है सरकार। दोना चाहत हं कि हमारे प्यार से दुश्मनी मिट जाय।'' लकमा का उत्तर था।

''कैसे सभव है ?'' सुधाकर हेरान था।

''ये नादान तो ऐसा ही सोचते हैं सरकार। उनका प्यार नही तो उनकी कुर्बानी ही। शायद दोना परिवारो को मिला दे।'' लकमा न कहा।

''नादान बच्चे क्या समझ यह दुनिया कितनी निर्दयी है।'' सुधाकर न अपना निर्णय सुनाया—''उन पर बराबर नजर रखते जाओ।''

लच समय खत्म हो हुआ था। सभी लाग अपने-अपन काम पर लौटने लग थे। ट्रैक्टर वाले मारवाड़ा लोग भी अपन-अपने ट्रैक्टर के साथ बोर एरिय मे पहुच गए थे। आपस म ट्रैक्टर वालो मे जारदार होड़ लगी रहती। कौन जल्दी-से-जल्दी पच्चीस ट्रिप पूरे करता है। जिसके ट्रिप पहल हाग उसकी ... ले। उसकी लेवर भी जल्दी छूट कर घर का काम निपटाएगी और ... कर डरे म सुस्ताएगे। अलग-अलग ट्रक्टरा पर ... रहती हैं। जब भी चे बाध म घुसकर नीचे —

जाती। एक तो उतार दूसरा कपटीशन म खाली कर वापस जाने की जल्दी होती। वहीं रास्ता सकरा हाने पर कई-कई बार दा ट्रैक्टर आने वाले और एक लौटने वाला आपस म टकरात-टकराते बचते। सुधाकर उन्ह कई बार आगाह कर चुका कि देखो ढलान आत ही स्पीड कम कर दो, वरना कभी ट्रॉली उलटन का खतरा है। मगर हर अच्छा बात पर ध्यान कौन दता है ?

सिगरेट पर कितनी ही वैधानिक चेतावनी भले ही लिख द। "सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।" मगर मानते कितन लाग ह ?

फिर सुधाकर का कहा मान लेते ता हानी कैसे टलती ? वह तो हानी ही थी।

× × ×

जैस ही शिवराम का ट्रैक्टर तासरा ट्रिप लकर आया ज्या ही बाध एरिया के उतार म तजी स उतरन लगा, मिट्टी क बड़े-बड़ ढला म ट्रक्टर धड़धड़ाया कि मिट्टी पर बैठी परथा की पत्नी कमला धड़ाम से गिर पड़ा। जैसे हा उसका गिरना था कि चारो आर शोर मच गया। बाध एरिया और बार एरिया की लेवर इकट्ठी हो गई।

सुधाकर भाग कर पहुचा। मौके की नाजुकता को भापा। लागा का कहकर कमली को चौकी पर लाकर कशा ना चाकीदार की काठरी पर सुलवा दिया। अपन पास जा भी फर्स्ट एड बॉक्स म पनकिलर थी तुरत गरम दूध क साथ दी। भाड़ का ऊपर आन स मना करवा दिया। कुछ लोगा का गुस्सा मारवाड़ा ट्रैक्टर ड्राइवर शिवराम पर था।

"वा इतनी तेजी से चला ही क्या रहा था ?"

"साला बदमाश है!"

"हम गरीवा को मारने पर तुला है।"

"उन्ह हमारी जान की परवाह थोड़े ही है, उन्ह तो उनक ट्रिपा की परवाह है।"

"गरीब मरे या जिए उनकी बला से।"

"कल स काम बद कर दा।"

"कल क्यों आज अभी स।"

जितने मुह उतनी बात। वातावरण बिगड़ने लगा।

कुछ लागा को मजा जलती आग म घी डालने स आता है पानी से नही।

सुधाकर को समझते देर नहीं लगी कि यह जगल की आग है तुरत नही राकी तो सभालना मुश्किल हो जाएगा।

सुधाकर की आखे भीड़ में लकमा को खोजने लगी। लकमा का छोटा भाई कन्ना नजर आया।

"कन्ना लकमा कहा है ?"

कन्ना न वहीं स सुधाकर को हाथ से इशारा किया। सुधाकर तुरत समझ गया

कि कुछ राज की बात है।

वह फिर मुडकर कमली को देखने चला आया।

कमली होश मे थी।

गिरने से शरीर मे मसल्स मे चोट आई थी। कमली को खड़ा कर, हाथ पकड़कर चला कर देख लिया था। फ्रेक्चर की कोई सभावना नही थी। थोडी देर मे लकमा एक व्यक्ति को साथ लेकर आया।

"साहब होकम ये परथा भाई ह। कमली का आदमी। कारीगर है। एक जगह बुनाई कर रहा था। बुला लाया। मेरा सगा ही है। इसके बटे को अपनी बेटी दूगा। बात पक्की हो गई ह। दस्तूर बाकी है।" लकमा एक सास म सारी रिपोर्टिंग कर बेठा।

सुधाकर को अब कोई चिता नही।

उसे लगा उसके सिर पर से एक मन बोझ की शिला लकम ने तिनके की तरह उतार दी। सुधाकर के साथ इस बाध पर लकमा जैसा आदमी नही हाता तो क्या इतने बडे प्रोजक्ट का वह हंडल कर पाता ?

पर आज तो गजब ही हो गया। लकमा भगवान बनकर उतरा। सुधाकर इसके पहले ढेरो बुरी-बुरी कल्पनाए कर चुका था। कुछ ने कहा भी था—"बाबूजी गमेती का वेर बहुत भारी पडता है।"

सुधाकर ने तुरत निर्णय लिया।

"लकमा तुम परथा भाई और दो तुम्हार भाइया को साथ लेकर कमली को गागुदा जाकर डाक्टर को दिखा लाओ। ये पाच सौ रुपये रख लो। डाक्टर और दवा क खर्च के बाद जो बचे घी गुड बादाम खरीद लाना। बदन की मार निकल जाय उसके लिए भी कुछ दवाए लते आना। कुछ रुककर लकमा का कहा—"कमली का यह कहना कि जब तक ठीक नही हो जाय आराम कर। और कोई बात हो तो तुरत मुझे खबर करना।"

"घणी रपाली बात है, होकम। आप नेम (जरा-सी) चिंता नहीं कर।"

ट्रैक्टर म सब गागुदा रवाना हो गए। जा वातावरण बिगाड़ने के बड़े-बड़े मसूबे बाध हुए थे व सब फुस्स हो गए। लोगा ने परथा को बहकाने के काफी प्रयास किए मगर परथा दृढ रहा।

"इसम बाबूजी की क्या गलता ?"

"ट्रैक्टर पर ढीले हाकर बैठगे ता गिरना होगा। बाकी कोई कुली क्यो नहीं गिरी ?"

"ठाक है मजूरी करगे ता ऐसा-वसा तो हागा। आर फिर बाबूजी इलाज करवा रह हैं तो किस बात की चिंता है! आप लाग अपनी-अपनी चिंता करा। मेरी घरवाली की चिंता मुझ है ?'

"हम ता परथा तरी भलाई ही की बात कर रहे थे।"

"मरी भलाई की फिकर मैं ही करूगा। भलाई का साचना है, ता ओबरा बाध की साचो। इसके पूरा हान म ही अपनी भलाई है। आज दिन तक कई साहब आए और गए। किसन चिंता की आबरा बाध की। किमी को चिंता होती तो दस साल पहले ही तैयार हो जाता। अपन करम का आड़े भाट मत दो। कमली को आज पड़ना ही लिखा था तो यहा नही पड़ती घर म पड़ जाती फिर ? कौन इलाज करवाता ?"

रग म भग डालने वाल भुनभुनाकर चल गए। "मूरख कही का थाड़ा अड़ा रहता तो पाच-दस हजार झटक लता। हमारा क्या ?"

सुधाकर साच रहा था—"भगवान दिखता नहा है मगर है जरूर।"

रविवार का कशा वा रात का जब खाना खाने जात ता कभी लौटकर आत और कभी-कभी नही भी आते। नहा आत उस दिन देवला आर हूड़ीलाल चाकी पर रह जात। मगर आज केशा या लौट कर आए तो बड़ चिंताग्रस्त थे।

गाव म देवता था आर कशा वा वहा के भोपा जी थ। चौकी हाती है। भाव म आए देवता दु खी गाववासिया को रास्ता दिखात। चलोगे तो तुम्हारा काम होगा। नहा चला ता तुम्हारा करम।

आज परथा की बींवी कमला के गिरने की किसी ने पूछ कराई। जवाब मिला—

"जटा तक देवता रो ठकाणो नी करागा बढ़ा तब उसा चालगा।"

आते ही कशा वा न बता दिया—"बाबूजी काम टालवाऊ ना टले। काम ता करणा ही पड़गा। हाल ता कई नी व्या (अभी तक ता कुछ नही हुआ है) आग हमारणा भारी पड़ेगा (आग सभालना मुश्किल पड़गा)।"

सुधाकर के लिए अब जरूरी हा गया था कि आदिवासियो के लोक दवता की स्थापना करना। वरना वहम म डूबी यह अपढ़ काम क्या-क्या नतीजे निकालती रहगी ? इनकी आस्था की तुष्टि भी अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है।

सुधाकर ने कना बा-माली, राड़ा बा-राजपूत लकमा और पाच-दस मोतबीर आदमिया को इकट्ठा किया। सबसे मत्रणा की।

सुधाकर ने साफ कह दिया—"मं मीठी पर सादी म जैसा कहोगे कर दूगा। मगर कान खोलकर सुन लो बलि खून-खराबे जैसी कुरीति कभी नहीं होने दूगा।"

"हाकम। देवता रो काम वई सके।"

"बलि नहीं मागता देवता। समझे।" सुधाकर न कहा—"बलि के नाम पर मास भक्षण गाव वाले कर यह अनुचित है।"

"अनुचित, उचित क्या ? देवता मनाने के काम म साब होकम आप बाधा मत डालो सा।"

"बलि नही होने दूगा।"

"गाव की रीति है होकम।"

"ठीक है आप लाग जिद पर ही अड़े रहोग तो मैं बाध छोड़कर चला जाऊगा।"

"नही, होकम नही। ऐसा नही होने दगे।"
"आप बे-फिकर रहे। सब काम शाति से हो जाएगा।"
"मगर रास्ता क्या है ? जिनका इशारा बलि से है ?"
"सब खेड़ा देवी पर छोड़ दो।"
"मगर वहा भी मामला उलटा हो गया तो ?"
"उन लोगो की शह मिल जाएगी।"
"पाती उनके हक मे पड़ी तो ?"
"हम चाहेगे वही होगा। उलटा हर्गिज नही होगा।"
"इस बार पाती नही, भोपाजी का हुकम चलेगा।"
"इस रविवार को फैसला हो जाएगा।"

सुधाकर आश्वस्त हो गया। जब लकमा और रोड़ा बा कह रहे हैं तो जरूर कोई दाव-पच उनके पास है। अब रविवार म दो ही दिन तो बचे हैं।

सुधाकर कभी-कभी तो बहुत दु खी और परेशान हो जाता। रात को खाना खाकर परथा के यहा गया था।

परथा ने अपनी झोपड़ी के आसपास केले के पेड़ लगा रखे थे। चारा ओर सुदर वातावरण बना रखा था। उसे अच्छा लगा। कमली खाट पर सो रही थी। दर्द ठीक था। कल से ही काम पर आने को कह रही थी। लेकिन वह मना कर आया।

कहा—"सोमवार से आना। साहब ने कह दिया है। रविवार तक की हाजिरी के भी पैसे मिल जाएगे।"

रविवार को माताजी के मदिर पर काफी भीड थी। आज भी एक महत्त्वपूर्ण फैसला होना था। सुधाकर चौकी की जिम्मेदारिया दीपा को सौंपकर गाव म चला आया।

जिस दिन भी वह गाव मे जाता छोटे-बडे सबकी भीड लग जाती। हर आदमी चाहता कि साहब उनके घर रुके। उनके बाबूजी आए हैं। कोई चाय बना लाता। कोई छाछ की मनुहार करता। कोई थेला भर कर आम दे देता। मगर आज सुधाकर कही भी रुकना नहा चाहता था।

जो रास्ते मे मिल गए उनसे राम-राम करके सीधा मदिर पहुचा। मंदिर मे सुधाकर का ही इन्तजार हो रहा था। जैसे ही सुधाकर शीश नवाकर सम्मुख बैठा भोपाजी ने अपनी कार्यवाही प्रारभ कर दी।

पूजा-अर्चना करते ही भोपा जी को भाव आने लगा। भाव आते ही नगाड़ा की ध्वनि दूर-दूर तक जाने लगी। घरो मे बैठे लोगो ने अदाज लगा लिया कि आज कोई विशेष बात है। भाव आते ही भोपाजी न साकले उठाई और धचाक-धचाक लगे पीठ पर मारन।

सुधाकर बराबर साकला को उठाकर एक विशष अदाज और विशष एगल से पीठ पर मारने की कला और प्रैक्टिस को देख रहा था। साकल झनझनाकर आवाज

ा कर खूब मगर वार करे हलके से।

उसे क्या लेना-देना इन बाता से! आज जिस काम से आया था उसे पूरा करना था।

भोपाजी ने दो-चार बार खनखनाकर साकल माता के सामने रख दी। एक घुटना मोड़कर बैठ गए। दूसरे खड़े आधे मुड़े घुटने को निरतर एक लय म हिलाते जा रहे थे। मार पखा का झाड़ प्रश्नकर्त्ता के सिर पर स्पर्श करते हुए कहते—"जा तेरा काम हो जाएगा। तेरी विजय होगी।"

हजूरिया कहता—"धोक लगा माताजी क और बाद मे भोपाजी के।"

एक-एक कर नियमित के दर्दी निपटते गए। भापाजी ने किसी को तीन महीने बाद किसी को एक महीने और किसी को एक सप्ताह बाद आने को कहा।

फूल और चटक और सिंघाड़े की सेव प्रसाद म देते जाते।

हजूरिया एक पुड़िया मे भभूत दे देता। किसी-किसी को अभिमत्रित नौ गाठ लगा हुआ काला धागा देता। चरणामृत पीने को देकर बाहर भेजता जाता।

सुधाकर भी सभी पूजाक्रम देखना था सो अत तक रुकना चाहता था। जब सभी जात्री निपट गए तो सुधाकर को भोपा जी क सामन बैठन को कहा।

भोपाजी बोले—"क्या बात है मन म कोई बड़ी चिंता है ?"

हजूरिया—"बोलो साहब है या नही ? जवाब देते जाइए।"

सुधाकर ने कहा—"हा चिंताए तो ढेरो हैं।"

"बाध को लेकर है ?" भोपाजी ने पूछा।

"हा, यहा तो सभी बाध को लेकर ही है।" सुधाकर ने स्पष्ट किया।

"बाध के भाग्या जी को लेकर है।" भोपाजी ने स्पष्ट किया।

"हा आप सही कह रहे हैं।" सुधाकर ने उत्तर दिया।

"वैशाखी पूर्णिमा को उत्तर दिशा की पहाड़ी पर देवता की स्थापना कर दे। मन में कोई दुगदुगा (सशय) मत रख।"

"महाराज! बलि नही दूगा।" सुधाकर ने कहा—"और न बलि होने दूगा। चाहे मुझे कुछ भी करना पड़े।"

भोपाजी को भी सुधाकर क स्वर की दृढ़ता ने बाधा। वे बोल—"देवता को लहू नहीं चाहिए। मीठी परसादी करना।"

"हा वह करूगा महाराज वही करूगा।"

"जानवर के भी जी है रे। वो भी भगवान का पैदा किया है। उसे मारकर देवता कैसे राजी होगा रे ?"

"अण बोली आत्मा (बिना बोली आत्मा) का जीव लेकर देवता कैसे राजी होवेगा ?"

"भूल जा। कोई बात नही। कोई लोही नही छावे। धूमधाम से परसादी कर दे। तेरा बधा इसी साल भर दूगा रे। जानवर प्यासे मरते हैं रे। मनख तो कही भी पी

लेवे, पशु कहा जाव र ? जा मजा कर। काम जल्दी खतम करा। इण सात इदा राजा वेगा पामणा वेगा र।"

गाव वाले खुश हा उठे।

"माताजी की जै" "माताजी की जै", "खड़ा देवी की जै" के नारे गूजने लगे चारा ओर।

सुधाकर न माताजी को शीश नवाया। इक्कीस रुपय भेट किए।

मंदिर स बाहर आया। सब गाव वाला को प्रणाम किया और कहा—"माताजी बडी चमत्कारी हैं। आज असली परचा दे दिया।"

"आज ही क्या हाकम! हमशा दती है। हम तो इसी क आसरे हं।" गाव क एक बुजुर्ग ने कहा।

"मुझे माताजी का आदश स्वीकार है। वैशाखी पूर्णिमा को बाध के भौम्या के स्थापना कार्यक्रम मे आप सबको पधारना है। आपका काम है।"

"जैसा आप चाहग वैसा ही हागा।"

× × ×

पूर्णिमा से पहली रात रात्रि जागरण का कार्यक्रम प्रारभ हुआ। सारे गाव के लागों ने उत्साह से भाग लिया। राशनी के लिए कड़वे तल के दिए जला दिए। भजन मडिलयो ने एक के बाद एक भजना का ताता बाध दिया। लोक-देवता का स्तुति के गीत गाए जाने लगे—

हे! लोक देवता,
तू ही हमारा रक्षक है
हम सब तेरे बालक ह
तरे सिवा हमारा कोई आसरा नही
हमारे पशुआ पर तेरी ही दया है
हमारे खेतो म तू ही अन्न उपजाता है
तेरे किरपा बिना हम असहाय हैं।
हे लोक देव इन पेडो म फूल और फल तू ही लगाता है।
पूरे गाव पर अपनी छाया रखना
हमारे हर काम म आगे रहना
ह तारन हार! हमारे कष्ट निवारण करना।
हम ता नादान और मूरख ह
हमसे तो गलतिया होना स्वाभाविक है
उन्ह क्षमा करना तेरा काम है।
पापियो को पाप से बचाना प्रभु।

दूसरे दिन शुभ मुहूत म बाध क पट म स छाटी-सी पालकी मे देवता की सवारी को बिराजा गया। एक आदमी आगे-आगे गगाजल के छींटे देता जा रहा

था। झालर-डके बजाते जा रहे थे। पीछे-पीछे नर-नारी भौम्याजी बावजी की जयघोष करते जा रहे थे। ज्या ही सवारी पहाड़ी पर पहुची, ढाल नगाड़ा के धूम-धड़ाके और जोर से बजने लगे।

आसपास के कई भापाजी आए थे। सबने मत्राच्चार के साथ भूमिपति लोकदेव की स्थापना की। धूप-अगरबत्ती की खुशबू से वातावरण महक रहा था। धड़ाधड़ नारियल फूटने लगे।

सुधाकर ने दवता के मंदिर के लिए पाच सौ एक रपये की घोषणा की। फिर क्या था, घोषणाओं का ताता बध गया। तीन सौ एक, एक सौ एक इक्यावन इक्कीस जिसकी जैसी हैसियत बालता चला गया। ग्राम-पच एक डायरी म बोलने वालो क नाम के आगे रकम चढ़ाते जा रहे थ।

स्थापना के बाद दवता पर फूलमाला चढ़ाने के लिए एक ओर पुरुपा की दूसरी ओर महिलाआ की कतारे लग गईं। रुपया-दा रुपया, पाच-दस चढ़ान वाले भेट बक्से म डालते जा रहे थे। बडा ही भव्य आयोजन हो रहा था।

दोपहर हो चुकी थी। बहुत बड़ी कढ़ाई म पूड़िया निकलना चालू हो गया। नुगती रात को ही बना ली गई। जो भी आया था वह प्रसाद लेकर जा रहा था। सुधाकर बराबर ध्यान रखे हुए था कि काई भी बिना प्रसाद लिए न जाए।

जो लोग बलि क पक्ष म थे वे भी इतना भव्य आयोजन दखकर सोच रह थे कि अगर छिप-छिपाकर बलि कर भी देते ता इतना सुदर आनद नही आता। इतने लोग भी इकट्ठे नहीं हो पाते। जीव हिंसा भी होती और बदनामी होती वह अलग। चलो देर से ही सही उनकी आख तो खुला।

सुधाकर को एक बार फिर बड़ी सफलता मिली। ओबरा के ग्रामवासिया की आखो स अधकार की पट्टी तो खुली। सदिया से ये लोग कितने भ्रम म जीते आ रहे हैं। बकरे की बलि चढ़ा दो। पकाकर खा जाओ। सब अच्छा हो जाएगा। कैसे हा जाएगा ? खाना है तो वैस ही खा रहे हो। उसमे देवता को शामिल करने से कैसे उद्धार होगा ? बदनामी दवता की जीभ का स्वाद और क्षुधापूर्ति अपनी। बहुत हो गया। अब नही चलेगा। और नही होगा। राकना होगा यहीं और सुधाकर ने यह कदम उठा ही लिया सफलता के साथ।

एक दिन सुधाकर ने लकमा से पूछा—"क्या रे लकमा उस दिन तेरी माताजी भी बलि के लिए कह दती तो क्या होता ?"

"होकम कहती कैसे भोपाजी को हमने पहले ही पढ़ा लिया था मीठी परसादी हो ?"

"घणी रुपाली बात है लकमा।' आज सुधाकर को कहना पडा।

× × ×

सूर्यदेव उदय होने की तयारी पर थे। जगदाश ने चाय का गिलास बाबूजी के हाथ में लाकर दिया। जैसे ही उसने पहला घूट भरा बोर एरिया से बाध एरिया की तरफ

आते हुए रास्ते पर दो अनजाने साइकिल सवार लोग नजर आए। सुधाकर सोच ही रहा था कि इतनी सुबह कौन आ सकता है। एक के सर पर लहरिया पगडी थी। दूसरा नगे सर और पैंट शर्ट म था। पगड़ी वाला स्थानीय वेश-भूषा म था।

चौकी पर आते ही एकदम चिल्लाया—"वो रही। सेल अमीन साहब वो रही।"

गाड़ी की तरफ इशारा किया।

सुधाकर को माजरा समझ नही आया। ये लोग कौन हैं ? और गाड़ी से क्य लेना-देना है ?

सुधाकर न पूछा—"आप लोग कौन हैं ? क्या चाहते हैं ?"

"जी मै उदयपुर कोर्ट से आया हू। सेल अमीन हू।" सेल अमीन ने कहा।

"म देवा से पाच सौ रुपये मागता हू। ये गाड़ी कुर्क करने आया हू।"

"आइए। बेठिए। जगदीश जी दो चाय और लाना।" सुधाकर ने आवाज दी

"अरे, होकम। चाय की क्यो तकलीफ कर रहे हैं ?" सेठ जी न कहा।

"अरे सेठ सा, आपके घर आएगे तो क्या आप चाय पिलाएगे ?"

"जरूर होकम। क्यो नही पिलावेगे ?"

"तो फिर यहा पीने मे क्या हर्ज है ? मैं पी रहा हू, इसलिए मनुहार करन मेरा फर्ज है।" सुधाकर ने चाय का एक-एक कप दोना को देते हुए कहा।

"हा, तो सेठ सा। देवा ता गाव म गया हुआ है अभी बुलवाते हैं।"

"कोई बात नही, होकम। वह नही आए ता भी फर्क नही पड़ता। मुझे तो बड़ी गाडी कब्जे करवा दीजिए।" सेठजी ने कहा।

"सेठ साहब, गाड़ी आपको कैसे मिल सकती है ?" सुधाकर ने कहा।

"क्यू ? क्यू नही मिल सकती। कोर्ट की डिग्री है मेरे पास।"

"होगी। इससे क्या फर्क पडता है ? गाड़ी देवा के नाम नही है, पहली बात। दूसरी बात इस गाड़ी पर काऑपरेटिव बैंक ने अमरा को लोन दिया है। तीसरा यह गाडी अभी अकाल राहत कार्य म सिंचाई विभाग के साथ अनुबध मे मेरे कब्जे में है ?"

"तो फिर ।" सेठ जी की सारी प्लानिग फेल हो गई।

इतने मे देवा आ गया।

सुधाकर ने देवा से पूछा—

"क्यो देवा इन्हे पहचानते हो ?"

"गोगुदा रो वाणियो है होकम। बसती लाल कोठारी।"

"तुमसे कुछ रुपय मागता है ?"

"सब पाई-पाई चुकाई है होकम। एक राती पाई नी मागे।"

"तुम्हारे खिलाफ कोर्ट मे मुकदमा चला तुम्हे मालूम है ?"

"नहीं होकम।"

"कभी कोर्ट की पेशी का सम्मन आया ?"

"नी होकम।"

"ये पाच सौ रुपया की कोर्ट से गाड़ी कुर्क कराने की डिग्री लाए हैं।"

"सब झूठ है, होकम।"

"पैसे चुकाए उसकी रसीद है तुम्हारे पास ?"

"हाकम पया तो देई दीदा। यो वही मे जमा नी करे तो म्हारो कई कसूर। म्हारा बेटा रो होगन।" देवा ने सीने पर हाथ रखकर कहा— सब पया दीदा। यो वाण्यो बेईमान है।"

"सठ सा, सुन लिया सब ? आपको ये बेईमान कह रहा है।" सुधाकर ने गर्दन घुमाकर सठ स कहा—"और आपके मुह से शब्द नहीं निकल रहा है।"

"म्हाने रसीद तो दिखावे यो ?"

"आज तक कईने दीधी के ?" अब सुधाकर ने कहना शुरू किया।

"कोई रकम बाकी नहीं। कोई सम्मन नही। इसने कभी अदालत का मुह नही देखा और फैसला भी हो गया ?"

"हा हो गया फैसला और ।"

"आप डिग्री भी ले आए। कुछ तो ऊपर वाले से डरिए। इस मरे हुए या क्या मारोगे ? क्या है इसके पास ? क्या इसका फटा-कुर्ता और फटी लगोटी भी कुर्क करेगे। कुछ तो शरम कीजिए।"

"साहब, कुर्की वैसे तो होवे नी। अदालत रौ मामलो है।"

"देवा कै बोले है ? झूठ बोले है के ?"

"जो बोले सा बोले ए।"

"सठ जी लगता है मुझे कोर्ट का कागज जाच कराना पड़ेगा।"

"आप क्या बीच म पड़ो, साब।" सेठ जी न हाथ आग फैलाते हुए कहा।

"तो क्या आपकी ज्यादती चलते रहने दू ?" —सुधाकर न तीख स्वर म कहा।

"ज्यादती काहे की साब ? कोर्ट का काम है साब।"

"साब हाकम, सेठ झूठा है।"

"जुबान सभाल के बोल!" इस बार सेठ गुर्राया।

"और अधिक नहीं सेठ जी।" सुधाकर बोला—"यह कोर्ट कचहरी का है तो जुबानदराजी नही होगी समझे, सठजी!"

"होकम, अब आप जो फैसला करें, मुझ मंजूर है।"

"मैं क्या फैसला करू ? देना इस, लेना आपका। आप कहते हैं चाहिए। ये कहता है आप राती पाई नहीं मांगते।"

"इसके कहने से क्या होगा ?" सेठ ने नाम कुछ असन्द।

'देवा अब क्या करना ? इसके दस अमानत की कुर्क है

तुमसे ले सकते हैं। तुम आगे लड़ो वो बात अलग है।"

"खावा रा तो दाणा नी है लडवारा, वकील साहब रा, पया कठा सू लाऊगा।" देवा ने कहा।

"ठीक है। ये आए हैं तो कुछ तो देना होगा। सेठ साहब आप भी जानते हैं कि हकीकत क्या है ? इन अनपढ आदिवासियो की कमजोरी का फायदा भले ही उठा ले, आपको भी एक दिन ऊपर वाले की अदालत मे जाना है। उस दिन कोई वकील नही होगा। कोई सेल अमीन नही होगा। वहा किससे क्या कुर्क करवाएंगे ? कहते हैं कि—

"खूब कमाए सोना चादी खूब कमाए हीरा मोती,
अफसोस यही रह जाता है कफन के जेब नहा होती।"

"तो फिर सेठ साहब, इतना सब कुछ किसमे बाध कर ले जाएगे ?"

सुधाकर का इतना सब कुछ कहना बेकार नही गया। दो सौ मे फैसला हुआ। सुधाकर ने अपनी जेब से दिए। देवा के पास था ही क्या जो देता ? कानून न देवा को जानता है न उसकी भूख को न उसकी फटी कमीज को न एकमात्र फटी लगोटी को। कानून जान भी तो कैसे ? वो तो अधा होता है।

दिन-पर-दिन गुजरते जा रहे हैं। ओबरा बाध उसी मथर गति से पूरा हो रहा है। पता नहीं इसे अपनी यात्रा पूरी करने मे कितना समय लगेगा ? पता नही कौन-कौन बध हैं इसके भाग्य से। कब कहा की लेवर काम से जुड़ जाती है और कब कौन-सी अचानक चली जाती है।

सोलह तारीख को फिर नक्षत्रो ने पलटा खाया। सूर्य ने राशि बदली। चले गए मेट किशनजी और साथ ही गई उनकी लेवर पचास। साथ ही कम हुई लेवर चलवा की। ओबरा-चलवा नादेशमा सड़क का काम शुरू हो गया था। जब अपने घर के बाहर ही काम चल रहा हो तो इतनी दूर जलती धूप मे बीस ट्रिप मिट्टी के करने कौन आएगा ? थोड़ी देर धूला खादेगे। सडक पर डालेगे और आम की घनी ठडी छाया मे लेटे रहेगे।

आज फिर गणित गड़बड़ाया लकमा मेट का। जब भी लेवर कम होती है पता लग जाता है कि चाचा मेघराज ऊपर आएगे। हम सोचने मे ही लगेंगे और चाचा साईं मेघराज ऊपर टपक पडेगे। आते ही सवालो की गोलिया दागना शुरू कर देगे।

"आज कितनी-कितनी लेवर है ट्रैक्टरा पर।" चाचा कहेगे—"ऐसे कैसे काम चलेगा ?"

"ट्रैक्टर वाले चिल्ला रहे हैं। इतने कम ट्रिपो मे क्या तो ठकेदार कमाएगा और क्या कमाएंगे हम।'

ट्रैक्टर वाले चाचा को कहते हैं "मुझे मालूम है आपकी लेवर बढ़ ही नहीं सकती। बालिए क्या कर रहे हैं लेवर का ? नही कर सकते हो तो मुझ बालिए न, ताकि मैं ठेकेदार को लिख दू। लेवर बढ नही सकती आप ट्रैक्टर बद कर दें।"

जब चाचा की प्रश्ना की गालिया दगना बद होगी तो सुधाकर कहेगा—"वरी चा चावा । वेओ तो सही। ठडा पाणी-साणी पीओ। वरी खड़े-खड़ ही बात करोगे क्या ?"

फिर चाचा बैठगे।

इतमीनान से वे अपनी लिस्ट निकालग और हम अपनी। मिलान करने पर हमेशा चाचा और सुधाकर की लिस्ट मे पाच-दस नामो का फरक आएगा ही। सुधाकर कहेगा कि चाचा पहले दस आदमी आपकी लिस्ट म बढ़ती करा। फिर सुधाकर कहेगा कि चाचा हर ट्रैक्टर पर पच्चीस से तीस लेवर है। चाचा हमेशा चालीस मागते रहगे।

चाचा एक गिलास पानी और मागगे। पानी पीकर फिर कहेगे—"चवालीस चौदह पर लेवर थी तीस, ट्रिप बैठे पच्चीस, कम-से-कम अट्ठाईस तो होने ही चाहिए।"

"चाचा मुश्किल है। रिलीफ की भूखी-कमजोर लेवर से अट्ठाईस ट्रिप होने सभव नही।"

"तुम्हारा लेवर पर कट्रोल नहा है सागवाड़ा की पाल पर लेवर चालीस चालीस ट्रिप करती थी।" करवाने वाला मैं खुद—"साई मेघराज।"

"परतु चाचा यह आवरा कला और ओबरा खुर्द की लेवर है। दिन मे दस-पन्द्रह ट्रिप से ज्यादा कभी नही किए।" सुधाकर बडे इत्मीनान से कहता है—"हम करवा रहे हैं पच्चीस। चाचा इसे ज्यादा बढ़वाना हम क्या नही चाहगे ? इस लेवर ने पहले कभी भी रिलीफ म काम नहीं किया। ये लोग राज मजदूरी करने वाले नहीं हैं। ये तो कवल अपन गाव का बाध बध रहा है इसलिए आ रहे है। अपन-अपन खतो म काम करने वाले लाग हैं। साधारण किसान लोग। रोज मजदूरी करन वाले की अपनी काम करन की गति और आदत होती है। ये लोग तो मेरी प्रार्थना पर आ गए हैं। कैसे काम करवा रहा हू, मैं ही जानता हू।"

"वो बात तो तुम्हारी खरी है।" चाचा ने कहा।

"हा चाचा। इन लोगा ने कभी इतनी भारी मेहनत का काम नही किया। इन लोगा ने किया भी है तो सड़कों पर धूले की टाकरिया डाली हैं। जब गिनती की टोकरिया डालने मे ही हाजिरी भर जाय तो ये यहा हड्डी तोड कार्यक्रम मे क्यो आएंगे ? क्या आएगे यहा, अपना पसीना बहाने ? क्या लेना देना इन्हे कड़ी मेहनत से ?" सुधाकर ने कहा—"इसलिए जितने भी ट्रिप चल रह हैं चलने दो।"

"मगर कुछ तो सोचो ? वरी थोडी बहुत तो बढ़े।" जिद करते चाचा न कहा।

"क्या सोचे ? किसके लिए सोचे ? जिनके लिए बाध बाध रहे हैं वे ही नही सोच रह हैं। बाध बने या भूरा होने स पहल हा बह जाए उनकी बला से। चिंता है सरकार को ?"

"वरी, चिंता तुमको नईं ?"

"हमको क्या चिंता हागी चाचा ।"

"वरी, तुम क्या बोला— चिंता नहीं ?"

"हा चाचा। यही बोला "

"वरी ऐसा तुमको बाला "

"क्या हुआ, चाचा ?"

"वरा सुधाकर। ये नही बोलना "

"चिंता है कनिष्ठ अभियता— सहायक अभियता और मुख्य अभियता साहब को। अधिशासी अभियता साहब को। क्यो मेरे जैसे सुपरवाइजर को क्यो ?" हम तो हर हालत मे पद्रह जून तक डजरपॉइट से ऊपर ले जाना होगा इस। मानसून कभी भी आ सकता है। टर हालत म, हर कीमत पर बचाना होगा इस।"

सुधाकर ने अपनी चिंता प्रकट की।

"बचाए बिना तो सब मेहनत मिट्टी म मिल जाएगी।"

"हा चाचा, इसीलिए दिन-रात हम यही सावत हैं। कैसे बढ़े लेवर ? कैसे बढ़े ट्रिप ? कैसे बढ़े लेवल। चाचा कवल एक दिन जसवतगढ़ का लेवर को थोड़ा-सा डाट क्या दिया दूसरे दिन सब घर बैठ गए। भूल गए वा दिन ?"

और चाचा मेघराज चाय पीकर नीचे उतर गए।

घाटे म घाटा आबरा बाध के भाग्य म ही बदा है। जब सारे दिन जसवतगढ़ की तीस लेवर नही आई तो सुधाकर को चिंता लगी। आपातकालीन बैठक बैठी। अगर कल भी लेवर नही आई तो क्या होगा ? हर हालत मे कल लेवर आनी ही चाहिए। उसके लिए किया क्या जाय ? सबने राय दी और यही तय किया कि रात का जसवतगढ़ जाकर लेवर को मनाया जाय।

सुधाकर देवा आर लकमा मेट तीनो ही खाना खाकर निकले जसवतगढ़ की पहाड़िया नापने। सप्तमा का चाद मद्धिम रोशनी फला रहा था। ऊबड़-खाबड पगडडिया पर चले जा रहे थे तीनो। आगे-आगे गाइड लकमा बीच मे सुधाकर और पीछे रक्षक देवा। कही नाला लाघना पड़ता तो कही ऊची चढ़ाई-चढनी पडती तो फिर कही नाले के किनारे चलना पडता। कही नाले म गड्ढे भरे मिलते तो कही सूख ककड़ पत्थर। कही-कही दूर से कुत्ता के भौंकने की आवाजे आती।

एक टापरी इस पहाड़ी पर तो दूसरी दूसरी पहाडी पर। ये लोग भी काले अग्रज हैं। समूह म कॉलानी म नही रहेग। हर घर का अपना स्वतत्र अस्तित्व। किसी का हस्तक्षेप पसद नही। वही हाल फ्री सैक्स का। जब तब निभी साथ रहेगे। जिस दिन से भी खटपट या तनाव शुरू हुआ तलाक दे देगे। औरत भी दूसरे घर नाते जाने को स्वतत्र और आदमी भी दूसरी औरत को नाते लाने मे स्वतत्र।

जब एक-एक लेवर के घर पहुचे तो सभी हैरान। इतनी रात गए बाबूजी उनके घर ? कोई सो चुका था। कोई सोने जा रहा था। कोई मिर्च-मसाले के साथ

मक्की रोटी का इधन पेट को दे रहा था।

किसी ने सपने मे भी नही सोचा था कि बाबूजी इतनी रात गए उनके घर भी आ सकते हैं। वे तो निहाल हो गए। साहब, और उनके घर, और वह भी इतनी रात गए ?

"साहब होकम, यहीं जीमो।" डालू बा ने कहा।

"जीम के आए हैं।" सुधाकर ने कहा—"अब बस जाना है तुरत।"

"साहब होकम, यही सो जाओ। इतनी रात जगल से जाना ठीक नही।"

"साहब होकम, हमारे हाथ का नही खाओ तो रहट से गेड़ भर लावे। दूध ही आरोग लो।

एक एक के अपने-अपने सुझाव थे।

सुधाकर उनके अपनत्व और प्रेम से निहाल हो गया।

"नहीं माना बा। मुझे किसी से कोई परहेज नही है। देवा और लकमा से पूछ लो। हम सब एक ही प्रभु की सतान हैं। फिर भेद कैसा ?" सुधाकर ने उन्हे बताया।

"जो मनुष्य-मनुष्य मे भेद या अतर करता है, वह जानवर से गया बीता है। खाना खाकर नही आता तो अवश्य खा लता। मुझे ता वैसे भी आप लागो का प्यार और स्नेह चाहिए। प्रभु ने बेदाम प्यार दिया ही इसलिए है कि मुफ्त बाटे।"

मुखिया डालू बा ने कहा—' साहब आप अबे पाछा पधारो। रात घणी वेईगी। सब लेवर काले आवेगा। आपरे मन मे चिंता मत राख जो। यो माणो वादो है।"

"राम-राम, बाबूजी। पधारो। पूरा साथे जा। साब ने मारग बताव जै। भूले पडेगा ता दु खी थायगा। सड़के पौंछावी ने आवजे।"

माना बा को हमारी चिंता लगी। रात मे रास्ता भटक नही जाव। सड़क तक सुरक्षित पहुचा कर आना।

इस बार हम तीना के आगे थे। पूरा भाई। जाते समय जिस रास्ते का एक घंटे मे पार किया था आते समय लग वहा से दस मिनट। ये हे आदिवासियो के शॉर्टकट। पहाड़ी रास्ता की गणित। बाद में पता चला कि उस दिन तालाब मे डूबने से किसी की मौत हो गई थी सो कोई नही आया था।

उस दिन झुझारपुरा की पहाड़िया लाघने पर पता चला कि अगर कोई बनिया उगाही क लिए या कोई सरकारी ऋण वाला मागने पहुच जाय तो वह यहा से सही-सलामत वापस नही लौट सकता। ऐसा है उनका सुरक्षा तत्र।

सुधाकर ने रास्ते चलते लकमा से पूछा—"क्या रे उन दो दीवानो का क्या हाल है रे।"

"बाबूजी दु खी हैं। दोनो के घरा पर चौकी पहरा है। मजाल है जो मिल ले। काम पर आना भी बद है।"

"ठीक है कल बताना कुछ रास्ता निकालेगे।"

× × ×

साईं मेघराज चाचा का हमेशा ट्रैक्टर वालो से लफड़ा चलता ही रहता है। कभी ट्रॉली तीन इच कम होने के नाम पर साझा तीन इच कम लिख रहा है, ड्राइवर है कि अड़ा हुआ। चाचा जल्दी-जल्दी चौकी की सीढ़िया उतर नीचे पहुचे। चाचा की उम्र होगी साठ। सावला रग। ठिगना कद। ये हुलिया है चाचा साईं मेघराज का। इस उम्र म भी चुस्त-दुरुस्त। बड़े नबर का माटा चश्मा। हाथ मे ट्रिप की डायरी।

चाचा और ट्रैक्टर वालो की तज-तेज आवाज आनी शुरू हाता है। दोनो का वाक् युद्ध। न चाचा मानने का तैयार और न ड्राइवर। करीब-करीब राज का यही हाल। ये ही चाचा और वे ही ड्राइवर।

कभी पर्ची मे ट्रिप कम लिखने का चक्कर तो कभी तीन इच खाली की बात। मगर चाचा भी एक ही जीवट के आदमी हैं। अकेले ग्यारह-ग्यारह ट्रैक्टर वाला से मगज खपाते रहेगे।

रात दो या तीन बजे से ट्रैक्टर चलने शुरू होते हैं तो चाचा बाध म टॉर्च लिए तीन बज भी ट्रॉली नापते नजर आएगे। मजाल है जो ट्रोली कम आ जाय। जान खा जाएगे ट्रेक्टर ड्राइवर की—"मजदूरा ने पूरी नही भरी ता तू वहा से रवाना ही क्या हुआ ? ट्रैक्टर स्टार्ट ही क्यो किया ? एक-एक लेवर से तगारिया गिनकर क्यू नही डलवाई ?"

अदालत के सरकारी वकील की तरह प्रश्न पूछ-पूछ कर हैरान कर दग।

हेमनदास ठेकेदार के बडे शुभचिंतक हैं चाचा। ट्रिपा के हिसाब से लेवल नही बैठा तो क्या जवाब दग चाचा ? ठेकेदार भी तो चाचा के भरोसे निश्चिंत ह। इसीलिए तो कई-कई दिनो बाद एक चक्कर लगाते हैं तीरणदारा। चाचा उनके घर का आदमी ह।

कहते हैं देश विभाजन के समय मेघराज का परिवार काट डाला गया। जब घर मे गए तो द्वार खुला पड़ा था और आगन तथा बराड म पड़ा था लाश। बीवी भाई और दा जवान लडकिया की। बीवी और भाई के शरीर पर कपडे थे पर फटे हुए। लड़किया के शरीर एकदम नग और । सुनते हैं चाचा ने केवल सलवार-कुर्ते उनके नग शरीर पर डाले और फिर चलते-फिरते बुत की तरह मुहल्ले स बाहर निकलने वाली किसी बैलगाड़ी के पास आकर गिर गए नाम-बेहाश। उस परिवार ने इसानियत के नाते उठाकर अपनी बैलगाडी पर चढ़ा लिया और तब का दिन ह या फिर आज का चाचा मेघराज ने होश सभाला तब से हेमनदास के होकर रह गए।

आदमी अपने काम क प्रति इतना वफादार होगा तभी उसकी इज्जत और पूछ हागी। इसी तरह सुधाकर क भरोसे हैं सभी साहब लोग। सुधाकर है तब तक ओबरा की चिंता नही उन्ह।

एक दिन ट्रैक्टर ड्राइवर और चाचा का युद्ध चरम-सीमा पर पहुच गया। एक ट्रैक्टर वाले ने गुस्से मे यहा तक कह दिया—"चाचा और ज्यादा बोले तो देखना मैं ट्रैक्टर के नीचे दे दूगा।"

बस फिर क्या था। कहने की देर।

चाचा उसी समय ट्रैक्टर के आगे आकर बैठ गए—"ले चला ट्रैक्टर। मै भी देखू कैसे चलाता है ट्रैक्टर ?"

एक अच्छा खासा-तमाशा शुरू हो गया। भीड़ जुट गई। ट्रैक्टर वाले भी जो भी आते गए तमाशे मे शामिल होते जाते। चाचा हैं कि मिट्टी पर आसन जमाए ट्रैक्टर ऊपर आने की इतजार म बैठे हैं। ट्रैक्टर वाला भी हार मानने को तैयार नही। उसने भी ट्रैक्टर घरघराया। ट्रैक्टर स्टार्ट करते ही एक इच आग बढ़ाया और ब्रेक मारा। नाटक का चरम बिंदु। सभी सास रोके खड़े थे। ट्रैक्टर के एक इच बढते ही चाचा भागे ये जा वो जा।

जनता तमाशबीन हो हो हो करके तालिया बजाने लगी।

ऐसे तमाशे करते हैं हमारे चाचा साईं मेघराज।

× × ×

ओबरा बाध को आगे किन-किन गणमान्य व्यक्तिया का स्वागत करना होगा पता नही। किन-किन व्यक्तियो की चरणरज से इसे पवित्र होना है, ओबरा गाव वाल नही जानते। किन-किन सरकारी अधिकारियो की दौड़ यहा तक होनी है शायद उन्हे भी नही पता। कौन-कौन राजनेता अपने वोटदाता के सामने आएगे या नकली मुस्कराहट बिखेरने आएगे वे ही जाने।

कौन उसके दु ख का सही आकलन कर कद्र को हकीकत बयान करेगा कैसे अदाज लगाए। जब जिसे मौका मिलता आ धमकता।

सुधाकर ने पहले ही अधिकारियो को कह रखा था—"आपकी जब मर्जी हो जिसे लेकर आना हो ले आइए। हम पूर्व तैयारियो म श्रम और समय का घाटा नही होने देगे। आपका काम है लाना। लाइए। विजिट करवाइए और स्वागत-सत्कार करते रहिए। जब भी अच्छा काम चल रहा होगा हर छोटा बडा अधिकारी देखने आना चाहे आप बेधडक अचानक ले आए। हमारा काम और मस्टररोल चुस्त-दुरुस्त मिलेगा।

तब से अधिकारीगण समझ गए कि सुधाकर के काम मे विघ्न नही डालना है। यहा ईमानदारी का सौदा है। कमाई का सौदा नही हो सकता। नही तो अकाल राहत कामो मे मस्टररोल पर बाध बन जाते हैं सड़के बन जाती हैं और पहली बरसात मे न बाध मिलता है और न सड़के। पर सुधाकर के रहते हुए यह सब नही हो सकता। अपने मित्र अभियता से सुधाकर का यह कहना सही भी है कि बार-बार कब तक वह इन दिखावटी स्वागत-सत्कार मे रहेगा। जब जिसे ले जाना होता वे खुद ही सारी तैयारिया यही से करके जाते। वैसे भी वहा जगल म क्या

मिलना था ? और फिर इन कामो के लिए सुधाकर के पास बजट ही कहा था ?

लच करके बैठे ही थे कि अचानक शोर सुनाई दिया। तभी एक मजदूर ने आकर कहा—"जाप आ रही है साहब होकम, जीप आ रही है।"

"आने दो। डरने और घबराने की क्या बात है ? अभी लच टाइम है और इसका पूरा उपभोग करना हमारा अधिकार है। समय की सुइयो के साथ चलने वाले किसी क गुलाम नही होते। डरते वही हैं, जो काम के समय आराम करते है।" सुधाकर न समय-सूत्र समझाया।

इतने म चौकी के बाहर जीप आकर रुकी।

सबस पहल कनिष्ठ अभियता, फिर सहायक अभियता फिर अधिशासी अभियता उतरे।

यह तो कोई नई बात नही थी। इन्ह तो बाध की प्रोग्रेस की जानकारी लन अक्सर आना ही पडता था।

सबके बाद उतरे सासद साहब, साथ म ही गोगुदा के समाज-सेवी वकील साहब। आज ओबरा बाध पर आने वालो मे एक नई कडी और जुड़ गई। ओबरा बाध धन्य हुआ सासद जी के आगमन पर। भाग-दौड़ शुरू हा गई। ओबरा बाध के जीवन मे गति आ गई।

जैसे ही सुधाकर पर नजर पडी सासद जी हैरान—"अरे! सुधाकर जी आप यहा! वडरफुल। मैं तो कभी सोच भी नही सकता था कि यू अचानक भेट हो जाएगी ?"

"सर बड़ी मुश्किल स तैयार किया है इन्हे। पूरा बाध इन्हा के भरोसे है।" अभियता दिनेश ने आदर के साथ सासद को बताया।

"ये नहा होत तो शायद हमारा यह ओबरा मिशन सफल नहीं हो पाता।" अधिशासी अभियता जी ने कहा।

"ये हमारे लिए और इस बाध के लिए ऐसैट हैं, सर।" सहायक अभियता ने कहा।

"कमाल है सर! मजदूरो का जो दिल जीता है कि हमारे बस का नहीं था।"

"मैं खुद इनके गुणा का पहले से ही कायल हू।" सासद स्वय ही खड़े होकर कहने लगे—"आज के जमाने मे ऐसे नैतिक मूल्यो को प्रतिपादित करन वाले हैं कहा ? अब आप कम्बल ओढ़ के सो जाइए। मुझे पूरा विश्वास है कि यह बाध पूरा होगा ही।"

सासद साहब कुछ सीढ़िया नीचे उतरे। खभाणा लोहार की नीमड़ी के सामने खड़े हो बाध के चारा ओर दृष्टि डाली।

अधिशासी अभियता साहब एक-एक चीज समझाते जा रहे थे। इन्हें पूण रूप से हर बात डिटेल्स मे समझानी होगी। तब ही तो ये राजस्थान के भयावह अकाल की सही स्थिति केद्र के समक्ष रख पाएगे। कम होती सहायता को जोर देकर

बढ़वाना इन्हीं के बूत की बात है।

सासद जी स्वय ही रिजर्व आदिवासी कोटे से हैं। पढ़-लिखकर आज इतन काबिल तो हो ही गए हैं कि अपने गरीब भाइया की सही पैरवी कर सक।

अधिशासी अभियता साहब ने सब कुछ उन्हे समझाया कि—"हम भी साहब कोई छोटे-मोटे एनीकट बना सकते थे। मगर एक प्रयोग के रूप म इतने बड़े बाध का जोखिम उठा लिया। दिन-रात कई तरह की परेशानिया। मगर कह सकते हैं कि जो लोग भी सोचते हैं कि राहत कार्यों मे पक्के और वड़े प्राजेक्ट नही बन सकते, उनके लिए सही उदाहरण है ओबरा बाध। काम करने वालो म लगन और निष्ठा हो तो क्या नही हो सकता ? माइल स्टान है यह बाध। प्रकाश स्तभ है ओवरा बाध।"

आज बाध भी और दिना से अधिक सुदर लग रहा था। अदर की तरफ धार कटी हुई थी। साफ-सफाई थी। चूने की सफेद डाली हुई उसकी धारिया सुदरता बढ़ा रही था। पाया कटा-छटा था। सेल्यूस का गड्ढा भरा हुआ था।

ट्रैक्टर चल रहे थे, मगर कम।

सासदजी ने पूछा—"कितने ट्रैक्टर चल रहे हैं ?"

"दो।"

"बहुत कम हैं। इससे कैसे लक्ष्य पर पहुच पाएगे ?"

"एक और रिपेयर हाने गया है। रात मे आ जाएगा। फिर हा जाएगे तीन। रात पाली मिलाकर तीन ट्रैक्टर मिलाकर काम होगा छ ट्रैक्टरो का।"

"हा भई, बहुत-बहुत बधाई।"

सासदजी ने कहा—"रात मे भी काम करवा रहे हैं सुनकर पहले तो विश्वास ही नही हुआ।"

"क्या करता साहब मानसून स पहले डेंजर पॉइंट से ऊपर तो जाना ही पडेगा।" सुधाकर ने उत्तर दिया—"बड़े प्यार पुचकार से समझाकर तैयार करना पड़ा है।

"छ ट्रैक्टरो से बीस ट्रिप पर ट्रैक्टर के हिसाब से मिट्टी डाली जाएगी। यू आर सेफ।" अधिशासी अभियता ने सुधाकर की ओर मुडकर कहा।

"यस सर!" सुधाकर ने कहा।

फिर सासद साहब ने खाना खाते हुए मजदूरो की तरफ झाका।

काप गए। अधिक नही देख पाए। सूखी रोटिया। हरी मिर्च। सूखी रोटिया एक प्याज।

सूखी रोटिया नमक प्याज का मसाला। दाल और सब्जी और घी-तेल क्या होता है ? इनकी किस्मत मे कहा ? इन दो सूखी रोटियो के लिए कितना दु खी है आदमी।

इसे और क्या चाहिए ? मकान गाड़ी बगले फ्रिज, टी वी वाशिंग मशीन

क्या हाती है इसे क्या लेना-दना ?

बस दो वक्त इसे सूखी रोटी ही मिल जाय। दो घूट पानी नसीब हो जाय इसके मूक पशुआ का चारा-पानी मिल जाय, बस य धन्य हुआ। इसे राज्य सत्ता की काई आकाक्षा नही। सत्ता म बैठ लाग बस उसके लिए इतना-सा साधन भर जुटा द ता बहुत है। जी लेगा वह। फिर बिठाए रखेगा अपन जन प्रतिनिधि को सत्ता म।

सासद साहब क मुह का स्वाद कसैला हो गया।

उस क्षण सासद को अतर-मथन से गुजरना पड़ा—"य मर ही वशज हं। मेरे ही भाई है जा गरावी अशिक्षा कुपापण और भूख स एक ठडी लड़ाई लड़ रह हैं। कुछ करना हागा। जरूर-जरूर करना हागा। जब सुधाकर जैसा आदमी जिस इनसे काई लना-देना नहा इनक लिए अपन स्वय का हाम कर रहा है ता उनका त अपना नैतिक दायित्व हाता है। सत्तापक्ष के सासद हं। इन लोगा ने अपना दु ख-दर्द म हिस्सा बटान का मुझ चुना है।"

अधिशासी अभियता साहब ने बहुत सही ब्रीफिंग की। अपना पक्ष समझाने म सफल रहे। सासद जी इस तहसील के लिए बहुत कुछ करगे, ऐसा आश्वासन मिला।

इस बीच सहायक और कनिष्ठ अभियता साहब ने स्वागत मे खानपान की तयारिया करवा दा। टबल कुर्सी करीने से लग गए। चाय का पानी चढ़वा दिया। अगूर ओर चीकू नहाकर अच्छ लग रहे थे। प्लेटा म नमकीन सज गई। खारे-मीठे बिस्किट अलग-ही अपने रोब म थे। रसगुल्ले और काला जाम की ब्लक एड व्हाइट छवि सुदर लग रही थी। लगड़ा और नीलम आम कट कर अपनी शान मे जम गए थे।

नाश्ते का दौर प्रारभ हुआ। साथ ही बाता का दौर भी चल रहा था। सुधाकर ने कहा— 'बुरा न मान सर एक बात कहना चाहूगा।"

'हा-हा कहिए सुधाकर जी।" सासद जी बोले।

"सर कई बार एसा लगता है कि कद्र मे राजस्थान का सही पक्ष रखन वाले सही तसवीर दिखाने वाले दमदार सासद ह ही नही।" सुधाकर ने कहा।

"आप कुछ हद तक सही कह रहे है।" सासद बोले।

"सर जब तक हमारी सही तसवार स कद्राय मत्रीगण अवगत नहा होंग वे हमारी इस दयनीय स्थिति को मतही लगे। जस्ट ए फोरमैलिटी। जबकि हम चाहिए ऐसे दमदार सासद जो मुक्का ठोक कर कह सक कि भूख से लड़ रहे राजस्थान के लिए दाना-पानी आर चार की समुचित व्यवस्था करनी ही पड़ेगी।"

"मं आवाज उठाऊगा। ' सासद बाले—"इसीलिए सही स्थिति अपनी आखा से दखने आया हू। मं नहा डरता किसी से। आज हू, कल नही रहूगा। य मरे भाई आज हैं कल रहगे।"

"हालत देख चुके हैं या मैं और दिखाऊ ?" सुधाकर ने पूछा।

"यही बहुत है। और दखने का मन और साहस खतम हो गया। वेस्ट ऑफ लक, सुधाकर जी। लगे रहिए। भगवान अवश्य फल दगा। गरीब की सच्ची सवा ही प्रभु-पूजा है।"

साहब लागा का दल वहा से रवाना हो गया। ओवरा से बृझ। वहा से रावमादड़ा। वहा से कोटडा। रात्रि विश्राम कोटडा क डाक बगले म।

साहब लाग खुश थ। जैम तप्त लू क थपेड़ो क बीच अचानक खूब पानी बरसन लगे और थम जाए। थमने क बाद जैसी ठडक मिले, वैसी ही कुछ ठडक साहब लोगा क जाने के बाद लगी। सबने राहत की सास ली।

हमार अफसर खुश रहन चाहिए। हमारे अफसरो क अफसर खुश रहन चाहिए। और उनक उनक अफसर खुश रहने चाहिए। हमारे देश की यही सास्कृतिक परपरा है, जा सदियो स चलती आ रही है। सकट की घड़िया म भी ओवरा की कुडली म कहा-कही ठडी हवा का झाका भी लिखा है जा कभा-कभी आकर हम तरोताज़ा कर जाता है। जिसस हम अगल काम के लिए पुन नवशक्ति स तैयार हा जाते हैं।

× × ×

आज नाइट ड्यूटी देवा की थी। दवा बाहर बाध पर चारा आर चक्कर लगान गया था। यह नाइट ड्यूटी वाले का काम है कि कही कुछ पड़ा हा ता उठा-उठाकर सही ठिकाने रखे। दिन मे लवर जल्दबाजी मे छुट्टी की घटी बजत ही भागने म रहती है। देवा ने जैसे ही नीचे पड़ा फावडा उठाया कि उसक मुह मे चीख निकल गइ।

"बाबूजी ? मर गया र । हाय राम ।"

"अरे! अर क्या हुआ दवा जी ? क्या हुआ ? बालो तो ?"

"बाबूजी बीछूडा काट ग्यो। घणो जले रहे । अब कई वेगा ।"

"कोई चिंता मत करा। अभी ठीक कर देता हू।"

सुधाकर हरान परशान। जगल मे बैठा है। अब दवा के बीछू के जहर का क्या कर ? अपन शेविंग बक्स मे स डिटोल लिया और लगा दिया। ता भी कोई फर्क नही पडा। ह भगवान! अब सारी रात कैसे निकालेगा ? गोगुदा यहा से छ किलोमीटर दूर। पहली बात तो जाएगे कैसे ? चले भी गए तो आधी रात को कौन-सा डाक्टर मिल जाएगा ? सुधाकर को पता नही क्या सूझा, रसोई म से चाकू मगाया और लगा मत्र मारने। बार-बार वह बुदबुदाने लगता जहा तक जहर पहुचा था वहा स काटने की जगह तक चाकू छूते हुए लाता और मत्रा का उच्चारण करता।

"बाल देवा, कुछ फर्क पड़ा।"

'हा साहब। रुपय मे चार आना।"

सुधाकर फिर वही क्रम दोहराने लगा। फिर चार आना करके आधा फर्क। करीब एक घंटे म जाकर देवा ने कहा—"साहब होकम अब एकदम ठीक है।"

सुधाकर ने राहत की सास ली। अगर ठीक नही होता तो रात कैसे बीतती ? देवा का दर्द के मारे छटपटाना उसे कैसे बर्दाश्त होता ? सुधाकर आज दिन तक भी जान नहा पाया कि देवा का बिच्छू का काटना ठीक कसे हुआ ? डिटाल का असर था या लोह का स्पर्श ? या अनजान म याद आए गायत्री मत्र। जो भी हो। वक्त पर जो बन पड़ा वही उपाय उत्तम होता है।

दूसरे दिन गाव मे खबर फैल गई कि बाबूजी तंतर-मतर म भी माहिर हैं।

× × ×

गाव के ठाकुर रामसिंह जी के बिना तो यह उपन्यास अधूरा ही रह जाएगा। अधूरा ही रह जाएगा ओबरा बाध का इतिहास। सुधाकर ने कई बार चाहा, उनसे बात हो मगर मौका ही नहा मिल पाया। उन्ह शहर म ही खूब सारे काम-काज थे, उनमे ही फुर्सत नही मिलती। मगर ए सी ऑफिस म अक्सर उनका जाना होता। गोगुदा आने के लिए बस स्टैंड पर आते। पता लगता कि बस आने म एक घंटा बाकी है तो सिचाई विभाग म पहुच जाते। मुख्य अभियता से उड़ती-उड़ती खबर आती कि बाध पर काम ठीक नही हो रहा है।

खबर तो खबर है उसे पखो की भी जरूरत नहीं पड़ती वह तो आकाशवाणी हो या दूरदर्शन की हो या खाली शहर की हो हवा और ईथर म से होते हुए पहुच ही जाएगी ओबरा।

सुधाकर हैरान, आखिर य सब उल्टी-सीधी बात होती क्या हैं ? जो कुछ बात हो उसे ही साफ-साफ क्या नहा कहते ? वह कनिष्ठ और सहायक अभियता स पूछता। उनका एक ही उत्तर होता आप अपना काम कीजिए। फालतू की बातो मे ध्यान मत दीजिए। दफ्तर है पचास तरह के लोग वहा आएगे। सच्चा झूठी बाते पेश करेगे। उनका सही ऐनेलेसिस करना हमारा काम है।

"मगर सर। जब ऐसा हुआ ही नहा है तो ये बात उडी कैसे ?" सुधाकर को आक्रोश था।

"देखिए, आप यहा की राजनीति स परिचित नही हैं और आपको परिचित होना भी नहीं है। जब भी जहा-जहा, जिन-जिन लोगो की स्वार्थपूर्ति नही होगी, वे लोग ऐसी ओछी हरकते करगे— ये दुनिया का नियम है। दूसरी बात बड़े लोगो का यह भी कहना है कि कहने वाले से सुनने वालो को ज्यादा चतुर होना चाहिए। अगर हम एक-एक शिकायत की बात आपको कहा करे तो आप काम कर ही नही सकते। आपको रोज-रोज पाच कमीशन के सामने अपने को सच्चा होने का प्रमाण-पत्र ही पेश करते रहना पड़ेगा।'

"मगर सर ।"

"मगर कुछ भी नही। आपने अगर-मगर पर ध्यान दिया तो बरसात आन तक

बाध अधूरा रह जाएगा। यह जो फरवरी से अब तक की प्राग्रेस की है सब पानी म बह जाएगा। शिकायत करने वाला को अपना बात को सत्य साबित करन का अवसर मिल जाएगा। मगर आपक पास ये ऑफिस की खबर पहुच कैसे जाती हैं ?

"जी वो ।"

"कुछ भा ध्यान मत दीजिए। नथिंग इज सीरियस। हम उन सबको रद्दी की टाकरी म डाल दत हैं। ऑल इज रबिश। कूड़ा है कूड़ा। कूड़े के ढर म कुछ और वृद्धि। बस इसके सिवाय कुछ भी नही। समझे मिस्टर सुधाकर।"

"यस सर।"

"आपकी बढ़िया शानदार रिपोर्ट दिल्ली की फाइलो म दर्ज है। वी आर प्राउड ऑफ यू ?"

"थैंक्यू सर।"

सुधाकर की चिंता कुछ पर्सेंट कम हो गई थी।

कद्राय सर्वेक्षण दल की शानदार रिपोर्ट हमारे लिए और ओबरा क लिए गर्व की बात थी। सासद साहब ने हमारे काम की तारीफ के साथ जोरदार वकालत की।

सभावना यह है कि चाहे अकाल राहत कार्य बद क्यू न हो जाए ओबरा बाध का काम चलता रहेगा। अभियताआ को यह विश्वास हो चुका था कि यह बाध पूरा हागा, जब तक हम अपने लक्ष्य पर नही पहुच जाए। इस सब मे सुधाकर का अनुकरणीय योगदान विभाग कभी भूल नही पाएगा।

सुधाकर सोच रहा था— विभाग भूल या याद रखे, मेरे लिए वह कोई महत्त्वपूर्ण नहीं है। मेरे लिए यह ज्यादा जरूरी है कि मैं जिन लोगो के लिए काम कर रहा हू, वे मेरे काम का सही आकलन करते हैं या नही। मेरा डेडीकेशन उन्हे केवल वेतनभागी कर्मचारी का नही लगे। उन्ह अहसास हो कि यह काम कितना महत्त्वपूर्ण है जो उनके भविष्य का बदलेगा। य गगाजल की धारा उनक भविष्य को सवार देगा। ये पानी की नहरे इस गाव की भूख बहा ले जाएगी। इनके टूटे टापरे पक्की छता के हो जाएग। हजारा केशा बा के घर खाली कोठिया अनाज से लबालब भरी हागी।

फिर कोई सर्वेक्षण दल पूछेगा कि—

"कशा य क्या है ?"

"अनाज भरने की कोठिया हैं।"

"अभी कितना अनाज है ?"

"दोना पूरी-पूरी भरी हैं हुजूर।"

"क्या-क्या भरा है ?"

"एक मे नहर से पके फार्मी गेहू और दूसरी म मक्की हुजूर।"

कनिष्ठ अभियता का कहना था कि—"आपका सपना बहुत जल्द सच होगा। इस सपने के लिए ही तो मैंने आपको कहा था। आप कर सकोगे मुझे आपकी कार्यक्षमता पर भरोसा था। गाव वालो का दिल जीतकर तुम उनके भगवान बन जाओगे यह भी मुझे पता था। इन दुखियारो के दिल मे उतर जाओगे मैं यह भी जानता था। तुम्हे यहा लाना हमारी सोची-समझी चाल थी। तुम एक यथार्थवादी उपन्यास की पृष्ठभूमि पा सकोगे हमे मालूम था।" कनिष्ठ अभियता दिनेश आज उसे कह जा रहा था।

और सच यह था कि सुधाकर अपने परिवार को छोड़कर जब यहा आया तो इन आदिवासियो के दु ख-दर्द का साथी बन गया। उनकी खुशी का सहयोगी बन गया। रीति-रिवाजो का साझेदार बन गया। केशा बा, देवा बा, राड़ा बा का विश्वसनीय बन गया।

अपनी मानसिक चेतना के हर ततु मे वह आदिवासी कल्याण के स्पदन जीने लग गया था। वह राजनीति की पाली खेलने नही आया था। उसे जन प्रतिनिधि बनने की नही सूझी थी न उसे नाम कमाना था और न दाम कमाने थे। उसे तो जीवन की निकटता से परख करने की लालसा ही यहा खींच लाई थी। दिनेश ने गतव्य बताया था, पहुचा वह खुद और ढूढी खुद ही राह और अब खडा हो गया था सुधाकर चौराहे पर। हा, चौराहे पर

उसे अब राजू और चम्पा की चिंता है। उनका प्यार परवान चढेगा या अधखिले फूल-सा मुर्झा जाएगा। कभी उनकी गृहस्थी बसेगी या दोनो आम और महुए पर लटके मिलेंगे।

वेणा के मकान की किश्तो का क्या होगा ?

केशा के विकलाग बेटे का क्या होगा ?

कौन है ये लोग ? इनसे सुधाकर का क्या रिश्ता है ? क्या वे सुधाकर की जिंदगी से जुड गए हैं ? क्यो ?

× × ×

एक दिन शाम के समय ठाकुर रामसिंह जी सरपच शहर से आए थे और अपने गाव मे जा रहे थे। सुधाकर से रहा नही गया। आवाज दे ही बैठा—"आइए हुजूर! यू नजर चुराकर क्या जा रहे हैं ?"

"जी आना तो मैं भी चाह रहा था मगर ।"

"मगर क्या हो गया मालिक ? मुझे आपके यहा आए चार माह से ऊपर हो रहे हैं। आपके दर्शनो की इच्छा थी मगर योग आज तक नही बैठा। जब भी पता किया आप शहर बिराजे थे।"

सुधाकर ने पूछा—"ऐसी भी क्या नाराजगी है कि आपने भी कभी मिलना उचित नही समझा ?"

नाराजगी जरूर है मगर ऐसी कोई बात नहीं सुपरवाइजर साहब नाराजगी

भी आपसे नहीं। आपको नही पता, आपके अफसर लोग नही चाहते कि मैं यहा भाव भी रखू।" सरपच साहब ने कहा।

"देखिए कौन क्या कहता है ? किसने क्या कहा ? ये सब बात छोडिए। आप तो ये बताइए मुझसे कोई गलती हुई है क्या ?"

"नहीं नही।" ठाकुर साहब ने औपचारिक भाव से कहा—"भला आपसे क्या गलती होने लगी ?"

"क्या आप मेरे काम स नाराज हो ?" सुधाकर ने अब भी उनके तेवर दखकर पूछा।

"क्या कह रहे हैं आप ? आपका काम तो इतना अच्छा चल रहा है कि मेरे पास तराफ के लिए शब्द नही हैं।" ठाकुर सरपच का उत्तर था।

"फिर बात छोड़ भी दीजिए। वे हमारी और अफसरो की राजनीतिक बाते हैं।" सरपच ठाकुर ने अपनी बात कही—"आपका उनसे कोई सरोकार नही है। हमारी ये लड़ाई बरसा से चल रही है।"

"और तभी बरसा से ही ओबरा बाध अधूरा लटका हुआ है।" सुधाकर ने कहा—"इसम आप दाना के 'ईगो' की टकराहट है और हुजूर इस टकराहट मे नुकसान गाव का हो रहा है। जब बाध के निर्माण म उस गाव का ही सहयोग नही हागा तो कैसे हागा ?"

"आप बोलिए सहयोग मे क्या कमी है ?" सरपच का प्रश्न था। उन्होंने जूते खोल चाकी पर आसन जमाथा।

"हमारे यहा सबसे कम लेवर आपके गाव की है।" सुधाकर ने विवरण दिया—"जबकि निर्माण पूर्ण होने पर सबस ज्यादा लाभ आपके गाव को मिलना है।"

"आपक यहा रट इतनी कम है कि उस भाव मे लेवर का गुजारा होना बहुत कठिन है।" सरपच का तर्क था।

"आप इस जगह एकदम सही हैं।" सुधाकर ने ठाकुर रामसिंह को समझाने का प्रयास किया—"लेकिन कभी-कभी हमे अपने समाज के लाभ के खातिर थोड़ा घाटा भी उठाना पडता है। यह निर्माण आज से पाच वर्ष पहले हो गया होता तो अब तक कितना लाभ उठा लेते कभी यह भी सोचा है आपने। कभी-कभी हम समाज-सेवा ही समझ कर काम करना चाहिए।"

"मगर ये आज के समय मे कौन साचता है ?" सरपच का उत्तर था।

"यह सोच अपन आप पैदा नही हाती है। यह सोच समाज म हमे पैदा करनी पडती है। मुझ ही लीजिए यहा रहकर क्या मिल रहा है मुझ ? जानत हं ?"

" "

"मात्र पच्चीस रुपये रोज। क्या होता है पच्चीस मे ?"

"लेकिन मुझे इसम बहुत बड़ा सुख मिल रहा है जो मैं हजारो रुपयो म भी

कनिष्ठ अभियता का कहना था कि—"आपका सपना बहुत जल्द सच होगा। इस सपन के लिए ही ता मैंने आपको कहा था। आप कर सकोगे मुझे आपकी कार्यक्षमता पर भरोसा था। गाव वाला का दिल जीतकर तुम उनके भगवान बन जाओगे यह भी मुझे पता था। इन दुखियारा क दिल म उतर जाओगे मै यह भी जानता था। तुम्हे यहा लाना हमारी सोची-समझी चाल थी। तुम एक यथार्थवादी उपन्यास की पृष्ठभूमि पा सकोगे, हम मालूम था।" कनिष्ठ अभियता दिनेश आज उस कहे जा रहा था।

और सच यह था कि सुधाकर अपन परिवार को छोड़कर जब यहा आया तो इन आदिवासियो के दु ख-दर्द का साथी बन गया। उनकी खुशी का सहयोगी बन गया। रीति-रिवाजा का साझीदार बन गया। केशा वा देवा बा, राड़ा बा का विश्वसनीय बन गया।

अपनी मानसिक चेतना के हर ततु म वह आदिवासी कल्याण क स्पदन जीने लग गया था। वह राजनीति की पाली खेलने नही आया था। उसे जन प्रतिनिधि बनने की नही सूझी थी न उसे नाम कमाना था और न दाम कमाने थे। उसे तो जीवन की निकटता से परख करने की लालसा ही यहा खींच लाई थी। दिनश न गतव्य बताया था पहुचा वह खुद और ढूढी खुद ही राह और अब खड़ा हो गया था सुधाकर चोराहे पर। हा चौराहे पर

उसे अब रानू ओर चम्पा की चिता है। उनका प्यार परवान चढेगा या अधखिले फूल-सा मुर्झा जाएगा। कभी उनकी गृहस्थी बसेगी या दोना आम और महुए पर लटके मिलेगे।

वेणा के मकान को किश्तो का क्या होगा ?

केशा के विकलाग बेटे का क्या होगा ?

कौन है ये लोग ? इनसे सुधाकर का क्या रिश्ता है ? क्या वे सुधाकर की जिंदगी से जुड गए हैं ? क्यो ?

× × ×

एक दिन शाम के समय ठाकुर रामसिंह जा सरपच शहर से आए थे आर अपने गाव म जा रहे थ। सुधाकर से रहा नही गया। आवाज दे ही बैठा—"आइए हुजूर। यू नजरे चुराकर क्या जा रहे हैं ?"

'जी आना तो मैं भी चाह रहा था मगर ।"

"मगर क्या हो गया, मालिक ? मुझे आपके यहा आए चार माह स ऊपर हो रह हैं। आपके दर्शना की इच्छा थी मगर याग आज तक नही बैठा। जब भी पता किया आप शहर बिराजे थे।"

सुधाकर ने पूछा—"ऐसी भी क्या नाराजगी ह कि आपने भी कभा मिलना उचित नही समझा ?

'नाराजगी जरूर है मगर ऐसी काई बात नहीं सुपरवाइजर साहब नाराजगी

भी आपसे नहीं। आपको नही पता, आपके अफसर लोग नही चाहत कि मै यहा पाव भा रखू।" सरपच साहव ने कहा।

"दखिए कौन क्या कहता है ? किसने क्या कहा ? ये सब बातें छोड़िए। आप ता य वताइए मुझसे कोई गलती हुई है क्या ?"

"नहा नहा।" ठाकुर साहव न औपचारिक भाव से कहा—"भला आपसे क्या गलता होने लगी ?"

"क्या आप मरे काम से नाराज हो ?" सुधाकर न अब भी उनके तेवर देखकर पूछा।

"क्या कह रहे ह आप ? आपका काम ता इतना अच्छा चल रहा है कि मरे पास तराफ के लिए शब्द नहा हैं।" ठाकुर सरपच का उत्तर था।

"फिर वात छोड भी दीजिए। वे हमारी और अफसरा की राजनीतिक वाते हैं।" सरपच ठाकुर न अपनी वात कहा—"आपका उनसे कोई सरोकार नही है। हमारी ये लड़ाई वरसों से चल रही है।"

"और तभी वरसो से ही ओवरा वाध अधूरा लटका हुआ है।" सुधाकर ने कहा—"इसम आप दानो के 'ईगो' की टकराहट है और हुजूर इस टकराहट मे नुकसान गाव का हो रहा है। जब बाध के निर्माण मे उस गाव का ही सहयोग नहीं हागा तो कैस हागा ?"

"आप वालिए सहयोग म क्या कमी है ?" सरपच का प्रश्न था। उन्होंने जूते खाल चौकी पर आसन जमाया।

"हमारे यहा सबस कम लेवर आपके गाव की है।" सुधाकर ने विवरण दिया—"जबकि निर्माण पूर्ण होने पर सबसे ज्यादा लाभ आपके गाव को मिलना है।"

"आपक यहा रट इतना कम है कि उस भाव मे लेवर का गुजारा होना बहुत कठिन है।" सरपच का तर्क था।

"आप इस जगह एकदम सही हैं।" सुधाकर ने ठाकुर रामसिंह को समझाने का प्रयास किया—"लेकिन कभी-कभी हमे अपने समाज के लाभ के खातिर थोड़ा घाटा भी उठाना पडता है। यह निर्माण आज से पाच वर्ष पहले हो गया होता ता अब तक कितना लाभ उठा लेते, कभी यह भी सोचा है आपने। कभी-कभी हमें समाज सेवा ही समझ कर काम करना चाहिए।"

"मगर ये आज के समय म कौन सोचता है ?" सरपच का उत्तर था।

"यह सोच अपने आप पैदा नहा होती है। यह सोच समाज म हमे पैदा करनी पड़ता है। मुझे ही लाजिए यहा रहकर क्या मिल रहा हे मुझे ? जानते है ?"

" "

"मात्र पच्चीस रुपये रोज। क्या होता है पच्चीस मे ?'

'लेकिन मुझे इसमे बहुत बड़ा सुख मिल रहा है जो मै हजारो रुपयो से भी

प्राप्त नहीं कर सकता। यह है निर्माण का सुख। मैं एक एसा निर्माण करवा कर जा रहा हू, जो सदियो तक कायम रहेगा। मैं रहू न रहू।"

" "

"कोई मुझे याद करे न करे, लेकिन अपने बुजुर्गों से जब भी कोई पोता ओबरा बाध की कहानी पूछेगा तो वे नि सकोच कहेंगे— एक थे बाबूजी जिन्होंने अपने घर का सुख नही देखा। मई-जून की कडी धूप मे खड़े रहकर इस बाध को बनवाया था। आज जिस बाध मे तुम तैर रहे हो, वह उन बाबूजी की लगन और निष्ठा का फल है।" सुधाकर ने सतोष की सास ली।

गाव के सरपच ठाकुर रामसिंह पहली बार सुन रहे थे सुधाकर की आत्मा की आवाज जो राजनीति के दगल मे पीयूष वर्षा-सी सुखद थी।

"हा, यह बात तो कायम रहेगी।" सरपच ने तस्दीक की।

"कायम हमेशा सत्य रहेगा। सनातन युगो-युगो तक।" सुधाकर ने उन्हें समझाया—"आप युवा सरपच हैं। आप मे काम करने की क्षमता है। कुछ कीजिए। आने वाली पीढ़िया याद करेंगी। यह स्कूल फला सरपच साहब ने बनवाया था। ये नहरें उन सरपच साहब के काल मे आई थीं। इस सड़क को पक्की बनाने का श्रेय रामसिंह जी को है।"

सुधाकर के सुझाव आज उनके अदर उतर रहे थे। गहरे और काफी गहरे।

रामसिंह जी ने कहा—"आपने आज मुझे सही मार्गदर्शन दिया।"

"सही रास्ते चलेंगे तो आपके साथ कारवा जुड़ता चला जाएगा। विध्वस की राह पर कोई साथ नही देगा।"

"क्या ?"

"हा।"

"केवल विरोध या झूठी शिकायतो से क्या बनने वाला है ?" सुधाकर ने इतना भर कहा—"सूरज पर थूकेंगे तो अपना ही मुह खराब होगा।"

"आज से ही सब बेकार की बातो को तिलाजलि देता हू, सुधाकर जी।" सरपच अदर से बोले—"मुझे जिस दिन भी किसी गड़बड़ी मे पकडो सौ जूते मारिएगा।"

"नहीं नहीं आपका ऋणी तो सारा गाव है। सभी के दिलो पर राज कर रहे हैं आप।"

"दिन रात बड़े-बूढे आपको ढेरो आशीष देते हैं सुधाकर जी।"

"सर मैं तो एक दिन चला जाऊगा ही। अगर इस बाध के निर्माण मे आपका भी योगदान रहेगा तो ।"

"नहीं नहीं। अब आप मुझे कभी विरोध मे नही पाएगे।" सरपच रामसिंह ने कधे पर हाथ रखकर कहा— 'सच कहू, सुधाकर जी "आज तक यह कर्म का रास्ता दिखाने वाला कोई मिला ही नही। अब जो भी करूगा गाव के विकास का

बात करूगा। निर्माण की बात करूगा। और कोई काम हो तो कहिएगा।"

"कहना क्या है, चौकी के स्टॉफ के कूपन क लिए प्रार्थना-पत्र दिया था तान महाने हा गए ह सरपच साहब।"

"आज ही भिजवा देता हू। लवर भी कल से जितनी चाहिए भिजवा दूगा।"

"अच्छी बात है।" सुधाकर ने ठाकुर का हाथ अपनी हथेलियो के बीच मे लकर कहा—"दखिए आप अपने आप्को कितना बदला हुआ पाएगे। जा शक्ति हमारी विनाश मे लगती है, जब वही निर्माण म लग जाती है तो बजर धरती भी गुलाब की खुशबू से महक उठती है। उस खुशबू म आप अकेले ही नही नहाते पूरा गाव नहाता है।"

"ठाक है चलता हू। आज स आन का रास्ता खुल गया। सब मलाल जाता रहा।" सरपच ने जूते पहनत हुए कहा।

× × ×

"लकमा।" सुधाकर ने आवाज दी।

"बड़ो होकम।" लकमा ने उत्तर दिया।

"राजू का गाव और घर जानता है ?"

"हा हाकम। चलना है हुजूर ?"

"हा र। बहुत दिन हा गए। वो आया नही। वडी चिंता हो रही है।"

लकमा ने कहा—"चला होकम। अभी देख आव।"

"चल। रास्ते म और भी बात करेंग।"

"घणी रुपाली बात है हाकम।"

सुधाकर ने चलत-चलते पूछा—"राजू क बारे मे जा भी जानता है बता।"

"वैसे बहुत ही अच्छा लडका ह। दसवी की परीक्षा दे दी है। अभी बेकार बैठा था। सा गागुदा के एक साहब की चिट्ठी थी सो रख लिया। गर्मियो की छुट्टिया म काम करगा तो आगे की पढाई का खर्चा भी निकाल लेगा। लड़का अच्छा बुद्धिमान आर होशियार है।"

"हू। और वह खानदानी लडाई वाली बात।"

"साहब सच और झूठ तो मुझे भी नही पता। कहते हैं कि राजू के पिता और चम्पा के पिता पास-पास रहत थे। चम्पा क पिता चाहते थे कि राजू का पिता अपना खेत उन्ह बेच दे। राजू क पिता गराब जरूर थे मगर आत्मसम्मान क जबर्दस्त हिमायती थ। उन्होंने खूब सारी तिकडम भिड़ा ला मगर कोई काम नही आई। कहते हैं कि एक दिन दोना मे खूब कहा-सुनी हुई और गोली चल गई। राजू के पिता वहा ढर हो गए। राजू उस समय काई दो-तीन साल का रहा होगा। चम्पा क बाप न पुलिस की जेब गरम कर दी। काई गवाह सामने नही आया। मामला रफा-दफा हो गया।"

"फिर ?"

आस्था क

"फिर क्या हुजूर, समय ने पलटा खाया। चम्पा के बाप का अभिमान भी खतम हुआ। काफी पैसा पुलिस वाले खा गए। बचा-खुचा शराब में खतम होने लगा। हुजूर कहते हैं कि सीधे का क्या खाना ? राज के खजाने भी, आमदनी न हो तो खाली हो जाते हैं। बरसात न हो तो बड़े-बड़े तालाब भी सूखे खेत बन जाते हैं।"

"और अब ?"

"कुछ मत पूछिए, होकम।"

"जान तो कुछ।"

"हालात बहुत खराब हैं। इतना सब हो गया, मगर बूढ़े का हेकड़ा वही है। लुक-छिप कर चम्पा काम पर आने लगी है अपनी सहेलियों के साथ और अब तो एक हफ्ते से वह भी नहीं आ रही है।"

"सर, आ गया। यही है राजू का घर।"

"बाहर एक चबूतरा। अंदर दालान। उसके अंदर एक तरफ गाय-भैंसों के ठाण। बीच में बड़ा सारा चौक। बड़ी पोल के ठीक सामने दुमंजिला मकान। लग रहा था कि यह मकान अपने यौवन में काफी वैभवशाली रहा होगा। लेकिन अब तो एक अजीब-सी खामोशी छा रही थी। समय भी क्या से क्या कर देता है ?

राजू की नजर सुधाकर और लकमा पर पड़ी।

"आइए। पधारिए, सर। आज तो बड़ी कृपा की।" राजू ने खाट बिछाई। उस पर एक चद्दर डाल दी और कहा—"बिराजिए सर। लकमा भाई बैठो न।"

राजू भागा-भागा अंदर गया और दो गिलास पानी भर लाया, आगे बढ़ाकर आग्रह किया—"अरोगिए सर। बहुत अच्छा लगा आप पधारे।"

"क्या बात है एक सप्ताह से तुम काम पर आ नहीं रहे हो ? हमने सोचा कहीं तबियत तो खराब नहीं है सो मिलने चले आए।"

"तबियत तो ठीक है सर । बस कुछ वैसे ही ।"

'राजू मुझे अपना हमदर्द समझना।"

"ठीक है दिन में न आ सको कोई बात नहीं। मैं चाहता हूं कि खाना खाकर रात में आ जाया करो।"

"जी । रात में ? मैं समझा नहीं।"

'मैंने एक योजना बनाई है। गांव के बड़े-बूढ़ों को अक्षर ज्ञान कराना चाहता हूं। जो भी आदमी बांध पर काम करने आए वह पेमेंट ड के मस्टररोल पर अंगूठा नहीं लगाए दस्तखत करे। इससे ज्यादा ज्ञान प्राप्त करे तो और अच्छी बात है। छोटी-मोटी किताब पढ़ ले। बाहर से आई चिट्ठियां पढ़ ले अखबार पढ़ ले।'

' वाह सर! क्या बात है! बहुत सुंदर विचार है। मैं मां से पूछकर जवाब दे दूंगा। वैसे तो वो इस नेक काम के लिए ना नहीं करेगी। फिर भी इजाजत लेनी तो जरूरी है।'

राजू बहुत प्रसन्न था।

"ये बात तो सही है। हमारे सस्कारो मे बडो की आज्ञा लेना अच्छी बात है। अभी माताश्री कहा गई है ?"

राजू ने कहा—"वह मंदिर गई हैं। एक अच्छे कथावाचक बाहर से आए हैं।"

सुधाकर ने गाव वालो के मानस की पहचान कर ली थी। अत कहा—"अरे! ये तो बहुत बढिया मौका है। पडित जी से बात करना। एक दिन बाध की चाकी पर कथा का कार्यक्रम रखवा देते है। उसी दिन हम रात्रि पाठशाला की घोषणा कर देगे। जो लड़किया स्कूल नही जाती व जो औरते अगूठा लगाती हैं और जो परदेस से आए अपने पति का खत दूसरो से पढवाती हैं उन्हे भी हम इतना साक्षर तो बना ही देगे कि पत्र पढ ले लिख ले।"

"घणी रुपाली बात है होकम।" लकमा ने कहा—"मेरे मस्टररोल वाली सब कुलिये भी पढ़ने आएगी। उन्हे लाना मेरी जिम्मेदारी।"

इतने मे राजू एक प्लेट मे नमकीन बिस्किट व दो गिलास ताजा गरम-गरम दूध ले आया।

"अरे। इतना सही खा लेगे मे तो परभूड की बनाई रोटिया कौन खाएगा ?"

राजू ने कहा—"सर ये तो इतना ही है। मा होती तो पता नहीं क्या करती ? आने के बाद डाटेगी कि भूखा क्या जाने दिया था ?"

"तुमने क्या विचार किया है, राजू ?"

"राजू तुम्हारी मा मना नही करेगी।" लकमा ने जोड़ा।

"ठीक है सर। कल रात आठ बजे आता हू।"

× × ×

बीस जून की रात अचानक आसमान ने रूप बदला।

देखते-देखते आसमान काला हो गया। तेज हवाए चलने लगी। अधड़ उठने लगा। उस अधड़ मे छोटे-छोटे पत्थर और रेत के कण उड़-उड़कर हमला करने लगे। हल्की बूदा-बादी शुरू हुई।

देखते-देखते बरसात तेज हो गई। करीब आधे घटे तक पानी जमकर बरसा। चारो ओर पहाड़ियो से घिरा ओबरा बाध जैसे ही पानी पहाड़िया से बहने लगा सीधा बाध के पेटे मे भरना शुरू।

पानी बरसा से, जिस नाले के रूप मे बहता था बहने लगा। मगर आज तो उसकी घेराबदी हो गई थी। न आगे बहने का रास्ता न पीछे लौटने की जगह। पानी मुख्य दीवार के सहारे भरने लगा। ओबरा बाध की तलहटी मे इस बरसात का पहला पानी भर रहा था।

ओबरा बाध इस पानी का स्वागत करने के लिए ही तो तैयारिया कर रहा है। ज्यो-ज्यो पानी चढने लगा, सबसे पहला मिलन हुआ पेटे मे बने कुए के साथ।

ज्यो-ज्यो कुआ भरने लगा जगदीश शर्मा का ब्लड प्रेशर बढने लगा।

"हे भगवान अब क्या होगा ? आज तो सुधाकर जी भी नहा ह। जरूरी काम से उदयपुर गए हैं। परभू इजन ड्राइवर भी गाव मे गया है। अकेले क्या कर ?"

जब ओबरा बाध की कुडली म काइ काम निर्विघ्न हाने का याग ही नहीं है ?

जेस ही बरसात थमी परभू गाव मे भागा-भागा आया। समझदारी यही की कि दस-बारह हट्टे-कट्टे मजदूरो को माथ लता आया।

सबका कुए के अदर के इजन की चिता। डूब गया तो निकलगा कसे ?

तब तक कुए म पाच फीट पानी भर गया था। वे फटाफट पाने और औजार लाए। रस्से लाए। इजन को खालना शुरू किया। कुछ लाग बाहर रहे कुछ अदर। दोनो के सयुक्त प्रयास रग लाने लग। चौकी पर जो भी उपलब्ध स्टाफ था वह भी पहुच गया।

इजन को ऊपर सकुशल निकाल लिया। सबके जी में जा आया।

समय बड़ा तेजी से भाग रहा है। उस तेजी से काम नही हो रहा है। काम बड़ा ढीला चल रहा है। जुलाई म कभी भी रेड सिग्नल मिल सकता है। स्टॉप ऑल द वर्क— एज इट इज। तब क्या होगा ?

ओवरा बाध तो केवल रिलीफ म ही पूरा करना है। डिपार्टमेंट की किसी स्कीम म तो है नहीं कि चलता रहेगा और जब भी होगा पूरा कर लेंगे।

जो भी आता है यही कहता है— काम जल्दी खतम करो। मगर मजदूरो का जल्दी खतम करने से मतलब हा क्या है ? ऐसा तो है नही कि व जल्दी खतम कर दग ता फिर उन्हे काम नही करना पडेगा। उन्हे तो सारी उमर काम करना है फिर जल्दी से उन्हे क्या लेना-देना ?

काम चलता है चलता रहेगा। यहा नही है तो भी मजदूरी ही करते रहेगे।

अधिशाषी अभियता माहब कितने ही चिंतित क्यो न हो मजदूरा का क्या लना-देना ? अगर इस काम मे सहायक अभियता की नाद हराम है, तो मजदूर का क्या ? अगर कनिष्ठ अभियता परेशानियो का पहाड़ लादे घूम रहे ह ता इसका मजदूरा क स्वास्थ्य पर क्या असर होने वाला है ?

बाध का लेवल अड़तीस दस का पार करे न करे उन्ह उस लवल स क्या मतलब ? उनका काम ह रोज आना। मिट्टी खादना। ट्रिप भरना। भर रहे ह। बस।

लकमा मेट राज ट्रिप बढ़ाने के नये-नये तरीके ढूढ़ता है ढूढ़ता रह। अकाल राहत जब तक चल रहा ह, काम करते रहेंगे। जब खूब पानी बरसगा खेत नहा उठग तब अपन बैला को ले जुताई शुरू कर दगे। फिर बीज बाना खुदाई करना और फिर फसल पकने की प्रतीक्षा म दिन बिता दगे।

× × ×

सबकी इच्छा थी कि बाध पर कुछ आयाजन हो। जब से उस पता लगा कि कदमचद जी आए ह ता बाध पर यथा सम्मान का कार्यक्रम रखा गया। खूब सफाई करा

गई चारों तरफ।

एक मजदूर अपने खेत से कल के पौधे काट लाया। अच्छा-सा कलात्मक मडप बना दिया। एक व्यक्ति अपने घर से वायल की गुलाबी-नारगी साड़िया ले आया। चारो तरफ बाध दी गईं। सत्यनारायण की तसवीर एक के घर से आ गई। सारे गाव म खबर पहुच गई कि शाम को बाध पर सत्यनारायण की कथा है। लोगों ने अपने-अपने काम रोज की अपेक्षा जल्दी-जल्दी निपटाने शुरू किए।

सध्या हाते-होते भीड़ जुटने लगी। माइक पर भजन के रिकार्ड बजने लगे। आवाज सुनकर बच्चे भागे चले आए। फिर धीरे-धीरे, दो-दो, चार-चार के ग्रुप में महिलाए व पुरुष आने लगे। पडित जी ने पूजा की सारी तैयारियां जमा दीं। युवा लड़के भाग-भाग कर काम कर रहे थे। कोई छिड़काव लगा रहा था। कोई बिछात बिछा रहा था। महिलाए अपने-अपने घरों से कसार और पचामृत का प्रसाद ले आईं। कोई दवर के तुलसी क्यारे से तुलसी-पत्र ले आया। किसी ने आम के पत्तों की बदनवार लगा दी। कोई प्रसाद के लिए केले ले आया। दूसरा तुलसी-पत्र लाया।

धीरे-धीरे लोग एकत्रित होने शुरू हुए। कथावाचक जी भी पधार गए। एक तरफ पुरुषों और एक तरफ स्त्रियों का दल बैठ गया। भजनों के साथ कथा प्रारभ हुई। हारमोनियम और तबले बजाने वाले के हाथ सधे हुए थे। दोनों ही काफी अच्छी तालमेल से सगत कर रहे थे। पडित जी का गला बड़ा ही मीठा था। कथा का वर्णन भी बड़े अच्छे ढग-से करते थे। लोग तन्मयता से सुन रहे थे। कथा समाप्ति पर एक गीत राजू ने सुनाया। उसके बाद एक गीत चम्पा ने सुनाया।

इस अवसर पर सुधाकर ने गाव वालों को सम्बोधित करते हुए कहा—"भाइयो! माताओ!! बहनो और बुजुर्ग जनों को प्रणाम। आप सब पधारे। बहुत अच्छा लगा। सत्यनारायण के व्रत की कथा का मतलब है, जीवन में सदा सत्य मार्ग पर चलो। चाहे कितने ही कष्टों का सामना क्यू न करना पड़े। झूठ बोलना बहुत आसान है, मगर सत्य पर चलना उतना ही कठिन। झूठ बोलने वाले को जब उसका फल मिलता है तो वह बहुत कड़वा होता है। सत्य का फल देर से मिलता है मगर मीठा होता है। सत्य बोलने वाले की आत्मा सदैव प्रसन्न रहता है। झूठ बोलने वाला दिन रात फरेब और धोखे के जाल में उलझा रहता है। हम लोग सच्चाई और ईमानदारी से जब मेहनत कर रहे हैं तो यह बाध इतनी जल्दी और अच्छा बन रहा है।

सुधाकर देख रहा था कि उसकी बातों को उपस्थित स्त्री-पुरुष बच्चे बड़े ध्यान से सुन रहे हैं उसे भी आनद आने लगा। उसने यह भी सोचा कि अब उसे चले जाना है हो। आज ही मौका है। इसीलिए वह बात आगे बढ़ाता हुआ बोला—

"सत्य की नींव पर टिका बाध चाहे कितने भी आधी तूफान आए इसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते क्योंकि आप जैसे सच्चे लोगों की मेहनत इसमें जुड़ी है। जब तक पिछले बरसों में झूठ-छल-प्रपच की राजनीति इससे जुड़ी थी, तभी तो

ज्यो-ज्या कुआ भरने लगा जगदीश शर्मा का ब्लड प्रेशर बढ़ने लगा।

"हे भगवान अब क्या होगा ? आज तो सुधाकर जी भी नहीं हैं। जरूरी काम से उदयपुर गए हैं। परभू इजन ड्राइवर भी गाव म गया है। अकल क्या कर ?"

जब आवरा बाध की कुडली म कोई काम निर्विघ्न होने का योग ही नहा है ?

जैसे ही बरसात थमी परभू गाव से भागा-भागा आया। समझदारी यह की कि दस-बारह हट्ट-कट्ट मजदूरा का साथ लेता आया।

सबको कुए क अदर क इजन की चिंता। डूब गया तो निकलेगा कैसे ?

तब तक कुए म पाच फीट पानी भर गया था। व फटाफट पाने और औजार लाए। रस्से लाए। इजन का खोलना शुरू किया। कुछ लोग बाहर रह कुछ अदर। दोना के सयुक्त प्रयास रग लाने लगे। चौकी पर जो भी उपलब्ध स्टाफ था वह भी पहुच गया।

इजन को ऊपर सकुशल निकाल लिया। सवक जी म जी आया।

समय बड़ी तेजी से भाग रहा है। उस तेजी से काम नहीं हो रहा है। काम बड़ा ढीला चल रहा है। जुलाई म कभी भी रेड सिग्नल मिल सकता है। स्टॉप ऑल द वर्क— एज इट इज। तब क्या होगा ?

आवरा बाध तो केवल रिलीफ मे ही पूरा करना है। डिपार्टमट की किसी स्कीम म तो है नहीं कि चलता रहेगा और जब भी होगा पूरा कर लगे।

जो भी आता है यही कहता है— काम जल्दी खतम करो। मगर मजदूरा को जल्दी खतम करने से मतलब ही क्या है ? एसा तो है नहीं कि व जल्दी खतम कर देंगे तो फिर उन्ह काम नहीं करना पड़ेगा। उन्ह तो सारी उमर काम करना है फिर जल्दी से उन्ह क्या लेना-देना ?

काम चलता है, चलता रहेगा। यहा नहीं है तो भी मजदूरी ही करते रहेंगे।

अधिशापी अभियता साहब कितने ही चितित क्यों न हो मजदूरा को क्या लेना-देना ? अगर इस काम म सहायक अभियता की नीद हराम है तो मजदूर को क्या ? अगर कनिष्ठ अभियता परेशानियो का पहाड़ लादे घूम रहे हैं तो इसका मजदूरा के स्वास्थ्य पर क्या असर होने वाला है ?

बाध का लेवल अड़तीस दस को पार करे न करे उन्हे उस लेवल स क्या मतलब ? उनका काम है रोज आना। मिट्टी खोदना। टिप भरना। भर रहे हैं। बस।

लकमा मेट रोज ट्रिप बढाने के नये-नये तरीके ढूढ़ता है ढूढ़ता रहे। अकाल राहत जब तक चल रहा है काम करते रहेंगे। जब खूब पानी बरसेगा खेत नहा उठगे तब अपने बैलो को ले जुताई शुरू कर देंगे। फिर बीज बोना खुदाइ करना और फिर फसल पकने की प्रतीक्षा म दिन बिता देंगे।

× × ×

सबकी इच्छा थी कि बाध पर कुछ आयोजन हो। जब स उसे पता लगा कि कथावाचक जी आए हैं तो बाध पर कथा करवाने का कार्यक्रम रखा गया। खूब सफाई कराई

गई चारो तरफ।

एक मजदूर अपने खेत से केले के पौधे काट लाया। अच्छा-सा कलात्मक मडप बना दिया। एक व्यक्ति अपने घर से वायल की गुलाबी-नारगी साड़िया ले आया। चारा तरफ बाध दी गईं। सत्यनारायण की तसवीर एक के घर से आ गई। सारे गाव म खबर पहुच गई कि शाम को बाध पर सत्यनारायण की कथा है। लोगो ने अपने-अपने काम रोज की अपेक्षा जल्दी-जल्दी निपटाने शुरू किए।

सध्या होत-होते भीड़ जुटने लगी। माइक पर भजन के रिकार्ड बजन लगे। आवाज सुनकर बच्चे भागे चले आए। फिर धीरे-धीरे, दो-दो, चार-चार क ग्रुप मे महिलाए व पुरुष आने लगे। पडित जी ने पूजा की सारी तयारिया जमा दी। युवा लड़के भाग-भाग कर काम कर रहे थे। काई छिड़काव लगा रहा था। कोई बिछात बिछा रहा था। महिलाए अपने-अपन घरो से कसार और पचामृत का प्रसाद ले आईं। कोई दवरे के तुलसी क्यारे से तुलसी-पत्र ले आया। किसी ने आम के पत्तो की वदनवार लगा दी। कोई प्रसाद के लिए केले ले आया। दूसरा तुलसी-पत्र लाया।

धीर-धीरे लाग एकत्रित होन शुरू हुए। कथावाचक जी भी पधार गए। एक तरफ पुरुपा और एक तरफ स्त्रियो का दल बैठ गया। भजनो के साथ कथा प्रारभ हुई। हारमोनियम और तबले बजाने वाले के हाथ सधे हुए थे। दोनो ही काफी अच्छी तालमेल स सगत कर रहे थे। पडित जी का गला बड़ा ही मीठा था। कथा का वर्णन भी बड़े अच्छे ढग-से करते थे। लोग तन्मयता स सुन रहे थे। कथा समाप्ति पर एक गात राजू न सुनाया। उसके बाद एक गीत चम्पा ने सुनाया।

इस अवसर पर सुधाकर ने गाव वाला को सम्बोधित करते हुए कहा—"भाइयो। माताओ।। बहनो और बुजुर्ग जनो को प्रणाम। आप सब पधारे। बहुत अच्छा लगा। सत्यनारायण के व्रत की कथा का मतलब है जीवन मे सदा सत्य मार्ग पर चले। चाहे कितने ही कष्टो का सामना क्यू न करना पड़े। झूठ बोलना बहुत आसान है मगर सत्य पर चलना उतना ही कठिन। झूठ बोलने वाल को जब उसका फल मिलता है तो वह बहुत कड़वा होता है। सत्य का फल देर से मिलता है मगर मीठा होता है। सत्य बोलने वाले की आत्मा सदैव प्रसन्न रहती है। झूठ बोलने वाला दिन रात फरेब और धाखे के जाल मे उलझा रहता ह। हम लोग सच्चाई और ईमानदारी से जब मेहनत कर रहे ह ता यह बाध इतनी जल्दी और अच्छा बन रहा है।

सुधाकर देख रहा था कि उसकी बाता को उपस्थित स्त्री-पुरुप बच्चे बड़े ध्यान से सुन रहे हैं, उसे भी आनद आने लगा। उसने यह भी सोचा कि अब उसे चला जाना है ही। आज ही मौका है। इसीलिए वह बात आगे बढ़ाता हुआ बोला—

"सत्य की नीव पर टिका बाध चाहे कितने भी आधी तूफान आए इसका कुछ नही बिगाड़ सकते क्याकि आप जैसे सच्चे लोगा की मेहनत इसमे
जब तक पिछले बरसो मे झूठ-छल-प्रपच की राजनीति इससे जुडी

यह बाध आगे नही बढ़ पाया। अगर मं भी यहा बईमानी और धोखेबाजी शुरू करता तो क्या बाध इस प्रगति पर पहुच पाता ? शायद नही। आज सत्यनारायण भगवान की कथा है। मैं सत्य ही वोल रहा हू।''

कुछ रुककर फिर उसने कहना शुरू किया—''आज से एक नई बात शुरू करने जा रहा हू। रात को आठ से नौ बजे तक रात्रि पाठशाला चलेगी। जो लोग अपने दस्तखत भी नही कर सकते उन्हे अक्षरज्ञान कराया जाएगा। आज दिन तक आप लाग गरीबी और कर्जदारी से मुक्त नही हो पाए उसका कारण अशिक्षा। अपढ़ हाना सबसे गलत बात है। बनिया बहिया म कितना क्या सही-गलत हिसाब लिखकर अगूठ पर अगूठ लगवा कर तुम्हे तुम्हारे बाप-दादाआ से आज तक कर्जदार बनाता आ रहा है। तुम्हे तोल और मोल म मार रहा है। सरकार स तुम्हे क्या-क्या सुविधाए मिलनी चाहिए तुम्हे नही मालूम। तुम्हारे खातदारी के क्या-क्या हक हैं तुम नही जानते। पटवारी साहब जहा दस्तखत करवाए वही तुम्हारे लिए सही है।''

''जानते हो पिछले दिनो बनिये का चुकता हिसाब करने के बाद भी देवा पर कुर्की आ गई थी। अगर यही देवा पढा होता तो बनिये स रसाद लता। हिसाब की जाच करता तो कुर्की नहीं आती। आप बाध शुरू हाने से पहले डूब म आई अपनी जमीना का मुआवजा मागते तो आज जो कठिनाई आ रही है वह नही आती। पढ़ाई तो अधर म रोशनी का काम करता है। बिना पढे हमम और पशुआ म कोई अतर नहा है।''

सुधाकर को लगा कि लोग राजी हो रहे हैं उसकी बाता से इसलिए अत म उसने एक निश्चय की बात कही—''अगले पखवाडे स मैं मस्टररोल म उन लोगा के नाम लिखूगा जो अपन-अपने दस्तखत करना सीख जाएग। मजूर है सबको ?

''हा हा हा ।'' गाव वाले एक साथ बोल पड़े।

''अगर कुछ लोग नही चाहते हो तो इस बात पर मैं आज ही गाव छोड़कर चला जाऊगा।'' सुधाकर और आगे बढा—''जा भी समझते हा कि मेरा यह गलत काम हे अभी बता द। मै अभी जाने को तैयार हू ?''

''नही नही नही। हम पढग।'' सभी बोलते ह।

' ठीक ह आज शुभ दिन है। प्रसाद ले और आज पहला अक्षर 'ऊ' साखकर जाए। यही हमारा महान मत्र है जो हमारे सब कामो मे सिद्धि देगा। आदि-अनादि शब्द। ऊँ हरि ऊँ ऊँ नम शिवाय।''

' आज केवल पुरुषो को, जिन्हे राजू व हुडीलाल पढ़ाएंगे। महिलाओ की व्यवस्था कल से करेगे। महिलाआ को अक्षर ज्ञान के साथ सिलाई-बुनाई कवल-दरिया बनाना— खाना बनाना आदि भी सिखाया जाएगा। जो बाध म काम नही करती वे महिलाए भी आ सकती हैं। ये सब आपक गाव के विकास के लिए है। जो कुछ आप यहा सीखकर सामान बनाएग उसे वापस लागत मूल्य पर आप गाव वाला

का ही दे दिया जाएगा। अगर आपकी जरूरतो स ज्यादा बनगा तो बिकवाने की व्यवस्था शहर म हा जाएगी।" सुधाकर ने कहा—"ठीक है अब आप लाग जा सक्ते हैं। राजू और स्टाफ के लोग रुक जाए।"

सब लोग धीरे-धीर बाध क किनारे-किनारे होते हुए गाव की ओर जा रहे थ। किसी-किसी क हाथ मे लालटेने थी। कुछ लाठी के सहारे चल रहे थे। कुछ राज की आदत के अनुसार अधेरे म ही परिचित पगडडिया पर बढ़ रह थे। सबके दिमाग म एक ही बात थी, बाबूजी कितने अच्छे हैं जा कभी किसी न हमारी भलाई के लिए नही सोचा वे बाहर से आकर सोच रहे हैं। एसा भारग दिखाने वाला कौन आएगा ?

सुधाकर ने राजू को बुलाकर कहा—"राजू बटे! मंन जा कुछ आज किया, उससे सहमत हो ?"

"जी सर। मा ने पहल तो मना किया, बाद म कहा कि— गाव मे कुछ ऐसे लोग हैं जो तरे दुश्मन हैं। व कभी नही चाहग कि मैं कुछ करू। परतु जब मंने आपका प्लान सुनाया तो आज्ञा दे दी। इस शर्त पर कि कोई विवाद या बखड़ा हाते ही छोड़ दू।"

"यह सच है बेट कि हम किसी भी नये काम को शुरू करगे तो कुछ दुश्मन बनग बनने दो। कपड़े पहनने पर उसमे जुए पड जाती हैं इस डर स हम कपड पहनना तो बद नहीं कर दते ? जुए पैदा ही न हो उसका इलाज करते हैं।"

"सर आरतो को कौन पढ़ाएगा ?" राजू न पूछा।

"चम्पा।" सुधाकर ने कहा।

"क्या ? चम्पा ?" राजू अवाक् था।

"हा चम्पा।" सुधाकर ने स्पष्ट किया। "वही चम्पा जिसे तुम चाहते हो ?"

"सर ?" राजू को आश्चर्य था या अपन प्यार के पता लग जाने पर।

"हा मैं एक बहुत बड़ी रिस्क उठान जा रहा हू।" सुधाकर ने कहा—"उसके पहले तुमसे साफ-साफ जान लेना जरूरी समझता हू कि मैंने जो कुछ कहा— वह सत्य है ?"

" " राजू खामोश था।

"तुम्हारी खामोशी नहा उत्तर चाहिए।" सुधाकर ने जोर दिया।

"हा सर! मगर ?" राजू ने स्वीकार किया।

"प्यार करने वाल किसी मगर स नही डरते।" सुधाकर न हौसला दिया। 'प्यार म कही गरीबी आडे नहा आती। प्यार मे केवल अडिग विश्वास और हौसले की आवश्यकता है।"

"वो ता पूरा है सर।" राजू के स्वर म आत्मविश्वास था।

"ता समझा हमने आधी लड़ाई जीत ली। मैं कल ही ठाकुर साहब स चम्पा के लिए बात करने जाऊगा।" सुधाकर आश्वस्त हुआ।

"व बहुत ढ़ीठ खापड़ी के आदमी ह।" राजू ने इगित किया।

"मुझे अच्छे-अच्छे टेढ़ा से वास्ता पडा है।" सुधाकर न कहा—"उनका कैसे सीधा करना है मैं बहुत अच्छी तरह जानता हू। तुम और चम्पा दोना किसी भी तरह निकट बने रहो, उसके लिए सारी प्लानिंग करनी पड़ी है।"

"मगर सर आपको हमारे बारे म कसे पता चला ?" राजू जानना चाहता था।

"प्यार करन वालों की हरकत आर सूरत सबसे अलग होती हैं। पहले शका हुई फिर मुझे लकमा न सब बता दिया।" सुधाकर ने स्पष्टीकरण किया।

"तब ता सर, आपको यह भी मालूम हागा कि हमारे साथ कितना अन्याय हुआ ह।" राजू के स्वर म आक्रोश था।

"मुझे सब मालूम हे। धर्य रखो।" सुधाकर ने समझाया—"ऊपर वाले ने चाहा ता एक दिन जितना खोया है ब्याज सहित सब पा जाओगे।"

"मुझे वह सब कुछ नही चाहिए।" राजू ने कहा—"केवल चम्पा। मेरी चम्पा।।"

"वक्त लग सकता ह। मगर मिलेगी जरूर, ये मेरा वादा है। अगर मैं जिंदा रहा तो ।" सुधाकर का उत्तर था।

"सलामत रह आप सौ बरस। ऐसी क्या बात है सर ?"

"बात कुछ नही, मुझे कौन-सा रहना है, राजू।"

' रह जाइए साहब हमारा मनाबल बढ़ेगा।"

"सबका रोटी पानी निश्चित होता हे राजू! तुम मौज करा।"

"अब मै चलू ?"

'ध्यान रहे यह केवल हमारा-तुम्हारी बात है। इसीलिए मैंने आज यहा किसी को नही रहने दिया।" सुधाकर ने सचेत किया।

'समय की नाजुकता आर महत्त्व को समझता हू। साथ ही अब मुझे आपकी सुरक्षा के बारे म भी सचेत रहना पड़ेगा।" राजू चिंतित था।

"वह क्या ?" सुधाकर जानना चाहता था।

"आप नहा जानते सर! यह गाव बडा टेढ़ा है। लोग अधेरे म सूघने की कोशिश करग।" राजू न सशय प्रकट किया—"शक की सुइया आप तक पहुचगी और आपसे बैर की शुरुआत हो जाएगी।"

"तुम बेफिक्र रहो। मै इतना बेपरवाह भी नहीं हू कि उनकी पकड मे आ सकू।" सुधाकर सचेत हुआ— 'खैर सावधानी अच्छी बात है।"

"सर एक दिन फिर घर पधारिएगा।" राजू ने आग्रह किया—"मा आपसे एक बार मिलना चाहती है।"

"जरूर आऊगा। मगर अब ये वादा नही कर सकता ? तुम तो जानते ही हा पहल ही इतने झमेल ह और फिर यह आज से जा 'ज्ञानदीप' का काम शुरू हो गया है ता इस भी गति देनी पडेगी।"

"हा, कभी आऊगा जरूर।" सुधाकर ने वादा किया।

राजू अभिभूत था—"थैंक्यू सर! मैं समझ नहा पा रहा हू कि आपका यह ऋण कब, कस उतार पाऊगा ?"

"क्या पता मुझे तुम्हारा पिछले जन्म का कोई ऋण उतारना हो ?" सुधाकर ने समाधान किया।

"कौन क्या कर सकता है ? यह ता जीवन-चक्र ह। ऋण चढ़ता है उतरता है। सब चलता रहता ह। हम ता इस चक्र की कड़ी हैं। इसक साथ-साथ घूमना है। घूमते रहेंग। जब तक ऊपर वाला घुमाएगा।"

सुधाकर न उसक कध थपथपा दिए।

× × ×

"आइए आइए सुधाकर जा। आज इधर कैसे भूल पड़ ?" ठाकुर साहब अवाक् थे।

"भूला नही, सर। चलकर आया हू।" सुधाकर न उत्तर दिया।

ठाकुर साहब ने कहा—"हमारी इतनी किस्मत कहा कि घर बैठ ब्राह्मण देव के दर्शन हा ?"

"दर्शन ता बड़ ठाकुर साहब क।" सुधाकर बोला—"ब्राह्मण ता याचक है याचक ही रहगा।"

"अर सुधाकर जी आप भी मजाक अच्छी करते हैं।" ठाकुर ने कहा—"बैठिए न खड़ क्या ह ?"

"जब तक मैं याचक हू, खड़ा ही रहूगा। आपक पारा बराबरी पर बैठने के बाद याचक कहा रह पाऊगा ?" सुधाकर ने स्पष्टीकरण किया।

ठाकुर न कहा—"आप हुकुम तो कीजिए। मर बस म होगा ता खाली नहा जाने दूगा।"

"वह ता आपके बस मे है। तभी याचक बनकर आया हू।"

तब तक ठाकुर ने आवाज दी—"चम्पा बेटी कुछ ला भाई। सुधाकर जी आए हैं।"

"मैंन पहले ही दख लिया था।" चम्पा ने अदर से कहा—"ला रही हू।"

चम्पा ट्रे म दो गिलास चाय व पानी ले आई। सुधाकर क सामन बढाए।

"हा ता याचक जी ? आपने बताया नहा क्या मागने आए थे ?"

"आया हू, तो लेकर ही जाऊगा। खाली जाना मेरी आदत म नही है।"

"सुना है चम्पा बटी कढ़ाई बुनाई सिलाई, पेंटिंग म सर्वगुण सम्पन्न है।"

"एकदम। ये जा सारी चीज देख रहे हैं वे इसी की बनाई हुई ह।"

"बहुत ही सुदर हैं। आज तक सुना था अब आखो स देखा ता विश्वास हुआ। पहले ता सुना भर था। इसलिए सच से दूर रहा।" सुधाकर ने पलट कर ठाकुर साहब से कहा—"आप बुरा न माने तो एक निवेदन करू।"

ठाकुर ने कहा—"हा हा अवश्य। बुरा मानने की क्या बात है ?"

"मैं चम्पा बिटिया के इन्ही गुणा की सेवा मागने आया हू।"

"मैं आपका मतलब नही समझा ?" ठाकुर साहब न स्पष्टीकरण चाहा।

मैंने बाध पर 'ज्ञानदीप' की घोषणा की है। सुधाकर ने बात बढ़ाई—"रात्रि को आठ से नौ बजे तक। एक घटा गाव की युवा लड़किया बहुआ और बुजुर्ग महिलाआ को अक्षर-ज्ञान के साथ जीवन म सदा काम आने वाल हुनर सिखाना चाहता हू।"

ठाकुर ने कहा—"सुधाकर जी। आप अभी इस गाव को अच्छी तरह नही जानत ?"

"आप ठाक कहते हैं ठाकुर साहब। म जान पाया हू या नही, उससे कोई फर्क नही पड़ता। हम प्रयास कितनी अच्छी तरह कर पाते हैं, यह उस पर निर्भर है।"

ठाकुर न साफ मना किया—"माफ कीजिए मं चम्पा के लिए हामी नही भर सकता।"

"आप यह क्यो नही सोचते कि चम्पा उनके अधेरे जीवन मे दीप बनकर उजाला करगी।" सुधाकर ने अनुनय की।

"*क्या उसक लिए हमारी चम्पा ही बचा है ?*" *ठाकुर क स्वर म आक्रोश था ?*

"आप चम्पा बिटिया के बराबर योग्य किसी दूसरी का नाम सुझा सकते हं ?"

"तो मैं क्या करू दूसरी नही है तो ?" ठाकुर अपनी बात पर दृढ रहा।

"उपवन म खिलकर गुलाब स्वय उसकी खुशबू सूघता रहे तो उसका कोई अर्थ नही है। वह मदिर म देवता क मस्तक पर चढ़ अपनी खुशबू सबको बाटे तभी उसकी सार्थकता है।" सुधाकर ने उपयोगिता समझाई।

ठकुराइन ने प्रवेश करते हुए कहा—"अरे, सुधाकर जी। आप तो बिल्कुल ठीक कह रह हैं।"

"आप इन बातो को नहीं समझतीं।" ठाकुर साहब ने बीच म पत्नी को टाका—"आप खामाश रहे ता अच्छा है।"

"खामोश तो हम औरत जात सदिया से है। पुरुष ने नारी को मौका हा कब दिया है ? बेटी-बहू-मा-बीवी के हर बधन म उसे खामोश ही ता रहने की सीख दी है।"

"इस गाव की हालत आप से छिपी नही है। मगर सुधाकर जी इतना सब किसके लिए कर रहे हैं ? कभी सोचा है ?"

"मर पास सोचने का वक्त नही है।' ठाकुर बोले।

"गाव के विकास और उन्नति से इन्ह क्या मिल जाएगा ?"

सुधाकर ने कहा—' गोगुदा मेरा ननिहाल है। ठकुरानी साहिबा। मरी मा के

यहा जन्म लेने का कुछ ऋण उतार सकू तो अपने को धन्य मानूगा। मगर जो कुछ भी है आप सबका है। पूरे गाव का है। आप लागो क सहयोग बिना मैं अकेला तो कुछ नहीं कर पाऊगा। आर वैसे भी मैं जब तक हू, यह चले। मेरे जाने के बाद यह सब बद हो जाय, मैं वह नहीं चाहता। आप द्वारा ही चलता रहे तब ही तो इसकी सार्थकता है। मैं तो निमित्त मात्र हू।"

"ठाकुर साहब। सुधाकर जी जो भीख माग रहे हैं वह आपके लिए ही है। आपने भी एमा अनूठा याचक नहीं दखा होगा जा जिसस माग रहा है, वापस उसी का दे रहा है ?"

"हम ठाकुर हैं, रानी साहिबा।" ठाकुर ने मूछा पर हाथ रखा—"हमारी बेटी पढ़ाने जाएगी ?"

"कौन-सी नौकरी करन जा रही है समाज सेवा है यह तो ।"

"हमने मदैव समाज स अपना सेवा कराई है ठकुरानी।"

"समय बदल गया है ठाकुर सा। कुछ तो साचा नय जमान का नई बात ही आज काम आएगी।"

"आप भी सुधाकर के स्वर म बाल रही हैं, आज ?"

"अनुचित नही है। फिर ।"

सुधाकर चुपचाप पति-पत्नी सवाद सुन रहा था।

"फिर क्या ?"

"मुझ ता कोई एतराज नहीं है कि चम्पा बेटी जो जानती है उसका शिक्षादान कर पुनीत कार्य करे।"

ठकुराइन प्रसन्न थी।

"मैं नहीं जानता, अगर कुछ ऊच-नीच हा गया ता। तुम दाना मा-बेटिया जानना।" ठाकुर ने सशय जताया।

"आप कहना क्या चाहते हैं।" ठकुराइन बिफर पड़ी। "दिन-रात यह इस चहारदिवारी म घुट-घुट कर दम ताड़ दे ? इसी बहाने इसका भी मन लगेगा। गाव के लिए कुछ तो उपयोगी बन पाएगी।"

"आप पर दबाव नही है ठाकुर साहब।" सुधाकर न कहा—"मेरी विशेष गरज भी नहीं ह। आपक गाव के लिए ही मैं कुछ कर जाना चाहता हू।"

"आज इस बाध को ही ल लीजिए अगर ये बनकर इसी साल चालू हो जाएगा तो सबसे अधिक लाभ आप ही को होना है। सबसे ज्यादा आपके खेता मे पिलाई होगी। अगर मैं भी सोच लू कि आपको क्या लाभ होने दू तो ? इन नहरो को मोड़कर दूसरी ओर भी तो भेजा जा सकता है, ठाकुर साहब। अगर इद्र भगवान भी सोच ल कि मैं भी यहीं क्यू बरसू तो ? पर ऐसा नही सोचता कोई ? हमे सबके भले की सोचनी है।"

"फिर।"

"फिर क्या ? आप देखते हैं कि इसम स्वार्थ मरा ह ?"

"क्या कहना चाहते हो ?"

"अकला तो जानवर भी जी लेता है। हम समाज के साथ क्यू रहते हैं ?"

"तुम नेताओ की तरह भापण दे रहे हो ? लगता है पूरी तैयारी क साथ आए हो ?"

"लोग और समाज तो हमारी अच्छाई से ही अच्छे-बुरे बनत हैं। आज मरे लिए तो आबरा बाध म कोई बुराई नहा है। सब अच्छे हैं क्या ? क्योंकि मरा किसी से स्वार्थ का कोई रिश्ता नही है।"

"ता क्या मरा स्वार्थ है।"

"मैं कभी नहा मानता एसा।"

"तो ।"

"स्वार्थ का अपन मना स निकाल दीजिए तो सभी अच्छ लगग। हम सिर्फ अपनी नजर बदलनी है।" सुधाकर उठकर खड़ा हुआ—"मं चलता हू। कुछ बुरा लगे तो क्षमा कर।"

"सुधाकर, जल्दी क्या है ?"

"बस ठाकुर साहब ।"

"कल चम्पा बिटिया आ गई ता समझूगा याचक को भीख मिल गई।" सुधाकर ने कदम बढ़ाया—"वरना समझूगा आपने अपने द्वार आए ब्राह्मण को भूखा ही लौटा दिया। प्रणाम।"

सुधाकर उन सबको अनुत्तरित छोडकर चल दिया।

ठाकुर, ठकुराइन और चम्पा रात-भर सो नही पाए। सभी अपने-अपने विचारा म मग्न थ।

सुधाकर सबको साचन के लिए ढेर सारा मसाला दे गया था।

तीना ने पूरा खाना भी नही खाया। एक-दूसरे स एक शब्द भी नही बोले।

ठाकुर साहब सोच रहे थे आबरा गाव की कुडली मे यह सुधाकर दसवा ग्रह बनकर कहा से टपक पडा ? क्या करना चाहता ह यह ? आज दिन तक किसी ने ओबरा क विकास की कभी नही सोची यह क्या साच रहा है ? कहीं इसका किसी पार्टी से चुनाव लडने का इरादा ता नही है ? मगर किसी भा पार्टी का पक्षधर बनते भी नही दखा ?

ठाकुर क विचार बादला की तरह सरपट दाड रहे थे पर कही ठिकाना नही मिल रहा था जहा रुक सक।

हा सकता है कि निर्दलीय खड़ा होना चाहता हा ? निर्दलीय ही होना है ता कही से भी हो सकता है। आखिर गागुदा तहसील को हा क्यो चुना ? उसम भी इसकी सारी शक्ति आबरा पर ही क्या कद्रित है ? क्या भविष्य म मरी राह म काटे बोना चाहता है ?

ठाकुर रामसिंह के मन मे सशय का साप फन उठाकर खड़ा हो गया। उनके कान सशय का फूत्कार सुन रहे थ।

अगर एसा हुआ ता वह मर घर म ही याचक बनकर क्या आता ? हा सकता है, इसम कोई गहरी चाल हा ? चाल भी हो तो होन दो। ठाकुर रामसिंह को पटखनी दन वाला अब तक कोई माई का लाल पैदा भी नही हुआ। फिर सुधाकर जैसे मामूली ब्राह्मण की क्या बिसात कि मेरी सत्ता पर काबिज हो जाय ? अभी खुद सहयाग मागने आया है।

बाध पूरा हाने पर जाने की बात भी करता है। य शुरू हाने वाले काम हमारे भरासे छोड़कर जाने की बात भी है। ये व्यक्ति क्या है ? वास्तव म जैसा कह रहा है वसा ही सरल और सीधा है ? ता क्या य वास्तव म समाज-सेवा करना चाहता है ? मगर एसे लाग तो बिरले ही हात हैं जा घर फूक तमाशा दख। पर होते ता हैं।

उनका मन अदर से निर्णय ले रहा था।

ठीक है, कल चम्पा जाएगी तो मना नही करगे। इसी बहान सुधाकर के खेमे म क्या हा रहा है उस पर निगरानी हो जाएगी। मेरी सत्ता को छीनने का षडयत्र हागा तो भी पता चल जाएगा।

ठकुराइन रामश्वरी का अपना साच चल रहा था— आवरा गाव की कितनी अच्छी किस्मत है कि सुधाकर जैसा व्यक्ति गाव की सेवा करन आया। क्या नही लाग उनकी सहायता कर गाव क विकास को गति दते ? खुद गगा चलकर यहा आई है आर लाग स्नान नहा कर ता दुर्भाग्य किसका है ? कुछ ही महाना मे पूर गाव का चहेता क्या बन गया ?

सुनता आ रही हू कि कितने आग पढाई करन वाला का स्कूल ओर कॉलेजो मे भर्ती करवा दिया। उनकी फीस किताब और रहने-खाने की व्यवस्था करवा दी। बाध जिस गति स पूर्णता की ओर बढ़ रहा है क्या पिछले दस बरसा म भी इतना काम हुआ ह ?

चलो बाध बनाने म उसका स्वार्थ एक बार मान लेती हू।

'ज्ञानदीप' की स्थापना मे इसका क्या लाभ है ? पढ़गी लिखगी कुछ हुनर साखगी अपन पाव पर खड़ी होकर दो पैसा की आमदनी करगी तो इस गाव की महिलाए। अपन पति को आर्थिक सहयोग देकर गृहस्थी का सुखी रखगी तो इस गाव की महिलाए। आज जिन घरो मे अकाल की मार स दो जून का भरपेट भोजन की समस्या है कल उन्ही घरा क चूल्हे दोना वक्त जलग तो किसका भला होगा ?

एक कडवा सच ठकुरानी के सामने था— जा काम गाव का मुखिया और प्रधान हाने के नाते ठाकुर साहब को शुरू करना चाहिए वही काम आज अगर सुधाकर कर रहा है तो हमे उसकी सूझ का लाभ उठाना चाहिए। वह बेचारा ता

डेरी खुलवाकर आमदनी का नया जरिया खोलना चाहता है।

घर बैठे मुर्गी पालन से होने वाली आय मे गाव के परिवारों को ही कमाने का अधिक मौका देना चाहता है। कल कितना ही अकाल क्या नही पड़े अगर हर आदमी की खेती के साथ आमदनी का एक-एक स्रोत और होगा तो उस गरीब को बनिए का मुह देखकर कर्जदार तो नही बनना पड़ेगा।

ठकुरानी को आज लगा कि— उनकी आस्था राशनी म बढती जा रही है यह बदलाव अदर-ही-अदर क्यो ? फिर ठाकुर साहब का सोच आज भी अठारहवीं शताब्दी का है जबकि हम इक्कीसवी सदी म जाने वाले हैं। ठीक है, अगर कल ठाकुर साहब ने चम्पा को भेजने म आना-कानी की तो पति का विरोध करन वाली प्रथम महिला वही होगी।

चम्पा करवट बदल रही थी। अपने कमरे मे अकेली थी और थे बदलत विचार और उसके ठकुरैत पिता के द्वद्व भरे चेहरे। कुछ दर उसने पत्रिका पढने की कोशिश की मगर मन नही लगा। बत्ती बुझाकर आख बद कर सोने का प्रयास किया, मगर नींद कोसो दूर थी। विचार सूत्र उलझ-सुलझ कर बढ़ते जा रह थे—

सुधाकर जी कितना अच्छा प्रस्ताव लाए हैं। पापा को न जाने क्या हो जाता है ? सीधी बात को कभी सीधा नही सोचगे। हरदम उलटा ही सोचगे। यह उलटे साच का ही नतीजा है कि आज दिन तक गाव वही का वहीं है। सरकार गावो के विकास के लिए ढरो योजनाए बनाती है। मगर उससे क्या हाता है ? जब तक हम गाव वाले उन योजनाआ का लाभ उठाने का प्रयत्न न कर तो उन योजनाओ का क्या फायदा ?

कोई हमारे घर गाय लाकर बाध सकता है मगर उसका दूध ता हमे ही दुहना पडेगा। बिना दुहे तो वह भी दूध नहीं देगी। सुधाकर जा जैसी सोच क कितने लोग होंगे ? हर आदमी तो ऐसा नही होता।

आज सारा समाज मत्री से सत्री तक अपना घर भरने और अपने स्वार्थों मे जुटे ह। दस-दस पीढिया घर बैठे खाए फिर भी उनके लोभ का अत नही है। एस मे ही काई एक ममीहा कभी पेदा होता हे जो दूसरा के सुख-दु ख के लिए न्यौछावर है। हम आज उसकी कद्र भले न करे कल पछताना होगा।

कल कौन आएगा राह दिखाने। पिछले दस बरसा म कौन आया ?

कुछ भी हो मै 'ज्ञानदीप' म जाऊगी। ज्ञान बाटूगा। गाव म एक आदर्श कद्र की स्थापना म योगदान दूगी। जो महिलाए तलाकशुदा हैं जिन महिलाओ को उनके पतियो न निराश्रित कर दिया है जो बाल विधवाए हें उन्हे उनका अधिकार दिलाकर रहूगी। एक दिन व अपने पाव पर खड़ी होकर अपनी गृहस्थी की गाडी तो सुख से चलाएगी।

सोच बाढ के पानी की तरह तीव्र आलोडन के साथ जारी था— निरतर— बाल विधवा का दु ख क्या होता है मुझसे अधिक कौन समझेगा ? मने जीवन म कौन-

ना मुख देखा ? सुहागरात के दिन ही पति सर्पदंश से दम तोड़ गया। हाथों का मेहदी का रग भी तो फीका नहीं पड़ा था। ठीक है, आज तो ठाकुर साहब हैं, कल जब नहीं रहेंगे तो कौन साथ देगा ? किसके सहारे जिऊगी मैं ?

विधवा होते हुए भी आज राजू हाथ मागने को तैयार है। कल कौन मागेगा ? वह किसके सामने हाथ फैलाएगी ? एक बाल विधवा को निष्कलक कौन जीने देगा ?

आज तो उन्हे विधवा विवाह कलक लगता है। सामाजिक मान-मर्यादाए टूटती लगती हैं। कल अगर मेरे साथ कुछ हादसा हो गया तो सामाजिक मर्यादाए मुझे कैसे बचाएगी ? कौन मुझे अपनाएगा ? तब सभी लोग मुझे ही घृणा की दृष्टि से देखेंगे। पुरुष-प्रधान समाज मे कलकित तो नारी ही होती है। पुरुष कब कलकित हुआ है ? कब ? कब ? कब ? कभी-कभी अनुभव करती हू। आज भी कुछ लोगों की नजरे मुझे निगल जाएगी।

ओबरा बाध पर राजू के साथ जो तार बधा था। उसे लेकर चम्पा अपने सोच मे उलझ गई—'काश। समाज के ये बधन न होते ?'

अदर ही अदर वह अपने से लड़ने लगी।

'तब क्या नहीं सोचा था तुमने, जब पहाड़ी पर राजू के साथ ।'

'सोचती क्या थी ? तूफान था तूफान। तूफान मे कोई सोचता है।'

'और अब ?'

'पहला अनुभव अनुभव से मुह मोड़ने कब देता है ?'

'फिर क्यों झुठलाती है अपने सबध ?'

'झुठलाऊ नहीं तो क्या करू ?'

'समर्पण सब कुछ कर डालता है।'

'उस क्षण कब सकोच था ?'

'ठाकुर साहब की इज्जत ?'

'कौन-सी इज्जत ?'

'गाव का मातबर इसान जो है वे ।'

'जवान बेटी की विवशता उन्हे नजर नही आती कुवारी मारेंगे वे।'

'बाल विधवा है तू ?'

'औरत का देह धर्म भी तो है ?'

'उसका दमन कर ।'

'पर राजू ने उसका रहस्य जो समझा दिया है ।

'ठाकुर साहब मानेंगे तेरा समर्पण ?'

'जान दे दूगी और क्या ?'

'बस। हो गई फुस्स ?'

'फिर क्या करू ?'

'निर्णय तुम्हे करना है ।'
'क्या करू ? कौन बताए ?'
'अपने पर आस्था रख और आगे बढ़।'
'तू सच कहती है।'
'तेरी छाया जो हू ।'

× × ×

दूसरे दिन। रात्रि के आठ बजने वाले थे। चौकी पर धीरे-धीरे कुछ लोग जमा होने लगे थे। सुधाकर लकमा, हुड़ीलाल राजू ने मिलकर लोगों के बैठने की व्यवस्था कर दी। पुरुषो के लिए बाहर चबूतरे पर दरिया बिछा दी। पानी का मटका भरवाकर रख दिया। ऑफिस के पैट्रोमक्स जलवा दिए। महिलाओ के लिए ऑफिस वाले कमरे मे व्यवस्था कर दी। आठ बजते ही पद्रह पुरुष और दस महिलाए आ गईं। सुधाकर ने सबके लिए प्रारभिक पढ़ाई के लिए स्लेट और पेंसिल गागुदा से मगवा ली।

राजू और सुधाकर की नजर गाव से आने वाली राह पर टिकी थी। उन दोनो को एक-एक पल गुजारना भारी पड़ रहा था। दोनो के दिमाग मे सैकडो तूफान उठ रहे थे। 'चम्पा आएगी ? नहीं आएगी ? ठाकुर साहब पर उनका दबाव असर करेगा ? नही करेगा।'

तब तक हुड़ी लाल आए हुए पुरुषो को स्लेट व पेंसिल बाट चुका था। घड़ी मे आठ बजने का हुए कि चम्पा हरी चमकदार साड़ी मे आती दिखाई दी। राजू की आखो मे हजार कमल एक साथ खिल उठे। उसकी आखो की चमक और चेहरे की दमक से सुधाकर मन-ही-मन खूब प्रसन्न हुआ। उसे भी हजार वाट की रोशनी दिखाई देने लगी।

"आओ चम्पा स्वागत है।" सुधाकर ने कहा— "एक क्षण के लिए तो हम निराश हो चले थे। मगर जब आते हुए देखा तो ।"

"आना तो था ही।" चम्पा ने अपनी जिम्मेदारी व्यक्त करते हुए कहा— "चाहे सीधे आती या उल्टे आती यह मेरा दृढ निश्चय था। इतना बडा बीडा आपने मेरे भरोसे उठाया तो मै भला कैसे पीछे रहती ?"

"मैं तुम्हारा बहुत बहुत अहसानमद हू।" सुधाकर ने कहा— "तुम न आती तो 'ज्ञानदीप' के महिला प्रकोष्ट का क्या होता ? सोच भी नही सकता।'

चम्पा ने कहा— "अरे! वाह!! जो व्यक्ति दूसरो को आस्था और विश्वास दिलाता है खुद ही कमजोर कैसे पड गया ?"

"सच कहा तुमने।"

"अहसानमद तो मैं आपकी हू। आपने इस लायक तो समझा।"

सुधाकर ने कहा— 'चम्पा कमजोरी की बात नही थी विश्वास पूरा था। मगर जो स्थितिया देखकर आया था। उसके कारण मेरा विश्वास डगमगाने लगा

था। आज से तुम महिला प्रकोष्ट सभालोगी और राजू पुरुप प्रकोष्ट।''

इतने म राजू कमरे मे से निकल आया। दोनो ने एक-दूसरे की आखा म दखा और देखत-देखते जैसे हजारो मीलो दूर का सफर तय कर मिल गए थे।

दाना न एक-दूसरे का अभिवादन किया।

''चम्पा। तुम्ह काम म कही परेशानी हो तो राजू की सहायता ले लेना।'' सभी गाव वाला के सामने सुधाकर ने चम्पा से कहा— 'ज्ञानदीप' रथ के तुम दोनो हा पहिए हो। म तुमम से एक क बिना अधूरा रह जाऊगा। महिलाआ मे, जा पढाई म रुचि ले, उसे पढ़ाना हे। जिसकी रुचि कम हो उसे हस्ताक्षर करना ता सिखाना ही है, उसक बाद काम सीखने का प्रशिक्षण देना है। एक बार सबको मदिर क बाहर दीप जलाकर प्रार्थना करवा दो, फिर अपना-अपना काम प्रारभ कर देना।''

अपने आसन पर ही बठ स्त्री-पुरुपो ने चम्पा के कहते ही हल्की रोशनी म प्रार्थना म हाथ जोड लिए— चम्पा ने बताया कि ''पहले में बालूगी आप सभी दुहराएगे।''

''हे प्रभो आनददाता ज्ञान हमको दीजिए।
छीनकर अज्ञानता बस दूर हमसे कीजिए।''

स्त्री-पुरुप समवत स्वर म दुहरा रहे थे।

प्रार्थना समाप्त हुई। सुधाकर उठकर बोला— ''अब आप लोग आज पहली पढाई शुरू करो। मै आता हू।''

''आप कहा जाएगे ?'' राजू ने प्रश्न उठाया।

''मैं जरा गागुदा तहसीलदार से इन भूमिहीना की बात करके आता हू, जिसे मुआवजा चाहिए। मने मुआवजा वाला और जमीन वाला के लिए जमीन की बात करना हे। बडे दु खी हें बेचारे।''

× × ×

'ज्ञानदीप' का कार्यक्रम प्रारभ हुए दस दिन हो गए। प्रतिदिन पुरुपो और महिलाओ की सख्या म बढोत्तरी होने लगी।

एक दिन सुधाकर सहकारी विभाग के अध्यक्ष को बुला लाया। जो-जो व्यक्ति डेरी आर मुर्गीपालन क इच्छुक थ उन्ह फार्म भरवाकर ओबरा दूध सहकारी समिति के नाम से लोन दिलवा दिया। इक्कीस लोग उसके मेबर (सदस्य) बन गए। कुछ लोगो ने कुक्कुट पालन म इच्छा जतलाई उनकी सहकारी समिति भी पजीकृत करवा कर उनक लिए लोन की व्यवस्था करवा दी।

जब विकास अधिकारी जी को पता लगा तो व भी भागे-भागे आए। वे कहा पीछ रहने वाले थे। समग्र ग्राम विकास की योजनाए तो उनक पास थी और अनायास ही सुधाकर जैसा व्यक्ति उनकी याजनाओ को आगे बढाने वाला मिल गया ता भला वे ऐसा मौका क्या छोड ? वे जानत थे कि सुधाकर के कारण अब उन्ह राज्य स्तरीय बठको म अपने क्षेत्र की प्रगति के बढ़ते आकड़ दिखाने का अवसर

मिला है। उन्ही की असलियत पर प्रमोशन सभव होगा।

किसी को खाद-बीज के लिए ऋण चाहिए। किसी को झोपडी को पक्के मकान मे बदलना है तो किसी को मडबदी करवानी है। कही गोबर गैस प्लाट लगवाना है। किसी को सौर चूल्हा चाहिए तो कोई सौर विद्युत लगवाना चाहता है।

सबकी जरूरते पूरी करने के लिए अब विकास अधिकारी, सुधाकर के रहते हुए सबके साथ आकर खडा होने लगा।

ओबरा गाव आदर्श गाव बनने जा रहा था। काई ऐसी योजना नहीं थी, जो यहा नही चल रही हा। कद्रीय सयुक्त सचिव ने जो विजिट पहले की थी, उसकी सिफारिश का भी अच्छा असर हुआ।

कद्र मे उनका भी कहना था कि—"गागुदा तहसील मे आदर्श काम हा रहा है। राज्य सरकार को चाहिए कि उस तहसील को सभी येजनाआ के अतर्गत पूर्ण विकास के द्वार खोल दे। खासकर ओबरा गाव की प्रोग्रेस अच्छी है। श्री सुधाकर का काम अनुकरणीय है। इसी तरह के काम अन्य स्थानो पर भी प्रारभ करने चाहिए।"

एक दिन विकास अधिकारी जी बाध पर आए। रात्रिकालान 'ज्ञानदीप' आश्रम का काम देखा। चम्पा जिस ढग से उन ग्रामीण महिलाआ मे आत्मविश्वास जगा रही थी काबिले तारीफ था।

चबूतरे पर चाय पीते विकास अधिकारी ने कहा—"सुधाकर जी आपने जा ज्ञान का दीप इनक अधेरे जीवन म जलाया है नि सदेह स्तुत्य है। आज क युग म कौन इतनी निष्ठा से नि स्वार्थ भावना से जुड़ता है ? आपने झडा उठाया तो देखिए आपके साथ कितने लोग खड़े हो गए। सरकार खुद चाहती है कि ऐसी सस्थाए बन।"

"मगर जो बनती हैं वे केवल स्वार्थ के लिए। सिवाय फर्जीवाड़े के कुछ भी नहीं। केवल रजिस्टरो म सस्था काम करती हैं।" सुधाकर हसा हल्के से। फिर भी विकास अधिकारी स वह हसी छिप न सकी।

"आपके यहा जो काम चल रहा है देखकर तबियत खुश हो जाती है। चला, कहीं एक दिया तो जल रहा है अधेरे से लड़ने के लिए। आपक महिला उद्योग के लिए जब भी किसी ऋण की आवश्यकता हो बता दीजिएगा। शरबत पापड़, बड़ी उद्योग, अचार चटनी मुरब्बे पैक मसाले आदि इन चीजा की खपत अपनी तहसील म ही हो जाएगी।"

"जी आपका सुझाव बहुत अच्छा है।"

यह योजना भी है। अभी कुछ दिन और

इच्छा जागृत न हो मैं कोई काम थापना नहीं

सफल नहीं होते।"

ऑफिस का काम काफी बढ़ गया था।

रजिस्ट्रेशन करना, नई योजनाओं के लिए नये फार्म भरना। दिन-प्रतिदिन काम बढ़ता ही जा रहा था। पर, सुधाकर थकने का नाम नहीं लेता था।

आज रात काफी हो गई थी। पढ़ने और सीखने वाले सभी चले गए थे। सुधाकर भी विभाग के काम से उदयपुर गया हुआ था। हमेशा तो हुड़ीलाल घर जाते समय चम्पा को उसके घर छोड़ देता था। आज मां की तबीयत ठीक नहीं होने से वह भी जल्दी चला गया था। राजू के साथ जाना चम्पा की विवशता थी।

दोनों अंधेरे रास्ते पर साथ-साथ चल जा रहे थे। राजू के हाथों में टॉर्च थी। यदा-कदा वह जलाता-बुझाता चल रहा था। काफी दूर दोनों खामोश चलते रहे। राजू ने ही मौन तोड़ा—"क्या सोच रही हो, चम्पा ?"

"सोचने के लिए बचा ही क्या है राजू ?" चम्पा ने निःश्वास छोड़ते हुए कहा।

"इतना निराश क्यों हो जाती हो ?" राजू ने पूछा।

"आशा की कहीं कोई किरण भी तो नजर नहीं आती ?" चम्पा निराश थी।

"आस्था का एक दिया काफी होता है, चम्पा।"

"तुमने जला तो दिया।"

"गलत था ?"

"हां।"

"क्यों ?"

"अब कहीं घुटन है टूटन है संत्रास है।"

"ऐसे नहीं होता है चम्पा—अधिक परेशान मत हो।"

"यह तुम कह सकते हो, पुरुष हो न।"

"आश्वस्त कर रहा हूं। तुम अकेली नहीं हो।"

"अकेली हूं, बेहद अकेली। राजू, यही नियति है मेरी ?"

"नियति कुछ नहीं होती पगली। हारे हुए लोगों का शगल है नियति।"

"इससे तो मैं पहले ही अच्छी थी।"

"क्यों ?"

"अपनी औरत से परिचित नहीं थी।"

"अब ?"

"मुश्किल हो जाती है। सोचती हूं, मौत ही आ जाए।"

"इतना जल्दी हार जाओगी तो हम मंजिल तक कैसे पहुंचेंगे ?"

"राजू तुम ठीक कहते हो मगर जीवन भी तो इसी अंधेरी राह की तरह है।"

"टॉर्च साथ है न चम्पा!"

"मगर ऊबड़-खाबड़ रास्ता पत्थरों और कांटों से भरा है। अंधेरे में यह भी तो पता नहीं चलता कि हम सही रास्ते जा रहे हैं या भटक रहे हैं ?" चम्पा ने कहा।

"क्या मुझ पर भरोसा नहीं है ?"

"केवल तुम्हारा ही तो आसरा है।"

"मैं तुम्हारे हर कदम पर साथ दूंगा।"

"यह समाज बहुत जालिम है। तुम्हारे कदमों को तोड़कर रख देगा।"

"मैं गिर भी पड़ा तो फिर उठूंगा। तुम्हें फिर संभालूंगा।"

"राजू, इस अंधेरे में तुम्हीं तो एक उजाले की किरण हो। तुम्हें कुछ हो गया तो मैं कहीं की नहीं रहूंगी ?"

"मैं साथ हूं, सदा रहूंगा साथ, समझी।"

"तुम्हारे बल पर ही तो इतना बड़ा जुआ खेल रही हूं। बाल-विधवा होना कितना बड़ा अपराध है ?"

"इसमें तुम्हारा क्या कुसूर है चम्पा ? दोष तो उन लोगों का है जिन्होंने तुम्हारे खेलने खाने के दिनों में ही विवाहिता बना दिया। जिस लड़की को शादी-ब्याह का अर्थ ही पता नहीं हो उसका विवाह कैसा विवाह है ?"

"सच राजू! तब मैं नहीं जानती थी कि पति क्या होता है और पत्नी क्या होती है ? वहां तो मेरी बलि दी गई है। मेरे अधिकारों को विवाह के हवनकुंड में होम कर दिया गया है।" चम्पा खुल गई। "शायद, पशु समझा गया है हम लड़कियों को। यह तो निरीह गाय को कसाई के हवाले करना है। मैं इन सबसे लड़ूंगी।"

"चम्पा मैं लड़ूंगा। सुधाकर जी हमारे साथ हैं।"

"बेवजह हमारे कारण, वे सताए जाएंगे।"

राजू ने कहा—"हमें, कुछ करना होगा चम्पा। कुछ और नहीं हुआ तो भाग सकते हैं।"

"साथ जी नहीं सकेंगे तो मर तो सकते ही हैं।"

"इतनी निराश होने की जरूरत नहीं है। मरते कायर हैं। हम नई परंपराएं बनानी होंगी। सड़-गल सदियों पुराने कायदों को दफनाना होगा।"

घर आ गया था। अतः ऊंचे स्वर में चम्पा ने अलग होते हुए कहा—"अच्छा शुभ रात्रि।"

"शुभ रात्रि" राजू आगे बढ़ गया।

ठाकुर बैठक के द्वार पर खड़े थे।

"पिताजी! आप ?"

"मैं पूछता हूं इतनी देर रात तक कहां थी ?"

"स्कूल का काम चढ़ा हुआ था पूरा करने में देर हो गई।"

"हूं, किसके साथ आई ?" ठाकुर के स्वर में कठोरता थी।

" ?" चम्पा खामोश थी।

"मैं पूछता हूं, कौन छोड़ गया इतनी रात गए ?" ठाकुर ने क्रोध में पूछा।

"क्या हो जी ? क्या तंग कर रहे हैं बेटी को ?" ठकुराइन ने हस्तक्षेप किया।

"तुम चुप रहो जी। हा, किसक साथ आई ?" ठाकुर ने ठकुराइन को डाटा।

"राजू के साथ।" चम्पा का उत्तर था।

"सुना तुमने ?" ठाकुर भन्नाए—"देख लिए अपनी बेटी के लक्षण ? मे तो पहल ही जानता था कि वो सुधाकर का बच्चा हमे पाठ पढ़ाने आया था।"

"राजू क अलावा और कोई नही मिला छोड़ने के लिए ?"

"आज हुड़ीलाल कही चले गए थ। कोई था नही।"

"हू! जानता हू!! सब जानता हू। एक दिन काला मुह करवाएगी।"

"पिताजी ।" चम्पा ने प्रतिकार किया।

"मर गए पिताजी। खनदान की इज्जत चौपट करक रहेगी ?"

"एसा भी कौन-सा बड़ा गुनाह हो गया ह, चम्पा से ? राजू ने ऐसा क्या कर दिया ? आपकी बटी को हिफाजत से घर पहुचा कर गया है। अगर अकेली आती और किसी ने कुछ कर दिया होता तो ? क्या मुह दिखाने काबिल रह जाते ?"

"अब भी दिखाने काबिल कहा छोड़ा है मुह को ? मेरे दुश्मन क बटे के साथ आख-मट्टका चल रहा है। क्या तुम सोचती हो, मुझे मालूम नही है ?"

"शर्म आनी चाहिए अपनी बेटी पर लाछन लगाते हुए!"

"गलत कह रहा हू ?"

"बिल्कुल गलत।"

"झूठ कहती हैं आप।" ठाकुर साहब अपनी ठकुरेती पर आ गए। "एक दिन दोनो को शूट कर दूगा।"

"पहले आप मुझे शूट कर द फिर इसे करना।"

"आप अगारो को हवा द रही हं।"

"मं तो राख डालन का प्रयास कर रही हू, ठाकुर साहब।"

"राजू का साथ ठीक नहीं है।"

"क्यो ?"

"हम कहते हैं।"

"उस राजू ने आपका क्या छीना है ?" ठकुरानी क तेवर बदले। "छीना ह ता आपने उसका । अब मरा मुह मत खुलवाइए ठाकुर साहब। चम्पा जा, ऊपर जा बटी। खाना खाकर सो जा।"

"लोग कहते हैं, वहा तक तो ठीक था। आज तुम भी मुझे दोषी मानती हो ?"

"मानती ही नही सब कुछ जानती हू। आप क्या सोचते है मुझे कुछ भी नही मालूम ? उस रात माधवसिंह को बदूक किसन दी थी ? ' ठकुरानी ने आज उनके यथार्थ को स्पष्ट कर दिया। "क्या कहा था आपने उसे ? आज रात को अमरसिंह खेत पर पहरा देगा। मौका देखकर भडका कर देना। दस हजार रुपये इसी बात के दिए थे कि काम हाने के बाद वह हमेशा के लिए गाव छाडकर चला जाय।"

"ठकुरानी। आप अपनी हद से आग बढ़ रही हैं।"

"क्या आपकी असलियत सामने आ रही है क्या ?"

"आप खामोश हो जाए तो ठीक होगा।"

"पर, हकीकत आप सुन ही ले।" आज ठकुरानी के तेवर कम न थ। बहुत कुछ सहा था अब तक, कह गई—"उपके बाद विधवा राजू की मा के साथ आपने क्या-क्या जुल्म ढाए मुझसे कुछ छिपा है ? सत्यनारायण पटवारी को रिश्वत देकर नई पैमाइश हो गई। आपका खेत रातो-रात दूना हो गया। गाव मे किससे छिपी है यह बात ?"

"वो तो ठीक था। राजू की मा राजू को लेकर पीहर चली गई, वरना राजू भी वहीं होता, जहा उसके पिता गए।"

"यह सब मैंने क्या अपने लिए किया ? आप सबके लिए किया है ?"

"ठाकुर साहब! हमें खून स सनी रोटिया नही चाहिए। हम भूखी रह लेगी मगर किसी के लहू म बना हलवा नही खाना है। किसी का हक मारने पर क्या होता है ? कभी सोचा आपने ?"

"सब बकवास है।"

"सबकी हाय लगी है।"

"भ्रम हे आपका।"

"मेरी कोख उजड़ गई। आप किसी का सुहाग नही छीनते किसी के सिर से बाप का साया नही उठाते तो आज मेरी कोख सूनी नही होती। मेरा बेटा मुझसे बिछुड़कर नही जाता।"

ठकुराइन रोते-रोते अपने कमरे मे चली गई।

आज ठाकुर रामसिंह को आखा म नींद नहा थी। उन्हे आज ज्ञान हुआ कि जो कुछ भी ऊचा-नीचा आज तक वे करते आ रहे थे, उसके सबध मे अच्छे-बुरे का निर्णय करने के लिए ठकुरानी पीछे नही है। आत्मनिर्णय कही ठाकुर के सोच की गलियो म सीटी बजाने लगा था। 'अपनी ठकुरैती बनाए रखने के लिए उन्होंने वही किया जो यहा का बनिया करता है बनिया बही की मार मारता है और उन्होंने सदा गोली की मार मारी है। दोनो के काम एक ही हैं। उसने भी जमीने हड़पी हैं और उन्होंने भी।'

राज गया। स्वतत्रता आई। पर रिआया वही रही। दबाव वही रहे। साम दाम दड से चुनाव जीतते रहे। गाव का भला न हा जाय। यही कोशिश करते रहे। अगर गाव का भला हो गया तो लोग उन्हे महत्त्व नही देगे। यही सोच सदैव गाव को गरीब और बेसहारा बनाए रखने के लिए काम करती रही।

आज आक्रोश शिक्षा-प्रसार मे अपनी बटी चम्पा के योगदान करने पर कहीं अधिक था और गुबार निकला राजू पर क्याकि राजू के साथ चम्पा की रैपर्ट देखकर उनकी छाती पर साप लोटने लगा था।

चम्पा पढी-लिखी है। बाल विधवा है, तो क्या ? गैर जिम्मेदार उनकी बेटी हो जाएगी क्या ? पर जवानी की हवा कब किसे कहा पछाड देगी— यह भय कम नही था। सारा गाव जब बाध के काम मे लगा था, तब चम्पा को रोकना चाहकर भी नही रोक पाए थे। समझाया था उसे। उस दिन चम्पा ने कह दिया—"पिताजी आपका जमाना कुछ और था, अब आप अपने पैमाने से चीजे मत देखिए। नया जमाना है और हमे गाव मे रहना है तो गाव से अलग होकर हम तो नही रह सकते। आप आज तक अलग रहे, उसका परिणाम आज देख ही रहे हैं। आपके पास कौन खुशी से बैठने आता है ? सबकी मजबूरी ही लाती हे।"

सोच क उत्तर अपनी ऊचाइयो पर थे। और चम्पा के पिता ठाकुर ?

× × ×

'ज्ञानदीप' अपना प्रकाश फैलाने लगा। लोगा म पढन का शोक जागृत हुआ। शहर से खबर आई कि सरकार एक दल भेज रही हे जो मनोरजन के साथ शिक्षाप्रद कार्यक्रम करेगा। युवाओ मे उत्साह जागा। सुधाकर ने सभी मबरो को बुलाकर सूचना दी। सभी खुश थे। सबमे अति उत्साह था। यह तय रहा कि आने वाले दल के बाद 'ज्ञानदीप' की तरफ से भी सास्कृतिक कार्यक्रम होगा। लड़के गवरी नृत्य की झलकिया दग और महिलाए लोक-गीत और नृत्य पेश करेगी।

रविवार का दिन। सुबह से ही चोकी पर तैयारिया शुरू हो गई।

सारे गाव के घर-घर मे खबर पहुच गई। सब शाम का खाना खाकर जल्दी-जल्दी पहुचने लगे बाध की चौकी पर।

सबमे पहले कठपुतली का तमाशा शुरू हुआ। रामा और पेमा दो दोस्त। एक खूब पढ़ा और पढ़ते-पढ़ते बहुत बड़ा आदमी बन गया। पेमा नही पढा। बनिया का कर्जदार बना। सारी उमर मेहनत-मजूरी करने मे ही बीत गई। कई साल बाद मिले। एक-दूसरे का हाल पूछा। रामा तहसीलदार बनकर उसी गाव मे आ गया। पेमा ने बनिए द्वारा छीने हुए खेत का हाल बताया। तहसीलदार ने वापस उसे उसका खेत दिलाया और कहा—"मूर्ख! अगर तू भी पढ लेता तो आज यह सब नही भुगतना पड़ता।"

बच्चो और बडो ने कठपुतली का खूब आनद लिया। उसके बाद छाटा नाटक हुआ। एक छाटा परिवार, दूसरा बडा परिवार। छोटा परिवार कम आमदनी मे भी खुश था और तरक्की करता रहा। बडा परिवार कम आदमनी ज्यादा खर्चे। बच्चे न तो पूरा पढ सके, न सुख से रह सके। छाटा परिवार सुखी परिवार।

इसे भी सबने पसद किया। छोटे परिवार की बात ही सबको भाई। इसके बाद 'ज्ञानदीप' के लडको ने गवरी नृत्य किया। ढोलकी और मादल की झनकार दूर-दूर तक गूज रही थी। हुड़ीलाल बणजारी बना था। कोई नहीं पहचान पाया। सभी औरत ही समझ रहे थे। उसके बाद कई आदिवासी नृत्य हुए। तहसीलदार विकास अधिकारी कनिष्ठ अभियता सहायक अभियता और अधिशासी अभियता भी उपस्थित

थ। सबने कार्यक्रम की प्रशसा की। उत्तम रह लागा का पुरस्कार दिए गए।

चम्पा और राजू अपनी मेहनत पर प्रसन्न थे। उनके प्रयास मे सभी ने अपनी कला का प्रदर्शन किया था। उद्योगशाला म तैयार अचार चटनी मुरब्बे हाथा-हाथ बिक गए थे। जितना भी सामान बना था सभी बिक गया था। कुछ लोग एडवास ऑर्डर दे गए थ। कायक्रम समाप्ति पर सबको गरमागरम गुलगुलो क साथ चाय दी गई। सबका खूब आनद आया। शहर का दल जाते समय वादा कर गया कि आप लाग अपनी तैयारी रखिए—"अगले कार्यक्रम म हम आपको प्राग्राम दने बुलवाएग।"

सुनकर चम्पा और राजू की प्रसन्नता का पार नही था। उन्होंने कभी सपने मे भी नही साचा था कि उन्ह शहर म कार्यक्रम के लिए बुलवाया जाएगा।

सुधाकर का सपना धीर-धीर आकार लेन लगा था। उस रात क बाद चम्पा को ठाकुर साहब न मना ता नहीं किया परन्तु सावधान अवश्य कर दिया कि राजू से दूर रहे नही ता 'ज्ञानदीप' जाना बन्द कर दिया जाएगा। राजू भी बहुत खाद-खोदकर जानना चाहता परन्तु चम्पा ने कोई उत्तर नही दिया।

जब उस रात वह सो नही पाई थी और ऊपर से माता-पिता की नाक-झाक मे सब जान गई वह। सत्य क्या हे—उस रात जान कर राजू के प्रति अधिक झुकाव बढ गया। उसके पिता ने जो पाप किया था उसका प्रायश्चित वह करगी। अपने स्वार्थ के लिए इन्सान कितना बडा अनर्थ कर सकता हे—उस विश्वास ही नही हो रहा था। मन-ही-मन पिता के लिए सारी श्रद्धा समाप्त हो गई थी। जनक वीभत्स रूप सामने था—'क्या करगे इतनी सारी जायदाद का ? आख मींचने के बाद क्या होगा इसका ? फिर वह लोभ लालच, छल प्रपच तेरा-मेरा किसलिए ?'

आज क कायक्रम की सफलता स उस जीन का एक राह मिल गई थी। जीवन का एक मकसद स्पष्ट हो गया। हम जब तक अपने ही लिए जीते है ता जिदगी एक बाझ लगने लगती हे। समुद्र म भटके दिशाहीन जहाज क समान लगती है जिदगी आर जब हम दूसरा के लिए जीना शुरू करते हे तो गाधी सुभाष परमहस विवेकानन्द बन जाते है।

आज उद्यमिक समिति की प्रदर्शनी म महिलाओ द्वारा बनाया गया सामान जब बिकना शुरू हुआ ता औरत कितनी खुश थी। शाम को जब उनक बिके सामान के मुनाफे के रुपये उन्ह दिए तो उनक चेहरे पर जा प्रसन्नता की लाली था कितनी अमूल्य थी। उनके श्रम स उपार्जित लाभ को पाकर कितनी प्रसन्न थी व।

चम्पा को कितनी खुशी हुई अदाज ही नहा। उसके द्वारा कितने परिवारा म खुशिया भर गई। इससे बडा शायद काई सुख नही।

इन सबम अगर राजू साथ न देता ता वह कहा हाती ? घर की चहारदीवारी म घुटती रहती। जीवन का सही अर्थ ही तब है जब हम औरा क लिए जिए। आज तहसीलदार विकास अधिकारी सभी इजीनियरो ने तारीफ के पुल बाधे तो वह

मालामाल हो गई।

× × ×

बरसात का मौसम आया ही समझो। रोज-रोज आसमान मे बादल छा रह हे। कभी भी बरसात हो सकती है। केशा बा की चिताओ का अत नही है। बाध के चारो ओर बिखरे सामान को ढूढ़-ढूढ कर इकट्ठा करने लगे। कही बरसात आ गई तो ? खराब हो गया तो ? केशा बा को चिता लगती है कि जिस दिन भी पानी आएगा कुए पर रखा इजन सबसे पहले डूबेगा। बार-बार एक ही बात कहेग—"बाबूजी शाम को इजन ऊपर ढाबे पर ले लो।"

"केशा बा आज ता आसमान साफ है। फिर बारिश की सभावना केसे ?"

"बावूजी आप नी जाणो। अने कसी घेड-माल जोतणी पडे है ?"

केशा बा की बात ठीक है। इन्द्र भगवान को कान से रहट की घड-माल बाधनी है। काई भरोसा नहा धडधड़ाकर कब बरसना शुरू कर दे ?

केशा बा सबको इकट्ठा करके ले जाते हे। एक बडे पाइप के टुकडे को इजन के आग लगवाते हें और एक पाइप पीछे। अब तीन जने तार बाधकर आगे से खाचते हे और तीन जन पाछे से धक्का दत हैं। जनशक्ति से इजन खिसकना शुरू हाता है। खाचते-खाचते काफी ऊपर चढाई तक ले आते हैं। जब उन्ह विश्वास हो जाता है कि अब यहा तक पानी नही चढगा तो वही रुकवा देत हं।

केशा बा चौकी का भार देवा का सौंप कर घर खाना खाने चले जाते हैं। सबको हिदायत कर जाते हे कि इजन रोज इसी तरह ऊपर चढ़ाना है जब तक बरसात का खतरा ह।

आज बाध की कुडली मे कुछ विशष घटना घटनी थी। सुबह-ही-सुबह सात बजकर दस मिनट पर अधिशासी अभियता साहब की जीप बाध पर आ पहुची। देवा भागा-भागा आया—"साब होकम एक्सईएन साब पधार्‍या हे।"

"ठीक हे अभी चलत हैं।" सुधाकर ने कहा।

तब तक कनिष्ठ अभियता साहब की आवाज आती है—"दवला । लवल पेटी गज, लाना।"

"अभी लाया होकम।" देवला ने कहा।

अधिशासी अभियता साहब आए हं लेवल चैक करन। ठकेदार का बिल बनाना है। कनिष्ठ और सहायक अभियन्ता ने एमबी म जा लवल चढाए हं वे सही हं या नही। सिचाई विभाग या पी डब्ल्यू डी काई भी हा सबके लिए एमबी यानि कि मेजरमेट बुक अर्थात् भू-मापन किताब किसी गीता-बाइबिल कुरान स कम नही है। बाध फट कर बह सकता है मगर बाध कब कितना बना उसकी दस्तावेज है एम बा । कही ठेकदार का काम स अधिक पमेट तो नही हो रहा ह। उसकी गवाह हे एम बा । इसलिए इस महत्त्वपूर्ण भू-मापन कार्यक्रम को सपन्न करने आया है यह काफिला।

साथ ही आवरा बाध का सुपरवाइजर स्टॉक कितना चुस्त-दुरुस्त है, उसकी भी लगे हाथ जाच हो जाएगी। सब चुस्त-दुरुस्त मुस्तैद हैं या अभी नीद मे अलसा रहे हैं। अलसात रहग ता कैसे काम चलेगा ? अलसाते रहने से ता बाध नहीं बन जाएग। जब स्टाफ ही सो जाएगा ता मजदूर क्या नही सोएग ? और जब मजदूर सो जाएग तो बाध भी साता रहेगा। इतने वर्षों तक आबरा बाध साता ही तो रह गया है। अब पूरी तरह जागा हुआ सुधाकर टीम मे सम्मिलित है।

अधिशासी अभियता साहब लेवल पढ़ना शुरू करते हैं। सहायक और कनिष्ठ अभियता अगली रीडिग के लिए देवला से गज आगे-आगे रखवात जाते हैं। अधिशासी अभियता साहब रीडिग नाट करते जाते हैं। कभी डाउन स्ट्रीम तो कभी अप स्ट्राम। लबाई-चौड़ाई और ऊचाई के जोड़-बाकी-गुणा-भाग से ही निकलेगा कि कितने घन फीट मिट्टी आई है अभी और कितनी चाहिए ? नाले के लेवल क ऊपर पहुचने के लिए कोन-सा अक पार करना पड़गा। वहा तक पहुचने के लिए कितने ट्रैक्टर प्रतिदिन कितने ट्रिप कुल कितने दिन पार करगे तब वहा पहुच पाएंगे।

सुधाकर अधिशासी अधियता की एम बी पकड़े-पकड़े साथ-साथ चल रहा है। अचानक अधिशासी अभियता पूछ बैठे—"क्यो सुधाकर जी, आपका क्या सोचना है ? यह बाध कभी भरेगा भी!"

सुधाकर ने पूरे विश्वास से कहा—"इस वरसात मे ही पूरा भर जाएगा, सर"

"इतने विश्वास स कैसे कह सकते हैं।" साहव ने पूछा—"क्या तर्क है आपका ?"

सुधाकर ने तर्क दिया—"सर जब आधे घटे की अच्छी बरसात मे ही यह पाच फीट भर गया तो पूरी बरसात म बाईस इच के रैनफाल के औसत से पूरा भरेगा ही।"

"मैं ऐसा नही मानता। दरअसल यहा एक छोटा एनीकट ही काफी था। आपके मित्र दिनेश का आगह था। यहा बनेगा तो बडा बाध ही बनेगा। काफी मेहनत की प्रोजेक्ट पर। हम भी मजबूरी मे हा कह बेठे।"

"सर। म अब भी पूरे विश्वास से कहता हू, यह बाध पूरा भरेगा ही। मेरा मन ओर मरी आत्मा गवाही दे रही है।"

"ठीक है पूरा भरवाइए। मगर ओटे के लेवल के ऊपर जाने के बाद। वना कितनी विनाश लोला हो जाएगी— भगवान ही मालिक है। अब आप ही जान सुधाकर जी। यह बाध आपके हवाले। इसकी रक्षा का भार भी आपके ऊपर।"

"अरे दिनेश जी! थोडा गज लेफ्ट मे रखवाइए। हा हा। बस ठीक है। ठीक है। नैक्स्ट । बस लास्ट वन रीडिग मोर इन द एड। ओ के पैकअप।"

भू-मापन का पुनीत कार्य सपूर्ण हुआ। सब लोग ऊपर चौकी पर आए। नाश्ता लग गया चाय बन गई।

सुधाकर जी। नो डाउट,' साहब ने चाय पीते हुए कहा—"आपने अपना

पूरा एफीशिएसी से काम करवाया है अब लास्ट प्रीकॉशन बहुत जरूरी है।"

"आप बताइए सर। जो भी सावधानिया बरतनी हं।" सुधाकर बोला— "हम काम मे लेगे।"

"दखिए टू बी वेरी फ्रैंक, बहुत साफ और सीधी बात हे— कद्रीय सरकार क आदशानुसार जुलाई म पहली अच्छी बुवाई लायक बरसात होते ही काम बद हा जाएगा। सेफ्टीमजर क लिए पीछे से पन्द्रह मीटर छोड दीजिए। पाच मीटर आगे से छाड़ दाजिए और बीच के पारशन का मिट्टी से भरत जाइए। मिट्टी ऊपर ही ऊपर चढाते जाइए जब तक हम अड़तास दस क लेवल तक नही पहुच जात। क्योकि अड़तास पर आत ही पानी ओटे स बहना शुरू हो जाएगा। अड़तीस दम इज आवर आउट ऑफ डजर पॉइट खतर से परे का निशान। और अगर हम किसी कारण इस लक्ष्य तक नहीं पहुच पाए और बरसात आ गई बाध पूरा भर गया ता "

सुधाकर ध्यान स सुन रहा था ता पर आते ही अधिशासी अभियता की वाणी का ब्रक लगता देख, उसने नजर उठाकर उन्ह देखा। अधूरा वाक्य छोड़कर अधिशासी अभियता आगे बोल— "साचना भी पाप है। डर लगता है कल्पना करके। फूट जाएगा बाध। टूट जाएग आपके सबके विश्वास। टूट जाएगी आस्था। लाखा रुपयो क साथ आप सबका श्रम पल म बेभाव बह जाएगा। गाव और मवशिया का क्या हागा ? नही सोचना ही अच्छा है।"

कना बा बाध क डाउन स्ट्रीम की लाइनिग डलवाकर, लेवल होने के बाद बचा हुई मिट्टी ऊपर डलवा रह हं।

कना बा सुधाकर को इशारा कर गए हैं— "आज आपके लिए साबुत बंगन और प्याज की सब्जी लाया हू, लच साथ करगे।"

आज शाम को गाव मे मृत्यु-भाज था।

यह भोज उसी हीरा बा की मृत्यु का था जा कभी इस बाध पर भी काम कर चुका था।

वह एक दिन ठाकुर रामसिह के खेत पर कुए की खुदाई कर रहा था। अदर कुए म यह जो पत्थर ताड़ रहा था उन्हे टोकरी म भरकर वापस खाली टोकरी आन का इतजार कर रहा था। अचानक रस्सा टूटा। पत्थरो से भरी टाकरी हीरा के सिर पर गिरी। उसका वही प्राणात हा गया।

हीरा का तरह साल का बटा बाध पर काम करने आता था।

वही सबको निमत्रण दे गया था।

माल पुए तो सुधाकर का नही खान थे मगर शोक प्रकट करने तो जाना ही था। फिर उसे इन खरवड़ चदाणा राजपूतो का मृत्यु भोज कैसा होता है यह देखना भी था।

बाध का सुपरवाइजर स्टाफ गाव पहुचा।

गाव म सबसे ऊची हवेली पक्की रोडा बा की है। सब वही ऊपर जाकर जम

गए। रोड़ा बा प्रसन्न।

आज सबन अचानक अनायास उन पर कृपा कर दी।

दरिया बिछाईं। नमकीन की प्लेट ले आए। बिस्किट क कई पैकट खाल डाले। चाय आ गई।

स्टील की कटोरियो म गरमागरम चाय का अलग ही आनद था।

रोड़ा बा की हवेली के पीछे गाव का चौरा और चार पर बहुत बड़ा विशाल बरगद का पड़। उसस सटे आम आर महुए के घने छायादार पेड़।

दूर दराज के गावा स लागो की भीड़ की भीड़ आती जा रही थी। लोग आ-आ कर पेड़ो की छाया मे लबी-लबी कतारा म बैठत जा रह थ। एक तरफ पुरुष दूसरी तरफ महिलाए। पुरुषो के सफेद धोती-कुर्ता जिसे जाबो या अगरखी भी कहते हैं। सर पर काला बुनकी का सफेद फेटा। बच्चे हाफ पैंट कमीज में। महिलाओं के काले छींट के घाघरे पर लाल छाट वाली लूगड़ी या डार्क मैरून कलर की ओढनी। घाघरे स्कर्टनुमा ऊच-ऊचे क्याकि इन्ह ही पहनकर उनका खतों म निदाई गुड़ाई और पाणत करनी पड़ती है सा मिट्टी-पानी स खराब नहीं हो। घाघरे का घेर अस्सी कली का। घुमावदार घाघरा अलग ही छटा दता है। दूर से हवेली के ऊपर से देखने पर ऐसा लग रहा था जैसे बड़े-बड़े लाल फूल बिखरे हुए हो।

देखते देखते चार-पाच हजार व्यक्तिया का जमावड़ा हो गया। चौक के बीचा-बीच एक घेरे म पत्तल बिछा दी गईं। अब उन पर गाव के लोग रसोईघर से माल पुए ला-लाकर ढेर करने लगे। ढेर इतना बडा हो गया जैसे मालपुओ का छोटा टीला उग आया हो।

पिछली रात से ही माल पुए बनने लगे थे, तब जाकर ये बन पाए।

पच लोग इकट्ठे हुए। निरख निकाली जाने लगी। निरख का अर्थ निरीक्षण से है। निरीक्षण से यह पता लगाया जाता है कि कुल आदमी-औरते बच्चे कितने हैं ? उस अनुपात मे माल पुए कितने मण आटे के हैं। प्रति व्यक्ति कितना हिस्सा आएगा।

पचा ने निर्णय किया— दूध पीने वाले बच्चे के एक पैदल चलने वाले बच्चे के दो किशोर और बड़े पुरुषो-स्त्रिया के चार-चार।

पगत मे आगे-आगे लोग पत्तल रखते जा रहे थे। पीछे पचा के निर्णय अनुसार माल पुए परोसने वाले माल पुए रखते जा रहे थे।

जिन-जिन लोगो को मालपुए बट गए वे अपने-अपने कपड़े-हस्थाड़े— थैली मे बाधकर उठते गए। अपने-अपने गाव रवाना होने लगे।

जिस तरह भीड़ बढ़ी उसी तेजी से घटने लगी। अगर माल पुए कम हो भीड़ बढ जाए तो मालपुओ का अनुपात घट जाता है यही है यहा मृत्युभोज का नियम।

सुधाकर लौट आया था। अन्य सभी भी लौट चुके थे।

आज हाजरी काफी कम थी।

कारण पूछा तो लकमा ने जवाब दिया—"होकम आज खरवड़ चदाणा रे नुगतो है।"

"ये नुगतो क्या होता है रे ?" सुधाकर ने पूछा।

"होकम करियावर। नही समझे ? मृत्युभोज।"

"अच्छा-अच्छा, जो कुए म काम करते मरा था हीरा ? उसका ही मृत्यु-भाज है ?"

"हा होकम। आप जल्दी छुट्टी नहा दा तो ? इसलिए लोग सुबह से ही मालपुए खाने के नाम पर गायब हैं।"

"साहब होकम, आज नुगता म जाणो है। जरा-सी जल्दी छुट्टी छावेगा।" वह हाथ जोड़कर खड़ा हो गया तव तक दूसरा आ गया, फिर तीसरा।

सब सुधाकर का चेहरा देख रहे थे। आज उन्हे लगा कि उनका लोकनायक ही उनके बीच आ खड़ा हो गया है।

"ठीक है चले जाना। मगर तुम लोग मृत्यु-भोज खाना बन्द क्या नहीं कर देते ?"

एक ने उत्तर दिया—"सब खाते हैं। हम भी खाते हैं होकम। जातरो नियम है, होकम।"

"तोड़ क्या नहीं देते ऐसे सत्यानाशी नियम को। एक कुए म गिरता है तो क्या तुम सब भी गिरोगे ? तुम भेड़ नही हो, आदमी हो। अपना भला-बुरा खुद सोचो।"

"तुम माल पुए खाओगे बस एक दिन और उस गरीब की रोटिया छीन लोगे जिदगी-भर की।" सुधाकर ने समझाया—"मरने वाले के दु ख से उसके घर वाले पहले ही दु खी हैं और अब तुम माल पुए खाकर उन्हे कर्ज मे डुबोकर और दु खी करोगे। यही है तुम्हारी जाति का नियम ? मरे को और मारना।"

"बाबूजी यह तो कुछ भी नही है।" लकमा ने कहा—"करने वाले सौ-सौ मण के माल पुए कराते हैं। बारह-बारह गाव जीमने आते हैं।"

"माना कि लोग ऐसा करते हैं।" सुधाकर का उत्तर था—"अपनी इज्जत की खातिर करते हैं। कोई ज्यादा करक इज्जत बढ़ाने के चक्कर मे करता है। किसी की इज्जत नही चली जाए, इसलिए करता है।"

सुधाकर ने लकमा को ही सबोधित किया, पर कहा सबको ही था।

"क्या फायदा है झूठी शान-शौकत मे ? तुम्हे क्या पता चलता है कि उसने बनिये से पच्चीस हजार कर्ज पर लेकर नुगता किया।"

"क्या पता चलता है कि उसने अपना खेत बेच दिया नुगते के खातिर और सारी उमर मजदूरी करनी पड़ेगी ?"

'क्या पता चलता है कि घर गिरवी रखकर माल पुए खिलाए हैं ?"

"क्या उस दिन इज्जत बढ़ जाती है उसकी ? फिर कौन-सी इज्जत के लिए

सव कर रह हा ? जो है ही नहीं ? जिसका कोइ अर्थ नहीं ? जिसके खातिर सारा जिदगी दु खा म काटना पड़।"

"मगर पहल कौन कर हाक्म ?" एक मजदूर का प्रश्न था।

"गाव का सबस बड़ा। सबसे धना ?"

"मगर धनी व्यक्ति के पास पैसे की कहा कमी है ? वह ता करता ही धन क प्रदर्शन क लिए है। राना ता गरीब का है।"

"उस गरीब की पहल से ता लोग यही कहगे— घर म खाने को दाण भा नहीं थे। बाप का नुगता कहा से करता ? ज्यादा-स-ज्यादा समाज क किसा काम के समय ताना दग— बाप का नुगता ता कर नहा सका यहा राय दे रहा है ?"

"किसी को ता पहल करनी होगा। कोई ता गाधी बना। बिना सत्याग्रह क सुधार होने से रहा।" सुधाकर न कहा— "बनिया तुम्हार खेत-घर गिरवी रख-रखकर, तुम्हारी पसीन की कमाई ब्याज म ही हड़पता रहगा।"

"बाप का कर्ज उतरगा नही, तब तक मा का नुगता आ जाएगा। इस तरह ता तुम जीते हुए भी मरे समान हा।"

"मगर जाति, पचायत ?"

"तुम्हारी पचायत ही अपना कानून बनाकर बद करवा सकती है। पच फैसले को कौन टालेगा ?"

लकमा न कहा— "आपका फरमाना सही है होकम।" मगर पचायत तय करे तब न ?"

इस तरह बाप-दादाओ का कर्ज चुकाते-चुकाते एक दिन खुद मर जाओगे। बेटा को वसीयत मे द जाओगे यह सनातन कर्ज। सनातन गरीबी। केवल एक दिन चार माल पुए खाकर, क्या खरीद रह हो मौत ?" सुधाकर को गुस्सा था समाज के नियम पर। इसी कारण बिफर पडा— "बद करो इसे। बद करो। न जीमने जाओ न जिमाने की जिम्मदारा। खाया नहा तो खिलाने की कहा जरूरत ?"

तब तक फिर एक मजदूर आया— "साहब हाकम। शाम को जरा जल्दी छुट्टी चाहिए। एक मौके पर जाना है ?"

"छुट्टी ता मिल जाएगी। परतु यह मौका किसी और की मौत का नहा है। तुम्हारी ही मौत का मौका है। यह सीधी-सी बात भी तुम्हारी समझ म क्यो नहीं आती ?"

"साब होकम।" फिर एक कुली आई— ' आज जरा जल्दी ।"

"हा हा सब मालूम है। पन्ना का बाप मरा है। कुए मे सिर पर पत्थर गिरन से अकाल मौत मरा है। उसकी मौत के माल पुए खाना चाहते हो ? केशी आती है काम पर।'

"आज उसके लूगडे का रग लाल स काला हो गया है उस खुशी मे माल पुए खाना है ? उस केशी की चूड़िया टूट गइ हैं। उसकी बिंदिया पुछ गई है,

उसका सिदूर लुट गया है, उसके मालपुए खाना है ? पन्ना आज बे-बाप का अनाथ हो गया है उसकी दावत खाना है ? पन्ना सुबह औजार जमा कराने आया था। अब काम पर नही आएगा। सबसे बड़ा अब घर मे वही है। सफेद पगडी वही बाधेगा, उस खुशी मे शरीक होना निहायत जरूरी है क्यो ?''

सुधाकर चाह रहा था कि इनको सहजता से सुधारे पर अधविश्वासो मे जकड़े अपनी पुरखा से चली आ रही परपराओ से कोई लड़ना नही चाहता— तभी सुधाकर न निर्णय कर लिया—''कही तुम्हार पहुचने से पहले माल पुए खतम नही हो जाए, इसलिए जल्दी छुट्टी चाहिए तुम्हे ? भाग जाओ सब। कोई जल्दी छुट्टी नही मिलगी।''

उसन केशा बा को सबाधित किया—''केशा बा कह दो इन सबको माल पुए खान के नाम पर कभी कोई जल्दी छुट्टी नही मागे। समझा देना सभी को कोई भा गया तो उस दिन की गैरहाजिरी।''

''बड़ो होकम।'' केशा हाथ जोड़कर बोला।

सुधाकर तमतमाता हुआ अदर चला गया।

भोले अनपढ गाव के लोग समझ ही नही पा रहे थ कि माल पुए खाने के नाम पर बाबूजी चिढ़ क्या जात ह ? छुट्टी क्यो नही देते ? माल पुए ही तो खाने जा रह हैं। किसी की चोरी तो नहीं कर रहे हैं ?

कहा समझेगे य बात। मृत्युभाज कितनी विनाश करने वाली परपरा है। कितना मीठा जहर है। कितनी खतरनाक कु-प्रथा है। न जाने कौन मसीहा बद कराएगा यह मृत्युभोज ? महाभोज ? कब बद हागे ये सो-सौ डेढ-डेढ सौ मण के माल पुए ? गाव मे चाहे स्कूल न हा अस्पताल न हो गरीब को रोटी न हो, परतु सौ मण के माल पुए अवश्य बनगे।

हद तो तब हो जाती है जब दूसरे दिन हाजरी के समय बाबूजी को खुश करन के लिए ले आएगे ढेर सारे माल पुए।

''मैं तुम लोगो का पचास बार कह चुका हू कि मैं मृत्युभोज नही खाता।'' सुधाकर ने कई बार कहा है—''मत लाओ माल पुए मेरे लिए। फिर क्या ले आते हो ?''

''आप नही खाए तो क्या ? स्टाफ म और लोग भी तो ह ? वे तो खाएगे होकम।''

ठीक बात है— सुधाकर का सिद्धात सबका सिद्धात तो नही हो सकता। मीठा खाने को मिल रहा है किस मतलब से बना, उससे किसी को क्या लेना-देना ? खाना-पीना ही तो आकर्षित करता है उसके पीछे कारण और आदमी की मजबूरी पर ध्यान नही जाता न।

मृत्युभोज देखकर गाव मे सबसे राम-राम करते मिलकर आते-आते देर हो गई। गगापुरी को भी आज गाव म होन वाले मृत्युभोज मे जाना था। जल्दी-जल्दी

अधपका खाना बनाकर भाग छूटा।

सुधाकर ने व स्टाफ के सभी लोगो ने खाना खाया। खाने के घंटे-भर बाद सुधाकर का जी मचलाने लगा। उल्टियां होनी शुरू हो गई। चार-पाच उलटियां होने पर जगदीश घबराया—"साहब, गागुदा से डाक्टर बुलाऊ ?"

"नहीं रहने दो। अब कुछ नहीं होगा। आज रोटियां कच्ची थीं। नाबू हो तो शिकजी बनाकर ले आओ।"

सुधाकर को शिकजी दी। दोनो कुछ देर कल की प्लानिंग पर चर्चा करते रहे।

देखते-देखते आसमान काला हो गया। तेज हवाओ के अंधड़ चलने लगे। धीरे-धीरे बूदा-बादी होने लगी।

जगदीश ने कहा—"सर, अदर चलिए। बिस्तर अदर लगवा देता हू।"

"थोड़ी देर रुको। ये बूंदे अच्छी लग रही हैं। सावन की बदली है, छिड़काव करके निकल जाएगी।"

"सर आसमान की रगत और हवाओ के रुख अच्छे आसार नही बता रहे हैं।"

देवा ने कहा—"साहब होकम, अदर ही पधार जाओ। पछमती बादली या तो बरसे नहीं और बरसनी शुरू हो जाए तो रुके नहीं।"

जगदीश और देवा के अपने तर्क सही थे। लोक चारण भड्डरी घाघ ने सदियो पहले अपने और लोकानुभवो को अपार देन इन लोगो के पुरखो-दर-पुरखो तक को दे दी है। वही लोकानुभव आज काम आ रहा है।

केशा बा ने अपना तर्क दिया—

"तीतर वरणी बादली, विधवा काजल रेख।

या बरसे, वा घर करे इण मे मीन न मेख।।"

तीतर के रग समान बादली और नयनो मे काजल डालने वाली विधवा का ढग देखकर यह तय है कि ऐसी औरत कहा घर बसाएगी ही और तीतर के रग वाली बादली जोरदार बरसेगी ही।"

सुधाकर को बरसात आने के नये सकेत और प्रतीक सुनकर अच्छा लगा। देखते-देखते छीटो की रफ्तार बढी। विवश हो अदर आना ही पड़ा।

देखते-देखते बादलो ने उग्र रूप धारण किया और तेज गर्जना के साथ बरसना शुरू।

अचानक केशा बा को ध्यान आया। केशा बा बोले—"साब होकम कुआ इजन रो कई वेगा ? आज निकलवाई ने ऊपर नी लाया ?"

"कैसे लाते केशा बा ? सब जने तो गाव के मृत्युभोज मे चले गए थे। चौकी पर तो अकेले आप ही रह गए थे।"

केशा बा घबराए—"साब होकम भूल भारी पड़ गई। अबे कई वेगा ?"

"केशा बा आप ही बताइए इस अधेरी रात घनघोर बारिश मे कर हो क्या

सकते है ?"

"पर अब ?"

"इतनी देर में तो इजन डूब भी गया होगा, जो होगा कल ही देखेंगे।"

× × ×

पानी बरसना शुरू हुआ तो रुकने का नाम ही न ले। इतनी तेज बरसात सुधाकर न अपने जीवन में कभी नहीं देखी। गुस्सा खा-खाकर तड़तड़ा कर पानी बरस रहा था। मानसून जैसे पागल हो गया हो। आज सुबह ही तो अधिशासी अभियन्ता साहब ने कहा था—"हमने बेकार ही इतना बड़ा बाध बना लिया। यह तो भर ही नहीं सकता।"

जैसे मानसून ने सब सुना हो। इन्द्र भगवान को भला कोई एक अदना-सा सिंचाई विभाग का अधिकारी चेलैंज करे। यह भला कैसे बर्दाश्त होता ? सुबह आठ बजे कहा और इधर ठीक रात्रि के आठ बजे पानी बरसना शुरू। मात्र बारह घंटे में ही। दूसरा सूरज भी नहीं निकलने दिया।

लगा कि मानसून जैसे राह भटक गया हो—"हे भगवान। यह क्या हो रहा है ? इतना पानी यह बेचारा छ माह की कच्ची उम्र का ओबरा बाध। कैसे झेल पाएगा यह बोझ ?"

ओबरेश्वर महादेव अब तू ही रक्षक है इस बाध का। ओबरा बाध के नक्षत्रों में अभी और क्या-क्या देखना है। सुधाकर की अर्ज नि शब्द थी—'हे देवी मा! बाध की तू ही लाज रखना। गाव को डूबने स बचाना।'

पानी एक बार बरसना शुरू हुआ तो रुकने का नाम ही नहीं। राजधानी या शताब्दी ट्रेनें तो दिल्ली से कलकत्ता के बीच चार जगह रुकती भी हैं, लेकिन पता नहीं इन्द्र किसके साथ कम्पटीशन करना है ? जैसे नहां रुकने की कसम ही खा ली हो।

रात के बारह बजे होंगे। एक छाते मे सुधाकर और देवा बाहर आए। टकी के पास खड़े होकर कैंप के ठेकेदार देवीसिह को आवाज दी—

"देवीसिह । देवीसिह ।"

बरसात की आवाज मे उनकी आवाजे वहा तक मुश्किल से पहुच रही थीं।

"देवा, नीचे पाल पर चलते हैं। जहा तक आगे बढ़ सकेंगे बढ़ते रहेंगे।"

"साब होकम, खतरा मोल मत लो। पाल पर दिन-भर मे डाली गई मिट्टी का ढेर पड़ा है।" देवा ने सावधान किया—"उस मिट्टी की आज कुटाई भी तो नहीं हो पाई।"

"कोशिश करने में क्या हर्ज है, रे ?" सुधाकर बोला।

"साब, मुझे डर लग रहा है। य कोशिश तो सीधी हमे मौत के मुह में ले जाएगी।"

"तू नहीं आता है ता मत आ। मैं अकेला ही जाता हू।"

"साब, दवला किसी भी कीमत पर आपको अकेला नही जाने देगा।"

"जब मरना ही है तो दोना साथ-साथ ।"

एक-एक कदम उठाना भारी पड़ रहा था। सीढ़िया खत्म होते ही चार कदम बढे हागे कि काली चिकनी मिट्टी पूरी दल-दल बन चुकी थी, उसम सुधाकर का दाहिना पाव घुटनो तक कीचड़ म धस गया।

"देवला आगे मत बढना" सुधाकर चिल्लाया—"मेरा एक पाव कीचड म धसता जा रहा है।"

"साब हाकम, हिम्मत रख। मैं लाठी बढा रहा हू। धीरे-धीरे इसके सहार मेरी तरफ बढिए। पूरा जोर एक साथ मत डालना। नही तो हम दोना ही फस जाएँगे। किसी को पता भी नही चलगा कि हम यहा हैं। हमारी समाधि यहा कीचड़ म ही बन जाएगी। हम चौकी मे किसी को कहकर भी तो नही आए।"

"हा, देवा। लाठी कसकर पकड़े रखना। तू पीछे जितना खिसक सके, खिसक ले। सीढ़ियो की दीवार को कसकर पकड़े रखना एक हाथ से। मैं दूसरे पाव पर जोर लगाता हू। तू लकडी को पूरे जोर से खीचना।"

"ठीक है होकम। में लाठी को खीच रहा हू। आप कसके पकड़ना।"

जैसे ही देवा ने जोर लगाया लाठी फिसलकर देवा के हाथ मे। देखते-देखते सुधाकर का दूसरा पाव भी अदर।

"साब ? साब ? ये क्या किया साब ? लाठी छोड़ दी ? आप कहा हैं साब ?"

"दवा मैं कीचड़ म धस रहा हू। लाठी छोडी नही छूट गई।"

"हिम्मत नही हारे साब। में लाठी फिर बढ़ा रहा हू। इस बार आप दोनो हाथा से कसक पकड़। मैं दोना हाथा स कसक खाचता हू।"

दवा न जोर लगाया। इस बार तरकीब काम कर गई। देवा का आदिवासी जोर। दम लगाकर खीचा देवा ने। कीचड़ मे से फिसलते हुए ऊपर आने लगा सुधाकर। धीरे-धीरे कठोर मिट्टी पर आते ही जान म जान आई। एक क्षण की भी देर होती ता शायद कीचड म समा जाता सुधाकर।

सीढियो पर बैठकर दम लिया दोना ने। देवा ने जार-जार स केशा परभू, जगदीश तीनो को आवाज दी। केशा बा परभू और जगदीश भागे-भागे आए। वे अधेरे म कुछ भी समय नही पाए कि माजरा क्या है ?

अधेरे म ही देवा ने कहा—"आखिरी सीढी पर बाबूजी बैठे हैं उन्हे उठाकर ऊपर ले जाना हे।"

"बाबूजा का हुआ क्या है ?" जगदीश ने पूछा।

"सब ऊपर चलकर पूछना।"

अधेरे म सबने टटालकर सुधाकर को उठाया। ऊपर चौकी पर लाए। एक ने चूल्हा जलाया। सुधाकर को आग के पास बैठाया। पावा से कीचड़ साफ किया।

इतनी देर तक पाव कीचड़ मे फसे रहने से ठडे टाप हो गए थे।
सुधाकर ने उन्हे बताया—"पाव सुन्न पड़ गए हैं। उनमे जैसे जान ही नही रहा।"
जगदीश और केशा बा सुधाकर के दोना पावा मे तल गरम करक मालिश करने लगे। आग और मालिश से पाव चैतन्य हुए। परभू ने चाय बना दी। गरमा-गरम चाय पीने के बाद सुधाकर स्वस्थ हुआ।
"केशा बा, आज दवा नहीं होता ता तुम्हारे बाबूजी गए थे।"
"साव, होकम। आप दोई अकला जावा रो मूरख मतो क्यू कीधो ? म्हाने हुकम करता। अबै आप आराम करा।" केशा बा ने कहा।
"आराम कहा केशा बा ? ये बरसान वाला कहा आराम कर रहा है ? हम सो गए और बाध फूट गया तो ?" सुधाकर ने अंदेशा जाहिर किया।
"सर आपने किया तो गलत ही। मुझे परभू को केशा बा को सबको उठा देते।"
"तुम लोग दिन-भर के थके-हारे सो रहे थे। सोचा क्या परेशान करू ?"
"क्या आप थके हुए न थे ? खैर अब जो भी करना है हमे आदेश दे।" जगदीश ने कहा।
"कैप्टन का काम है, कमान को आदेश देना।' केशा बा ने निवेदन किया।
"आप लोग देवीसिह को आवाज दो। सैल्यूस के पास टॉर्च से देखे कि पानी की क्या स्थिति है ?" सुधाकर ने आदेश दिया—"उस स्थिति से ही हम बाध की भराव क्षमता का पता लगेगा।"
"ठीक है सर! आप आग के पास आराम करे।" जगदाश ने सुझाव दिया।
पावो को सकते रहे।"
"देवीसिह देवीसिह देवीसिह " सबने आवाज लगाई।
"क्या है ?" देवीसिह ने उत्तर दिया।
"सैल्यूस के पास टॉर्च जलाकर देखो" जगदीश ने कहा—"पानी कहा तक आया है ?"
"पानी सैल्यूस म घुसना शुरू हो गया है ?"
"ठीक है तुम हर आधे-आधे घटे मे पानी देखकर रिपोर्ट करना "
"ठीक है "
जगदाश ने भी लौटकर रिपोर्ट दी सुधाकर को।
"सर। दवीसिह का कहना है कि पानी सैल्यूस म घुस रहा है।"
"ठीक है जगदीश। तुम्हे याद है जिस दिन हमने सैल्यूस का किवाड़ लगावर ट्राई किया था!" सुधाकर ने प्रश्न किया।
"हा सर याद है। मैने कहा था इसे लगा ही रहने दे।"
"अगर उस दिन मैने तुम्हारी बात मान ली होती तो ?"

"बड़ा अनर्थ हो जाता, सर। बड़ो का अनुभव ही तो काम आता है सर।"

"हम युवाओ को अभी बहुत कुछ सीखना है आपकी पीढ़ी से।"

"सही अर्थों मे अगर युवा पीढ़ी सीखे तो उन्हे बहुत लाभ होगा। एक तो उनका आज के वैज्ञानिक युग का अनुभव, दूसरा बुजुर्ग पीढ़ी का अनुभव दोनो मिलकर कितना कुछ कर सकते हैं। परतु हो रहा है उल्टा। युवा आज कहेंगे— आप चुप रहिए। आपके दिन लद गए। आपके दकियानूसी विचार आज काम के नहीं।"

"सर बाहर जाता हू। शायद देवीसिह की आवाज है।"

"ज्यादा दूर मत जाना। सीढियो से नीचे मत उतरना" सुधाकर ने छाता बढ़ाया— "छाता लेकर जाओ। परभू, तू भी साथ जा। कही अधेरे मे पाव फिसल गया तो ? सुनो ओबरेश्वर महादेव मन्दिर से आगे मत बढ़ना।"

"आप निश्चित रह सर। हमे कुछ नहीं होगा। जब तक आप जैसे हमारे सरपरस्त हैं।"

"बाबूजी । जगदीश । परभू ।"

दूर से देवासिह की आवाज आ रही थी।

"हा बोलो देवीसिह ।"

"सैल्यूस आधा डूब गया है ।"

"ठीक है । आधे घटे बाद फिर बताना ।"

"आधा सैल्यूस डूब जाने का मतलब है सैल्यूस मे तीन फीट का पानी बह रहा है। सैल्यूस है पूरे छ फीट की हाइट का। मैं उसमे आसानी से चलता हुआ गया था। सैल्यूस का गेट है दो फीट लबा, एक फीट चौड़ा। अदाज लगाओ कितनी रफ्तार से पानी निकल रहा होगा।"

"सर, पानी का तेजी से निकलना ही बाध की सुरक्षा है।"

"हा य तुम्हारा कहना तो सही है, जगदीश। मगर आउट गोइग वाटर से इनकमिग वाटर अधिक है ये क्या भूल रहे हो ? आबरा बाध का कैचमेंट एरिया कितना है ?"

"सर उस दिन अधिशासी अभियता साहब बता रहे थे, पाच किलोमीटर से अधिक ही है।"

"फिर पानी बरसने की रफ्तार और तेज ढलवा बहाव पानी को सीधा बाध में पहुचा रहे हैं।"

"हुजूर, मैंने पहले ही कहा था इसे कौन से मेड़माल जोतणी है।" केशा बा बीच मे बोले।

"हा केशा बा!" सुधाकर को वह कथन याद आए— "आपका कहना एकदम सही था। इसे किसी मेड़माल की जरूरत नहीं। मगर क्या पूरी बरसात का पानी आज एक ही दिन में बरस जाएगा ?"

"जरा भी तो रफ्तार कम नहीं हुई जगदीश ?"

"साब हाकम, म्हारी ऊम्मर सित्तर ऊपर वेगा। मैं भी पैली दाण अतरी बरसात देखी।" केशा बा ने अपना अनुभव सुनाया।

"हे भगवान। लाज रखना। लाखा रुपया की लागत। छ माह की मेहनत। कैस बचेगा ओबरा बाध।" सुधाकर ने मन-ही-मन ओबरेश्वर महादेव को नमन किया और कहा—"बचाना ही होगा। ओबरेश्वर बचाना ही होगा, हर हालत मे बचाना होगा। कितन लोगा की आस्था और निष्ठा का प्रतीक है यह। नही टूटेगा, हर्गिज नही टूटेगा यह।"

"बाबूजी किस चिता मे खो गए आप।" देवा ने सुझाव दिया—"सोने की कोशिश कर।"

"ऐसे म नीद कैसे आएगी देवला। चिता तो बस बाध को फूटने से बचान की है रे।"

"पर सर, ऐसे मे कर तो क्या करे ?"

सुधाकर को भी वह सब याद आ गया कि कनिष्ठ अभियता साहब को कितनी बार कहा कि कुछ टार्चें और पेट्रोमेक्स भिजवा दे। पर, हमारी सुनता कौन है ?

टार्चें आ गईं तो सेल गायब।

पेट्रोमेक्स भेज तो घासलेट नदारद।

एक-एक चीज का टडर होगा।

ऑर्डर जाएगा और जब तक सामान आएगा। उसकी उपयोगिता समाप्त हो जाएगी।

फिर सुधाकर ने स्वय ही सोचा—"वे भी क्या करे ? सरकारी नियमो से बधे हैं। उनकी विवशताए अपने ढग की हैं।"

"एक मिनिट सोचिए सर, अगर देवीसिह के पास भी टार्च नही होती तो हमे पानी के भराव का क्या अन्दाज हाता ?" जगदीश ने प्रश्न किया।

"केशा बा बाबूजी जगदीश जी "

देवीसिह की आवाजे थी।

"हा हा । बोलो देवीसिह ।"

"सैल्यूस डूब गया है ।"

"सैल्यूस डूब गया है ।"

"सर, बुरी खबर है।

"पानी बहुत तेजी से बढ रहा है।"

"क्या ?"

"सैल्यूस डूब गया है।" जगदीश घबराता हुआ अदर आने लगा पर सुधाकर बाहर आ चुका था।

"हा मैंने सब सुन लिया है।" सुधाकर ने शाति से उत्तर दिया।

"आप बाहर क्यो आए हुजूर ? थोड़ा तो कहा माने होते आज।" केशा बा

ने मिन्नत म कहा—"अभी थोड़ा आराम कर लगे ता कल मार दिन आराम स काम कर सकग।"

"अगर ओवरा बाध सलामत रह गया तो।" सुधाकर ने हताशा म कहा—"फिर तो सारी उमर आराम ही करना है। कहीं कुछ हो गया, तो जानते हैं कल क्या होगा ?" सुधाकर खड़ा-खड़ा यही सोच रहा था—"सारा गाव पूरा गोगुदा उदयपुर कहेगा कि सुधाकर शर्मा बाध की चौकी पर सारा रात आराम स सात रहे और बाध फूट गया। अगर वे लोग जरा भी अक्ल से काम लेते तो बाध का फूटने स बचाया जा सकता था।"

सारे के सारे अखबार सुर्खियों स भरे होग।

'सुधाकर शर्मा की लापरवाही स बाध फूटा।"

"लाखो की जान-माल के नुकसान का जिम्मेदार सुधाकर शर्मा।"

"एक जाच कमीशन ओवरा बाध की क्षति का आकलन कर और सुधाकर को कड़ से कड़ा दड दे।"

"सैकड़ो लोगो की मौत का कारण सुधाकर शर्मा।"

"सुधाकर शर्मा को फासी की सजा मिलनी चाहिए।"

"मुझे कुछ करना होगा।" सुधाकर ने निर्णायक कदम उठाने का निश्चय कर आगे बढ़ने का उपक्रम किया ही था कि देवा, केशा और जगदीश ने सुधाकर का जकड़ लिया।

"नही, नही सर। हम सब आपके साथ हैं। हमारे जीते जी ओवरा पर आच नही आने देगे।"

"मेरे साथ-साथ तुम लोग भी बच पाओगे बदनामी स। अभी हम यहा कुल कितने लोग हैं ?"

"सर आप, मैं, केशाबा, देवाजी, परभू, सरकारी रोलर चलाने वाले मुनव्वर सहित छ तथा उत्तरी छोर पर ठेकेदार कैम्प म देवासिंह और चाचा मेघराज कुल आठ।"

"आठ तो हम आठ सौ के बराबर हैं। अब बाध को नही फूटने देगे।"

सुधाकर एक के बाद एक तेजी से निर्णय लेता जा रहा है। सभी लोग हक्के-बक्के थे। पर उनका भी दृढ़ निश्चय था कि बाबूजी को अकेले नही जाने देगे। मरेगे तो साथ और जिएगे तो साथ।

सुधाकर ने सभी उपस्थित लोगो पर एक निगाह डाली और निर्देश देना शुरू किया—"केशा बा औजारो मे गैंतिया फावडे और तगारिया जितनी हैं उन्हें निकाल लो। हम किसी भी क्षण जरूरत पड़ सकती है।"

"औजार सब तैयार हैं होकम" केशा ने कहा "आपके मागने की देर है।"

"हमे करना क्या है सर।" जगदीश ने पूछा—"बस आप हम डायरेक्शन दे दे।"

केशा बा बाहर निकले अपनी औजारा की कोठरी सभालने। सामने शहर जाने वाले रास्ते पर उनकी निगाह पड़ी। टार्च जलाकर काई इधर आ रहा था। प्रकाश कदम-दर-कदम आगे आता जा रहा था।

"साहब होकम, इधर काई आ रहा है। टार्च लेकर।" कशा बा ने वही से आवाज लगाई।

"इतनी रात गए दो बजे।" जगदीश ने कहा—"कौन हो सकता है ?"

"जो भा हो। हिम्मत वाला है। हमारा शुभचितक ही हागा।"

सभी का निगाह उधर ही टिक गईं।

धारे-धारे रोशना पास आती गई।

चाकी क बाहर आकर राशनी रुकी।

"सर राजेन्द्रसिह आपकी सवा म हाजिर है।"

"अर वाह! राजू तुम इतनी तूफानी रात म ? पहुचे कैस ?"

"ये मत पूछिए सर! घर स निकले एक घटा हा गया है जबकि मुश्किल से दस मिनट का रास्ता है।"

"बड़ी हिम्मत की भाई! परभू एक बार सबक लिए चाय बना। ले राजू, इधर आ। आग के पास बैठ। गरम हो ले।"

"मजा आ गया। यहा ता रतजगे का माहौल हा रहा ह। इतनी बढिया आग तापने की ता कल्पना भी नही कर सकता। कैम्प-फायर की याद ताजा हो गई।"

"राजू भैया, ये आग सर को गरम करने क लिए जलानी पडी। य तो ठीक रहा भगवान ने लाज रख ला, वर्ना ।"

"वर्ना क्या र ?"

"सबका मुह काला हो जाता।"

"हम मुह दिखाने लायक नही रहते।"

"मगर क्या ?" राजू विचलित हो उठा। "कुछ बताओ भी ?"

"देवला और साहब बाध का पानी दखने के लिए हम जगाए बिना नीचे उतर गए। टार्च भी नही। नीच पाल पर उतरते ही कमर तक कीचड मे फस गए। ज्यो-ज्या निकलन की कोशिश कर त्या-त्यो अन्दर।"

"फिर ?"

"फिर क्या। दवा की लाठी ने लाज रखी। लाठी को पकडाकर देवा ने जोर लगाया। हम सबकी किस्मत ठीक थी कि सलामत निकल आए साहब। हाथ-पाव बर्फ के समान ठड। एकदम सुन्न। फिर सब जने उठाकर ऊपर लाए। आग जलाई गरम तेल की मालिश की चाय पिलाई तब जाकर ठीक हुए।"

"कमाल है सर इतने आदमिया के होते हुए भा आपने अकेले जाने की साची कैस ?"

"जैसे तूने इस तूफानी रात म यहा तक अकेले आने की सोची ?"

तब तक परभू चाय ले आया था।

"ले चाय ले, युद्ध म हमेशा कैप्टन को आगे रहना पड़ता है रे ? फाज हमेशा उसके पीछे चलती है। पहले कैप्टन को ही शहीद होना पड़ता है। फौज को उसके बाद ही जोश आता है और युद्ध जीतती है। यकीन न हो तो इतिहास उठाकर देख ले।"

"अपना भी तो हाल सुना रे।"

"इदरजी तो खूब ही बरसे होकम।"

"नाराजगी के साथ बरसे हैं।"

"हमारी परीक्षा लेने आए हैं।"

"परीक्षा म तो सफल हो गए हैं, सर।"

"इतना पानी यो ही नही बरसता।"

"बधा फूट जाएगा, राजू।"

"हमारी आस्था है ओबरा का बधा।" राजू ने कहा—"कैसे टूटने देंगे ?"

"चलो तुम आ गए तो और अच्छा है।" सुधाकर ने उसके कधे पर हाथ रखते हुए कहा—"दो हाथ दो पाव और बढ गए अब तो।"

"आप हुकुम फरमाए।"

"जगदीश को फिर जायजा लेने भेजा है।" परभू ने अन्दर आकर कहा।

"सर पहले तो सोचा कि बरसात हमेशा की तरह घंटे-आधे घंटे के बाद बरस कर थम जाएगी। जब देखा कि य तो रुकने का नाम ही नही ल रही है तो मा को चिंता लगी। मुझे उठाया। मै भी इतनी बरसात देख हैरान था।"

"बेटा राजू! बाध पर तेरे साहब अकेले होग रे।" मा ने कहा—"कुछ भी अनहोनी घट सकती है। मैंने अपनी अब तक की उमर मे ऐसी मूसलाधार बरसात नही देखी।"

कुछ ठहरकर राजू ने कहा—"मा बोली थी कि ।"

"जी तो नही चाहता कि ऐसे मे तुझे अकेला भेजू। मगर वहा तेरे साहब को कुछ हो गया तो गरीबो का एक मसीहा चला जाएगा। जा बेटा जा। अभी उन्हें तेरी सख्त जरूरत होगी। बरसाती पहन ले। छाता—टार्च और लाठी ल ले।"

"जाता हू मा। तू चिंता मत कर उन्हें कुछ नही होगा। सैकड़ो का भला चाहने वाले की चिंता जगदम्बा ही करेगी।"

"रास्ते में पानी का क्या हाल था ?"

"हाल ? कुछ न पूछ सर बोर एरिया पूरा तालाब बना हुआ है।"

बीच म एक नाले को पार करते समय तो मरे होश गुम हो गए। सोचा बहता हुआ सीधा बूझ के तालाब म ही पहुचूगा। भला कर, भगवान लाठी और नाले के किनारे रतनजीत के पड़ की डाल ने बचा लिया। बहुत तेज बह रहा है पानी। गोगुदा से यहा तक का पूरा रास्ता पानी से भरा है। यहा तक मैं कमर-कमर तक

पानी म चल कर आ रहा हू। पानी मे बहकर आने वाले जीव जतुओ का डर अलग। चलते-चलते कही खड्डे म उतर गया तो इतनी रात मे कोई निकालने वाला भी नहीं।''

''वाकई बड़ी हिम्मत की।''

''चाय ने और आग ने चुस्त बना दिया है हमे सर।'' राजू ने कहा—''अब जरा अगले प्लान की डिटेल समझा दे तो अगले एक्शन के लिए तैयार रहे।''

''मैं इन लोगो को वही समझा रहा था। ऐन उसी समय अधेरे मे तुम्हारी टॉर्च की रोशनी दिखाई दी तो हम ठहर गए कि इतनी तूफानी मूसलाधार बरसात मे कौन सिन्दबाद जहाजी पानी म तैरता आ रहा है।''

''सब जने पास-पास आ जाओ।'' राजू ने कहा—''सर की बात का ध्यान से सुनो। हमे उसी के अनुसार अगला कदम उठाना है।''

''हमे हर आधे घंटे म बाध के भरने की रिपोर्ट उत्तरी कोने से देवीसिह दे रहा है। जैसे ही बाध के टॉप लेवल से पानी तीन फीट नीचे रहेगा, हम यहा से मार्च कर देना है। इस बार हम बाध के पीछे क रास्ते से जाएगे जहा मिट्टी की कुटाई हो चुकी है और कोई नई मिट्टी नही डाली है। वहा फिसलन तो होगी, लेकिन दलदल नही होगा। सावधानी के लिए हम सब रस्सी से एक-दूसरे से बधे हाग। ताकि कोई फिसलकर फिल्टर टॉप से गिरे नही। सबके हाथ मे लाठिया होगी।''

''हर एक के पास गती—फावड़ा—तगारी होगी।''

''अभी गैंती फावड़े से क्या होना है ?''

''ध्यान से सुनो राजू। इस बाध को टूटने से बचाने का एक ही रास्ता है। आठ फीट जमीन काटना।''

''हा, सिर्फ आठ फीट लबी और आधा फिट गहरी। हम कुल नौ जने हैं। बूढ़े चाचा साईं मेघराज को छोड़ भी द तो एक के हिस्से मे आएगी एक फीट लबी आधा फीट गहरी। आधा फीट चौड़ी।''

''यह तो बहुत आसान है। मगर है कहा ?''

''दक्षिण की तरफ ओटे से पाल बहुत नीची है। इसलिए ओटे से तो पानी जाएगा नही। अब बचा उत्तरी किनारा। अंतिम छोर पर है सैल्यूस। उससे लगी पक्की दीवाल आउटलेट नाले तक। सैल्यूस की सीध की आठ फीट जमीन हम काट दंगे तो पाल को पार करने से पहले पानी को उधर निकलने का रास्ता मिल जाएगा। एक बार जहा पानी को निकलने का रास्ता मिला कि आगे वो खुद अपना रास्ता बना लेगा।''

''वाह! क्या आइडिया है! यह तो हमने कभी सोचा ही नही।''

''इसीलिए फौज मे कप्तान की जरूरत पड़ती है श्रीमान्।''

''चलो देवीसिह से ताजा रिपोर्ट ले ले।''

तब तक देवीसिह की आवाज आई।

"साहब बाध साढ़े तीन फीट खाता है। सावधान ।"

"ठीक है तुम बराबर निगाह रखना। अब मुझे हर पद्रह मिनट म रिपोर्ट चाहिए। "

' ठीक है सर । मिल जाएगी ।"

"अब क्या होगा राजू ? केवल साढ़े तान फीट बाकी। वैस ता अब धारे-धारे ही बढ़गा। क्योकि पानी ज्या-ज्या ऊपर बढ़ेगा। फलाव बढ़ता जाएगा। इसलिए अब दर ता लगगी भरन म। चार बज ह। दा घंटे और हमारा परीक्षा की घडी है। फिर ता दिन उग आएगा। फिर काई चिता नहा है। हा, एक चिता सबसे बड़ी है राजू ?"

"कौन सी सर ?"

"मान ला एक मिनट क लिए कि अब पानी ऊपर नही बढ़े। जहा है वहा ही रहे तो भी सैल्यूस से जो पानी बह रहा है वहा हमने अतिम सिर पर राइट केनाल के लिए मुह खुला रखा है। वहा से आने वाला पानी तिरछा हाकर फिल्टर टॉप की मिट्टी का काट रहा हागा। इस अचिंतित अचानक आने वाली बरसात स उसको बद करने की बात किसी के दिमाग म नही आई ?"

"य तो वास्तव म चिता की ही बात है सर ?"

"दिन उगत ही हम सबसे पहले उसी जगह का देखना है। हो सकता है वहा बहुत बड़ा गड्ढा हो गया हागा।"

"हम सबसे पहले उस गड्ढे को भरना हागा तथा सैल्यूस स राइट कनाल वाल पाना का राकना होगा।"

"साब होकम सौ-दो-सो खाली कट्टा रती स भरवाकर तैयार करवा कर गड्ढे मे भरवा दगे।" केशा बा ने राय दी।

"हा, केशा बा। सही साचा आपन। ज्या-ज्या जितन लाग आते जाए आपका काम रेत के कट्टे भरवाने का है आज।"

"देवा, केशा बा जगदाश, परभू, तुम चारा जन थाडी झपकी मार लो। रात-भर के जगे हो।" सुधाकर ने निर्णय सुना दिया—"जरूरत होगी तो म उठा दूगा।"

सुधाकर जानता था कि आने वाली सुबह अफरा-तफरी की हागी। भाग-दौड अपनी अधिकारियो की गाव वालो की भाग-दौड महज थकाने वाला ही नहा काफी मेहनत वाली भी होगी और ऊपर से न जाने कितने सवाल-जवाब वालों।

सुधाकर ने सोच लिया था कि सुबह इन सभी को वह कह देगा कि तुमम से कोई भी किसी क सवाल का जवाब नही दगा। सारे सवालो के जवाब क लिए सुधाकर शर्मा ही उत्तरदायी है बस एक ही उत्तर इन रात-भर काम करने वाला को दना होगा—' साहब होकम जान। साहब को पता होगा।"

सुधाकर को लग रहा है कि कल ही लौट जाना है उदयपुर। अपन मित्र दिनेश के सपने का अधूरा छोडकर। वैस दिनश का सपना अधूरा कहा है अब काम ही

कितना रह गया था। नब्बे प्रतिशत सफलता हसी-खेल नही है। यह कठिन और कर्मठता की परीक्षा ही थी ओबरा बाध पर। सभी जगह के मस्टररोल कागजी थे और ओबरा के मस्टररोल जिस्मो के थे, पसीने के थे, आखो मे खुशहाली के सपनो के थे, अपना गाव अपना काम, सबके नाम के सपना के थे।

"कल की सुबह क्या-क्या गुल खिलाएगी।" सुधाकर सोच नही पा रहा था।

"साब, आपकी तबीयत भी तो ठीक नही है। आप सो ल।"

"मेरा जागना ज्यादा जरूरी है। कब क्या निर्णय लेना पडे ? वह तो मुझे ही लना पडगा न।"

"ठीक है सर। हम लोग आपकी बात मानकर आराम करते हैं।"

"राजू, अब बरसात का जोर कुछ कम तो पडा है। लगता है, भगवान को आज ही बाध की मजबूती की परीक्षा लनी हे। हमने कही पोल तो नही छोड़ी ? पाल छोड़ी होगी तो पानी नीचे से सारा बह जाएगा। मिट्टी को काटता हुआ निकलता रहगा। अगर हमने काम पूरी ईमानदारी और मेहनत से किया है, कुटाई अच्छी की है डसिटी सही निकाली है तो एक इच से ज्यादा पानी को भी रास्ता नही मिलेगा।"

"काम तो सही ही हुआ है, सर।"

"राजू, एक मिनट के लिए मान लो बाध फूटा तो पानी कहा-कहा पहुचेगा। गाव क चारे तक या खमाणा लोहार के घर तक या रोडा बा की हवेली की पहली मजिल या माताजी क चबूतरे तक ?"

"भगवान के लिए आप यह सब सोचना बद कीजिए। आप ही तो कहते हैं कि जीवन म कभी निराशावादी सोच रखना ही नही चाहिए। आज आप ही ऐसी निराशा की बात कर रहे हैं।" राजू ने कहा—"अपने ही सिद्धातो से उलटे ? कुछ दूसरी बात कीजिए सर ?"

"अच्छा ये बताओ, तुमने और चम्पा ने क्या सोचा है ?"

"ठीक ही सोच रखा है सर।"

"इस बारे म तुम्हारी माताश्री के क्या विचार है ?"

"इसक लिए ही तो माता श्री आपसे मिलना चाह रही हैं।"

"इसका मतलब साफ है कि वे राजी हैं।

"उनकी खुशी तो वही है जिसम उनके बेटे की खुशी है।"

"और तुम्हारी खुशी ?"

"जा चम्पा की खुशी।"

"और चम्पा की खुशी ?"

"आप सब जानते हुए भी क्या पूछ रहे हैं ? चम्पा, राजू और मेरी मा सबकी खुशिया आप ही लौटा सकते हैं और किसी के बस का नही।"

"चिता मत कर बेटे। एक दिन तुम्हारी झोली खुशिया से भर दूगा। जरा देवीसिह

से पूछकर बताओ व्हाट इज लेटेस्ट प्रोग्रस ? कहीं हम याता मे ही लग रह, और पानी खतरे के निशान पर पहुच जाए।"

"यस सर।"

राजू भागकर बाहर आया तब तक सुधाकर न अपने कम्बल उन सोने वाले लोगो पर डाल दिए।

"सर गुड न्यूज। पानी वहीं स्थिर है। एज इट इज। वही साढ़े तीन फीट खाली।"

राजू ने लौटकर बताया।

"कितना बजा है ?"

"सर, साढ़े पाच। बस कवल आधा घटा है दिन उगने म। अब बरसात भी कम हो गई है।"

"हा, बस हल्की-हल्की झिर मिर-झिर-मिर।"

"अब कोई चिंता नहा। समझो, हमने किला फतह कर लिया। माता ने मेरा लाज रख ली। मैंने उसके नाम की अगरबत्ती जला रखी है। पानी अब और ऊपर नहीं बढ़ने के लिए। बाध की रक्षा करने के लिए।"

"सर पूरी नवरात्रि उपवास कर आपने अनुष्ठान किया था। यह नवरात्रि आपने बाध की रक्षा के लिए ही तो समर्पित की थी।"

"तुम्ह यह सब कैसे मालूम ? तुम तो उन दिना बाध पर कहा आते थे ?"

"सर! आपके उपवास के लिए देवा हमारे यहा से ही तो दूध लाता था। मा एकदम खालिस दूध दती थी। एक तो ब्राह्मण दूसरा नवरात्रि का उपवास तीसरा यह काम बाध की रक्षा के लिए।"

"मुझे देवा ने कभी नहीं बताया कि दूध तुम्हारे यहा से आता है।"

"क्या जरूरत पड़ी उसे।"

"सच कहते हो, और मुझे भी क्यो पूछना था कि कहा से लात हो ?" —सुधाकर पूछ बैठा था। "तभी तुम्ह यह पता चल गया था ?"

"हा सर।"

सुधाकर भोर पूर्व के इस अधेरे म राजू का चेहरा नही देख पाया पर उसे लगा कि गाव क सारे लोगा स अधिक कोई इस सुधाकर क बारे मे जानता है तो यही राजू है।

"मा न पैसा के लिए मना भी किया था। मगर देवा ने कहा अगर आप पैसे नहीं लेगी तो साहब दूध रखेगे भी नही और कल से मगवाना भी बन्द कर देगे।"

"मा नही चाहती थी कि आप दूध बन्द कर। मा ने उन्ही दिना कहा मुझे कि—जा ऐसे गुणी से कुछ सीख और तभी मैं कुछ दिन बाद काम पर आया।"

"तो फिर सीधे ही मुझसे क्यो नही मिले ?"

' मन म कही डर था। चम्पा की भनक लगने पर कहीं डाट न दे। फिर लोग

कानाफूसी करने लगे तो मा ने मना कर दिया। उसका कहना था कि किसी बाल-विधवा को वह बदनाम क्यो हाने देगी।"

"चम्पा की तुमसे दोस्ती कैसे हुई ?"

"दोना स्कूल मे साथ-साथ पढ़ते थे। हम दानो सास्कृतिक कार्यक्रमा म भाग लेते थे। दोना का कम्पटीशन। कभी मैं फस्ट आता तो कभी चम्पा।"

"चम्पा कैसे हा गई बाल-विधवा ?"

"चम्पा क दादा ने बचपन म ही एक ठिकाने मे रिश्ता पक्का कर दिया था।"

"चम्पा के ससुर का टी ची था। व चाहते थे कि मरने से पहल बहू का मुह देख ल। मगर हाना तो कुछ और ही था।

"क्या क्या हो गया तब ?"

"चम्पा पहली बार ससुराल गई थी।"

"फिर ?"

"सुहागरात म ही चम्पा के पति को साप ने डस लिया।"

"ओफ्। हे ईश्वर।!"

"चम्पा एक रात भी तो साथ नहीं रह पाई। पाहर लौट आई।"

"बेटे की मौत क ही सदम से पिता भी चल गए।"

"फिर ?"

"ससुराल म काई नहीं बचा जो चम्पा की देखभाल करता। चम्पा तो शुरू से ही चाहती थी कि वह मेरी जीवन-सगिनी बने। मगर जब कुदरत को ही मजूर नहीं ता क्या होगा ?"

"और अब ?"

"मर लिए तो चम्पा आज भी वही है।"

"अच्छा एक बात बताओ।" सुधाकर ने उसके हाथ पर हाथ रखकर पूछा—"सच बालोगे न ?"

"आपसे झूठ क्या बोलूगा ?"

"बालना भी नहीं।"

"तुम दोना के बीच क्या-क्या बीता है ?"

"बस मिलते रहे हैं।" राजू ने सुधाकर के हाथ के ऊपर बाया हाथ उठाकर रख दिया—"ईश्वर साक्षी है, सर। भले ही एकान्त मे मिले हैं। चम्पा पवित्र है। वह मरी आत्मा है।"

"अब समझ ला" सुधाकर ने उसके दोना कधो पर हाथ रख दिया—"मैं दो आत्माओ का मिलन कराके ही ओबरा छोड़ूगा।"

"जिन्दगी म हम दोना कभी नही भूलेगे सर।"

"ठीक है अब देखते हैं कुदरत को क्या मजूर है ?'

सुधाकर बाहर निकला और बोला—"अब सबको उठाओ। उजाला होने लगा है। परभू से कहो— चाय बनाए।"

"सुबह के छ बज रहे हैं। कुछ-कुछ दिखने लगा है। बरसात कम हो गई है। बाध का ऊपरी लेवल ठीक वही साढे तीन फीट है। नहर से पानी उसी रफ्तार से निकल रहा है। हिसाब ये है कि जिस गति से जितनी आवक है उतनी ही निकासी हे। अवाक-जावक वराबर।" सुधाकर निर्णायक बिन्दु पर था—"वाह माता खडा देवी! तेरा भी जवाब नही। जैसे लक्ष्मण-रखा खीच दी हो।"

सभी चाय पीकर नीचे उतरे। और सभी जगह तो ठीक था मगर सारी गडबड वही थी।

जहा रात को सबके सामने सुधाकर का सोच पहुचा था।

राइट केनाल क छोडे गए रास्ते पर।

वहा पानी ने बहुत बडा गड्ढा बना दिया था। पानी के साथ-साथ फिल्टर टाप की मिट्टी भी कटती जा रही थी। जल्द से जल्द इस बन्द करना जरुरी था।

सुधाकर ने कहा—"जगदीश! तुम दवा को लेकर गाव मे जाओ। अपनी जितनी भी लेवर आ सके फुर्ती से ले आओ। साथ ही पूरे गाव म सूचित कर दा खतरे की स्थिति कभी भी बन सकती हे। बाध और गाव की सुरक्षा के लिए चलिए।"

इसी बीच सरपच ठाकुर रामसिह आ गए।

सुधाकर ने कहा—"सरपच साहब! गाव म सूचना भिजवा दे बाध को खतरा हे। जितने लागा को इकट्ठा कर सकें करवा दीजिए।"

"हा खतरा तो है ही।" ठाकुर रामसिह के अन्दर का जहर आखिर बाहर आ गया—"मगर ओबरा वाला क भाग्य मे बाध को भरा देखना था सो मरन के पहल भरा दख लगे।"

"में आपकी बात नही समझा ?"

"समझने की जरूरत नही है सुधाकर! अभी आपकी वह उम्र नही है कि यहा के लोगो की बात समझ पाए आप।" ठाकुर रामसिह मे जहरीली फुफकार थी।

"अभी तक तो न कोई मरा हे न मरने की स्थिति ही है। जब तक सुधाकर शर्मा जिन्दा है गाव का एक बच्चा भी नही मर सकता। अगर बाध फूटेगा तो पहले लाश सुधाकर की जाएगी समझे ठाकुर ?"

"देख लगे सुधाकर! तुम्हारा बलिदान भी चलो यह भी सही।"

' आप ता उस दिन उदयपुर म गाधी पिक्चर देखते समय मुझे कह रहे थे कि यह बाध तो कभी भर ही नही सकता। धुप्पल पट्टी म बन गया है ? और अव जबकि भर गया है आप अपशकुन की बाते कर रहे है।"

' साच को आच नही होती शर्मा जी। '

"क्या मतलब है ?'

"जो भी मतलब निकालना चाहा, निकाल लेना सुधाकर।"

"ये आपका गाव है। कुछ तो आपका भी कर्तव्य होगा ?"

"मुझे अभी फुर्सत नहो है।" ठाकुर ने मुह बनाया—"मुझे जरूरी काम से उदयपुर जाना है।"

"जैसी आपकी मर्जी। मुन्नवर जा, आप ट्रैक्टर लेकर गोगुन्दा जाइए। कालु बा को ले आइए। एक्स ई एन साहब को बाध की रिपोर्ट दे देना।"

"मुन्नवर जी गोगुदा तक मैं भी चल रहा हू। सिंचाई विभाग को सूचना मैं ही दे दूगा।"

सुधाकर को महान आश्चर्य हुआ। क्या ऐसे वक्त भी यह आदमी अपनी जिम्मेदारियो से भाग रहा है ? जिन लोगो के ये सरपच नेता हैं, क्या उनके जीवन के प्रति इनकी कोई जिम्मेदारी नहीं है ?"

"हो सकता है उदयपुर वास्तव मे जरूरी काम हो। मगर क्या इससे भी ज्यादा जरूरी है ? कौन जाने।"

"बाध तो इस गाव का है सबका है। हमने बाधा है, तो बचाने की भी हमारी जिम्मेदारी है। हम तो हर कीमत पर बचाना ही है।"

गाव वाले आते जा रहे थे और बिना पूछे ही काम मे लग जाते थे। काम की गति जोर पकड़ने लगती है। भागना था जिसे जिम्मेदारी से, वह सरपरस्ती का दभ लेकर भाग खड़ा हुआ।

सुधाकर और दवासिंह दोनो खड्डे मे पत्थर डालना शुरू करते हैं। कनकी आती है, वह भी काम मे जुट जाती है। चम्पा पद्रह-बीस औरतो को लेकर आ गई। फिर क्या जोश-खरोश से काम शुरू हो गया। लोग आते गए बिना कहे अपना काम समझ काम मे जुटते गए।

अब जाकर सुधाकर की जान मे जान आई। चम्पा और राजू के भरोसे छोड़कर वह दूसरी स्थितिया देखने चला गया।

कना बा खबर लाए—"चलवा पर पाच फीट पानी बह रहा है। दादिया और राव मादडा फूट गया है। बूझ के नाक का भी यही हाल था।"

नौ बजते-बजते काफी मजदूर आ गए।

केशा बा और कना बा रेती और मारम के कट्टे भरवाते जा रहे थे। बाकी मजदूर उठा-उठाकर गड्ढा भरते जा रहे थे। सुधाकर के बताने के अनुसार राजू की टीम ने नहर वाले रास्ते पर पेड़ो की डालिया और उन पर मिट्टी व बाहर रेत के कट्टे डाले। तब जाकर कहीं पानी बद हुआ।

अब केवल गड्ढा भरना ही बाकी था।

बच गया ओबरा बाध।

कितने लोगो की निष्ठा से जुडा है यह।

इसे इतना लबालब भरा रहने के लिए ही तो इतनी मेहनत लगी है।
खबरे आता जा रही हे। पुरान कई तालाब फूट गए हैं।
राव मादडा की सारी मिट्टी बह गई हे।
बृझ मे भी काफी नुकसान हुआ हे
उदयपुर से खबरे आनी बाकी है।
बाध क चारा आर जिधर नजर दौडाओ-पानी ही पानी। केशा बा क खेत म बडे-बडे आम के पड के ऊपरी सिर नजर आ रह है। दूर-दूर तक बाध क पाना स दृश्य बहुत ही सुदर नजर आ रहे हे। प्रकृति की छटा देखने काबिल थी। बाध के दूसरे हिस्से की दीवार एकदम सुदृढ थी। जरा भी पानी का लीकेज नही। यह सबसे बडी खुशी की बात था। बाध की मजबूती की जाच हो गई।
तहसीलदार साहब ने वादा किया था कि तीस जून को लेवर पेमेट के लिए आऊगा। ठाक दस बजे आ गए। उनकी जीप रास्त म फस गई। गगाराम क टैक्टर स निकलवाकर मगवाई। सुधाकर बार-बार भीग रहा हे। ऊपर आता है। कपड बदलता है, चाय पीता हे ओर फिर नीचे व्यवस्था दखन चला जाता है। तहसीलदार साहब ने विश्वास दिलाया कि मुझे चाह रात को यही रुकना पडे, पेमेट करक जाऊगा। जब आप लोग इतने महत्त्वपूर्ण काम म लगे ह तो मेरा भी फर्ज है कुछ।
उस दिन आते ही तहसीलदार साहब ने पूछा—"मने सुना था कि आज सुबह ठाकुर साहब की लडकी पानी म बह जाती ?"
"हा सर। ये समझिए मा जगदबे न ही लाज रखी। सुधाकर ने सारा विवरण पेश किया—यू कि नहर के लिए छोडे रास्ते से पानी पीछे फील्टर टॉप की मिट्टी काटता हुआ बह रहा था। राजू पुरुषा से काम करवा रहा था चम्पा औरता की टोली के साथ। अचानक चम्पा का पाव फिसला और चम्पा गड्ढे म लटक गई।
'राजू ने चम्पा की चीख के साथ अन्य स्त्रियो की चीख सुनी ता उधर दाड़ पडा। उसने चम्पा को गड्ढे म देखा ता राजू न फुर्ती स चम्पा का हाथ पकड़ा और उसे सहारा देना चाहा। चारा तरफ की मिट्टी गीली दलदली थी।
राजू ने आगे आन वाला को रोका सर। क्याकि और कोई आगे बढ़ता ता मिट्टी धसक सकती थी। उसके साथ ही चम्पा और राजू सा फिट नीचे गिर जाते और पता नहा नीचे तेजी से बहता नाला उनके क्या हाल करता ?"
"यह तो भयकर घट जाता सुधाकर।"
"हा सर।"
"राजू न बड़ी हिम्मत स काम लिया। अपन हाथा को जार से ऊपर झटका दकर चम्पा को ऊपर खीच लिया वरना ?"
सुधाकर फिर चुप हा गया।
तहसालदार न पूछा—"चम्पा का कहीं चाट ता नही आई ?"
'खास नहा।' सुधाकर न उत्तर दिया— 'मामूला खराचे ही आईं।"

तहसीलदार ने कहा—"वाकई चमत्कार हुआ जो वह बच गई।"

"ऊपर वाले को हमारी चिंता ज्यादा है, सर।"

"ठाक है, आप जाइए। दूसरे काम देखिए।"

"आपको यहा कोई तकलीफ ?"

"चाय पी है, नाश्ता किया है, और अब।" तहसीलदार ने कहा—"भोजन बन ही रहा है।"

"ठीक है, खाना खाकर आप आराम कर लीजिए, सर। मैं जरा देख आऊ।"

"आप मरे आराम की चिन्ता छोड़िए। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखिए।"

"इन मजदूरा क साथ खड़ा नहीं हुआ तो सारा काम गड़बड़ा सकता है, सर।"

"पर, बार-बार बारिश म भीग रहे हैं। आपको सरदी-जुकाम हो जाएगा।"

"सर, आपकी चिंता उचित है।" सुधाकर ने कहा—"लेकिन काम की मार आप देख ही रहे हैं। फिर अगर, आज रात को बारिश और आ गई तो ? हमे अब और सावधानी रखना ज्यादा जरूरी हो गया है।"

"बहुत सही सोचा है आपने। अगर आज ध्यान नही दिया तो कल कुछ भी अनहोनी हा सकती है वास्तव मे सुधाकर जो। आप जैसे व्यक्ति के बस की बात थी जो रिलीफ म आराम करने वाली लेवर से इतना सख्त काम करवा सके। मैं तो कई जगह पमेंट करने जाता हू। कुछ स्थाई काम ही नजर नही आता। आज की इस बरसात म सड़का पर जो लाखा रुपयो की धूल डाली थी वह सब बह गई। ओबरा बाध जैसे स्थाई काम ही गाव वालो के लिए प्रेरणादायक है। ठीक है आप अभी जाइए। काम का हर्जा हो रहा होगा।"

× × ×

अधिशासी अभियता स कनिष्ठ अभियता ने पूछा—

"सर हम ओबरा डम जा रहे हैं ?"

"वहा जाकर क्या करेगे ?"

"करगे क्या। सर बाध की स्थिति देख लेगे।"

"स्थिति का अदाज इसी स लगा लीजिए कि छब्बीस बाधो पर ओवर-फ्लो चल रहा है। कई छोट-मोटे बाध फूट चुके हैं। कई बाधो को अब भी खतरा है।"

"ओबरा को भी देख लेना उचित न होगा, क्या ?"

"जब भादवीगुड़ा, वूझ, दादिया, रावमादड़ा पर भारी नुकसान हो चुका है। यदाल पर खतरा मडरा रहा है। ऐसी स्थिति मे ओबरा के बचने की उम्मीद ही कैस कर सकते हैं ?"

"सर हम उम्मीद है कि सुधाकर जी रहते ।"

"सुधाकर का क्या आपने सिंचाई विभाग का इजीनियर समझ रखा है ?"

"वह तो नहीं है, सर। मगर जिस कुशलता से अब तक उन्होंने काम करवाया

है यह दखकर ही उसस ।"

"उससे क्या हाना है ? एक रात म बारह स पद्रह इच बासात किसे कहते हैं ?"

"बरसात तो वास्तव म काफी हुई है सर।"

"अगर आपने पहले जरा भी ध्यान दिया होता तो ओवरा बाध नहीं फूट पाता ?"

"लेकिन अभी भी फूटने की खबर कहा है सर ?"

"फोन सब खराब पड़े हैं। ईसवाल क घाट म पहाड़ की चट्टान गिर चुकी है। वरना अब तक खबर आ गई होती। आप भी जाएग तो हल्दी घाटी के रास्ते स जाएगे।"

"एक बार पता कर ल सर।"

"अनिष्ट का पता न करना ही ठीक है।"

"अनिष्ट क्यो सर ?"

"प्रकृति की इच्छा नहा दखत हा कैसा कहर बरपा गई ह बरखा ?"

"सुधाकर की स्थिति भी देख लना क्या उचित नहीं होगा सर ?"

× × ×

जीप अपनी गति स सड़क पर हिचकोल खाती सरपट दौड़ी जा रही थी। कनिष्ठ अभियता की सुधाकर विषयक चिंता न उन्ह सजग कर दिया। पलटकर अपन जूनियर का दखा। बाल—"सहा कह रहे हा आप। चलते हैं पहले, वही ।"

ड्राइवर को इशारा किया। ड्राइवर न इशार क साथ ही जीप ओवरा का ओर घुमा दी।

"सर, अगर सुधाकर ने सैल्यूस के आगे आठ फीट जगह कटवा दी होगी तो पानी उधर से निकल गया होगा। बाध को बचाने का यही एक रास्ता था।"

"क्या आपन सुधाकर को इस बचाव का सुझाव कभी दिया था ?"

"ऐसा तो नही किया सर। हमने कभी सोचा भी नही था कि अचानक इतनी बरसात आ जाएगी।"

"बरसात का आना नहा आना आपक बस मे नहीं है।"

" "

जूनियर चुप हो गया।

"एक बार जनरल इफोर्मेशन क हिसाब स हा समझा देते तो आज मौके पर काम आती यह।"

"हम उम्मीद है कि सुधाकर जी छ माह से चप्पे-चप्पे स परिचित है। वे जरूर अपना सूझ-बूझ का परिचय दग।"

"देख लेते हैं।" वरिष्ठ अभियता ने अपना पूर्वानुमानित निर्णय दिया। "मानकर चलिए कि आपकी थोड़ी-सी लापरवाही से सुधाकर की पूरा महनत का सत्यानाश हो गया या हो चुका है।"

"ठीक है। वही एक तरीका है।" सहायक अभियता ने कहा—"और कोई प्रोब्लम ?"

"मुझे तो नहीं है। आप सारी स्थिति देख लीजिए। कहा क्या करवाना है ? आप देखकर ही गाइड लाइन द।" सुधाकर ने कहा।

"देखिए, जब तक जमीन खुदाई लायक नही हो जाय कोई बोर एरिया ढूढिए। वहा खुदवा-खुदवा कर मिट्टी का ढेर करवाते जाइए। जब भी ट्रैक्टर बोर एरिया मे जाने की स्थिति म होगे, उस समय ट्रकटरा को खाली भर-भर कर लाना भर रहेगा।" कनिष्ठ अभियता ने कहा।

"सर बाध के आगे के हिस्से का देखा ?" सुधाकर ने पूछा।

"हा, इतना पानी भरा होने के बाद भी एक इच का भी सीपेज नही है। यही है हमारी कार्य क्षमता की कसौटी। अगर कही भी बिना डसिटी का ध्यान दिए मिट्टी डालते चले गए होते तो अभी सीपज होना शुरू हो जाता।"

तब तक ठाकुर रामसिंह आ गए।

परस्पर अभिवादन के बाद वरिष्ठ अभियता ने पूछा—"खैरियत ह ठाकुर साहब।"

"खैरियत कहा है साहब।" ठाकुर साहब ने कहा—"खैरियत होती तो रात को सुधाकर जी दलदल मे नही धसत।"

"क्या ? वरिष्ठ एव कनिष्ठ अभियताओ के मुह से निकला—क्या कर रहे हैं, ठाकुर साहब ?"

"हा, सर। जहा सीढ़िया उतरते हैं, वहा पेड़ो के रोपने के लिए गहरे-गहरे गड्ढे खुदवा रखे थे। अधेरे म उसी मे पाव फिसल गए थे।"

कनिष्ठ अभियता ने सुधाकर को देखा।

सुधाकर का चेहरा शात और जीवत दिखाई दिया।

"क्यो, सुधाकर जी हुआ क्या ?"

"ठाकुर साहब ने सब कुछ सही बताया है सर।"

"अब ?"

"सर कुछ पेट्रोमेक्स और चैकिग की किग साइज टार्चें उपलब्ध करा दी जानी चाहिए ओबरा बाध पर।"

"आज हम टार्च सैल और घासलेट सभी कुछ ले आए हैं।"

"आज सुबह चम्पा भी स्लिप हो गई थी ?" ठाकुर साहब की ओर देखकर अभियता साहब ने कहा।

"हा, सर। उसी केनाल वाले गड्ढे को भरवा रही थी कि मिट्टी धस गई और वह स्लिप हो गई।' सुधाकर ने बताया—"य तो अच्छा हुआ एन वक्त पर राजू जा पहुचा शोर सुनकर।"

"ध्यान से काम करो भाई। सावधानी से अभी तो बहुत काम करने हैं।

"सॉरी सर, एक्स्ट्रीमली सॉरी, सर।"

इससे अधिक क्या कहता वह।

लेकिन उसके अदर बैठा मित्र निश्चित ही सुधाकर के प्रति आश्वस्त था और यह मान रहा था कि जो अभी मैंने कहा है, सुधाकर ने उस पर अमल अवश्य ही किया होगा।

"कहिए सुधाकर जी। क्या हाल है आपके बाध का ?" जाप रुकते-रुकते वरिष्ठ अभियता ने पूछा।

"सर, बाध तो आपका है। सिंचाई विभाग का और ओबरा गाव का। मैं तो मात्र रक्षक हू। रात-भर जागकर रक्षा की है। आपका बाध बिना क्षति के आपको सौंप रहा हू, आज।" सुधाकर ने कहा।

"कमाल है। हम एक प्रतिशत भी आशा नही थी कि ओबरा बाध को सुरक्षित देख पाएंगे।"

"ओबरा गाववासियो की मेहनत रग लाई है, सर।"

"क्या ?"

"पूरी रात जागे हैं ये लोग, इन्होने ही बचाया है बाध।"

"हम तो फिर भी आपकी सूझ-बूझ और कार्य-क्षमता पर भरोसा था।"

"लेकिन उदयपुर म सभी न तो बिल्कुल उम्मीद ही छोड़ दी थी।"

"सर, उम्मीद तो रात को हमने भी छोड़ दी थी। लेकिन हम पूरी तैयारी करके बैठे थे कि तीन फीट खाली रहने क बाद अगर पानी बढ़ना शुरू हुआ तो सैल्यूस के आगे आठ फीट रास्ता काट डालगे। पानी को ऊपर तो किसी भी हालत मे बढ़ने नही देगे।"

"फिर ?"

"हम थे आठ आदमी।"

"फिर ?"

"फिर क्या ? भीषण वर्षा और एक-एक को एक-एक फीट जगह ही तो काटनी थी।"

"वाह सुधाकर जी, वाह। कमाल है।! बाध को बचाने का एकमात्र यही रास्ता था।"

अभियता को सुधाकर की सूझ पर आश्चर्य हुआ।

"मगर सर, हमे सबसे ज्यादा नुकसान हुआ है वहा, जहा कैनाल के लिए जो जगह फिल्टर टाप पर छोड़ी थी।" सुधाकर ने फिल्टर टाप की ओर इशारा किया।

"ऐसा क्यो हुआ ?"

"उस जगह पानी ने तबाही मचा दी। बड़ी मुश्किल से उस पानी को रोका। कटाव से बन गए गड्ढे तो रेत व मोरम के कट्टे डलवाना शुरू किया।"

अंबरा बांध बचाने पर हमें गर्व है।"

× × ×

"माताजी प्रणाम!" सुधाकर ने राजू की माताजी से कहा।

"आइए-आइए। पधारिए बाबूजी।" राजू की मा ने कहा।

"मैं कई दिनो से आपसे मिलने की ही सोच रही थी।"

"हा, मुझे राजू ने कई बार कहा था। मगर बांध के कामो की व्यस्तता।"

"मै अच्छी तरह जानती हू। यह आपकी ही हिम्मत है कि आप इतना साहस कर रहे हैं। आपकी जगह कोई दूसरा होता तो कब का भाग गया होता ?"

"क्या करू ? जब एक जिम्मेदारी का बोझ उठाने का फैसला किया तो उसे निभाना तो पड़ेगा ही।"

"राजू ने आकर बताया किस तरह आप लोग रात-भर जाग कर बांध को बचाने में लगे रहे। आपकी हिम्मत का दाद देनी पड़ेगी।"

"आपने कौन-सी हिम्मत कम की ?"

"मैंने ? मैंने कौन-सी हिम्मत की ?"

"अगर आप उस तूफानी रात म राजू को भेजने की हिम्मत नहीं जुटातीं तो भला मैं अकेला ।"

"आप पर ईश्वर की कृपा है, बाबूजी।"

"आपका आशीर्वाद है, माताजी!"

"राजू ने कुछ बताया, माताजी ?"

"क्या ?"

" " दोनो के बीच मौन पसरा रहा।

"क्या ? राजू न आपको कुछ नहीं बताया ?"

"..."

"राजू है कहा ?" सुधाकर ने इधर-उधर ताकते हुए माताजी स ही कहा—"दिखाई नही दे रहा है ?"

"गागुदा गया है। कुछ जरूरी सामान लाना था।" उसकी मा बोली—"आता ही होगा। मैं उसी बार म आपसे कुछ बात करना चाहती थी।"

"चम्पा क संबध म ?"

"यही समझ लीजिए—समझ ल या निर्णय करे।"

"आप पर निर्भर करता है। सब कुछ।"

"आप क्या चाहती हैं ? चम्पा को बहू बनाना है या नहीं बनाना है ?"

"मैं इसी असमंजस में हू। राजू चम्पा के अलावा कुछ भी सोचने को तैयार नहीं है। एक तरफ बेटे की खुशिया दूसरी तरफ एक विधवा ?"

"विधवा नहीं माताजी। वह है बाल विधवा ?" सुधाकर ने स्पष्ट किया।

"हा बाल-विधवा कह लीजिए। फर्क क्या पड़ता है ? क्या हमारा समाज

विधवा विवाह की इजाजत देगा ?"

"कौन-सी इजाजत ? कैसी इजाजत ? गाव की समाज की ?"

"इजाजत तो केवल आपकी चाहिए।"

"मेरी ?"

"हा।"

"आपकी इजाजत।"

"पर ?"

"चम्पा और राजू की चाहिए। वह हमारे पास है।" सुधाकर ने निर्णय उछाल दिया।

"पर आप यह भी तो देखिए कि वह बेटी किसकी है ?" माताजी आहत स्वर से बोली।

"आपके खानदान के दुश्मन की। यही कहना चाहती हैं न आप ?"

"जब आपको सब पता है। फिर मैं क्या कहू ?"

"आपको थोड़ा तो त्याग करना ही पड़ेगा। बेटे की खुशी की खातिर अगर इस जहर का कड़वा घूट भी पीना पड़े, तो पीना होगा आपको।"

"राजू के अलावा मेरा दुनिया म है ही कौन ? उसकी खुशी के लिए मेरा सारा जीवन ही अर्पण है।"

"अगर इसी बहाने दोनों परिवारों का वैर खतम होता है तो इससे बढ़कर खुशी और क्या हो सकती है ?"

"म तो नही समझती कि ठाकुर साहब आसानी से मान जाएगे ?"

"माने या न मान काम तो हर हालत मे हमे करना ही होगा।"

"मै नही चाहूगी, सुधाकर जी।" अपनी आखे आचल से पोछते हुए कहा—"आप पर कोई आपदा आए।"

"परेशानी मैं समझ सकता हू।"

"सुधाकर बाबू! आप मेरे लिए तो बडे बेटे जसे हो।"

"तभी म इस घर का भला चाहता हू।"

"और कितने लोग भला चाहते हैं ?"

"यह तो मैं नही जानता।" सुधाकर ने माताजी के चेहरे पर नजर जमाते हुए कहा। "आपक मन मे शका क्यो उठी ह ? माताजी मैं जान सकता हू ?"

"आपसे छिपा कुछ भी नही है।"

"क्या नही छिपा है ?"

"कैस क्या करता हू, ये सब मुझ पर छोडिए।" सुधाकर ने घुटने पर हथेली थपकाई—"म तो केवल आपके विचार जानने आया था। अच्छा अब मैं चलता हू।"

"अरे वाह यह कैसे हो सकता है ? बिना कुछ खाए-पीए कैसे जाने दूगी ?"

राजू की मा चैतन्य हुई—"मैं तो बातो के प्रवाह मे उठ भी नही पाई और फिर राजू की भी प्रतीक्षा कर रही थी।"

"अरे मा प्रतीक्षा करने जैसी क्या बात थी ?" राजू ने घर मे प्रवेश करते हुए कहा—"मैं तो आ ही रहा था।"

"अदर आ, तू ही देख। मैं क्यो प्रतीक्षा कर रही हू ?"

"अरे, सर! आप ? ये तो कमाल हो गया। आज अचानक कैसे भूल पड़े ?"

"अचानक कहा ? राजू, आना तो था ही। मैं चाहता हू कि अब तुम्हारे मामले की गोटिया जल्दी ही फिट कर दू।"

दोनो बात करने लगे। तब तक मा चाय-नाश्ता रख गई।

जाते-जाते कह गई—"तुम लोग बात करो फिर थोड़े खेतो की तरफ घूम आओ। लौटकर आओगे तब तक मैं खाना बना देती हू।"

"माताजी! आज मैं ।"

"आज मैं कुछ नहीं सुनूगी। आप खाना खाकर ही जाएगे।"

"चलिए सर! खेत दिखा लाता हू। पास मे ही है।" दोनों खेतो पर जा पहुचे। आगे-आगे राजू और एक कदम पीछे था सुधाकर।

"वाह ये खेत तो बहुत अच्छे हैं! चारो ओर पेड़ लगाकर अच्छा किया है।" सुधाकर को ग्रीनरी देखकर मजा आ गया—"पर्यावरण सुधार का इतना ध्यान हर आदमी को रखना चाहिए।"

"चलिए सर उधर बैठते हैं।"

"अरे ये जगह तो और भी सुदर है। इतने अच्छे-अच्छे फूल, अच्छा खासा लॉन।"

"कुर्सिया बड़ी खूबसूरत हैं। कहा से मगवाईं ?" सुधाकर मुग्ध था।

"जी पिछली बार जब दिल्ली गया तो ले आया।"

"राजू फिफ्टी परसेंट काम तो हो गया।"

"तुम्हारी माताजी ने आज्ञा दे दी।" सुधाकर बैठते हुए बोला—"बस अब रहे चम्पा के मा-बाप।"

"चम्पा की मा की स्वीकृति समझे। हा चाहे न करे विरोध भी नही करेगी।"

"पक्का भरोसा है ?"

"हा। चम्पा इस बारे मे मा को टटोल चुकी है। वह बेटी की घुटन को जीवन-भर सह नही सकती। चाहती है कि बेटी का घर बस जाए तो उन्हे जीवन का सबसे बड़ा सुख मिले।"

"राजू! अब पता नहीं कब मैं अचानक यहा से चला जाऊ कोई भरोसा नही।"

"ऐसा क्यो, सर ?"

"राजू! आज तुम्हे मै एक राज की बात बताता हू। मैं जो दिख रहा हू, वह

हू नही। कई सारे प्रोजेक्ट्स हैं मेरे पास। कई काम हैं। कई योजनाए हं।"

"पर, आबरा तो अधूरा है।"

"बहुत कुछ, जो अधूरा पड़ा है, उसे पूरा करना है।"

"मैं कुछ-कुछ तो अदाज लगा चुका था। जिसमे यह कि आप पच्चीस रुपये राज के सुपरवाइजर नहीं हैं। आपको दो सौ तान सौ रुपये राज भी मिल ता भी कम हैं।" राजू ने स्पष्ट किया।

"हर मनुष्य की उपादयता का मूल्याकन हम पैसा स ही तो नही कर सकते ?"

"उपादयता ता सामन ही है, सर।"

"मान लो, मं कहू विवेकानद रामकृष्ण परमहस राजा राममोहन राय रवीद्रनाथ टेगार प्रतिदिन कितने रुपय के आदमी थे तो क्या कहोगे ?"

"आप सच कह रहे हैं, सर। पैसे से तो मूल्याकन बहुत ओछा ही कहा जा सकता हे। फिर आपका यहा हम लोगो के बीच ?"

"आना था, उद्देश्य लेकर ही आना था, और आ भी गया।"

"आपने ठीक कहा सर। मूल्याकन हम कर ही नही सकते।" राजू ने आदरपूर्वक कहा—"तभी आप अनमोल हीरे हँ, सर।"

"ठीक कहा तुमने। इस शरीर को भाड़ा देने क लिए कुछ तो देना पडेगा ?"

'बस हम लोग इस ईंधन के मूल्य से ही मनुष्य का कामत आकने लगते हैं जो मरे विचार स गलते है। खैर, छोड़ो ये लबा विपय है फिर कभी।"

"आज ही सर क्या न हो जाए ?"

"तुम्हारे खेत के बाहर का य रास्ता किधर जाता है ?"

समझ गया राजू कि सर ने बात टाल दी हे।

"ये गोगुदा के लिए शोर्टकट है। आइए छत से दिखाता हू। काफी अच्छा दृश्य हे।"

"वाह, ये तो वास्तव म सुदर है। इतने दिन पहले पता चलता तो थकान मिटाने यहा पर चला आता। यहा आकर लगता है कि यहा कितनी शाति है।"

"अब आप यही रह जाइए।"

'जरूर आऊगा कभी। अब आग ही सही। अरे। वह कौन है ?" सुधाकर न चेहरा घुमाकर राजू से पूछा—"कही चम्पा तो नही ?"

"हा सर आपन ठीक पहचाना। वही है। गोगुदा स आ रहा है। बस यहा स थाडा दूर पर ही ता रुकती है। वहा से घर तक पदल आना पडता है।"

' चम्पा !" सुधाकर ने आवाज लगाई।

'अरे! सर आप ? आज यहा कैसे ?" उसने पास आते हुए कहा।

"आओ। अभी तुम्ह ही याद कर रहे थे।"

"भला क्या ? मंन कुछ बिगाडा है आपका ?" चम्पा खिलखिलाकर बाला।

"बिगाड़ा नहीं बनाया है। मं राजू को यही बता रहा था कि अब मेरा कोई

ठिकाना नहीं। मैं न जाने कब अतर्ध्यान हो जाऊ। तुम ढूढ़ती रह जाओगी।"

"ऐसा क्यू, सर! क्या आपको हमारी याद नहीं आएगी ? क्या आपका यह स्नेह सब छल है ?"

"छल ही समझो चम्पा। हम खुद नहा जानते कि हम क्या हैं ?"

"सार खेल ऊपर वाला क्यू करवाता है वही जाने।"

"आप सब कुछ जानते हैं सर। केवल हम बना रह हैं न ?"

सुधाकर उत्तर देना टाल गया।

"कभी जीवन म सपने म भी नहीं सोचा कि इस गाव के अपढ़, गरीब भोले-भाल लोगा क लिए कुछ करन आना पड़गा और तुम सबके जीवन म जुड़ जाऊगा।"

"और सर हमन भी कब सोचा था कि एक मसाहा आएगा जा सारे गाव की झाली खुशिया से भर देगा। बनिय के बधन स मुक्ति दिलाएगा।"

"ज्ञान की जात जलाकर हमारे अधरे जीवन म रोशनी भर देगा। ज्ञान का दीपक जलाकर साक्षर कर देगा।"

"पर्यावरण की बात कर सारे गाव में हरित क्राति-चेतना भर देगा। डेरा और मुर्गीपालन के लिए जिले म हमारा गाव प्रथम आएगा यह किसन सोचा था ?"

"साब आपक हाथा क पारस ने हम छूकर लोह स कचन बना दिया।"

"क्या बात ह चम्पा ? बात तो बहुत बड़ी-बड़ी कर लती हो। इतने काम के बाद अब एक खास काम अभी बाकी है।"

"वह कौन-सा सर ? हम बताइए। हम पूरा कर दग।" दाना न कहा।

"पूरा ता तुम दाना का हा करना है। आज जहा तुम बैठी हो मेहमान की तरह नहीं, स्वामिनी की तरह बैठागी। बस उसके बाद मैं चला जाऊगा।"

"य ता आपक प्रयत्न व आशीर्वाद से ही सभव ह। म मन-ही-मन डरती भी हू कि मेरे पिता के क्रोध का सामना आप कसे करगे ?"

"डरो नही चम्पा। तुम दाना मरे सबल हो। अगर तुम दाना दृढ़ रहे तो फिर काम पक्का।"

"हम ता दृढ़ हैं सर। जब साथ जीने-मरन की कसम खाई है ता फिर डर कैसा ?"

"अच्छा ता तुम दाना मर भी सकते हो ? मुझ पता नही था। वास्तव मे सच ह तो फिर बताआ कब मर रह हो ?"

"अगर साथ रहना सभव नही हागा तब।" दाना न कहा।

"अगर तुम दानों मरने की शानदार एक्टिंग कर सको तो जीवन-भर साथ रखन का वादा मरा।"

"हम समझ नही सर ?" दोनो ने कहा।

" समय आने पर सब समझा दूगा। तुम्हार ज्ञानदीप का काम कैसा चल रहा ह ?"

"बहुत अच्छा, सर। आपसे मिलने की खुशी म यह खुशखबरी तो दना ही भूल गई सर।"

"मुझसे मिलने की खुशी म या राजू से मिलने की खुशी म ?"

"सर! आप तो ?"

"क्या खुशखबरी सुना रही थी ?"

"आज ही एक स्कूल से दो सौ स्वेटर का ऑर्डर लाई हू। तीन-चार स्कूलो से और भी बात चल रही है।"

"वेरी गुड। शाबाश!! ये हुई न कुछ बात। गुड प्रोग्रेस। आगे बढती रहो।"

"मं चलू, सर। दर होने पर संदेह की सुइया गड़बड़ी करगी।"

"मै परसा पापा से मिलने आऊगा। ध्यान स जाना। राजू को भेजू ?"

"समय भी ज्यादा नही हुआ है रास्ते मेरे अपन ही हं।" एक नजर राजू पर डालकर चम्पा आग बढ़ गई।

"हम भी चलना चाहिए सर। खाना बन गया होगा। मा प्रतीक्षा कर रही होगी।"

"ठीक है चलना चाहिए।" सुधाकर ने सहमति प्रकट की। "खाना खाकर बाध पर चलत हैं। तुम्हारे 'ज्ञानदीप' का समय भी तब तक हो जाएगा।"

दोनो घर पहुचे।

खाना बन चुका था।

हाथ-मुह धाकर दोनो खाना खाने बैठे।

"वाह! क्या बढिया खाना है ? मजा आ गया। बहुत दिना बाद भरपट खाया है।"

"मने तो कई बार कहा। आप यही क्या नही आ जाते ? यही खाइए यही रहिए। जगह की तो कोई कमी है नही।"

"माताजी जगह ता दिल म होनी चाहिए। बाकी सब ठीक है।"

"जब आप औरो के लिए इतना कर रहे हं नि स्वार्थ। तो थोड़ी सेवा हम भी कर लेने दीजिए।" वैसे भी अब आपके अलावा राजू की चिंता करने वाला है ही कौन ?"

"सुधाकर न इशारा किया आकाश की आर।"

"उसे देखा किसने है ?"

'मेरी दृष्टि से देखने की कोशिश करो तो ?"

"आपकी वजह से जीवन मे आशा की एक किरण जगी ह चरना मै ता सब आशाए छोड़ चुकी थी।"

"माताजी! हमारे मन मे हमारी आस्थाए और विश्वास दृढ हैं तो रास्ता कुछ न कुछ निकल ही आता है। ऊपर वाले क खेल बड निराले हैं। कब क्या करवा दे ? अब दखिए न इन दानो को मिलाने के लिए मुझे यहा आना पड़ा।"

"आप बाते ही करते रहिएगा या कुछ खाएगे भी। हलुआ वैसे ही रखा है। रायता अच्छा नही बना क्या ?"

"अरे नही। सभी तो स्वादिष्ट है। स्वीट डिश हलुआ सबसे बाद म। उसके बाद इन सबको हजम करने के लिए रायता।"

खाना खाने के बाद दोनो उठे।

सुधाकर माताजी को प्रणाम कर बाहर निकला।

राजू भी साथ था। रास्ते मे चलते-चलते सुधाकर ने राजू से पूछा—"राजू, तुम्ह तैरना तो अच्छी तरह आता होगा ?"

"स्वीमिंग म तीन बार मैडल जीत चुका हू सर, क्या पूछ रहे हैं आप ?"

"कल तुम्हारी एक और परीक्षा है। कल मैडल दूगा मैं।"

"कैसी प्रतियोगिता ?"

" "

"कौन-सी परीक्षा ?"

" "

"क्या करना होगा ?"

राजू क सभी प्रश्न अनुत्तरित रहे। अतिम प्रश्न के प्रत्युत्तर म सुधाकर ने प्रश्न किया—"क्या हम लकड़ी की छोटी नाव, जिसे तुम डूँडिया ही कहते हो न ? कही मिल जाएगी ?"

"हा हा, क्यो नहीं ? पास क तालाब चलावा मे सिंघाड़े का ठका है। वहा दो-तीन पड़ी हैं।"

"ये काम तो आसान हा गया। कल मगवा कर रखना।"

"अच्छा सर।"

"तुम 'ज्ञानदीप' सभालो। मैं गाव म हो आऊ।"

"काई विशेष काम ? म भी आऊ ? जरूरत हो तो ?"

"आज नही। अकेला ही ठीक हू। तुम्हारे बूढ़े-बच्चे पढ़ने आ गए होगे जाकर पढ़ाओ।"

× × ×

ठाकुर साहब हवेली के चौक मे बैठे हुक्का गुड़गुडा रहे थे। नौकर रामू उनके पाव दबा रहा था।

सुधाकर न प्रवेश किया।

"जय माताजी की ठाकुर साहब।"

"आइए सुधाकर जी। आज भी याचक बनकर ही आए हैं या ।"

"ऐसा ही समझ लीजिए। ब्राह्मण तो सदा याचक ही रहा है।"

"पर वामन अवतार की तरह इतना भी मत माग लना कि मैं दरिद्री हो जाऊ।"

"दरिद्री तो मनुष्य मन से होता है। लोग ऐसा ही मान लेते तो रतिदेव और

दानवीर कर्ण का नाम इतिहास म कोई नही जान पाता।"

"मैं इतना महान कहा हू, सुधाकर जी ?"

"कौन, कब किस छोटे-स काम करने स ही महान बन जाता है, कोई नहा जानता।"

रामू, चाय-पानी और नाश्ता लाकर टेबल पर सजा गया।

"लीजिए सुधाकर जी।" ठाकुर साहब ने जलपान की तरफ इशारा किया।

"इसकी क्या जरूरत थी ?"

"भई ये तो गृहलक्ष्मी का विभाग है जो चाह अदर से भिजवा दें, उनकी मर्जी।"

"खाना खाकर आया था कवल चाय ही लूगा।"

"आज इतना जल्दी खाना खा लिया ? रात दस-ग्यारह बजे तक खाने वाले हैं आप ?"

"आज काम खत्म होने पर राजू के घर तक चला गया था। माताजी नही मानी। बिना खाना खाए आने ही नही दिया।"

"आह! तो आप राजू के यहा से आ रहे हैं!" आवाज म व्यग्य था।

"जी! आपसे उसी बारे मे निवेदन करना चाहता था।"

"सुधाकर जी, आप हमारे गाव का भला करने आए हैं, उस नाते मैं आपका बहुत इज्जत करता हू। इतना ध्यान रखिए कि मैं अपने घरेलू मामले म किसी का दखल पसद नहा करता। यहा तक कि मेरी श्रीमती जी को भी आज्ञा नही है। समझ गए आप ?"

"मैं तो पहले से ही समझा हुआ हू। समय रहते आपको समझाना चाहता हू। कल आपको यह कहने का मौका तो नही मिले कि सुधाकर जी, आपने जानते-बूझते समय पर सचेत नहा किया।"

"आप कहना क्या चाहते हैं ?"

"कहना वही है जो सब-कुछ आप जानते हैं।"

"नया कुछ भी नहीं है ?"

"बस, इतना ही कहना चाहता हू कि आग को हम जितना अधिक दबाने की चेष्टा करगे उतनी ही अधिक ताकत से जोर मारेगी। मगर उस जोर मे विनाश का ही रूप होगा।"

"जो भी कहना है साफ-साफ कहिए। ठाकुर कभी किसी बात से डरता नहीं है।"

"आप समय रहते राजू और चम्पा बिटिया का विवाह कर दीजिए।"

"अगर राजू सपने म भी ऐसा सोचने की हिमाकत करता है तो मैं उसका खून कर दूगा।"

"क्या एक खून करने से आपको अभी तक तसल्ली नही हुई जो दूसरे का

खून और करना चाहते हैं ?"

"यह असभव है। चम्पा विधवा है और हमारे खानदान म ।"

"जमाना बहुत आगे निकल चुका है। ये गाव है मेवाड का एक पिछड़ा हुआ आदिवासी क्षेत्र ।"

"क्या चम्पा और राजू की सगाई का एलान आपने बचपन मे ही नही कर दिया था ? फिर आप जबान से पलट गए और आपने दूसरी जगह विवाह कर दिया।" सुधाकर याद दिलाते हुए कह बैठा—"क्या परिणाम निकला दो प्रेमियो के दिलो को तोड़कर ?"

" "

"रिश्ता स्तर का था विधवापन का।"

"सीमा से आगे मत बढ़ो।"

"ठाकुर सा! इस बुढ़ापे मे झूठी शान मे कब तक जीत रहेगे ? आपकी जिद को देखते हुए दोनो घर से भाग कर शादा कर लेगे तब ? दोना कल आत्म हत्या कर बैठे तब ? दोना जहर खा गए— पेड़ पर लटक गए या कुए-बावड़ी मे डूब गए फिर ? तब क्या कर पाएगे ?"

"आप मुझ खामख्वाह डरा रहे है। ऐसा वे हर्गिज नही करेगे।"

"ऐसा कर लिया तो ? ये इतनी बडी हवेली। सैकडा बीघा जमीन, क्या होगा सबका ? किस काम की ?"

"मेरी चम्पा बेटी ऐसा कभी नही करेगी ?"

"वह कर सकती है ठाकुर साहब। जरूर कर सकती है ?" अदर से ठकुराइन का स्वर था।

"ये तुम कह रही हो, ठकुराइन ?"

"हा मैं कह रही हू। मैं एक औरत हू। औरत के दिल की बात औरत ही समझ सकता है। फिर मा हान के नाते चम्पा का मुझसे अधिक कौन जानता है ?"

"तुम सब लोग आखिर चाहत क्या हो ?"

"आपकी स्वीकृति।"

"मगर ?"

"इज्जत अपनी रख ल आप। पर ठाकुर खानदान की इज्जत मिट्टी म मिल जाए तब भी लोग हमारे मुह पर क्या कालिख नही पोतगे ?"

"दो कौड़ी के आदमी क्या हमे जलील करेगे ? मं एक-एक को देख लूगा सुधाकर जी।"

"ऐसा कुछ नहो होगा।"

'ये सब आपका भ्रम है। आप ये क्या नहीं सोचते कि आप एक सुधारवादी काम का शुरुआत अपन घर स करने जा रहे हैं ? एक अनुपम उदाहरण होगा।" सुधाकर ने अपनी गर्दन ठकुराइन की ओर मोड़ दी। "बाल-विधवा का विवाह

करवाकर अपनी बटी को सुखी गृहस्थी दग आप लोग।''

''मान लो कहीं कुछ आगा-पीछा हो गया तो वह बदनामी इससे बढ़कर ता नहीं होगी।'' ठकुराइन न दूर की बात सोची और आग बढ़कर सुधाकर और ठाकुर के बीच आ गई।

''सरकार भी आपक कदम की सराहना करेगी।''

''य ता ठीक ह कि विवाहिता होने क बाद भी राजू उसी इज्जत स चम्पा का अपना रहा है। वर्ना आप चाह भा ता कौन चम्पा का हाथ पकड़गा ?'' ठकुराइन ने टीप की आर सुधाकर की ओर ताका।

''आपकी मृत्यु क बाद चम्पा की रक्षा कान करेगा ? किसके सहारे जिएगी ? कुछ सोचा है ?''

''वह सब ठीक है मगर मरे जीते जी यह सभव नहा हागा।''

''ठीक है मैंने तो एक विचार दिया है। सोचिए ? म तो महीने दो महीना का मेहमान हू, चला जाऊगा। एक सुखद विचार आया था वह दिया आपको। वैसे आपके मामल मे हाता कान हू।''

''सुधाकर तुम जब भी आते हो शूल ही दे जाते हो। अभा चल जाओ यहा से।''

× × ×

सर सिंघाडे निकालने वाली नाव आ गई हैं। क्या योजना है ?''

''राजू, आज जैसे ही लच की घटी बजे, तुम मुझे मिलना। लकमा को भी कहना कि मुझसे मिल ले।''

इतने म भीमा गमेती आया। हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। कहने लगा—''साब होकम। म्हारा इजन तालाब मे डूब ग्यो। म्हू गरीब आदमी कठा सू किश्ता भरूगा। कठा सू म्हारा खेता म पाणी पिलाऊगा। म्हू तो बस तालाब मे डूब कर मर जाऊगा।'' और रोते-रोते विलाप करने लगा।

''भीमा भाई मरद आदमी हो। रोने से कोई काम चलता है क्या ?''

''म्हारे म्हारो इजन छावे। आज रे आज ही छावे। म्हू अबे नी रुक सकू ?''

''भीमा, हौसला रख। हम काशिश कर रहे हैं, तेरा इजन निकलवा देंगे।''

'होकम म्हने क्यू बहलाओ ? भर्‌या समदर मू कईं इजन निकले ?''

''दखो कोशिश करने म क्या हर्ज हे।''

''एक बार हमारे प्रयत्न स निकलता है तो ठीक वर्ना उसके बाद सोचेंगे कि क्या हो सकता है ? कहा से किसे बुलाना पड़े ?''

'म्हाने तो म्हारो इजन छावे होकम। घरवाली कूटेगा म्हाने ?''

सुनने वाले सब हस पडे।

भीमा की औरत वास्तव म है बहुत तेज। कभी-कभी भीमा पर हाथ-सफाई भी कर देती हे। सारा गाव यह बात जानता है। अत भीमा भी इसे स्वीकार करते

कुछ नही सोच पाया।

"देखो भीमा अब ये नाटक बद करो। घर जाओ। अब शाम को आना। अभी हमे हमारा काम करने दो।" सुधाकर ने उसे सामने से हट जाने का इशारा किया।

पर, भीमा ने फिर अपना टेप चालू कर दिया। "साब होकम! म्हारी सुणो हाकम! म्हू गरीब आदमी। वर्ना माते मर जाऊगा। म्हारा इजन कूण देगा रे । अणी गरीब को कई वेगा रे ।"

लाग आते, थाड़ी देर भीमा की तरफ देखते मजे लते और चले जात।

"अबार तो आपरे केवा सू जाऊ। साजो पाछा आऊगा। म्हारो इजन लेने जाऊगा। इजन नी दीगा ता पया देणा पड़ेगा। गरीब रा इजन नी खावा दूगा। म्हारी मत मारी गई सा किराया पर इजन लायो। अणी देवला रा सत्यानाश जाएगा। यो देवला ही आयो हो। देवला रे । ऐ देवला म्हारो इजन लाव र देवला।"

"देख, भीमा! म्हारा सू उलझावा सू काम नी चाले। म्ह थारो भला कीधो। छ महीना सू थारा इजन बेकार हो। थने किराया देवायो, म्हने कई मल्यो ? किरायो कमायो थे। अब हाका मती कर। बाबूजी कोशिश करेगा। थारा इजन थने दागा। जा अबे। घरे जा। थारी घरवाली ने म्हू हमजाई दूगा।"

"चाल म्हारा हाथे घरे चाल। वन हमजीवी नी ता वा धावणा बजावगा।"

"मरदानगी राख। थोड़ो कड़क रै। अतरो कई दरपे लुगाई सू ?"

लच की घटी बजी।

सब अपने-अपन काम छोड़कर अपनी-अपनी रोटिया ले पेड़ा की छाव मे चले गए।

लकमा कन्ना राजू आ गए। सुधाकर ने याजना समझाई।

तीना कपड़े खोल एक-एक खजूर का नाव डूडिया ले बाध मे उतरे। तीना का घूमत देख जो युवा खाना खा चुके थे वे भी कूद पडे। कोई इस पार से उस पर। काई इन नावो के इर्द-गिर्द। देखते-देखते कुछ गरासिय लड़क भी बाध म कूद पड़े।

गरासिय नदिया की गहराई म डूब कर अदर से हाथ मे मछलिया पकडकर ले आते ह।

तैरने मे बहुत ही एक्सपर्ट।

कई तो देर तक सास रोककर गहराई म गोते लगाने म माहिर।

कुछ लडक तैरते-तैरते सुधाकर क समीप आए।

सुधाकर दोना हाथो मे नाव खेता हुआ कुए के निशान पर पहुचा। एक ने पूछा—"बाबू जी, क्या ढूढ रहे हो ?"

"कुए का पता ठिकाना।"

"कुआ तो यही होना चाहिए बाबूजी।"

"हम कुए पर रखा इजन निकालना ह। इजन कहा पडा है, उस जगह को

ढूढ़ना है।"

"बाबूजी, अभी पता लगाते हैं।"

"ठहरो मैं भी आ रहा हू।"

"नही साहब हाकम! आप पानी म मत कूदना। सबसे ज्यादा गहरा यहीं है।

"आप बस नाव म बैठ रह, यही पर। हम जब अदर से थके हुए आएगे तो नाव का सहारा मिल जाएगा।"

देखते-देखते छपाक-छपाक आठ दस लडके कूद पड़े।

एक ने ऊपर आकर कहा—"ठीक यहा है। मेरा पाव अटका है।"

अब सभी तैरने वाले यही केद्रित हो गए।

"अब इजन को निकाले कैसे ?"

लकमा ने सुझाव दिया—"साब होकम! तीन कुदालो का अलग-अलग तरफ मुह करक बाध दग ता आकडा बन जाएगी। इस आकड़ी को इजन क पाइप म बाध दगे। फिर रस्से को किनारे खड़ी सारी लेवर खाचेगी।

सुधाकर ने कहा—"लकमा का यह सुझाव बहुत अच्छा है। गाव म जाकर तीन कुदाले ले आओ। बड़ा-से-बड़ा और मजबूत रस्सा भी लाना। कुछ रस्से ऊपर चौकी पर पड़े हं। उन्ह भी ले आओ। राजू, तुम दूसरी कमान सभालोगे।"

"मुझे क्या करना होगा सर ?"

"तुम मोटे मजबूत तार का घेरा बनाकर टकी के ऊपर लगे पाइप के ऊपर घेरे का डालकर नीचे पाइप के सहारे लाओगे। उसक साथ बहुत बडा रस्सा बधा होगा। उस घेरे को एक नाव के सहारे आगे बढ़ाते-बढ़ाते इजन के मुह तक ले जाकर फसाना होगा। तुम नाव मे रस्सा पकडे ऊपर रहोगे। कुछ गरासिये लड़के नाचे घेरे का पाइप म जाम कर दगे।"

"एक दल कुल्हाडिया वाले लगर के रस्से को खीचेगा। दूसरा दल तुम्हारे वाले रस्से को खीचेगा। नीचे पानी म गरासिया दल इजन को खिसकाएगा।"

"ठीक है सर! कमाल का आइडिया है।"

सभी व्यवस्थाए हो गईं।

एक-एक तरफ पचास-पचास व्यक्तिया का दल।

सुधाकर के कहते ही जोर आजमाइश शुरू।

थोडी देर बाद लगा कि इजन खिसका।

पचास आदमिया का एक दल पाइप का खीचन लगा। जहा इतनी जन-शक्ति लगी हो भला एक वाटर इजन की क्या मजाल जो नही खिसके।

हाथी की चाल से इजन खिसकना शुरू हुआ। सुधाकर और राजू नाव मे साथ-साथ व्यवस्था सभाले हुए थे।

अचानक एक पार्टी का रस्सा टूट गया। इजन की गति वही स्थिर हो गई। फिर गरासिया युवा डुबकी लगा रस्से का टूटा सिरा निकाल लाए। ऊपर से दूसरा

सिरा पकड़ा। दोनो मे नागपाश की तरह कसकर गाठ लगाईं। फिर रस्सा खीच प्रतियोगिता शुरू।

इजन न फिर गति पकड़ी। काफी दूर तक इजन खिसका। फिर अटक गया। इतना जोर लगने क बाद भी इजन हिलने का काम नही ले रहा था।

सुधाकर को ध्यान आया। इस जगह से पहाड़ी शुरू होती है।

हो सकता है, ढावे के नीचे इजन फस गया हो।

सभी लाग थक चुके थे। लच ऑवर्स भी खतम हो गया था।

सुधाकर ने घापणा की—"बाकी काम पाच बजे के बाद। जो चाहे रुक जाए उन्हे चाय नाश्ता मिलेगा।"

सुधाकर, राजू, लकमा, केशा बा, देवा सभी चौकी म आए।

इन लोगा ने खाना नहा खाया था। काफी देर से पानी मे रहने से ठड लग रही थी। सबने पहले चाय पी। थाड़ी देर बाद खाना खाया।

अव सोचना शुरू किया कि इजन को ऊपर कैसे लाया जाए ?

लकमा ने मौके की राय दी—"साब होकम। बड़ी-बड़ी सब्बलो स इजन के ऊपर से ढावे को सब्बला से खोदना शुरू करे। कुछ जने इजन को खीचगे। कुछ पानी म रहकर सब्बला से मिट्टी काटगे। धीरे-धीरे मिट्टी कटने से रपट बन जाएगी। फिर जोर लगाने पर रपट से इजन खीचना आसान रहेगा।

सबका लकमा की राय पसद आई। शाम हुई पाच बजे की घटी बजी। फिर गरासिया आ गए। उन्ह स्कीम समझाई। किनारा पर कुछ तमाशबीन भी इकट्ठे हो गए।

गरासियो ने अद्‌भुत साहस का परिचय दिया। जैसे ही सब्बला से मिट्टी कटी, इजन पूर्व की तरह ऊपर आना शुरू। देखते-देखते इजन पानी के बाहर आ गया। खुशी की लहर दौड़ गई। परभू न पाछ-पाछ कर हैंडल लगाया। इजन चालू।

भीड़ मे भीमा भी पत्नी सहित खड़ा था।

सुधाकर ने कहा—"भीमा, इजन सभाल। अब तो ओवरा बाध मे डूबकर नही मरेगा ? अब तो तरी लुगाई धोवणा लेकर नही कूटेगी ?"

सभी खिलखिलाकर हस पडे।

भीमा की लुगाई ने कहा—

"क्यो जी मैंन कब आप पर धोवणा बजाया ? मुफ्त म क्यू बदनाम करते हा।"

"बजाया नही तो क्या ? बजाने की कहती तो है ?"

"वाह मैं तो प्यार म कहती हू। अदर की बात जग जाहिर क्यू कर दी, जी ?"

फिर सब खिलखिलाए।

सुधाकर ने कहा—"भीमा भाई, सुबह मैने कहा था न कि शाम को अपना

इजन ले जाना। हमारा वादा पूरा हुआ। जिंदगी मे हमशा याद रखो हिम्मत और सूझ-बूझ से सब काम सभव है। हमार डिपार्टमट ने भी उम्मीद छोड़ दी थी। यही कहा मई-जून म जब तालाब खाली होगा, तब देखगे। मगर इतने आदमिया के श्रम और सूझ से मुश्किल काम भी आसान हो गया।"

मानना पड़ेगा गरासिया कौम बड़े जीवट की कौम है। आज का श्रय इन्हा लागा को जाता है। तब तक ऊपर से परभू की आवाज आई।

"साब होकम। गरम-गरम चाय और पकौड़े तयार हैं।"

सभी ऊपर पहुचे।

सुधाकर राजू और लकमा गीले कपड़े बदलकर चाय पीने बैठे। तब तक हुड़ीलाल इजन से बधे लगर को खोल कुदालियो को अलग-अलग करने लगा।

सुधाकर ने कहा—"हुड़ीलाल। ये जिस जिसकी हैं, उन्ह आज ही लौटाना। पहले गीले कपड़े बदल। ठड लग जाएगी। परभू, हुड़ीलाल का भी चाय-पकाड़े दे।"

राजू ने कहा—"सर जिस दिन आपने डूडिये मगवाने की बात कही। मैं सोच भी नही सकता था कि मामूली डूडिये म बैठकर इतने बड़ खतरनाक प्रोजेक्ट को लड़का के साथ खल-खल मे इतना बड़ा काम करवा दगे। कमाल है आपका दिमाग।"

"क्या करता राजू ? अदर की बात है।" विभाग ने साफ कह दिया—"आपने समय रहते इजन ऊपर नही किया आप जान। विभाग किसी तरह की कोई मदद नही कर सकता। अब तुम्ही बताओ मैं क्या करता ?"

"और आज सुबह भीमा ने भी तो चीख-चीख कर आसमान सर पर उठा लिया था। आपने जब उसे कहा कि शाम को इजन ले जाना चीखने की जरूरत नही। मैं तब ही सोच रहा था कि शाम का इजन दगे कहा स ?"

"राजू जीवन मे मनुष्य का आत्मविश्वास ही सबसे बड़ी पूजी है। वह है तो हमारे लिए कोई काम कठिन नहा। वह तुमने आज प्रत्यक्ष देख लिया।"

"मैं चाहता हू कि यही आत्मविश्वास तुममे और चम्पा म हो। अगर रहा तो 'ज्ञानदीप' एक दिन प्रात का ही नहा दश म अपना नाम करगी।"

सुधाकर आज पिछले छ महीन की सोच रहा है। कब कैसे दिनेश से बाता ही बाता मे पत्नी न कह दिया था—'आजकल इनका मूड ठीक नहीं रहता। खाए-खोए स रहते हैं। न कुछ बात करते हैं, न ढग से खाते-पीत है। लेखन भी बद है।'

दिनेश ने कहा—"ठीक है। मैं बात करता हू। आप घर से फ्री तो कर दगी न ?"

तरला ने कहा—"फ्री क्यू नही। जब ये मानसिक रूप से यहा ह नही तो फिर जहा भी इनका मन लगे ये स्वस्थ रहे। मुझ खुशी होगी।"

"भाभीजी, सच कहू, मुझे अभी ऐसे ही व्यक्ति की सख्त जरूरत है।" दिनेश ने उत्तर दिया। "ओवरा गाव का बाध गति ही नहा पकड़ता। वहा की राजनीति किसी का टिकने ही नहीं देती। अगर सुधाकर जैसा आदमी मुझे सहयोग देगा तो हम एक बहुत बड़े प्रोजेक्ट को सफल कर सकते हैं।"

तरला चुप ही रही। उस कुछ और सुनने की अपेक्षा थी दिनेश से।

"धन अवश्य ही काम के अनुपात म नहीं के बराबर है। मगर नाम खूब हा जाएगा।"

"दिनेश जी पैसा ता जीवन का एक साधन है। साध्य तो नही।" तरला ने कहा—"इनके लिए अभी मन लगाना सबसे बड़ा काम ह। बड़ी बेटी के विवाह स मुक्त हुए हैं। उसके साथ इनका जुड़ाव जबर्दस्त है। उसकी कमी इन्ह बहुत खलती ह। इनके आत्मकेन्द्रित होने का यह भी एक बड़ा कारण है। कुछ दिन व्यस्त रहग तो अभ्यस्त हो जाएगे।"

दिनेश ने कहा—"ठीक है मैं उससे बात करूगा। अगर वह 'हा' कर देता है, तो मुझ पर बहुत बड़ा अहसान हागा।"

"अगर आप उन्ह स्वस्थ्य चित्त आर प्रसन्न कर दगे तो मुझ पर बहुत बड़ा अहसान हागा।" तरला ने कहा—"कई दिना से आदिवासी फलक पर कुछ लिखना चाहते हैं। बिना उनम रहे कल्पना से तो लिखेगे नही। उनम रहने का इतना अच्छा मौका कब मिलेगा ?"

"कब तय हुआ और कैस चला आया ? सुधाकर ओबरा बाध की पाल पर बैठा है—"आज इनक साथ रहकर इनके दु ख-दर्द को अगीकार कर लिया है।"

जाने से पहले सारे गाव को खुशियो से भर देना चाहता है। इनम जीने की एक लालसा भर दना चाहता है। अब तक जो जिंदगी को ढो रहे हैं उन्ह जिंदगी बाझ नहीं लगे, एसा कर देना चाहता है सुधाकर।

मनुष्य जीवन तो भगवान की श्रेष्ठतम कृति है। उसकी श्रेष्ठता उन्हे समझा देना चाहता है। सारे गाव के लोगो को आपसी वैर भाव भुलाकर सुख-चन स जीना सिखा दना चाहता है—सुधाकर!!

दुनिया मे हम आए हैं तो हमारे जीवन का एक मकसद तो होना चाहिए। अर्थहीन जीवन तो गदगी मे लेटे सुअर के समान है। खाकर आलसी की तरह पडे रहने वाली निष्काम जिंदगी से क्या मतलब—यही साच था सुधाकर का।

दूर-दूर तक पानी-ही-पानी फैल रहा है। पानी पहाड़ा की गोलाई के साथ-साथ कही दूर अन्दर तक चला गया है। कही पेड़ा के डूबे सिरे नजर आ रहे हं तो कहा पड़ा के चरण स्पर्श कर रहा है। पहाड़ो म चरने वाल पशुओ का चिर परिचित रास्ता खो गया है। पशु जैसे ही वहा पहुचते हैं पानी देखकर ठिठक जाते हैं। फिर ऊपर की ओर लौटते हैं। नया रास्ता ढूढ़ते हैं। आगे बढ़ जाते हैं।

शाम को जैसे ही सारे मजदूर चले जाते हैं, सुधाकर नीचे उतर आता है। डूडिया नाव को पानी म खीचता है और अकेले ही बाध के किनारे-किनारे घूमता है। कितनी शाति मिलती है उसे।

इस पानी को भरने के लिए कितनी दिन-रात परेशानिया झेली हैं। यह उसके श्रम की कमाई है।

सैकड़ो के श्रम का पसीना निर्मल-जल म बदला है और यह जल जिस दिन गाव के खेतो का चरण स्पर्श करेगा, किसान निहाल हो जाएगा। उसे लगेगा जैसे जल नही घी बहकर आया है उसके खेत मे।

आज उसे घर की बहुत याद आ रही है। तरला ने कैसे इतने दिन उसकी अनुपस्थिति म निकाले है। बार-बार कहलवाकर थक गई मगर वह जा नहीं पाया। यहा तो हर दिन समस्याआ का अम्बार लग जाता है। सुलझा-सुलझा कर परशान हो जाता है। कभा मजदूरा के आपसी झगड़े। कभी ब्राह्मण-मेघवाल का झगड़ा।

बार-बार समझाता है वह। मनुष्य-मनुष्य म कोई भेद नही है। हम सब एक ही मनु की सन्तान हैं। समाज ने केवल कर्म बाटा है। कर्म के अनुसार ही जातिया बन गईं और फिर ऊच-नीच के चक्कर शुरू कर दिए आभिजात्य वर्ग न। उन्हे सेवक चाहिए थे गुलामी क लिए। दमन और शोषण से उन्ह दबाकर रखा गया। वे अपढ रखे गए ताकि उनकी गुलामी कर सके।

पानी मे छपाक की आवाज हुई। बगुला चाच म किसी जल-जन्तु को उठाकर ले गया।

उसके विचार टूटे। आज मनुष्य मे तो यही बगुला— गुण आ गया है। मौका लगते ही गरीब की गर्दन दबोचने म दर नहा करत।

दवला की गाड़ा कुर्की करने उस दिन सुबह-हा-सुबह सेल अमीन क्या टपक पडता ? अमरा की पानी सप्लाई की गाडी देख कुर्की वाला ठीक इसी बगुले की तरह ही तो लपका था—'ये रही गाडी सेल अमीन साब, कर लीजिए कुर्क। इस बगुले और उस बनिये म क्या अन्तर हे ? पैसा-पैसा-पैसा। क्या होगा इतने पैसे को कहा ले जाओगे ? फिर पाप क्यो बटोर रहे हो भाई ?'

पर किसे कहे ? क्या कह ?

पूरा अर्थ-तत्र ही ऐसा है। इग्लैंड वालो को पैसा चाहिए था। सात समदर पार आए थे ढूढते-ढूढते ईस्ट इण्डिया कम्पनी लकर। भारत एक उपजाऊ बाजार है जहा खूब पैसा कमा सकते हैं।

देखते-देखते सोने की चिड़िया उड गई। अब सबसे धनी अमेरिका को भारत का बाजार चाहिए।

जापान को बाजार चाहिए।

मनुष्य किसी को नही चाहिए।

मानवता किसी को नही चाहिए।

आदमी के दु ख किसी का नही चाहिए।

आख का आसू पोछने का समय किसी के पास नही।

× × ×

राजू खेत म फार्म हाऊस की छत पर बैठा हुआ था। नीचे से एक अधेड़ महिला ने आवाज दी—"बेटा। क्या ओवरा बाध तक जाने का यही रास्ता जाता है ?"

राजू ने कहा—"हा जाता तो वहा है। मगर आपका वहा किसके पास जाना है ?"

"सुधाकर जी वहीं काम करते हैं न ?"

"हा-हा वही हैं ?"

"आप उन्ह जानते हैं ?"

"अरे आप जानने की बात कर रही हैं। गाव का बच्चा-बच्चा जानता है।"

"ठहरिए मैं नीचे आ रहा हू। मैं पहुचा दूगा।"

"आप तो रास्ता बता दीजिए। बेकार मे क्यू तकलीफ करते हैं ?"

"अच्छा।" कहकर महिला चलने लगी।

राजू ने तत्परता से उस टोकते हुए कहा।

"अरे आप तकलीफ कह रही हैं। यह तो मरा सौभाग्य होगा।" राजू ने कुछ ताड़ते हुए कहा—"सर, सुबह से ही आपको याद कर रहे थे। तीन-चार दिन से आपके बारे म ही कह रह थ। थोडा भी टाइम मिला तो घर जाना चाहता हू। पर टाइम ओबरा बाध की कुडली में है ही नही। राज नई-नई मुसीबते।"

अधेड़ महिला उसकी बाते सुनकर रुक गई।

"आप मुझे जानते हैं ?"

"जी, नही।"

"फिर यह सब।" उसने पलटकर कहा—"क्या कहे जा रहे थे ?"

"आपके प्रश्न पूछने के ढग से अदाज भर था।"

"गलत नही था अदाज।"

"आटी। आप एक क्षण रुक।" राजू ने अपनी माताजी को आवाज दी—"माताजी। बाहर तो आना देखो कौन आया है।"

फिर पलट कर अधेड़ महिला ने विनम्रता पूर्वक पूछा—

"तुम्हारा नाम ही राजू है न बेटे ?"

"अरे वाह। आपने कैसे जाना ?"

"उन्होंने तुम्हारे बारे मे जैसा बताया था उमसे ही अन्दाज लगाया कि तुम्ही हो।"

"क्या आपसे कभी उन्होंने चर्चा की थी ?"

"हा, पर ।"

"पर क्या, आटी ?"

''मैं बहुत परेशान थी उनके स्वास्थ्य की चिंता से। मगर जबसे जाना कि
रे जैसे शुभचिंतक उनके पास हैं, तो मुझे चिंता करने की जरूरत नहीं हुई।''
''मगर आटी वे सेवा का अवसर ही कहा देते हैं ? उन्हे मना-मना कर थक
है मगर मजाल है, जो मान। लो, अपना घर यही है आटी।''
राजू की माताजी बाहर आ चुकी थी। उन्होंने देखा कि उनका बेटा राजू किसी
ड महिला के साथ बडे आदर के साथ बात करते हुए घर के द्वार पर आ
श है।
''मिलो आटी से जिनका तुम कई दिना से इतजार कर रही थी माताजी ।''
''अरे सुधारकर जी की पत्नी हैं न ?''
''अरे। मा कमाल है। तुमने कैसे जान लिया ?''
''सुधाकर जी जैसे व्यक्ति की ऐसी ही पत्नी हो सकती हे। जो व्यक्ति खुद
र हो, भला वह अपनी पत्नी को कितनी अच्छी बना देगा।''
राजू की माताजी उन्हे अदर ले आईं और आदरपूर्वक निवेदन किया—''आइए
आराम से बैठिए। अपना ही घर समझिए। सुधाकर जी को कह-कहकर थक
मैं तो। कुछ दिनो क लिए ही बुलवा ला। आप नहा जा सकते, तो वे आ जाए।
दिन बदलाव भा मिलेगा और चैन भी।''
तब तक राजू पीतल के चमकते गिलास मे पानी ले आया था।
''पानी पीए फ्रेश हो लीजिए। अब अधेरे मे वहा जाना ठीक नहीं।''
''आज यही रुकना होगा। अभी राजू जाएगा बाबूजी को यही बुला लाएगा।
बार कहा इतना बडा मकान है, यही चले आए पर वे सुनते कहा हैं।'' राजू
मा के शब्दा मे प्यारा उलाहना था—''तर्क ऐसा दगे जिसका हमारे पास उत्तर
नहीं होगा।''
''माताजी प्रणाम।''
''प्रणाम।'' अरे आज अचानक यहा ?
''क्यू नही आ सकता ?''
''अरे। ये मैंन कब कहा ?''
''राजू कहा है, कुछ जरूरी बात करना है ?''
''एक विशिष मेहमान आए हैं।'' राजू की मा ने उल्लास भरे स्वर मे
—''उनके लिए नाश्ता लाने गया है अभी आता ही हागा।''
''विशेष मेहमान ? कहा से आए ?''
''उदयपुर से।''
' मगर आपने कहा था कि उदयपुर मे तो कोई रिश्तेदार ही नही है ?''
''कहा था तब नही थे। अब हैं। बाथरूम म हैं। राजू की मा ने आश्वस्त
—''आने दो परिचय तभी करवाऊगी। '
बाथरूम का दरवाजा खुला।

तरला को देखकर सुधाकर अवाक्!

"अरे! तुम!! कब आ गई ?"

"लास्ट बस से। आज मन नहीं लग रहा था। अचानक निर्णय किया और चली आई।"

"कहलवा देती, बस स्टैण्ड आ जाता। यहा तक कैसे पहुच गई ?"

"राजू खेत पर मिल गया। उसी से बाध का रास्ता पूछ रही थी।"

"अच्छा हुआ तुम ठीक वक्त पर आ गई। कल तुम्हारी सख्त जरूरत रहेगी।"

"वाह! बहू को आए अभी देर नही हुई और काम बता दिया! नही, ये दस दिन कुछ नही करेगी। आराम के अलावा।"

"आप ठीक कह रही हैं, माताजी ! इन्हे बाहर कहीं नही जाना है।" सुधाकर ने कहा—"ड्यूटी यही घर मे रहने की है।"

"ऐसा क्या है ? कौन-सी जरूरत आ पड़ी ?"

"आपकी देखभाल करने की।"

"अरे वाह! मुझे कहा जरूरत है! एकदम भली चगी हू।"

"फिर भी बुजुर्गों की सेवा करना हमारा फर्ज है कि नहीं ?"

"किसको फर्ज की याद दिला रहे हैं, सर ?"

राजू बाजार से लौट आया था।

सुधाकर की आवाज सुनकर राजू रसोईघर की ओर न जाकर सुधाकर के पास आ खड़ा हुआ।

"क्या बात है! आटी के पहुचने की खुशबू आ गई क्या जो दौड़े चले आए सर ।"

"दिल को दिल से राहत कहते हैं इसे।" सुधाकर बोला—"टेलीपैथी यही है।"

"मगर अचानक आप प्रकट कैसे हो गए ?"

"बाहर चल, समझाता हू।"

"माताजी! खाना बनेगा तब तक हम लौटकर आते हैं ?"

"जल्दी ही आना। उस दिन की तरह देर मत करना।"

"नही माताजी हम ज्यादा दूर नहीं जाएगे। पास ही हैं।"

'लो माताजी आप हटिए। खाना मैं बना देती हू।"

"अरे तीन आदमियो के खाने मे क्या देर लगती है ? सफर से आई हो बहू। थकी भी होगी!"

"एक डेढ़ घंटे के सफर मे क्या थकना ?" फिर तरला ने कहा—"थकान तो मन की होती है।"

"हा बेटी। तुम ठीक कहती हो। मन से बहुत थक गई हू।"

जब दो औरत मिलती हैं, तो हृदय के बन्ध खुल जाते हैं अपरिचय के बियावान

गुजरते ही अन्दर की घुटन तृष्णा, अपक्षा दर्द, सवदना, सभी कुछ वाहर आ जाता है।

रसोई के बाहर बाजोट डालकर राजू की माताजी ने पहले तरला का विठा दिया। फिर पूछा—"चाय पीआगी, वटी ?"

"मैं बना लूगी माताजी ?"

"अरे तुम क्या बनाआगी। मं हू न!"

"पर, जब बेटी कहा है ता रसाड़े म घुस्न का हक भी दे दाजिए न।"

"अच्छा, मैं हारी, वेटी। चला तुम अपनी चाय बना ला।"

"अपनी मतलब।"

"हा, अपनी।" राजू की माताजी बोला—"मैं ता चाय तुम्हारे पिताजी गए हैं तब तक ती शुरू नही हो पाई और शुरू हुई भी ता अब बिल्कुल बद हा गई है।"

"आप वुछ उदास हा गई, माताजी।" तरला ने उनकी बाह थामकर कहा—"क्या वात है ? वेटी कहा न मुझ ? आप और कुछ नहा कहगी क्या ?"

राजू की माताजी ने आचल से अपन आसू पाछते हुए कहा।

"सोच-सोचकर ही मन दु खी हो जाता है। एक ही बेटा है, उसकी भी गृहस्थी नही वसा पाई हू। कितनी अभागिन हू। पिता क घर म सुख नही मिला। ससुराल आई। घर-परिवार सब अच्छा था मगर भाग्य किसने देखा ?" आखो म घिर आई गगा-जमुना को राक पाना राजू की मा के वश म न था—"हरामी लागा ने राजू क सिर स बाप का साया छीन लिया। खेत जमीन सब हड़प ली।"

"उफफ "

"मं अकेली अभागिन किस-किस से लडती ? राजू को लकर यहा चली आई। पाला-पासा बड़ा किया। साचा बहू आएगी तो घर बसाकर तीर्थ चली जाऊगी परतु लगता है मर भाग्य म कहा है सब ?"

"क्यू ऐसा क्या हो गया ? इसके लिए अभी तक बहू नही ढूढी।"

"क्या कहू, बहू ? एसे भाग कहा लिखा लाई ?" आगे उन्हाने स्पष्ट किया—"बचपन म जिसके साथ खेला स्कूल कॉलेज गया सुख-दु ख के सपने बाटे साथ जीने-मरने की कसम खाई वही न मिल सकी तो क्या कर ?"

"लडकी ने धोखा दे दिया ?"

"वह तो बेचारी जान छिडकती है। धोखा लड़की के बाप ने दिया। उसका विवाह कही ऊचा घराना दखकर कर दिया। सुहागरात को ही उसके पति को साप ने डस लिया। जैसी कुआरी गई थी वसी ही लौट आई, अपने माथे पर सात फरा का दाग लगाकर।"

"फिर ?"

"फिर क्या वसी ही घुट रही हे घर की चहार दीवारी मे।"

"राजू ले क्यू नही आता उस बहू बनाकर ?"

"राजू तो तैयार है। मैंने भी बेटे की खुशी की खातिर आज्ञा दे दी। मगर चम्पा का बाप विधवा-विवाह के लिए तैयार नही।"

"इसम तो उनकी बेटी की ही भलाई है। ऐसा क्यू नही सोचते ?"

"हम किस दिन काम आएगे, माताजी ?"

"सुधाकर बेटा लगा हुआ है, कुत्ते की दुम सीधी करने मे।" दूर ताकते हुए वे बोली—"पता नही कब सफल होगा ?"

"अब सफलता मे देर नही है माताजी। तरला आ गई है न अब काम हुआ ही समझो।"

"ऐसा ही था तो पहले ही बुला लेती। मुझे क्या पता ?"

राजू और सुधाकर लौटकर आ गए।

"हम खाना खाते ही 'ज्ञानदीप' जाएगे। तरला भी साथ जाएगी।"

"अरे! उसे कल ले जाना, आज क्या ?"

"नहीं माताजी आज ही जाना जरूरी है। कल से अपने ही पास रखना।"

× × ×

"चम्पा । देखो कौन आया है ?"

"आप आटी हैं न ?"

"हा वही आटी जिनके लिए तुम कई बार पूछ चुकी हो ?"

"अच्छा हुआ आप आ गईं, वर्ना मुझे उदयपुर आपके पास आना पडता।"

"वह तो और भी अच्छा होता। कब आ रही हो उदयपुर ?"

"जब भी सर ले चलेंगे। अभी ये बताइए कि मुझे सेंटर पर निटिंग क्लासेज मे काम करवाना है आटी।" चम्पा ने अपनी समस्या सामने रख दी—"सुना है आप दो हजार महिलाओ को प्रशिक्षण दे चुकी हैं। कमाल है।"

"हा इससे भी ज्यादा।" तरला ने सगर्व कहा—"आज मुझे गर्व है कि सभी महिलाओ ने अपने-अपने व्यवसाय शुरू कर दिए हैं। तीन-चार महीनो म पद्रह-बीस हजार रुपये कमाना उनके लिए आज मामूली बात है।

"क्या यह सभव है आटी ? यहा तो अध्यापक को भी इतना नही मिलता ।"

"साल-भर अनट्रेण्ड टीचर की नौकरी करने से घर बैठे तीन माह मे उनसे कई गुना कमाना मामूली बात है।"

"मैं अभी एक स्कूल से ऑर्डर लाई हू। दो सौ स्वेटर बनाने हैं। क्या करू ?"

"देखो इस काम का सबसे बड़ा आराम ही यही है कि ट्रेनिंग के साथ हम प्रोडक्शन भी ले सकते हैं ?"

"अरे वाह! तब तो और भी अच्छा।"

"औरतो म सीखने की लगन होना सबसे जरूरी है।"

"वह तो आप इनसे मिलकर ही जान लेगी।"

"मैंने ऐसी-ऐसी औरतो को भी ट्रेड कर दिया जिन्हे अक्षर ज्ञान भी नही था।"

"उनक लिए क्या किया था आपने।" चम्पा की जिज्ञासा वढ़ी—"मुझे विश्वास नहीं हो रहा है।"

"मैंने ऐसी औरता को भी तैयार कर दिया जिन्हाने केवल एक सप्ताह काम सीखने के वाद ही प्रोडक्शन शुरू कर दिया।"

"तव तो मेरा सटर एकदम प्रोग्रेस कर जाएगा।"

"आप पचायत समिति म प्रधान जी से वात कीजिए। जितने भी सरकारी स्कूल हैं उनके स्वटर्स के ऑर्डर लीजिए। जिला विकास प्राधिकरण स वात कीजिए वे नि शुल्क स्वेटर वितरित करते हैं, उन्ह आप सप्लाई कीजिए। आपकी महिलाए घर वठे साल-भर स्वटर वनाकर धन कमाती रहेगी।"

"वस वस! एसा हो जाता है तो मजा आ जाएगा।"

अव चम्पा को याद आया कि अति उत्साह म वह भूल कर बैठी है, तो अपनी वात खत्म करके पूछा।

"आप ठहरी कहा हैं, आटी ?"

"राजू की मा ने घर ही राक लिया।"

"ठीक है। आटी मैं कल आने की काशिश करूगी।"

"एक दिन तो आना ही है सदा सदा के लिए।"

"ईश्वर आपकी वात सच करे।"

"मेरी वात तो सदा ही सच होती है। अनायास कह दिया तो सच भी होगी ही। चलिए महिलाओ से मिलवाइए। उन्ह थोड़े निटिंग टिप्स दे दू। आपका काम आसान हो जाएगा।"

दोना 'ज्ञानदीप' ट्रेनिंग स्कूल की क्लास मे पहुच गईं।

× × ×

"अरे। सुना तुमने ? गजब हो गया। भेरा बा के कुए म राजू और चम्पा ने छलाग लगा दी।" एक ग्रामीण ने कहा।

"क्या ? सच है ?" दूसरे ने पूछा।

"मैंने भी अभी-अभी परथा से सुना था। वही जा रहा हू।" पहले ने उत्तर दिया।

"अरे! कुछ पता चला ? चम्पा और राजू जीवित हैं या ?" दूसरे ने पूछा।

"सुधाकर जी, गजब हो गया जल्दी चलिए।" जगदीश ने खबर दी।

"ठाकुर साहब सुना आपने।" ठाकुर साहब के नौकर ने अदर आकर खबर दी—"चम्पा और राजू ने कुए मे छलाग लगा दी—भेरा बा के [illegible]ए म।"

"ये क्या किया चम्पा बेटी !" ठ[illegible] बेहाश हो गईं।

"क्या हुआ मेरी बेटी को।" [illegible] लगा दी ?"

ठकुराइन को चेतना आई। कपड़े ठीक कर वह बाहर जाने को तत्पर और मुखर हुईं—"मैंने कहा था कि कुछ सोचो। मगर मेरी सुनता कौन है ?" ठकुराइन विलाप करने लगीं—"बेटी हाथ स गई। अब तो कलेजे मे ठडक पड़ी। जल्दी से चलो रे! मेरी बेटी कैसा है ?"

अपनी चादर सभालती ठकुराइन घर से निकली और उन्होंने आराध्य को स्मरण किया—"हे। मा जगदम्ब। तू लाज रखना। हे खड़ा देवी तेरा ही आसरा है।"

दखत-देखते सारा गाव इकट्ठा हा गया।

जिसने सुना भागा, भेरावा के कुए पर।

"अरे सुधाकर जी! कुछ काजिए न!" ठाकुर भी आए और आते ही हाथ जोड़कर बोले—"मरी बटी का आप बचा लीजिए।"

"क्या फायदा, ठाकुर साहब। वह जीते जी ही मरी के समान है।" सुधाकर ने व्यग्य किया—"बचा भी लूगा ता क्या ?"

"सुधाकर कुछ करो कुछ भी करो।"

"आप दोना का विवाह तो करग नही ?"

"उन्हे साथ चाहिए था तो जो निर्णय किया वह अच्छा है।" सुधाकर हताशा म बाला—"अब ता उन्ह मरकर ही एक होने दो। उनके लिए यही अच्छा है।"

"अरे, बेटा। तुम जो कहागे, मैं करूगा।" ठाकुर अब गिड़गिड़ा रहा था—"एक बार उसे बचाओ तो सही।"

"गांव के पचा से पूछ लीजिए ?" सुधाकर ने सुझाव दिया।

"हा हा बचाइए। हम विवाह की आज्ञा देते हैं।" गाव के कई लोगो के स्वर थे—"ये नई जिदगी उनकी अपनी जिदगी होगी।"

सुधाकर रस्सा पकड़कर खुद कुए म उतर गया। वे दोनो पानी मे कभी ऊपर जा रहे थे। कभी अदर जा रहे थे। सुधाकर ने दोना को अलग-अलग रस्सो से बाधा। इशारा पात ही लोगों ने उन्हे धीरे-धीरे रस्से ऊपर खींचना शुरू कर दिया।

जैसे ही दोना ऊपर आए लोगो ने उन्हे उल्टा लिटाकर पीठ दबानी शुरू कर दी। उनक पेट से पानी निकाला।

तासरी बार लागा ने सुधाकर का भी ऊपर खींच लिया।

वह जैसे ही ऊपर आया, दोनो के मुह-से-मुह लगाकर सास फूकने लगा। धीरे-धीरे दोनो की सास चलने लगी।

भीड़ मे खुशी छा गई। ठाकुर साहब की खुशी का पार नही था।

दोना को अपने-अपने घर ले गए। गाव के कुछ लोग चम्पा को लेकर उसके घर पहुचे। इधर लकमा, हुड़ीलाल, केशा बा, देवा बा आदि राजू को लेकर उसके घर पहुचे।

अभी तक राजू की माताजी का कुछ भी पता नही था। उनके दरवाजे पर एक साथ भीड़ पहुची।

"माजी-माजी। चड़ा गजब हो गया आज ?"
"क्या हुआ रे ?"
"आपको कुछ पता नही है ?"
"अरे! तुम ये पहेलिया क्या बुझा रहे हो ?"
"कैसे कहूगा जी ? वैसे बाबूजी चले गए हैं। सब ठीक हो जाएगा।"
"क्या ठीक हो जाएगा ? बाध म कुछ खतरा पैदा हो गया है क्या ?"
"नही, नही। वहा सब ठीक है। चम्पा ।"
"क्या हुआ चम्पा बेटी को ?"
"और राजू भैया ?"
"क्या हो गया दोना को ?" अब चिन्ता बढ़ गई राजू की मा को।
"भेराबा के कुए पर ।"
"हे भगवान! रक्षा करना। हे करणी मा, तू ही रक्षक है। दोना को बचाना, मा!"
"आप बिल्कुल चिन्ता न कर।" केशा बा बोला—"उन्ह कुछ भी नही होगा।"
"आपको क्या मालूम ?"
"मुझे सब पता है। वे गए हैं। दोना का बाल भी बाका नहा होगा।"
"चलो मुझे वहा ले चलो।"
"थोडा सब्र रखिए माजी।" केशा बा बोले—"शायद वे अभी आते ही होगे।"
मा घर के बाहर आई।
उन्होंने देखा दूर से भीड़ उनके घर की तरफ आ रही है।
उदा भागा-भागा आया। माजी को सूचना दी—"मा, राजू भैया ठीक है।"
"वाह क्या बात है। अब आया है ऊट पहाड़ के नीचे।"
शाम चार बजते ही सुधाकर खेड़ा देवी के मदिर गया।
देवी को शीश नवाकर ठाकुर साहब के यहा पहुचा।
ठाकुर साहब की बैठक म गाव के कुछ और मोतबीर भी बैठे थे।
"ठाकुर साहब प्रणाम।"
"प्रणाम। आइए आइए सुधाकर जी। हम सब आप ही का इन्तजार कर रहे थे।"
"हुकम कीजिए ठाकुर साहब।"
"मं बहुत शर्मिंदा हू। आपका कहा नही माना। अच्छा हुआ एन वक्त पर आप पहुच गए। थोडी भी देर हो जाती तो म लुट जाता।" ठाकुर क मन मे पश्चाताप था।
"आप उस दिन सचेत ता कर गए थे। मगर मुझे उम्मीद नही थी कि वे ऐसा कर ही बैठेगे।"

"जी इस समय बचाना तो मेरा फर्ज था।" सुधाकर ने उत्तर दिया—"बचाया खेड़ा देवी की कृपा है।"

"जो नई जिदगी अब उन्हे मिली है वह आप ही की दी हुई हे।" ठाकुर ने सुधाकर को कहा—"अब आप जो चाहेगे, वही होगा।"

"क्या आप सब पचा की भी यही राय हे ?" सुधाकर ने चारा ओर नजर घुमाई।

"क्यू शर्मिंदा करते हे हमे।" सभी पचो की ओर बढकर सरदारी पडित न कहा—"वे दोनो आपकी तरफ से तो जा ही चुके थे। अब तो उन्हे नये सिरे से जीन देना ही हमारी अच्छाई होगी।"

"ठाकुर साहब, अब मैं कुछ नहा कर सकता।"

"जो करना है, वह तो सुधाकरजी आपको ही।"

"नही, पचो। मैं कुछ नही कर पाऊगा।"

"नही क्यो ? जीवनदान भी आपने ही दिया है उन्हे।"

"राजू की मा को मनाना भी सबसे पहले जरूरी है। उनका कहना है कि आपकी बेटी की खातिर उनके बेटे की जान चली जाती।"

सुधाकर ने मौका देख पैंतरा बदला—"अरे भाई, इसम कौन-सी बडी बात है ? वैसे भी बेटी वाले को ही तो बेटे वाले के यहा जाने का नियम है। हम सब अभी चलते हैं। क्या राय है सबकी ?"

ठाकुर साहब ने पचो से पूछा।

"ठीक है। ठीक है। चलिए।"

ठाकुर के साथ सभी पच उठ खड़े हुए।

"सुधाकर जी, आज मैं आपक सामन याचक क रूप म खड़ा हू। आपकी बात दोनो मा-बेट नही टालगे। आप साथ चले।"

"चलिए। मुझे भला क्या एतराज हा सकता है।" सुधाकर ने अपनी कामना प्रकट की—"मैं ता चार दिन का मेहमान हू। मुझ क्या लेना-देना ?"

"बस सिर्फ इतना चाहता हू कि जब भी यहा से जाऊ चम्पा बिटिया के हाथा म लाल रग का चूडिया हा माथ पर बिन्दा हो और चमकीला लाल बनारसी साड़ी हो। उसक सामने भविष्य का सुनहरा ससार हा।"

"अरे सुधाकर जी जो आप चाहेग वही होगा। फिर मुझे एसा करन म घाटा कहा है ? बेटी देकर बेटा मिल रहा है। इस हवेली को वारिस तो मिलेगा ।"

"आपकी उदारता का सम्मान गाव की इज्जत बन जाएगी।"

"अपने झूठे अहकार और घमड का परिणाम तो मैं देख हा चुका हू।" ठाकुर ने स्वीकार किया। "इन दोनो को सुधाकर जी ने ज्ञानदीप सौंपकर इन्हे कितना आगे बढा दिया है। सुना है इनके काम की तारीफ सुनकर किसी विदेशी योजना के अतर्गत ज्ञानदीप का बहुत धन मिलने वाला है।"

"अभी ता शुरुआत है। आप देखते जाइए।" सुधाकर ने कहा—"दोना के श्रम स यह सस्था देश म कहा पहुचकर नाम कमाएगी।"

× × ×

"ठाकुर साहब आप हमारे यहा, धन्य भाग, हमारे।"

"शर्मिंदा न करे ठकुराइन।"

"सरपच जी। इसम शर्मिंदा होन की बात ही कहा है ?"

"अब आप गाली दे रही हें सरपच वाली।" तब तक सभी ने आगे वढकर ठकुराइन को आकर कहा—"ठकुराइन प्रणाम।"

"आप सब को मेरा प्रणाम स्वीकार हा। आइए विराजिए। कैसे कष्ट किया ?"

"किस मुह से बात करू ? कर्ता के मन कछु और है, विधना क कछु और।" ठाकुर ने विनम्रता से निवेदन किया—"सबसे पहले तो आप मुझे, अब तक जो कुछ हुआ उसके लिए क्षमा कर दे।"

"आप बड़े हैं। आपको क्षमा मागना शोभा नहीं देता।" राजू की मा ने हाथ जोड़े—"और फिर हालात और स्थितिया कब क्या करवा देती हैं, कोई नही जानता।"

"*मैं आपका कसूरबार हू।*"

"कुसूर आपका नही मेरे भाग का था। समय खराब था, हमारा।"

"कसूरबार हम हैं, ठकुराइन। वह केसे भूले ?"

"ठकुराइन बड़ा तो वो है जो क्षमा करता है।" एक वृद्ध ने कहा—"ऊपर वाले के लेखे को कौन मिटा सकता हे ?"

"होना तो वही था। तब नहा हुआ। अब होगा।" आगे आकर ठाकुर ने कहा।

"आप आज पहेलिया क्या बुझा रहे हं, ठाकुर साहब।"

"चम्पा बेटी को आप जैसी क्षमाशील मा का आसरा मिलेगा तो उसका जनम सफल हो जाएगा ठकुराइन। आपकी आज्ञा के लिए ही हम सब उपस्थित हुए हैं।"

"आप तो मुझे आज्ञा कीजिए ठाकुर साहब।"

"आज तो सारे गाव और समाज के बीच मैं आज्ञा नही, अनुरोध करने आया हू।"

"मैं कर भी क्या सकती हू ?"

सुधाकर बीच मे बोला—"दा बुजुर्गों क बाच म बोलना अच्छी बात नहीं है।"

"नही आज कुछ भी कह सकते हो सुधाकर।" ठकुराइन बाली—"आपने ही गाव क एक बेट और बेटी दोनो की जीवन रक्षा की है।"

"माता जी। ठाकुर सरपच आपके द्वार आए है।"

"लडकी का पिता हू, सरपच मं नही हू।"

"आपका निर्णय ही अंतिम होगा।" सुधाकर बोला।

"सुधाकर ठीक कह रहे हैं ठकुराइन।" ठाकुर की वाणी मे अतिशय विनम्रता थी।

"बेटे की खुशी से बढकर मा के जीवन म और कोई बात हो ही नही सकती। फैसला उन दोनो को ही करना है।"

ठकुराइन ने सीधे ठाकुर की आखो मे झाकने का प्रयास किया और परखना चाहा। फिर बोली—"फैसला वे एक बार तो कर चुके। हमने उन्हं साथ जीने नही दिया था, तब दोनो ने साथ मरने का फैसला कर लिया। वह सब नजर-अदाज करके हम कर भी क्या सकेंगे ?"

ठकुराइन के स्वर म दर्द था।

"ठकुराइन! वह तो खेड़ा देवी ने लाज रख ली।" ठाकुर साहब ने पश्चाताप करते हुए कहा—"वर्ना हम आज मुह दिखाने लायक नही रहते।"

"भगवान लबी उमर करे, सुधाकर जी की। अगर ऐन वक्त पर य न पहुचते तो क्या होता ?" ठकुराइन अहसानमद थी—"अब भी कल्पना करके मेरी रूह कापती है।"

"हम सब पच लोग भी इसीलिए साथ जाए हैं कि आप दोना सामाजिक मर्यादाओ की चिन्ता न करे। अब समय बदल गया है। हम लोगो को भी अपना सोच बदलना होगा। हमे सुधारवादी कामो को बढ़ावा देना होगा।" वृद्ध पच ने कहा।

"अगर समय रहते हमने ध्यान नही दिया तो हम पिछड जाएगे।" दूसरे पच ने कहा।

"यह काम जब बड़े घर से शुरू होता है तो छोटे लोगो का डर मिट जाता है। आपकी पहल हमारे समाज के लिए एक उदाहरण बनेगी।" तीसरे पच ने कहा।

सुधाकर की पत्नी तरला ने कहा—"सारे बधन औरत के लिए ही क्या हैं ? जब पत्नी की मृत्यु के बाद पुरुष को विवाह का अधिकार है, तो यही अधिकार पत्नी को भी मिलना चाहिए। सयम के बधन नारी के लिए ही क्यो ? समान अधिकार दोनो को नहीं मिलने चाहिए क्या ?"

"जी! ठीक कहा आपने। अब अधिकार देना ही होगा।" सरपच ने कहा।

ठकुराइन ठाकुर रामसिंह को तौलती रही बोली कुछ नही।

"तो फिर मुहूर्त निकलवाऊ ठकुराइन ?" ठाकुर साहब ने कहा।

"मैं क्या कहू ? अब बेटा आपका है। आप जाने और सुधाकर जो जान ?"

"शुभष्य शीघ्रम्। शुभ कार्य मे देरी कैसी।" सुधाकर की राय थी—"फिर मेरा भी भरोसा नही। अकाल राहत कार्य समाप्त होते ही चला जाऊगा।"

"क्या हम गाव वाला को सभालने नही आएगे ?" सरपच न कहा।

"क्या ज्ञानदीप को देखने नही आएगे ?" रोडा बा ने कहा।

"कौन क्या कह सकता है ?" सुधाकर ने कहा—"न जाने और कितने ज्ञानदीप शुरू करने हैं।"

× × ×

गोगुन्दा का पहाड़ी क्षेत्र आमो के लिए प्रसिद्ध है। देशी आमा की इतनी विभिन्न किस्मे हैं कि देखते रहिए। घर-घर म आम। जो भी मजदूर काम करने आते, टोकरे-दर-टोकरे आम बाबूजी के लिए ले आते। इतने सारे आमा का सुधाकर क्या करता ? इसलिए जिन लोगा के पास आम नही होते थे, उन्हे बाट देता। बाध के काम की गति बरसात ने तोड़ दी। मजदूर भी कम पड़ गए। बरसात होते ही जिनके अपने-अपने खेत थे, वे बुवाई करने चले गए। ट्रोली भरकर लाते हैं ट्रैक्टर, गीले दलदल मे फस जाते हैं आगे और पीछे के हिस्से को छोड़ दिया गया है। बीच के लेवल को ही ऊपर उठाया जा रहा है ताकि जल्द-से-जल्द अड़तीस दस के लेवल को पार कर ले।

सुधाकर भी चाहता है कि अब जल्द-से-जल्द मुक्त हो जाय। दूसरे कई काम उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

केशा बा को वादा कराया है—"केशा बा हुड़ीताल को खूब पढ़ाना। अगर आपके खानदान म एक व्यक्ति भी पढ गया तो वह सबका जीवन-सुधार देगा। पढाई का जहा तक का जितना खर्च होगा, मैं दूगा।"

केशा बा ने कुहनी तक दोनो हाथ मिलाकर कहा—"हा होकम। आप कैगा, वेई होवेगा।"

पढ़ना मनुष्य जीवन के लिए कितना जरूरी है, यह आपको पता नहीं है। सदियो की कर्जदारी, भुखमरी गरीबी शोषण का शिकार होना बीमारिया भुगतना इन सबकी जड़ म अशिक्षा है। अज्ञानता हमारी सबसे बड़ी दुश्मन है।

केशा बा ने कहा—"हा बाबूजी। आपरो केणो (कहना) ठीक है। आपरी बात पै ध्यान दूगा। हुडा ने भणाऊगा। आगे ऊची क्लास भणवा ने आपरे पास भेज दूगा।"

सुधाकर का सोच चल रहा है। आज गावो के विकास के लिए कितने काम पडे हैं। इन्हे कम्पोस्ट खाद बनाने का ज्ञान कैसे दे ? फसलो का बीमारी से बचाने की कीटनाशक कहा से मिले ? उत्तम चावल के बीज मगाकर पैदावार कैसे बढाए ? इन्हे निरन्तर ज्ञान देना होगा। इनकी बैलगाड़ी की चाल को बदलना होगा। वरना इक्कीसवी सदी मे कैसे जाएगे ? जेट और कम्प्यूटर के युग मे हमारे गाव आज भी कितने पिछड़े हैं ?

जब से तरला आई है गाव की औरते दिन-भर घेरे रहती हैं। इतने सारे आम घरो म सड़ रहे हैं। तरला उन्हे आमो का शरबत मेगोज्यूस बनाना सिखा दिया है। अचार चटनी मुरब्बे डालना बता दिया है। आम के पापड बनाकर शहरो म भेजना शुरू कर दिया है। जिनके पास आम नहीं हैं उन्हें पापड़ बड़ा, सिव्वइया बनाना

सिखा दिया ह। शहरा म मक्की की पापड़ी की खूब खपत है वह बनवा रही हैं।
अब सिलाई-बुनाई वाली महिलाआ के अलग ही ठाठ हैं। घरो म पैच वर्क के सुदर-सुदर चदर गिलाफ साफा कवर बन रहे हैं। रग-बिरंगे स्वेटर बन रहे हैं।

चम्पा का स्वास्थ्य ठीक हो गया है। वह भी मैडम के साथ दिन-भर लगी रहती है। साथ-ही-साथ विवाह की तैयारिया भी होन लगी है।

"चम्पा!"

"हू।"

"सर, जाने की बात कर रहे हैं ?"

"शादी के बाद जाएंगे।"

"पर इनके जैसा व्यक्ति फिर कब मिलगा ?"

"कमाल है क्या सूझ ह! हम मिलाने के लिए कैसा खल खेला ?"

"वरना इस जनम म ता यह सच था कि मिल ही नहीं पाते हम।"

"मरे पापा जैसे कठार व्यक्ति का दिल पसीजना-मामूली बात नहीं है।"

"जानती हो मेरी मा जब-तब अकेले म आसू ही बहाती रहती थी— मुझे बहू चाहिए मुझ वसी भी बहू ला दे। बस एक ही रट। मैं और सब तो कर सकता था मगर यह शर्त तुम्हार बिना कहा से पूरी करता।"

चुपचाप सुन रही चम्पा बोली—"मेरा भविष्य तुम्हारा हाथ थामे जिन ऊचाइया और गहराइया तक उठा जा रहा था— मैं नही जानती।"

उधर मा थी कि अबाधगति से अविराम अपन भावा को क्रम दी जा रही थी। "स्कूल म नाटक खेलते-खेलते तुम मेरी पत्नी बनी थी उस दिन दिल ने भी तुम्हें असली पत्नी कब मान लिया पता ही नहीं चला। दिन बीतने लग। ज्या-ज्या वक्त गुजरता गया त्या-त्यो तुम दिल म ज्यादा गहरी उतरती चली गईं। दिन-रात तुम्हारे अलावा कुछ सूझता भी तो नहीं था।"

ऐसा ही कुछ मैंने भी महसूस किया। तुम्हारे बिना कुछ साचना भी पाप था। जब एक दिन बाता-ही-बातो म मा ने अनुभव किया कि मैं तुम्हें चाहती हू। उसी दिन उन्हाने ठाकुर साहब को मना लिया। उस दिन मा बहुत भावुक हो गई थी। मर सिर के बाल बनाते-बनाते शून्य म खो गई थी और कहन लगी— "बन्नी तू बहुत भाग्यशाली है जा इतना होनहार लड़का तुझे चाहता है। दुनिया में [illegible] भाग्यशाली होते हैं जिन्हें उनके मन का मीत मिलता है री।"

हम औरता का जनम तो प्यार की आग म तपन [illegible] दन [illegible] होता है। मन की बात समझने वाले कहा मिलते ह, [illegible] पर चाबुक [illegible] अनुशासन करने वाले ही तो नसीब हाते ह। नारा [illegible] सता महल की तरह होती ह जिसे जीत कर [illegible] हैं।

उस दिन मुझ लगा राजू, मा अन्दर म [illegible] है। मा [illegible] आग मे तड़प रही है। उस आग पर मरी [illegible] का [illegible]

[illegible]

"मगर हमारे सोचे क्या होता है ?"

"सच कहती हो। चम्पा के लिए क्या नहीं हुआ ?"

"कब सगाई टूट गई ?"

"कब सब कुछ उलट गया।"

"ढोल बजे, नौबत बजी, नगाड़े बजे। बारात भी चढ़ी। मगर दूल्हा "

"मेरी जगह कोई और था ?"

"उस दिन भगवान से मेरी आस्था और विश्वास सब उठ गए थे।"

"मैं भी पागल हो गया था। न खाया गया न पिया गया। दिल जला जा रहा था उस दिन।"

"मुझ पर सात-सात पहरे बिठा गए, राजू! मैं तुम्हे देखने को तरस गई।" याद करते हुए चम्पा बोली—"लछमी को संदेशा देकर तुम्हारे पास भेजा था। आकर मुझे इस कैद से छुटकारा दिलवाओ।"

"मगर लछमी तो नहीं आई मेरे पास।" राजू ने उत्तर दिया।

"ठाकुर साहब के गुप्तचरो ने उन्हे सूचना दे दी थी। बाद में पता चला लछमी को सात दिन तक कोठी के पिछवाड़े कैद कर दिया था।"

"मगर हुआ क्या ? विधवा बनकर लौट आई। ठाकुर साहब ने अपने मन की कर ली। मगर नतीजा तो ऊपर वाले को ही निकालना था।"

"हमारा प्यार सच्चा था राजू। ऊपर वाले को हमारा सयोग बिठाना ही था। सुधाकर जी को हमारा उद्धारक बनाकर भेज दिया।"

"चम्पा बाबूजी ने हमारे खातिर ठाकुर साहब की न जाने कितनी जली-कटी सुनी हैं।"

"मगर धन्य हैं वे, जो सब चुपचाप सहन कर गए।"

"राजू, सर की मैडम का भी जवाब नही। ऐसी गुणी महिला मैंने नही देखी।"

"कोई काम ऐसा नहीं जो उन्हे नही आता हो। मेरे सेटर पर भीड़ बढ़ गई है।"

"उनमे तो प्यार की गगा प्रवाहित है।"

"नही, यह कहो कि उनमे कर्म की जमुना बह रही है।"

"यह सच है चम्पा।"

"औरते खूब सीखना चाहती हैं। बोली इतनी मीठा कि सबको अपने बस मे कर ले। हर चीज मे स्वाद। इधर माल बना उधर खरीदने वाले तैयार।"

"उस दिन कुछ माल तहसील के कुछ लोग उदयपुर ले गए थे। अब वे और माग रहे हैं।"

"लगता है कुछ महिलाओ को सेटर मे सर्विस-कम-कमीशन पर रखना पड़ेगा।"

"अब तो चम्पा दस दिन और रह गए हैं।" राजू ने चहकते हुए कहा—"इन्तजार बहुत करवा रही हो।"

"इतने बरस कभी भारी नहीं लगे अब दस दिन बहुत ही भारी लग रहे हैं!"

"ऐसा ही होता है। दूर से चलते हुए जब आते हैं तो ज्यो-ज्यो घर पास आता है, पाव भारी पड़ने लगते हैं। पर तुम अपने पाव जल्दी भारी मत कर लेना।" राजू ने मजाक की।

"धत्! शरम नहीं आती ऐसा कहते। फिर उसके लिए मैं अकेली ही कहा जिम्मेदार रहूंगी ? तुम जिद मत कर बैठना समझे!"

"यह तो सच है। गलती बराबर की ही होती है, चम्पा।"

"ध्यान दोनो को रखना है।"

"सरकार इतनी योजनाए बना रही है उन्हें हम ही पालन नही करगे तो कौन करेगा ?"

"उसमे हमारा और हमारे परिवार का ही तो कल्याण है।" चम्पा ने अनुमोदन किया।

"अगर माजी जल्दी मचाएगी तो ?"

"शैतान कहीं की! मा को मैं समझा दूगा। यहीं कुछ दिन तो होंगे मौज-मस्ती के, खेलने खाने के। "

बात करते-करते वे दोनो कब घर क पास जा पहुचे पता नहीं चला।

"लो तुम्हारा घर आ गया। गुड नाइट।" राजू ने उत्तर दिया।

"गुड नाइट!" चम्पा ने कहा।

"आज तो पापा नहीं कहगे, किसके साथ आई ?" राजू ने छेड़ा।

"जरूर कहेंगे। जिसके साथ आई है, उसे अन्दर क्यू नहीं लाई। बाहर से ही क्यू भगा दिया।" चम्पा न शरारत से उत्तर दिया।

"कहना धूमधाम से घोड़ी चढ़कर, तलवार हाथ मे लेकर आएगे। अंधेरे में चारो की तरह नहीं।" राजू चला गया।

× × ×

बाध पर खूब चहल-पहल थी। बाध अड़तीस दस क ऊपर आ गया था। अब बाध को कोई खतरा नहीं था। जो लक्ष्य निर्धारित था उस पर ओबरा रावलिया सूरण एटो का खेत दांतिया और न जाने कहा-कहा क श्रमपूतो ने अपना पसीना बहाया और पूरा किया।

घणावल के लोग घर छोड़कर वहा आ बैठे। रात को दो-दो बजे उठकर रात पाली करके मिट्टी लाए। कितनी और क्या-क्या अड़चने आईं भगवान ही जानता है।

यह सुधाकर का ही भगीरथ प्रयत्न था कि आज चारो ओर पानी-ही-पानी भरा है। पशु अब प्यासे नही रहेगे। अन-बोलता जानवर अपनी प्यास किसे बताए ? बाध के आसपास के कुए पानी से लबालब भरे हैं।

बस, नहरा का काम पूरा होते ही पानी खेतो मे दौड़ने लगेगा— बिना किसी

भेदभाव के।

जिसने बाघ को बाधने मे सहयोग दिया है वहा भी, और जो घर मे सोया पड़ा रहा है वहा भी। पानी ने कभी न भेद जाना, न भेद माना। वह ता गगाजल है। सबके लिए पवित्र-पूजनीय।

लोग इकट्ठे होते जा रहे हैं।

रोडा बा भी अपनी मोबाइल शॉप लकर आ गए हैं। आज पेमेट आने वाला है। दो-दो पखवाड़ा का पेमट है।

जीप आती हुई नजर आई।

पमट के लिए चौकी क चबूतरे पर टेबल कुर्सी लगवा दी है। पाल म खाट रखवा दिया हे साहब के विश्राम के लिए।

रग-बिरंगे परिधान धारण किए महिलाए चहचहा रही हैं। एक तरफ आदमिया का दल बैठा है।

लकमा मेट भाग-भाग कर सभी व्यवस्थाए देख रहा है।

आज उसकी जिम्मेदारिया बढ़ गई हैं। कही गलत चुकारा नही हो जाए। कहीं किसी का मामला अनपैड म नही चला जाए। फिर वापस कब आए कभी आए भी नही ?

अगर ऐसा हुआ तो बेचारे मजदूर इन्तजार ही करत रह जाएगे।

तहसीलदार साहब टेबल पर जम गए। सहायक पचास-बीस-दस-पाच-दो की गड्डिया जमा कर बैठ गया है।

लकमा ने कुलिया का (महिला मजदूर) पेमट पहले शुरू करवा दिया है। उन्हे वापस घर जाकर चूल्हा-चक्की सभालना है। बच्चा को खाना-पीना देना है। ढोर-डगर को चारा-पानी देना है।

पेड़ा पर दूर मोरो की ध्वनिया गूज रही हैं। कोयल कूक रही है।

पेमट शुरू हुआ। लकमा आवाज लगाता जा रहा है औरतें उसी अनुसार आती जा रही हैं। नवली, पेमली ऊदकी अम्बा केसर धापू, लछमी फत्ती, भूरी । क्रम चल रहा है।

अधिकतर इस बार अगूठे की जगह दस्तखत कर रहा हैं। दस्तखत करने म कुछ विलम्ब जरूर हो रहा है मगर उस विलम्ब का एक अलग ही आनद है।

आज सुधाकर का कोई विशेष रोल नही है। सब मजदूरो को नाम स जानना। सही नाम वाल को पेमट दिलाना मेट का काम हे।

पराये पैसा का धुआ आग मे हाथ जलाने के समान है। इसलिए पेमेंट क दिन सुधाकर इस आग से दूर ही रहता है।

महिलाओ का पेमट निपटने के बाद पुरुषो का पेमेंट शुरू हुआ। इस बीच परभू चाय के साथ गरम पकौड़ रख गया। एक थाली मे आम भर लाया।

साहब ने पमेट समारोह निपटाया। फिर बडी सजीदगी से बोले—' सुधाकर

जी, मैं इतनी दर स साच नहीं पा रहा हू कि आपस कैसे कहू ?"
"ऐसी क्या बात है ?"
"आपके नाम एक शिकायती-पत्र मिला है ?"
"शिकायती-पत्र ?" सुधाकर आश्चर्य से चौंक उठा।
"जी हा। मुख्य अभियन्ता क नाम आया है। मुझे इन्क्वायरी के लिए दिया है। विभाग मे पत्र आया है तो विधिवत जाच रिपोर्ट तो जाएगी ही।"
जितन लाग बैठ थे सबम सन्नाटा छा गया—"बाबूजी के खिलाफ जाच रिपोर्ट ?"
"भला ये कैसे हो सकता है ? जरूर कुछ गलतफहमी हुई है। ओबरा बाध या नहीं किसी और जगह की हो सकती है।"
"मगर पत्र तो पत्र था। भावना से पत्र का मजमून तो नहीं बदल सकता।" तहसीलदार साहब ने पत्र पढ़कर सुनाना शुरू किया—
सवा म,
श्रीमान् मुख्य अभियन्ता साहब
सिंचाई विभाग, उदयपुर
विषय आबरा बाध के निर्माण म अनियमितता के सम्बन्ध म।
महोदय जी
उपर्युक्त विषय मे निवेदन है कि आवरा बाध के निर्माण म कई अनियमितताए एव घोटाले हुए हैं जिनकी जाच अविलम्ब कराव—
1 बाध पर आवश्यकता से अधिक मजदूर इकट्ठे किए गए हैं।
2 बाध पर निर्माण सामग्री बहुत ही घटिया क़िस्म की काम ली गई है।
3 बाध पर रात को काम करवाकर नियम विरुद्ध काम हुआ है।
4 रात म काम पर बुलाकर कई मजदूरो का शोषण किया गया है।
5 रात म काम के नाम पर गलत हाजरिया भरी गई हैं।
6 आवश्यकता से अधिक इजन लगाए गए हैं।
7 मेट और सुपरवाइजर की मिलीभगत से सारे काम खराब हुए यह बधा चार दिन नहीं चलेगा।
8 सुधाकर शर्मा ने बहुत ही लापरवाही और गैर-जिम्मेदारी से काम किया है।
9 ओबरा बाध जल्दी पूरा होना चाहिए था, जो अब तक नही हुआ है।
10 बाध म क्षमता से अधिक पानी आ जाए तो गाव के डूबने का खतरा है।
सुधाकर ने और गाववाला ने दस सूत्री शिकायत सुनी। फिर सुधाकर ने स्वय पत्र एक बार पढ़ा। दो बार पढ़ा। बार-बार पढ़ा। पढ़ता ही गया ।
समझ ही नहीं पाया कि ऐसा भी हो सकता है। उसकी सेवाओ का यही फल है ?
क्या वास्तव मे उसमे कमी है ? नही है तो फिर यह शिकायती-पत्र क्यो ? क्यो ?

क्या ?

उसने किसके लिए वनवास भागा ?

अपनी गृहस्था का सत्यानाश कर यहा क्यो चला आया ?

क्या किसी भावना म वह गया था ?

काम करते समय पात्रता तो देखनी था। गुनाह वे-लज्जत वाला काम क्या किया ?

दिनेश ने पहले ही आगाह किया था—'वहा एसे तत्व ह', जा काम नहा करने दग। तुम्ह उखाड़न की कोशिश करगे।'

दुश्मन कितना शातिर है। उसे उखाड़ा तो नहीं। काम भी पूरा करवा लिया और अतिम तोहफ क रूप म यह प्रमाण-पत्र।

यह सजानामा पकड़ा दिया।

जवाब दो सुधाकर शर्मा जवाब दो। बड़ी ऊची-ऊची बात करते थे। एक नया आदर्श स्थापित करन चल थ। एक नय स्वर्गिक गाव की रचना करने गए थे ?

कैसी रही ? क्या मिला ?

कितना स्वर्गिक सुख मिल रहा है ?

जवाब दो सुधाकर शर्मा, जवाब दो।

तुम बेकार हो। नकारा हो। इसीलिए इन दाना मस्टरराल म तुम्हारा वेतन पच्चीस से घटाकर बीस कर दिया गया है।

तुम्हारे रेट और एक कारीगर के रेट म कोई अतर नही है।

तुम तुम्हारा ज्ञान तुम्हारा मेहनत एक बीस रुपये के कारीगर से अधिक नही है। अपनी औकात को पहचानो सुधाकर, औकात को पहचानो।

बड़े उद्धारक बनकर आए थे।

मसीहा बनना चाहत थ न ?

इसलिए तुम्हे सूली पर टाग दिया गया है।

छटपटाओ। कोई नही बचाने वाला। चाखा चिल्लाओ जोर-जोर से।

बेवकूफ हो तुम। आदर्श और सिद्धात वहा चलग जो सब चलाएगे।

तुम भीड़ म स अकेले चलाग ता लाग तुम्ह जिन्दा नही छोडेगे।

गाधी भी भीड़ से अलग चलने लगा था। गोली मार दी गई। सुकरात को जहर पीना पड़ा। ईसा सूली चढ़ाया गया।

क्या तुमने इतिहास के पन्नो मे ये सब नहीं पढ़ा था ?

पढा था तो जानबूझ कर फिर मूर्ख बनन क्या निकल पड़े।

हजारा देवा, केशा की अनाज की कोठिया का कब तक भरने की कोशिश करते रहोगे। किसको चिन्ता है भरन का।

तुम्हारे एक अकेले के साच स क्या होना जाना है ?

हिन्दुस्तान म कितन गाव हैं। कितने आवरा जैसे बाध बनने के इन्तजार म किसी एक भगीरथ का इन्तजार कर रहे हैं। तुम कहा-कहा जाओगे ? चले भी गए तो क्या मिलेगा ?

आखिरी क्षणो में यही चार्जशीट। असफलता गबन लापरवाही निकम्मेपन का प्रमाण-पत्र।

कितना अच्छा होता तुम रगे सियार बन जाते।

आते ही विरोधिया का अपने भाव म लकर टुकड़े बाटत। उन्हे बेईमानी मे हिस्सा देते। ऊपर तक सबके हिस्स पहुचात रहत। खूब सीमट की काला बाजारी करते। डीजल की खपत दिखाकर डीजल बेच खाते।

ठेकदार क लालच म आकर उसके ट्रिप दुगुने लिख देते। यहा से जात वक्त दो-चार लाख का बैंक बैलस बनाकर ले जाते। फर्जी मस्टरराल भरत।

जब ये सब काम तुम्ह आत ही नहीं, तो यहा क्यू चल आए ? यू ही कब तक सोचते रहोगे, सुधाकर शर्मा ?

कागज का जवाब तो कागज स ही देना होता है। सुधाकर ने देखा पिछले पन्ना पर अगूठों के निशान भी मौजूद हैं।

शिकायती-पत्र पढ़न क बाद सुधाकर के विचार अतर्द्वंद्व के चरम तक जा पहुचे। उसके अतर्द्वंद्व को पढ़ पाने में तहसीलदार का दर नहीं लगी। वे स्वय सुधाकर के सुपरवाइजर बनकर आने वाले दिन स हा उसक प्रत्येक कार्यकलाप क प्रत्यक्षदर्शी रहे हैं। कनिष्ठ अभियता दिनेश ने भी परिचय कराते हुए यही कहा था—"तहसीलदार साहब! आप एक बार मुझ पर अविश्वास कर सकते हैं पर सुधाकर अविश्वास से परे है।"

फिर उन्हें वे सब बातें एक-एक कर ध्यान मे आने लगी थी कि जिन स्थानीय नेताओ के स्वार्थ इस ओवरा बाध को पूरा न होन स ही जुड़े थे वे नही चाहते थे कि सुधाकर यहा रह। उनकी अनेक शिकायता और सुधाकर की ईमानदारी कर्त्तव्यनिष्ठा और गाव के प्रति उसकी सेवानिवृत्ति निरन्तर उसे पत्र मे दिखलाई चार्जो से मुक्त दिखाती है पर वे भी क्या कर सकते हैं। शिकायत की गई है तो जाच करने का दायित्व उन्ह पूरा ही करना पड़ेगा।

"सुधाकर जी! मैं इसीलिए परेशान था कि आप जैसे कर्मठ व्यक्तित्व पर य लाछन ? इससे गदी राजनीति और कुछ हो ही नहीं सकती। तहसीलदार ने खेद व्यक्त किया। ये तो ठीक है कि मं यहा की ईमानदारी से की गई हर गतिविधि से परिचित हू, वरना तो गजब हो जाता। आप जैसे व्यक्ति का घार अपमान है।"

"काना या माना या, नवला जी धूला पमा रामा कसना क्या ये अगूठे तुम लोगा ने मरे काम की शिकायत के खिलाफ लगाए हैं। अगर लगाए हो तो मुझसे डरने की जरूरत नहीं है। तुम सब लोगा को हक ह कि मेरी बेईमानी और लापरवाही के खिलाफ सौ-सौ जूते मारो।"

"कैसी बात करते हैं बाबूजी ? राम-राम-राम। हमारे कीड़े पड़े। आप जैसे देवता आदमी पर लाछन ? इस जनम म तो क्या अगले जनम मे भी भगवान हमे माफ नही करेगा ?"

तब तक तमतमाता हुआ राजू आया—"सर, सुना है कोई शिकायत आई है ?"

सुधाकर ने पत्र राजू के आगे बढ़ा दिया। वह भी एक सास म कई बार पढ गया।

दुश्मन की चाल अतत कामयाब हो गई। मगर झूठ तो झूठ है। सत्य को कब तक छिपाया जा सकता है ? पीछे किए गए हस्ताक्षर और अगूठा के निशान दखकर राजू ने षड्यत्र का पर्दाफाश किया।

"तहसीलदार साहब। यह जिस व्यक्ति का षड्यत्र है। हम उसकी चाल किसी भी सूरत म कामयाब नही होने दगे।

नबर वन एप्लीकेशन के समाप्त होते ही उसके नीचे से ही अत तक कोई हस्ताक्षर नही है। एप्लीकेशन के बैक पर भी नियमानुसार हस्ताक्षर होने चाहिए थे। जिससे यह प्रमाणित होता कि शिकायतकर्ता उस बात से सहमत है। हस्ताक्षर वाला कागज पूर्णतया अलग स जोड़ा गया है।

तहसीलदार को हाथ मे पकड़ा कागज दिखाते हुए राजू ने कहा—"तहसीलदार साहब ये हस्ताक्षर गाव तक आने वाली कच्ची सड़क को पक्की बनाने के नाम पर करवाए गए थे।"

और ऊपर का प्रार्थना-पत्र हटा दिया गया। ऊपर ये पत्र लगा दिया गया।

तहसीलदार ने पूछा—"क्या भाई राजू की बात सच्ची है ?"

"हा होकम हा। ये अगूठ सडक पक्की बनाने को लगाए थे। सुधाकर जी बदाग हैं। इस पत्र म लिखी एक भी बात सही नही है।"

"तुम सब दस्तखत करने को तैयार हो ?"

"हा बड़ा साब। हा।"

राजू ने कहा—"तहसीलदार साहब इस बाध पर रिलीफ कलेक्टर केंद्रीय सयुक्त सचिव का दल सासद रोत साहब एम एल ए साहब ए सी साहब सहायक अभियता कनिष्ठ अभियता अधिशासी अभियता मुख्य अभियता, प्रधान साहब सब दौर लगा गए ह। हर एक न इसकी ढरा प्रशसा की है। फिर य कौन है ?"

"हम जानते हैं ये कौन है। इससे निपटना हमारा काम है। ये लीजिए इस शिकायती पत्र का उत्तर।"

"लो पचा। सभी हस्ताक्षर करो।"

'तहसीलदार साहब म उत्तर देता हू। सभी गाव वाला की तरफ से—

। बाध पर आवश्यकता से कम मजदूर थे जिससे बाध को जल्दा नहा बना सके।

जब भी लेवर रखी गई विभाग ने आवश्यकता के हिसाब से मस्टररोल इश्यू किए जाते रहे। बिना मस्टररोल तो लेवर रख ही नहीं सकते थे।

2 निर्माण सामग्री जो भी विभाग द्वारा आई, वही काम मे ली गई। घटिया होती तो बाध का इस बरसात मे फूटना तय था। अच्छी निर्माण-सामग्री ने ही बचाया है।

3 अगर रात्रि मे काम नही करवाते तो कम ट्रैक्टरा से सिंगल काम होता, उस रफ्तार से अभी बाध आधा भी नही बनता। जो बनता वह होने वाली इस बरसात म ही बह गया होता।

4 रात मे वही मजदूर बुलाए जाते थे, जो स्वय अपनी इच्छा से आते फिर उसका शापण कैसे माना जा सकता है ?

5 हाजरी बीस व्यक्ति बीस ट्रिप के हिसाब से भरी जाती रही। उन्हे भी छुट्टी के समय भी बराबर चैक किया जाता रहा है।

6 इजन की आवश्यकता तातेड़ के कुए से बोर एरिया तक पानी पहुचाना जरूरी था। उस आवश्यकता से लगाए गए। वर्ना बोर एरिया सूखा रह जाता।

7 एक भी काम खराब नही हुआ। खराब होता तो बाध म से पानी सीपेज करता।

8 सुधाकर शर्मा की लगन और निष्ठा से ही इतना बडा बाध बन सका। लोगा मे आस्था और विश्वास पैदा करके हा काम शीघ्र करवाया जा सका।

9 बाध जल्दी पूरा नही हुआ होता तो इस ऊचाई तक पहुचना सभव ही नहीं था। रिलीफ वर्क म ही पूरा करना था। रिलाफ वर्क मे ही पूरा हुआ।

10 बाध म निकास द्वार शुरू से खुला था। इसलिए क्षमता से अधिक पानी कहा स आ जाता ? जब एक रात म ही एक साथ पद्रह इच बरसात हो सकती है। इसका अनुमान तो विभाग के पास भी नही है।

राजू ने क्रमबद्ध रूप म उत्तर सुनाते हुए वहा उपस्थित लोगो स इसकी पुष्टि कराई तो कुछ मिनटो म लिखकर सभी के हस्ताक्षर कराके तहसीलदार को पकड़ाया—"ये तो आपकी शिकायत के उत्तर।"

इसके अतिरिक्त इस पत्र के साथ ओर भी लिखा गया था—

"अब जो इस शिकायती-पत्र म हस्ताक्षर है हम सब लोग शपथपूर्वक कहते हैं कि व सड़क पक्की करवाने के सबध मे थ। जिसने भी यह शिकायत की है उसके खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाए। ओबरा बाध जन-शक्ति आर जन-आस्था का बन्ध है। यहा रिलीफ म काम करना उतना ही महत्त्वपूर्ण रहा है जितना गाव के हर व्यक्ति ने अपना बाध समझकर इसके निर्माण म हिस्सेदारी निभाई है। इसीलिए दूसरे काम पर जहा आठ-नौ रुपये तक प्रतिदिन के मिलते थे वहा चार-पाच रुपये रोज क काम करके अपने त्याग का परिचय दिया है। सबकी आखे ओबरा बाध की प्रगति पर लगी हैं। दिल्ली का भी इसकी प्रोग्रेस की प्रतीक्षा रहती है।

यह सब सुधाकर जी जैसे निष्ठावान व्यक्ति का ही कमाल है। जिन्होंने मात्र छ माह मे बाध को तीव्र गति दी है। बाध ने तटबध को इतनी ऊचाइया दी हैं तो साथ ही पूरे गाव म एक राष्ट्रीय सोच जागृत कराके नई धारा म डाला है। आज गाव का व्यक्ति कवल कृषि के आसरे ही नही, कुटीर उद्योग, पशु पालन, डेरी कुक्कट शाला जैसी कई ग्रामीण योजनाआ का लाभ उठाकर प्रगति की राह पर बढ रहा है।''

तहसीलदार को भी अनुभव हुआ कि अवश्य ही शिकायतकर्त्ता कुठाओ का शिकार है। कही उसकी व्यक्तिगत स्वार्थपूर्ति बाधित हुई है। सुधाकर जी जैसे निष्ठावान पुरुप पर कलक लगाना सत्यवादी हरिश्चन्द के सत्य पर कलक लगाना है।

''हम सुधाकर जी क द्वारा किए गए सभी कार्यों की श्रेष्ठता व ईमानदारी की गारटी देते हैं। उन्हाने हमारे विश्वास को बल दिया है। वे भविष्य मे भी ओबरा गाव की इसी तरह सेवा करत रह, यही कामना हे। हम हैं ओबरा गाव क रामा, पेमा धूला, कसना, चम्पा केशा, देवा, राजू अपने हाशोहवास म तहसीलदार साहब के सामने हस्ताक्षर करते हैं।''

''बस बस बहुत हा गया, राजू। मुझ तो कागज का पट भरना है। वर्ना सारी स्थितिया से कौन परिचित नही हे। लगातार पेमेंट करने आ रहा हू। एक बार एक भी हाजरी तो फर्जी नही पकड़ी गई।'' तहसीलदार ने कहा—''इससे अधिक साफ-सुथरा काम ओर क्या हो सकता हे ? काम की प्रोग्रेस के रूप म इतना बडा बाध लहरा रहा है। नि सदेह जिस ईमानदारी और मेहनत से आप लोगो ने श्रम किया है, उसी का प्रतिफल है ओबरा बाध। मं सरकार से सिफारिश करूगा कि कच्चे काम करवाने के स्थान पर ऐसे निर्माण करवाए जाए।''

नीचे तहसीलदार ने अपने हस्ताक्षर सहित सील लगा दी।

''आपने बहुत सही लिखा है सर।'' राजू ने सुझाव दिया।

''आज की युवा शक्ति को चाहिए कि अपने बेकार जान वाली गर्मी की छुट्टियो म अपने गाव म, श्रम शक्ति का उपहार दकर राष्ट्र निर्माण मे योगदान करे।'' तहसीलदार ने सभी को कहा।

''सुधाकर जी। एसे पत्रा की अहमियत हमारे विभाग म रद्दी की टाकरी म पड फालतू कागज की तरह है।''

तहसीलदार साहब ने सुधाकर क कधे पर हाथ रखकर आश्वस्त किया।

''हम भी जानते हैं कि यह किसने लिखा और क्या लिखा होगा ? लिखन वाले की कुटिलता भी जानते हं। आप भावुक है। आप इन बाता पर जरा भी ध्यान मत दीजिएगा। एसे व्यक्ति आप जसे साधना-रत पुरुष का राह से विचलित करना चाहते हैं। यह आपकी परीक्षा है। अगर आप विचलित हो कर्म ही राह छोड देत हैं ता समझिए उनका मकसद पूरा हो गया। '

"अगर उनको मुझस कोई शिकायत थी ता मरे पास आत। कान पकड़कर मेरी गलती स्वीकार कराते तो मैं समझता कि निश्चित ही गाव-हितैषिता उनमे मुझसे अधिक विद्यमान है। लेकिन अब गाव और बाध छोडते समय यह मेरी अयोग्यता का ज्ञान ता करा ही दिया गया।"

"आप स्वय साचिए आप राह बदलगे तो कितने दु खी प्राणिया का अहित हा जाएगा ? एक कुटिल व्यक्ति पर ध्यान मत दीजिए। सौ मीठे लोगा का ध्यान रखिए।" तहसीलदार साहब ने सात्वना के स्वर म कहा—"आप स्वय गुणी और समझदार हैं। आपको मैं भला कैसे क्या ज्ञान द सकता हू। मन म आया विचार रख दिए।"

"आपका कहना ठीक है। उस समय इसा को भी लागा ने नहीं समझा था। मरते समय ईसा ने यही कहा था—"प्रभु इन्हे क्षमा करना। ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं ?"

ईसा मरा नहा। आज भी जिंदा है। हम लोग हर राज उन्ह सूली पर टागते हैं। गाधी मरा नहीं। आज भी जिंदा है। अहिंसा के नाम पर हर दिन उन्हे तीन गोलिया मारते हैं।

सुकरात मरा नहा। आज भी जिंदा है। हर रोज वह जहर का प्याला पी रहा है। युग बदल जाय। समय बदल जाय। मगर मनुष्य की वृत्ति नहीं बदलती है। चलती रहेगी, चलती रहेगी।

कस आर रावण पैदा होते रहग। कई गाधी कई सुकरात कई ईसा मरते रहेग। मगर उनका सत्य कभी नहा मरगा। सत्य सदा-सदा जीवित रहगा।

× × ×

आज राजू का विवाह है। आज चम्पा एक बार फिर दुल्हन बनने जा रही है। भाग्य भी क्या है ? ऊपर वाले के खल आसाना से कहा समझ आते हैं ? इसीलिए कहा जाता है कि—कर्त्ता के मन कछु और है विधना के मन और।

ठाकुर साहब ने ता एक बार विधाता की बात नकार कर अपनी मर्जी कर डाली। चम्पा की डोली को विदा कर दिया था।

ठीक उसी समय अदृश्य भाग्य खड़ा हस रहा था। चौबीस घटो मे ही चम्पा लौट आई थी। नवविवाहिता चम्पा लौटी थी—विधवा का लेवल लगवा कर। मगर होना तो वही था जो आज होने जा रहा है। गोड प्रपोजेज मैन डिस्पाजेज। विवाह का निर्धारण प्रभु करता है मनुष्य तो मात्र उन्हे निपटाता है।

ठाकुर साहब की हवेली मे आज विशेष चहल-पहल है। कारिन्दे कामो मे व्यस्त हैं। कोई जाजम ला रहा है। कोई कुर्सिया लगा रहा है। एक तरफ कुशल मजदूर मडप बनाने म व्यस्त थे। टैंट वाला सजावट कर रहा है। पिछवाड़े के बाड़े से पकवाना की खुशबू आ रही है।

ठाकुर साहब के निकट के रिश्तेदार अन्य व्यवस्थाए देख रहे हैं। ठकुराइन

व्यस्त हात हुए भी चेहर पर आतरिक प्रसन्नता तैर रही है। सब काम मुदित मन स हो रहे हैं। आज उनकी बरसो की साध पूरी होगी। साथ ही एक पाप-बोध से मुक्ति मिलेगी। ये हवेली, जमीन-जायदाद सब चम्पा व हा जाएग।

राजू क पिता से छली गई भूमि का मालिक आज स राजू बन जाएगा। जीत-जी अपने पाप का प्रायश्चित कर पत्नी सहित ठाकुर साहब तीर्थाटन करेंगे। अपनी आत्मा को निर्मल करेगे। इस जन्म म ढाए पापा की गठरी यहा विसर्जित कर दग। ज्या-ज्यो दिन बीत रहा है, तैयारियो म तजी आती जा रही है।

"ठाकुर साहब, प्रणाम!"

"आइए आइए सुधाकर जी क्या खबर है ?"

सुधाकर आज भी याचक बन कर आ रहा है।

"आज आपक जिगर क अनमाल टुकड़े का दान लेकर जाउगा। आप भी साचते होगे कैसा भिखमगा ब्राह्मण है जब आता है मागता रहता है।"

"मेरी भूल थी, सुधाकर जी! आप जैसे गुणी को पहचानने म दर कर दी। फिर भी समय पर चत गया, मरा सौभाग्य है।"

"किसी बात की जरूरत हो तो बता दीजिएगा।" सुधाकर ने हसते हुए कहा—"मैं इसीलिए आया हू। मैं तो दोना तरफ से हू न। चम्पा बिटिया भी मेरी है।"

"हा-हा, क्यू नहा।" ठाकुर साहब ने उसी उत्साह से कहा—"सब ठीक चल रहा है। समय पर बारात लेकर आइएगा। स्वागत है।"

"हां एक बात बता दू। जैसे ही विधवा विवाह की खबर लगी है। शहर से कई पत्रकार आ रहे हैं।" सुधाकर ने कहा—"सभव है जयपुर दूरदर्शन वाले भी आए।"

"अच्छी बात है, आने दीजिए। सबका स्वागत है।"

"अच्छे काम तो खुद देवता आकर निपटाते हैं ठाकुर साहब।"

"मेरे लिए तो आप जैसे ब्राह्मण-देवता स बढकर काई नहीं। चम्पा को जीवन और गृहस्थी देने वाले आप हैं।"

"सब प्रभु इच्छा है, ठाकुर साहब। चलता हू मै। उधर भी ता सारी व्यवस्था मुझे ही देखनी है।"

सुधाकर राजू के घर पहुचा। हाय-तोबा मच रही थी। राजू न उन्हे आते हुए देख लिया था—"कहा चले गए थे आप ?"

"जहा जाना चाहिए था।"

"मगर कहा ?"

"तेरी ससुराल। वहा भी तो तैयारिया देखनी थी।"

"वहा की तैयारियो मे यहा का क्या होगा ? अब तक न बैंड बाजा न घोड़ी का पता। बराती आना शुरू हो गए हैं। उन्ह नाश्ता देना होगा सर।"

' सब हो जाएगा दूल्हे राजा। आज के दिन तुम्ह इतना टेन्स होने की जरूरत

नही है। बैण्ड बाजा उदयपुर से रवाना हो गया है। पहुचता ही होगा।"

"लो, वह आ गया। घोड़ी लेने लकमा गया है। अरे रे लो, वह तुम्हारी घोड़ी दौड़ते हुए आ रही है।"

जगदीश ने आकर कहा—"सर, दा सौ प्लेटो मे नाश्ता तैयार है। जब भी चाहिए बता देना। पान इत्र फुलेल मालाए देवा ले आया है।"

"हा, अब दूल्हे राजा और क्या चाहिए ? दुल्हन ?" सुधाकर प्रसन्नता के मूड म था।

"सर! बस, आप मुझे छाड़कर मत जाइए कही भी। आप नहीं होते हैं तो पता नहीं कैसा सूनापन लगता है।"

"अब ता मर बिना रहन की आदत डालनी हागी। चम्पा जो आ रही है जीवन-भर साथ देने। वैसे भी अब मेरा यहा क्या काम है ? बाध भर गया। 'ज्ञानदीप' तुम चला ही रहे हो। तुम्हारा विवाह कराने का वादा माजी से किया था वह भी आज पूरा हा जाएगा।"

"वह भी आपके आशीर्वाद का प्रतिफल है।"

"बस जिस दिन से नहरा का पानी ओबरा गाव के खेता मे दौड़ेगा मैं भी कहीं दूर किसी दूसरी दौड़ म चला जाऊगा।"

तब तक राजू की माताजी सामने आ गईं। सुधाकर ने विनम्र एव प्रणतभाव से कहा—"प्रणाम, ठकुराइन मा।"

"सुधाकर जी। बारात की सारी सुरक्षा और सार-सभाल की जिम्मेदारी सौंप रही हू। आपके अलावा मेरा शुभचिन्तक और कौन है ? आपकी कृपा से ही आज यह दिन देखने को मिला है।"

"आप निश्चिन्त रह। सकुशल आपकी बहू लाकर साप दूगा।" सुधाकर ने निर्देश चाहा—"और कोई काम ?"

"और ता आप दख ही रहे हैं। कोई बिना नाश्ता किए नही रह जाए।"

"माताजी आप अदर के वर-निकासी के काम देखिए। बाहर की व्यवस्था म कोई कमी नही आएगी।"

ठीक समय धूम-धाम से बारात रवाना हुई। हुड़ीलाल, जगदीश परभू, रामचद सज-धज कर बंड की धुन पर नाचत-गाते चम्पा के घर पहुचे।

ठाकुर साहब क लोगा ने बरातियो का स्वागत शर्बत व फूल मालाआ से किया। इत्र छिड़के गए गुलाब के फूलो की वर्षा हुई। राजू ने तोरण मारकर अदर प्रवश किया।

कई पत्रकार आए थे। दूरदर्शन का कैमरा विधवा-विवाह क अनुकरणीय कार्य को कैद कर रहा था। ठीक समय पर मच पर चम्पा आई। दोनो के हाथो मे वरमालाए। दाना एक-दूसरे को एकटक देखे जा रहे थे। दोना ही सुदर सजील लग रहे थे। मानो कामदेव—रति हो।

दोना ने एक-दूसरे की आखा म देखा। माना, हजारा माल दूर का दूरिया नाप कर आए हा। मानो, पूरे एक युग की प्रतीक्षा के बाद मिले हा। दाना किसी ग्रह पर श्रापित हो विछुड़कर भटकत-भटक्ते पृथ्वी पर मिलने आ गए हा। दाना ने एक-दूसरे के गले में मालाए डाला। दोना आत्मा स एकाकार हा गए। सुधाकर अभिभूत हो गया उस क्षण। इस क्षण के लिए सुधाकर ने क्या-क्या नहा झला ? यह बधन भी तो उसी की आस्था का बन्ध है। आजावन बन्ध। जन्म-जन्मातरा का बन्ध।

उसे इस क्षण लगा कि वह भी इनक साथ जन्म-जन्मातरा स चल रहा है। य हर बार विछुड़ जाते हैं और सुधाकर हर बार उन्हे मिलाकर अपूर्व शाति महसूस करता है। एसी शाति शायद ठाकुर साहब का कन्यादान करक भा नहा मिलगी। ऐसी शाति शायद ठकुराइन का बटा विदा कर क भी नहा हागी। जितना सुधाकर को हो रही है। सैकड़ा की भीड़ म भी वह जैसे अकेला खड़ा है। माइक बैंड किसी की आवाज उसके काना म नही आ रहा है। बस शाति-शाति, परम शाति मिल रही है।

"मिस्टर सुधाकर।" एक प्रेस रिपार्टर ने सुधाकर का ध्यान भग किया—"क्या आप इस विधवा विवाह पर कुछ रोशनी डालगे ?"

परम शाति की समाधि से उसे इस पत्रकार ने जगा दिया।

"दोना ही परिवारो न साहसिक कदम उठाया है। दोनो ही बधाई के पात्र हैं। ठाकुर साहब ने रूढिवादी परपरा की परवाह न कर बेटी की खुशी को महत्त्व द उसे जीने की नई राह दी है।"

"इस सबध म युवक राजू की भूमिका के सबध मे आप कुछ कहना चाहेंगे ?"

"निश्चित ही कहूगा।"

"राजू भी बधाई का पात्र है। किसी कुआरी कन्या का हाथ थामने की जगह एक बाल-विधवा के अधेरे जीवन म खुशियो की राशनी भरी है उसने।"

"थैंक्यू सर! वन मोर क्वेश्चन। सुना है इन दोना का मिलान म आपन महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई हे और आपको थोड़ा प्रताड़ित भी ।"

"छोड़िए उन सब बाता को। जो कुछ अच्छा हो रहा है, उसका आनद लीजिए।"

"पर ऐसा हुआ है उसे आप स्वीकार करते हे न ?"

"मैं ता निमित्त मात्र हू। मिलाने वाला तो ईश्वर है ?"

"थैंक्स मिस्टर सुधाकर।" सवाददाता न फिर प्रश्न दागा—"सुना है इस ओबरा बाध की प्रोग्रेस का श्रेय भी आपको ही जाता है।"

"यह आस्था का बन्ध हे। अगर गाव क श्रमपूत अपनी निष्ठा स अपने श्रम का योगदान नही देते तो मै अकेला क्या कर सकता था ? श्रय देना ही है तो गाव के उन भूखे-मजदूरा को दीजिए जिन्होने प्याज क साथ सूखी रोटिया खाकर इस गगा-सागर का निर्माण किया है। जिन्होंने अकाल की मार सही है। भूख और प्यास को भोगा है। अभावा मे जिए हैं।"

"क्या आपकी भूमिका ?"

"नही, मिस्टर पत्रकार महोदय।"

"नही, इन ग्रामवासिया ने क्या किया ह वह लिखिए।"

"ये जीने क लिए सतत् युद्ध करते रह हैं। श्रेय उन्हे दीजिए। सुधाकर ने तो इनके अधेरे जीवन मे आस्था का एक दीप भर जलाया है। नथिंग मोर।"

× × ×

राजू-चम्पा-माजी सबकी खुशियों का पार नहा। घर म रौनक छा गई है। चम्पा जिधर जाती है, पायल की रुनझुन से घर गुजायमान हो रहा है। जैसे सितार की स्वर लहरी झकृत हा रही हो। अखबारो न खूब कवरेज दिया है। सभी म आज बड़ी-बड़ी हेड लाइन है।

"विधवा चम्पा का हाथ थाम राजू ने साहस का परिचय दिया।"

"रूढ़िवादियो के मुह पर तमाचा— विधवा विवाह।"

"ठाकुर साहब ने सामाजिक उधना की परवाह नही की— विधवा बेटी का सुख चाहा।"

"विधवा विवाह युग की माग।"

"जरूरत है, उन साहसिक युवका का जो विधवाआ के हाथ थाम।"

"सुधाकर का प्रयत्न और प्रात्साहन— विधवा विवाह।"

इधर चम्पा के माता-पिता सब कुछ राजू-चम्पा को सौंपकर चारा धाम की यात्रा पर निकल गए साथ ही राजू की मा को भी लेते गए। उन्होंने मना भी किया पर ठाकुर ने पैर पकड़ लिए थे।

× × ×

ओबरा बाध की कुडली म अब स्थायित्व आया है। नहरो का काम जोर-शोर से चल रहा है। एक माह म हर हालत मे नहर पूरी करनी हैं। दिल्ली से सयुक्त सचिव साहब का पत्र आया है। ओबरा पर विशेष कृपा है। गाव वालो ने सोचा था कि वे भी सैकडो अफसरो की तरह दिल्ली जाकर भूल जाएगे। मगर नही भूले वे। नही भूले, आवरा के केशा बा गमेती को। नही भूले अकाल म खाली उनकी कोठियो को। नही भूले, खमाणा लोहार की धौंकनी पर लाल-तप्त लोहे को कूटते वेणा— कुशाल को। नही भूले सुधाकर को।

विशेष हिदायते लिखी थी— सुधाकर के लिए। वे खुद आएगे मुहूर्त पर। अपने हाथ स नहरो का सचालन करगे। राज्य सरकार और सिंचाई विभाग अभिभूत है अपनी इस सफलता पर। हर आदमी अपने-अपने ढग से ओबरा बाध की सफलता को भुनाना चाहता है। ओबरा बाध को सीढ़ी बनाकर प्रमाशन की नाव से पार उतरना चाहता है।

पद्रह दिन पहले से तैयारिया शुरू हो गईं। कहा से नहर का किवाड़ खोलकर उद्घाटन करेंगे। मच कहा बनेगा। प्रस और दूरदर्शन वाले कहा रहगे। सिक्यूरिटी

कहा रहेगी। मुख्यमत्री सिंचाई मत्रा कहा ठहरग। उद्घाटन का पत्थर कहा लगेगा।

बाध को नया रूप दिया जाने लगा। सफाई करवा दी गई। मुरम बिछवा दिया गया। नहर व सैल्यूस को रगवा दिया गया। आवरा बाध का रूप निखर रहा था। ओबरा बाध की कुडली के सभी वक्र ग्रह शात हो चुक थ। वृहस्पति ग्रह अपना प्रभामडल फैला रहा था।

आज बाध का उद्घाटन है। आवरा बाध दुल्हन की तरट सजाया गया है। आज सुधाकर और चौकी पर विशेष जिम्मेदारिया है। कद्रीय सयुक्त सचिव साहब आ रहे ह उद्घाटन करने। मुख्यमत्री सिंचाई मत्री सासद एम एल ए, प्रधान सभी आ रहे है। राजू और चम्पा न 'ज्ञानदीप' की प्रदर्शनी व महिलाआ द्वारा निर्मित सामग्री की बिक्री की व्यवस्था की है। पत्रकारा के दल क दल आ रहे हैं। लोकल से लकर राज्य की राजधानी और दिल्ली तक के पत्रकार आर दूरदर्शन वाले भी आए हे।

सुधाकर घूम-घूमकर सबको हिदायते दे रहा है। वह चम्पा को पाडाल म जाकर बधाइ आर आशीर्वाद द आया है। पाडाल की सज्जा का दायित्व चम्पा की टीम को दिया गया है। इधर सुधाकर ने राजू का 'ज्ञानदीप' का सर्वेसर्वा बना दिया ह।

गाडिया के होर्न बजने लगे। सभी वी आई पी विशिष्ट व्यक्ति आ रहे है। पूरा आबरा गाव और आसपास के गावा से हजारा लोग समाराह मे आए ह। मुख्य अभियता से लकर कनिष्ठ अभियता दिनेश तक सवा मे लगे ह। सिवाई मत्री गारवान्वित ह अकाल राहत के अनुपम सृजन स। मुख्यमत्री गारवान्वित हैं कि अकाल राहत म बने बाध के क्षत्र का एक प्रकाश स्तम्भ बन जाने के नाम पर।

ओबरा बाध राज्य की प्रगति का प्रतीक है।

ओवरा प्रतीक है सामुदायिक निर्माण का सहकार की भावना का सघर्ष की रचनात्मक चतना का।

आबरा बन गया हे प्रकाश स्तम्भ पचायती राज का, ग्रामीण जनो की आस्थाओ को साकार बनाने का अनपढ़ और पढ़ा क बीच आपसी तालमेल का सरकारी और गर-सरकारी स्तर पर *अकाल राहत के कार्यों की सार्थकता का।*

गाव वाले प्रसन्न ह आज इस छाटे से गाव के छोटे से बाध पर इतनी बड़ी-बड़ी हस्तिया दखकर।

सयुक्त सचिव ने राइट आर लफ्ट केनाल क उद्गम स्रात पर बने गेटा के खालने के लिए बटन दबाकर पानी दौड़ाया। तालिया बजी। कमरो की फ्लश लाइट्स चमकन लगी। दूरदर्शन का कैमरा शॉट लेत हुए चारा आर घूमन लगा। कद्रीय सयुक्त सचिव जा मच पर आए। कार्यक्रम का सचालन राजू कर रहा था। 'ज्ञानदाप' प्रदर्शनी का उद्घाटन मुख्यमत्री जी के कर-कमला द्वारा हुआ। *लोगा ने सामान* सस्ता देखकर खूब खरीदा।

भापणा के दौर शुरू हुए।

मुख्यमत्री ने स्वागत भापण दिया—"यह आबरा बाध अकाल राहत कार्य का श्रेष्ठ उदाहरण है।"

सिचाई मत्री ने कहा—"यह हमारे इजीनियर दल के अथक् प्रयासा का महत्वाकाक्षी दस्तावेज है।"

केद्रीय शासन सचिव जा उठे। उन्हाने कहा—"यह वास्तव मे एक सद्प्रयास है। केद्र द्वारा भेजे गए रुपया के सही उपयोग का प्रमाण ह।" उन्हाने सरकार द्वारा स्वीकृत एक दस करोड की याजना की घोषणा भी की।

उद्घाटन का पत्थर दिल्ली से ही लाया गया था। वह अभी तक छिपाया गया था। मच पर बठे सयुक्त सचिव ने बटन दबाकर पर्दा खीचा। फ्लेश लाइट चमकी।

बाध की चाकी क पार्श्व म एक ग्रीन सगमरमर क स्तम्भ पर सफद सगमरमर-सा रेशमी पर्दा खुल गया। जिस पर लिखा था—

यह बाध अकाल राहत की सामुदायिक सेवा ओर
श्रम की सार्थकता के लिए 'आबरा बाध' क
निर्माण म सहभागी सभी स्त्री-पुरुपो को
सादर समर्पित किया गया।
इस बाध की योजना मे

श्री सुधाकर शर्मा की लगन नि स्वार्थता और आस्था का सहकार रहा है।

अधीक्षण अभियता	मुख्यमत्री	सयुक्त सचिव
सिंचाई विभाग	राजस्थान	सिचाई परियाजना भारतसरकार
राजस्थान		

केद्रीय सयुक्त सचिव जी न पूछा—"अरे भाई! वअर इज देट जेन्टलमैन सुधाकर शर्मा आइ एम प्राउड ऑफ हिम! सुधाकर नही होता तो यह बाध भी शायद यहा नहा होता।"

उन्हनि अपने पी ए को इशारा किया। पी ए ने एक राजपट्टिका निकाल कर सयुक्त सचिव को सौंप दी।

'अर सुधाकर जी कहा ह ?"

"आपने सुधाकर जी को देखा ?"

"अरे भई, जल्दी दूढो। बड़े साहब बुला रहे हैं।"

"सुधाकर जी का जल्दी लाओ भाई।"

"अरे भई! एस वक्त पर तो उन्हे यही होना था।"

सब जगह दूढ मच रही है—"सुधाकर जी कहा गए ? उन्ह सम्मानित किया जा रहा है।"

' कमाल है! व गए तो गए कहा ?"

"एक घटे पहले यहा थे।"

जन्म 6 नवबर 1937 बड़ी सादड़ी जि चित्तौड़गढ़। शिक्षा बी ए। उपलब्धियां फिल्म लखक एव कलाकार। प्रमुख फिल्म गाथा ज्वाला गगा और रगा हिंद की बेटी हिफाजत आज की ताकत काख आकाक्षा जग जमाने क सग गोपीबाघा फिरे एलो (सत्यजीत रे प्रोडक्शन) पथराई आखो क सपने महाराजा जियो म्हारा लाल देव आदि। टी वी सीरियल ज्वेल इन द क्राउन (अग्रजी) किडनेप्ड प्रिसज (इटली) होमर (इटली) रग बदलती दुनिया रिपोर्टर रगमहल (हिंदी) एक शून्य शून्य (मराठी)।
सीरियल एव फिल्म सवाद लेखन दो मतवाल खून जवाब देगा एक गाव की कहानी मौत की आधी सावधान (एड्स)। स्वच्छ व यूनीसफ प्रोजक्ट नारू रोग-टीकाकरण पर स्लोगन।
कहानी लेखन 1954 स धर्मयुग सारिका मधुमती राजस्थान पत्रिका इत्यादि।
रेडियो नाटक स्पर्श मौत का खेल सदह का घेरा (एड्स) प्रसारित। नाटक खातीला चार सगीत नाटक अकादमी दिल्ली प्रोजक्ट औरगाबाद।
सास्कृतिक सवाददाता राजस्थान पत्रिका 1984 से 1989 तक। कहानी सग्रह अजुरी भर उजाला 1998। बुलटिन सपादन पश्चिम क्षेत्र नाट्य समारोह व जोधपुर 1991-92। अध्यक्ष राष्ट्रीय मूक बधिर नाट्य सस्था त्रिवणी सस्था 1984 से 86। उपाध्यक्ष युगधारा 1996-97। अन्य नाट्य शिविरो में भाग प्लेराइट वर्कशाप सृजनतीर्थ राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर।
आकाशवाणी बी हाई श्रेणी कलाकार नाटक एव कहानीकार। सम्मान कला त्रिवणी जोधपुर राजस्थानी फिल्म महोत्सव। सगीतिका सोहार बाल रगमच उदयपुर औदीच्य समाज उदयपुर। सप्रति ऊन होजरी रेडीमेड व्यवसाय।

पता दुकान परिधान 91 बापू बाजार उदयपुर (राज) 313001। फोन 524942
आवास महता भवन सुदरवास उदयपुर (राज) 313001। फोन 490179